UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180616

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—43—30-1-71—5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 K46B Accession No. P.G. H18

Author खत्री, देवकीनन्दन

Title भूतनाथ 16वां खंड

This book should be returned on or before the date last marked below.

❀ श्रीः ❀

भूतनाथ

उपन्यास

अथवा

भूतनाथ की जीवनी

सोलहवां हिस्सा

—※—

पहिला बयान

चुनारगढ़ से लगभग चार कोस हट कर जंगल के किनारे पर बने हुए एक बड़े और पक्के कुंए पर हम पाठकों को ले चलते हैं।

सुबह का समय है, सूरज अभी नहीं निकला है फिर भी उसकी अवाई जान रंग बिरंगी चिड़ियें जाग उठी हैं और टहनियों पर बैठ कर अपनी मनोहर बोलियों से जंगल को गुँजा रही हैं।

इस कुंए पर जिसका ज़िक्र हमने ऊपर किया है, इस समय पांच छः आदमियों की एक छोटी मंडली दिखाई पड़ रही है जो अभी यहाँ पहुंची है अपना बोझा उतार हलकी हो रही है। इनमें से एक आदमी सरदारी के तौर पर एक हलके बिछावन पर जा बैठा है जो इसके लिये इसके साथियों ने आते ही बिछा दिया है और बाकी के इधर उधर बैठे हुए सुस्ताने तथा

साथ साथ बातें भी करते जाते हैं। पाठकों को तरद्दुद में न डाल हम बताये देते हैं कि ये लोग वे ही हैं जिनका हाल हम पन्द्रहवें हिस्से के १६ वें बयान में लिख आये हैं अथवा जो उस गुफा में से गौहर और सुन्दर को ले भागे थे। हमारे पाठक यह भी जानते हैं कि जब तक उस आदमी के असली नाम का पता न लग जाय जो इन लोगों की सर्दारी कर रहा है तब तक के लिये हमने उसका नाम घनश्याम रख दिया है। अस्तु इस समय हम तब तक उसे इस बनावटी नाम से ही पुकारते जायंगे जब तक कि उसके असली नाम का पता नहीं लग जाता!

घनश्याम के सामने कपड़े में बंधी दो बड़ी गठरियां पड़ी हुई हैं जिनमें बेहोश गौहर और सुन्दर बंधी हुई हैं। इस समय घनश्याम की आंखे उन्हीं गठड़ियों पर पड़ रही हैं और वह उनकी तरफ गौर से देखता हुआ कुछ सोच रहा है।

कुछ देर बाद घनश्याम ने एक आदमी की तरफ देख कर कहा, "रामू! अगर तुम सुस्ता चुके हो तो जरा इधर आंओ और इन गठरियों को खोल कर दोनों बेहोशों को बाहर निकालो ताकि उनके बदन में भी इस वक्त की ताजी हवा लग जाय।'

यह सुनते ही वह आदमी अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और पास पहुंच कर उन गठड़ियों को खोलने की फिक्र में लगा। बात की बात में दोनों बेहोश औरतें गठड़ी से खोल कर जमीन पर लेटा दी गईं और घनश्याम ने पारी पारी से दोनों की नब्ज देखते हुए कहा "इनकी बेहोशी दूर हो रही है, हवा लगने से दोनों जल्दी होश में आ जायगीं।'

रामू यह सुन बोला, "कहिये तो इन्हें पुनः बेहोशी सुंघा कर कुछ घंटों के लिये मुर्दा कर दूं।" घनश्याम ने जवाब दिया "कोई जरूरत नहीं, मैं चाहता हूं कि ये होश में आ जांय और इनसे बातचीत करके कुछ पता लगाऊं कि ये कौन हैं। (दोनों की सूरतें गौर से देखता हुआ) जरूर इनकी सूरतें बनावटी हैं।"

रामू० । हुक्म हो तो कूंए के पानी से इनका चेहरा धो कर साफ कर डालूं ?

घनश्याय० । ऐसा ही करो । (गौहर की तरफ बता कर) इसकी सूरत तो मुझे कुछ कुछ पहिचानी सी लगती है, जरूर इसे मैंने पहिले कहीं देखा है मगर इस दूसरी के बारे में कुछ कह नहीं सकता ।

रामू० । देखिये अभी सब मालूम हुआ जाता है ।

अपने सामान में से रामू ने कपड़े का डोल और पतली डोरी निकाली और बात की बात में कूएं से पानी खींच कर बेहोशों के पास जा पहुंचा । घनश्याम की आज्ञानुसार दोनों का चेहरा धो कर साफ किया गया ।

रंग दूर होते ही और चेहरा साफ होने के साथ ही घनश्याम चौंक पड़ा और बोला, "हैं ! यह तो गौहर है ! तब तो बड़ा गजब हुआ !!"

रामू० । क्यों, क्या हुआ ?

घनश्याम० । (घबराहट के साथ जेब से कुछ निकाल कर रामू को देता हुआ) यह होश में आना ही चाहती है, पहिले यह चीज सुंघा कर इसे बेहोश करो तब कुछ पूछना ।

बेहोशी की दवा सुंघा कर गौहर पुनः गहरी बेहोशी में डाल दी गई और तब रामू ने घनश्याम की चीज उसे लौटाते हुए कहा, "क्या यह वही गौहर है जिस पर हमारे महाराज लट्टू हो रहे हैं ?"

घनश्याम० । हां ।

रामू० । तो इसे देख कर आप घबरा क्यों गये ? यह तो हम लोगों के मेल ही की निकलीं, इनको तो बल्कि होश में लाकर पूछना चाहिये कि इनकी साथिन कौन हैं, उस गुफा में ये कैसे पहुंची और वह भयानक शैतान जिसे हम लोगों ने देखा (कांप कर) और जिसकी याद से अब भी कंपकंपी आती है, कौन था ?

घनश्याम० । तुम तो गधे हो ! महाराज से जरा सी यह शिकायत कर देगी तो हम सब के सब मारे जायंगे !!

रामू० । शिकायत ! सो क्यों और किस बात की !

घनश्याम० । यही कि हम लोगों ने इन्हें बेहोश किया और बेइज्जती के साथ इस तरह गठड़ी में बांध कर लाए ।

रामू० । वाह यह भी कोई बात है, हम लोगों ने कुछ जानबूझ कर ऐसा थोड़े ही किया ! अन्धेरी रात, मुसीबत की घड़ी, अनजानी जगह, तिस पर सूरत बदली हुई ! भला हम लोग कोई देवता थे कि वैसी हालत में भी इन्हें पहिचान लेते !

घनश्याम० । तुम्हें अभी इनके मिजाज का पता नहीं तभी ऐसा कह रहे हो, वह आनन्दसिंह वाली बात भूल गये !

रामू० । कौन सी ?

घनश्याम० । ठीक है, तुम उन दिनों थे नहीं, अगर होते तो ऐसा न कहते ।

रामू० । कौन सी बात ! क्या हुआ था ?

घनश्याम० । तुमने सुना तो होगा ही, वही जब महाराज ने राजा बीरेन्द्रसिंह के लड़कों को पकड़ने का जिक्र किया था और इसी गौहर ने इस काम का बीड़ा उठाया था ।

रामू० । मैंने कुछ उड़ती खबर सुनी थी परन्तु ठीक ठीक हाल नहीं मालूम हुआ, बल्कि मैं पूछने वाला था कि क्या हुआ था ।

घनश्याम० । खैर पूरा हाल तो फिर बताऊंगा मुख्तसर यह है कि गौहर ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को गिरफ्तार करके हमारे महाराज के पास ले आने का वादा किया, हम कई ऐयार लोग इनकी मदद पर दिये गये, हम लोगों ने अपना जाल रचा जिसमें आनन्दसिंह तो फँस गये मगर इन्द्रजीतसिंह को रानी माधवी फँसा ले गई इससे वे हमारे हाथ न लगे । आनन्दसिंह को गिरफ्तार करके शिवदत्तगढ़ ले जाने की मैंने सलाह दी पर इन हजरत को न जाने क्या सूझी कि एक मकान में उन्हें बन्द कर रक्खा जहां से बीरेन्द्रसिंह के ऐयार उन्हें छुड़ा ले गये मगर

इसका इलजाम हम लोगों के सिर पर थोपा गया, न जाने महाराज को क्या समझा दिया कि वे मुझे ही दोषी समझ बैठे और मुझे उनकी बहुत कड़ी डांट सुननी पड़ी। तब से मैं इससे बहुत डरता हूँ। इस समय मैंने इसके काम में दस्तन्दाजी की है, अगर फिर इसने कोई शिकायत महाराज से कर दी तो मैं कहीं का न रहूँगा।

रामू इसके जवाब में कुछ कहा ही चाहता था कि यकायक इनके साथियों में से एक जो जरूरी कामों के लिये गया हुआ था दौड़ता हुआ वहां आ पहुंचा और कुछ घबराहट के साथ बोला, "महाराज आ रहे हैं !!"

घनश्याम ने यह सुनते ही चौंक कर कहा "कौन ? महाराज आ रहे हैं ?"

उसने जवाब दिया, "हां शिकार के लिये आज वे बहुत सवेरे ही सिर्फ दो आदमियों को लेकर निकले और इसी तरफ आ रहे थे जब रास्ते में मुझे देख कर अचानक रुक गये और सब हाल पूछ कर इधर ही को बढ़े आ रहे हैं। मैं दौड़ कर खबर देने आ गया।"

घनश्याम के मुंह से यह सुनते ही "बुरा हुआ !" निकल गया और उसने अपना हाथ गोहर की तरफ बढ़ा कर कहा, "जल्दी से इसकी सूरत बदलो !" मगर इस बात का कोई भी मौका न मिला क्योंकि उसी समय पास के जंगल से निकल कर आते हुए तीन घोड़सवारों पर उसकी नजर पड़ी। उसके मुंहसे निकल पड़ा, "महराज आ पहुँचे !" और वह कुछ बेचैनी के साथ उठ खड़ा हुआ। उसके बाकी साथी भी खड़े हो गये बल्कि सब लोग अगवानी के लिये कुंए से उतर कर उस तरफ बढ़े जिधरसे महाराज शिवदत्त सवारों के साथ आ रहे थे।

अपने आदमियों को सामने देख शिवदत्तने घोड़ा रोका और उनकी सलामों का जवाब देते हुए घनश्याम की तरफ देख कर कहा, "क्यों जी खुदाबख्श ! तुमने आने में इतनी देर क्यों कर दी ! मैं आज कई दिनों से तुम लोगों की राह बेचैनी से देख रहा हूं !!"

उसकी बात के जवाब में खुदाबख्श (जिसे अब तक हम घनश्याम के नाम से पुकारते आये हैं) अदब के साथ बोला, "हुजूर का हुक्म पाते ही हम लोग इधर के लिये रवाने हो गये मगर रास्ते में दो दिन की देर इसलिये हो गई कि मुझे पता लगा कि गौहरजी किसी मुसीबत में पड़ गई हैं। इसी बात का पता लगाने और उनकी मदद करना जरूरी समझने से मुझे रुक जाना पड़ा।"

शिवदत्त०। (चौंक कर) गोहर, मुसीबत में! सो क्या, वह इस वक्त कहाँ है?

खुदाबख्श०। बड़ी मुश्किल से मैंने उन्हें और उनकी एक साथिन को कई बदमाशों के हाथ से छुड़ाया। (हाथ से बता कर) उस जगह कूंए पर हैं। वे अभी तक बेहोश हैं, अभी हम लोग उन्हें होश में लाकर पूरा हाल चाल पूछने ही वाले थे कि महाराज के आने की खबर मिली।

यह सुनते ही शिवदत्त उतावली के साथ कूंए की तरफ बढ़ा और खुदाबख्श तथा उसके साथी तथा वे दोनों सवार भी जो शिवदत्त के साथ थे उसके पीछे हो लिये। कूंए के पास पहुँच शिवदत्त घोड़े पर से उतर पड़ा। खुदाबख्श ने घोड़े की लगाम पकड़ कर अपने साथी रामू के हवाले कर दी और ऐसा करते हुए धीरे से उसके कान में कह दिया, "सभों को होशियार कर दो कि महाराज अगर पूछें तो यही कहें कि हमने इन दोनों को दुश्मनों के हाथों से छुड़ाया है।"

तेजी से सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ शिवदत्त कूंए पर चढ़ गया और वहां गौहर को बेहोश पड़ा देखते ही उसके पास बैठ कर गौर से उसकी नब्ज देख कर बोल पड़ा, "ओफ इसे बहुत कड़ी बेहोशी दी गई है! (खुदाबख्श की तरफ घूम कर) तुमने इसे कहां पाया?"

खुदा०। यहाँ से आठ कोस दूर एक पहाड़ी की तरहटी में, रात के वक्त कई आदमी इन्हें और (दूसरी औरत की तरफ बता कर) इसे बेहोश लिये जा रहे थे कि हम लोगों ने पता पाकर उन्हें घेर लिया और बड़ी

मुश्किल और चालाकी से उनके पंजे से छुड़ा कर सीधे इसी तरफ लिये चले आ रहे हैं।

शिवदत्त । वे लोग कौन थे जो इसे ले जा रहे थे ? उनमें से कोई गिरफ्तार हुआ ?

खुदा० । अफसोस कि कोई हाथ न आया जिससे पता लगता कि वे कौन थे, मगर शायद ये बता सकती हो कि वे कौन थे। इन्हें होश में लाने से सब पता लग जायगा ।

कह कर खुदाबख्श ने लखलखे की डिबिया निकाली मगर उसी समय शिवदत्त ने रोक कहा, 'नहीं मैं कुछ दूसरी ही बात सोचता हूं। मेरी इच्छा है कि इसे सीधा महल ही में ले जाऊं और तब वहीं होश में ला कर हाल चाल दरियाफ्त करूं। तुम लोगों के सुपुर्द मैं एक दूसरा और बहुत जरूरी काम करना चाहता हूं जिसे मैं अकेले में तुमसे कहूंगा।'

शिवदत्त ने अपने चारो तरफ देखा जिसके साथ ही उसका मतलब समझ और लोग दूर हट गये और केवल खुदाबख्श वहाँ पर रह गया जिसकी तरफ झुक कर कान में महाराज ने कुछ कहा। सुनते ही वह चौंक पड़ा और ताज्जुब के साथ बोला, "क्या महाराज ठीक कह रहे हैं !!"

शिवदत्त ने कहा, 'मुझे बहुत ठीक खबर लगी है और इसी लिये मैं चाहता हूं कि बिना एक सायत की भी देरी किये तुम अपने ऐयारों को साथ ले उसी तरफ रवाना हो जाओ। देर होने से बहुत नुकसान होने की संभावना है !!'

खुदा० । बेशक, इसमें क्या शक है। मगर हम लोगों को क्या क्या करना होगा बता दिया जाय।

थोड़ी देर तक शिवदत्त और खुदाबख्श में धीरे धीरे कुछ बातें होती रहीं, इसके बाद शिवदत्त उठ खड़ा हुआ और कूंए के नीचे उतर अपने घोड़े पर सवार हुआ, उसकी आज्ञानुसार बेहोश गौहर उसके घोड़े पर बैठा दी गई और दूसरी औरत (सुन्दर) उसके एक साथी सवार के घोड़े पर।

शिवदत्त ने अपने ऐयारों से कुछ बातें कीं और तब घोड़े का मुंह शिवदत्त की तरफ घुमाया। उसके साथी दोनों सवार भी उसके पीछे हुए। इस समय खुदाबख्श वगैरह का साथ छोड़ कर हम शिवदत्त के पीछे चलते और देखते हैं कि वह गौहर और सुन्दर को लेकर किधर जाता अथवा क्या करता है।

गौहर की जब बेहोशी टूटी तो उसने अपने को एक पहाड़ की कंदरा में पाया जो बहुत लंबी चौड़ी और कुशादा थी। वह मुलायम पत्तियों के बिछावन पर पड़ी हुई थी और उसके बगल ही में उसकी साथिन अर्थात् सुन्दर पड़ी हुई थी जो अभी तक बेहोश थी। इन दोनों से कुछ हट कर गुफा के मुहाने के पास महाराज शिवदत्त बैठे हुए कुछ कर रहे थे। गुफा के बाहर की तरफ आग जल रही थी जिसके पास बैठे दो आदमी खाने की चीजें तैयार कर रहे थे। एक मरा हुआ हरिन भी उसी जगह पास ही में पड़ा हुआ था।

महाराज शिवदत्त को पहिचान एक दफे तो गौहर चौंक गई और उसने पुनः अपनी आंख बन्द कर ली मगर कुछ देर बाद पुनः खोलीं और जमीन का सहारा लेकर उठ बैठी। उसके बदन में इस समय दर्द हो रहा था जिसका कारण वह कुछ नहीं समझ सकती थी, साथ ही यह भी उसकी समझ में नहीं आता था कि वह जहां पर है वह कौन सी जगह है, वहां वह कैसे आई और राजा शिवदत्त यहां क्यों कर आ पहुंचे।

गौहर इन बातों को सोच ही रही थी कि शिवदत्त ने घूम कर उस तरफ देख और उसे होश में आया देख उठ कर उसके पास आया। उसके हाथ में एक लोटा था जिसे उसने गौहर को बढ़ाते हुए कहा, "बारे तुम होश में तो आईं इतनी कड़ी बेहोशी तुम्हें दी गई थी कि मैं तो सब तरह की कोशिश कर लाचार हो गया था। लो पानी से अपना मुंह हाथ धोओ ताकि दिमाग ठिकाने आवे और तब बताओ कि तुम कहां और किस आफत में पड़ गई थीं?"

गौहर ने पानी ले लिया और अपनी आंखों पर कई छींटे दिये तथा मुंह अच्छी तरह धोया जिससे उसके सिर का चक्कर और माथे का दर्द कुछ कम हुआ। इसके बाद वह मुन्दर की तरफ गई और उसकी जांच करने से उसे मालूम हुआ कि वह अभी तक बहुत गहरी बेहोशी में है। उसने अपनी कमर से लखलखा निकालना चाहा मगर देखा कि वह ऐयारी का बटुआ मौजूद नहीं है जिसे वह बराबर साथ रखती थी। लाचार उधर से हटी और महाराज शिवदत्त के पास पहुंची जो उसका हाल जानने के लिये बेचैन जान पड़ते थे। हाथ पकड़ कर उसे उन्होंने अपने पास बैठा लिया और बड़ी मुहब्बत के साथ पूछा, "अब तबियत कैसी है?"

गौहर०। सिर्फ सर में दर्द है जो जरूर बेहोशी के कारण है मगर मुझे इस बात का ताज्जुब है कि मैं यह किस जगह आ पहुंची और आप यहां कैसे दिखाई पड़ रहे हैं?

शिवदत्त०। मैं संक्षेप में सब बताये देता हूं। यह जगह शिवदत्तगढ़ के पास ही है। मैं शिकार खेलने दो रोज से इधर आया हुआ था। आज सुबह एक हरिन के पीछे घोड़ा छोड़े सरपट जा रहा था कि यकायक पांच छः आदमी दिखाई पड़े जो दो बड़ी गठड़ियां उठाये चले जा रहे थे। मुझे देख वे लोग कुछ घबड़ा से गये और छिपने की कोशिश करने लगे जिससे मुझे शक मालूम हुआ और मैं हरिन का खयाल छोड़ उनके पास चला गया और पूछने लगा कि तुम लोग कौन हो, किधर जा रहे हो, और इन गठड़ियों में क्या है? मेरे सवालों का वे लोग कुछ ठीक जवाब न दे सके जिस पर मैंने डपट कर उनसे कहा कि मालूम होता है तुम लोग चोर हो और इन गठड़ियों में चोरी का माल है। गठड़ियां खोल कर मुझे दिखलाओ कि क्या है? जब मैंने गठड़ी खोलने का नाम लिया तो वे सब बिगड़ खड़े हुए, गठड़ी खोल कर दिखाने से इन्कार किया बल्कि मेरा मुकाबला करने को तैयार हो गये। नतीजा यह निकला कि मुझे अपनी तलवार से काम लेना पड़ा दो आदमी जख्मी हो कर गिर पड़े

और उसी समय मेरे ये दोनों सवार (गुफा के बाहर वाले दोनों आदमियों को दिखा कर) भी आ पहुंचे जिन्हें देख उन लोगों की हिम्मत एक दम छूट गई और वे गठड़ियां छोड़ कर भाग गये। जब मैंने गठड़ियां खोल कर देखीं तो एक में तुम और एक में वह औरत (सुन्दर की तरफ इशारा करके) बंधी हुई दिखाई पड़ी जिसे देख मेरे ताज्जुब का हद्द न रहा। मैं तुम दोनों को इस गुफा में उठा लाया और होश में लाने की कोशिश करने लगा मगर न जाने किस तरह की बेहोशी तुम लोगों को दी गई थी कि मेरी कोई भी कोशिश कारगर न हुई लाचार यहां लेटा कर कुछ खाने पीने की तैयारी में लगा था कि तुम होश में आ गईं। अब बताओ कि वे लोग कौन थे जो तुम्हें उठाये लिये जा रहे थे और तुम उनके पञ्जे में क्यों कर फंस गईं ?

गौहर०। मैं खुद भी कुछ नहीं बता सकती कि वे लोग कौन थे। क्या उनमें से कोई गिरफ्तार भी हुआ ?

शिवदत्त०। अफसोस कि एक भी नहीं, सब के सब भाग गये। मगर यह तुम ताज्जुब की बात कह रही हो कि जिन्होंने तुम्हें गिरफ्तार किया उनको तुम खुद भी नहीं जानतीं। आखिर कुछ अन्दाज तो कर सकती हो!

गौहर०। (कुछ सोचती हुई) सिवाय इसके और कुछ नहीं कह सकती कि संभव है कि ये सब भूतनाथ के साथी हों।

शिव०। (चौंक कर) भूतनाथ के साथी !

गौहर०। हां।

शिव०। (ताज्जुब से) ऐसा शक तुम्हें क्योंकर होता है ?

गौहर०। इसलिए कि मैं भूतनाथ को सता कर लौट रही थी जब गिरफ्तार कर ली गई।

शिव०। यह तो और भी ताज्जुब की बात तुमने कही ! लेकिन अब इस तरह पहेली बुझाने से कोई नतीजा न निकलेगा। साफ साफ सब हाल कहो तो कुछ पता लगे। तुम तो प्रभाकरसिंह तथा इन्दुमति आदि को

गिरफ्तार करने का बीड़ा उठा मुझसे बिदा होकर जमानिया गई थीं। वहां जाकर फिर भूतनाथ के पीछे क्यों पड़ गईं !!

गौहर०। (हंस कर) आप ही ने न कहा था कि अगर भूतनाथ किसी तरह आपका मददगार बन जाय तो आपका काम खूब मजे में निकल सकता है।

शिव०। हां कहा तो था।

गौहर०। तो इसीलिये मैं भूतनाथ के पीछे पड़ी हुई थी और उसे आपकी तरफ करने का उद्योग कर रही थी।

शिव०। लेकिन देखता हूँ कि सो न करके उससे झगड़ा मोल ले बैठी ! आखिर क्या हुआ ! कुछ खुलासा सुनाओ भी तो !

गौहर०। खुलासा हाल तो बहुत लम्बा चौड़ा है जिसे पूरा पूरा कहने में घंटों लग जायंगे। इस समय संक्षेप में मैं आपको सुनाये देती हूँ कि जिस समय मैं जमानिया में थी मुझे भूतनाथ के एक गुप्त भेद का पता लग गया और मैं उसका पूरा हाल जानने की फिक्र में पड़ गई क्योंकि मुझे खयाल हुआ कि अगर मैं उस भेद का पूरा पता लगा सकूंगी तो भूतनाथ को अपने बस में करने का एक अच्छा औजार हम लोगों के हाथ में आ जायगा।

शिव०। तब क्या हुआ ? उस भेद का कुछ पता लगा !

गौहर०। हां बहुत कुछ (बेहोश सुन्दर की तरफ बता कर) भाग्यवश इनसे मेरी भेंट हो गई और मुझे उस संबंध में बहुत कुछ बातें मालूम हो गईं यहां तक कि मैं भूतनाथ से मिली और उस भेद की तरफ इशारा किया जिसे सुनते ही वह इतना डरा और घबराया कि बेहोश हो गया !

शिव०। (ताज्जुब से) ऐसा ! वह भेद क्या था ?

गौहर०। (मुस्कुरा कर) सो मैं अभी न बताऊंगी !

शिव०। ऐसा ! मगर सो क्यों ?

गौहर०। अभी उसका मौका नहीं आया है ! वक्त आने पर सब बता दूंगी।

शिव० । खैर खुशी तुम्हारी ! मै तुम्हारी मर्जी के खिलाफ उसे जानने पर जोर न दूँगा । खैर तब क्या हुआ ? जब तुम्हारी बातें सुन वह बेहोश हो गया तब तुमने क्या किया ?

गौहर० । उसी समय उसके कुछ साथी आ पहुंचे जिससे मुझे वहां से भागना पड़ा । लेकिन उसके बाद ही से दुश्मनों के हाथ पड़ गई और मुझे गुमान होता है कि वे लोग जिन्होंने मुझे और मेरी साथिन को पकड़ा अथवा जिसके हाथ से आपने हम लोगों को छुड़ाया जरूर भूतनाथ के वे आदमी ही होंगे ।

शिव० । सम्भव है ऐसा ही हो जब तक तुम मुझे पूरा पूरा हाल न बताओ तब तक मै कोई गुमान करने में असमर्थ हूं ।

गौहर० । मैं जरूर सब हाल पूरा पूरा और खुलासा आप सुनाऊँगी मगर इस समय नहीं मौके पर । अभी तो मुझे खुद सब हाल नहीं मालूम हुआ है मगर इन (बेहोश सुन्दर की तरफ बता कर) का साथ अगर कुछ समय तक और रहा तो सब कुछ मालूम हो जायगा ।

शिव० । यह कौन औरत है ?

गौहर० । यह भी एक ऐयारा है, कुछ ही दिन से मेरा इसका साथ हुआ है । यद्यपि कम उम्र है मगर बड़ी होशियार और चालाक है । इसका भी पूरा हाल जब मै बताऊंगी तो सुन कर आप ताज्जुब में पड़ जायँगे । मगर ताज्जुब है कि यह अभी तक होश में नहीं आई !

शिव० । मैने कहा न कि तुम दोनों को न जाने किस तरह की बेहोशी दी गई थी, मै घंटों कोशिश करके हार गया पर किसी तरह होश में ला न सका । मालूम होता है किसी अनाड़ी ऐयार की तैयार की हुई थी । ऐसी बेहोशी प्रायः बहुत नुकसान पहुंचाती है और कभी कभी तो दिमाग पर भी असर कर बैठती है, खुदा का शुक्र है कि तुम पर कोई बुरा असर न हुआ ।

गौहर० । सिर में तो मेरे भी बेहिसाब दर्द था और अभी तक भी

बना हुआ है, शायद स्नान वगैरह के बाद दूर हो, मगर इसे अब होश में लाना चाहिये।

शिवदत्त० (अपनी कमर से लखलखे की डिबिया निकाल और गौहर को दे कर) लो जरा इसे सुंघा कर देखो तो सही, शायद अब होश आ जाय।

गौहर ने डिबिया शिवदत्त के हाथ से ले ली और बेहोश मुन्दर के पास पहुँची। पहिले तो उसे हिला डुला कर होश में लाना चाहा पर जब देखा कि वह अभी भी कड़ी बेहोशी में पड़ी है तो लखलखे की डिबिया उसकी नाक से लगाई मगर बहुत देर तक सुंघाने पर भी कोई असर न पड़ा। यह देख उसने शिवदत्त की तरफ देखा और कहा, "यह तो अभी भी होश में नहीं आ रही है! न जाने किस तरह की बेहोशी में पड़ी है!"

शिवदत्त ने यह सुन जल से भरा एक लोटा उठा लिया और गौहर के पास आ उसके हाथ में दे कर कहा, "इसके छोटे मुंह पर दो मैं पंखे से हवा करता हूँ।"

ऐसा ही किया गया और दोनों की बहुत देर की कोशिश के बाद बेहोश मुन्दर ने हाथ पाँव हिलाये और कुछ होश में आने के लक्षण दिखाई देने लगे। शिवदत्त ने यह देख कहा, "इसे बाहर ले चलना चाहिये, साफ हवा लगने से शायद जल्दी होश में आ जायगी।"

दोनों मिल कर बेहोश मुन्दर को बाहर मैदान में ले आये। बार बार मुंह पर पानी छिड़कने, हवा करने और लखलखा सुंघाने से बहुत देर के बाद मुन्दर के हवास कुछ ठिकाने हुए, उसके बदन में हलकी कँपकपी आई, दो चार छींकें आईं और थोड़ी देर बाद उसने करवट बदली। गौहर उनके सिर्हाने बैठी हुई थी, उसने प्रेम से मुन्दर के माथे पर हाथ फेरते हुए पूछा, "बहिन अब तबीयत कैसी है! जरा होश में आओ, आँखें खोलो!" मुन्दर ने आँखें बन्द किये किये ही पूछा, "मैं कहाँ हूँ! तुम कौन हो!"

गौहर ने जवाब दिया, "मै तुम्हारी सखी गौहर हूं। तुम दोस्तों के बीच में हो। इन लोगों ने तुम्हें और हमें छुड़ाया है। जरा आंख खोलो और उठ के बैठो !!"

मुन्दर ने अपने सिर को हाथों से दबाते हुए कहा, "ओफ सिर फटा जाता है, कुछ याद नहीं पड़ता कि मै कौन हूं और कहा हू और तुम कौन हो ! गौहर, गौहर ! कौन गौहर !"

गौहर ने पुनः पानी का छीटा मुंह पर दिया जिससे मुन्दर ने आंखें खोल दीं और अपने चारो तरफ देखा। मगर मालूम होता था कि अभी भी उसकी आंखों में देखने और पहिचानने की शक्ति पूरी तरह से नहीं आई है। आँखें मलते हुए उसने चारो तरफ देखा और तब गौहर से पूछा, "यह कौन सी जगह है ! ये लोग कौन हैं ! तुम कौन हो !"

गौहर ने ताज्जुब से कहा, "हैं सखी, तुम मुझे नहीं पहिचानती ! यह तुम्हारी क्या हालत है ? मै गौहर हूं ! अभी कल तक हम लोगों का साथ रहा है ! क्या वह सब बातें तुम भूल गई ! उस भयानक पिशाच का हाल भूल गई जिसे गुफा में देखा था !!"

अपना सिर दोनों हाथों से दबाती हुई मुन्दर ने कहा, "ओफ सिर फटा जाता है ! गौहर ! मेरी सखी ? हाँ ठीक है ? याद आया ! पिशाच ! ओफ वह भयानक नरकंकाल ! ओफ !! यह मेरी क्या हालत हो गई है ?"

शिवदत्त ने झुक कर धीरे से गौहर के कान में कहा, "अनाड़ी ऐयारों की बनाई बेहोशी का यह असर होता है ! इसे जरा ले जाओ और उस नाले के किनारे टहलाओ, जरा चले फिरेगो और ठंढी ठंढी हवा लगेगी तो होश ठिकाने आवेगी नहीं तो घण्टों इसी हालत में रह जायगी। वह तो कहो ईश्वर ने बड़ी कृपा कर दी कि तुम पर इस बेहोशी का ऐसा बुरा असर नहीं हुआ !"

गौहर ने बेहोश मुन्दर को हाथ पकड़ कर उठाया और कहा, "उठो जरा घूमो फिर तो तुम्हारे हवास ठिकाने हो।" उसने कोई उज्र न किया

और हाथ का सहारा लेकर खड़ी हुई। गौहर उसे लिये सहारा देती और तरह तरह की बातें करती हुई उस नाले की तरफ ले चली जो वहां से थोड़ी ही दूरी पर बह रहा था और जिसके दोनों तरफ के सायेदार पेड़ों ने उस जगह को बड़ा ही रमणीक और गुञ्जान कर रक्खा था। दो चार चक्कर इधर से उधर देने और ठंडी हवा लगने से सुन्दर के होशहवास धीरे धीरे काबू में आने लगे वह एक जगह रुक कर खड़ी हो गई और गौर से गौहर की सूरत देख कर यह कहती हुई उसके गले से लिपट गई, 'आह मेरी प्यारी सखी! अब जाकर मैंने तुम्हें पहिचाना।'

दोनों औरतें एक साफ पत्थर की चट्टान पर बैठ गईं और बातें करने लगीं। सुन्दर ने कहा, 'ओफ! न जाने किस तरह की बेहोशी दी गई थी कि अभी तक सिर भन्ना रहा है और पुरानी बातें ख्याल नहीं आ रही हैं। तुम जरा फिर से बताओ तो सही कि हमलोग कहां तक साथ साथ थे और मैं कैसे बेहोश होकर वहां पहुंची!'

गौहर०। हमलोग काशीजी पहुँच कर भूतनाथ के मकान पर गई थीं और वहां उससे भेंट कर तथा उसे अपनी बनावटी शकलें दिखा बदहवास कर उसके बटुए में से कुछ जरूरी कागजात ले कर निकल भागी थीं। वहां से हमलोग अपने ठिकाने उस गुफा में पहुंचीं जहां मैंने अपना घोड़ा रक्खा था पर उस गुफा के अन्दर एक भयानक पिशाच दिखाई पड़ा जिसके बदन में सिर्फ हड्डियां ही हड्डियां थीं, उसे देख कर हमलोग भागीं तो किसी ने हमें पकड़ लिया और बेहोश कर दिया। उसके बाद का हाल मैंने इन लोगों की जुबानी सुना और वह यह है कि वे लोग हम लोगों को लिये भागे जा रहे थे कि शिवदत्तगढ़ के राजा शिवदत्तसिंह ने उन्हें देखा और उनके पंजे से हम लोगों को छुड़ा कर यहां लाये।

सुन्दर०। ठीक है, अब मुझे कुछ कुछ याद आने लगा है। वह भयानक पिशाच और उसकी डरावनी हंसी मुझे खयाल आती है। अच्छा तो ये लोग क्या महाराज शिवदत्त के आदमी हैं?

गौहर० । वे खास महाराज शिवदत्त थे जो तुम्हें पंखा कर रहे थे !

मुन्दर० । अच्छा ! वे ही राजा शिवदत्त हैं ! तुम्हारी इनको जान पहिचान क्यों कर और कब हुई !

गौहर० । (मुस्कुरा कर) क्या तुम भूल गईं ! इनका हाल तो मैंने तुम्हें उस लोहगढ़ी में सुनाया था ।

मुन्दर० । सुनाया था ? मुझे याद नहीं आता ? शायद धीरे धीरे याद आ जाय ! मगर न जाने मेरे दिमाग को क्या हो गया है ! कुछ काम ही नहीं कर रहा है ! तुम कुछ और हाल सुनाओ । भूतनाथ से हम लोगों ने क्या बातें की थीं ? क्या हम लोग किसी दूसरे की सूरत बन कर उससे मिले थे ?

गौहर० । हां हां, क्या तुम्हें याद नहीं ? तुम भुवनमोहिनी बनी थीं और मैंने कामेश्वर का रूप धरा ! (हंस कर) भूतनाथ हम लोगों को देख कर इतना डरा कि बेहोश हो गया !!

मुन्दर० । हां अब मुझे भी कुछ याद आने लगा है । शायद वहां किसी गली में हम लोगों की भूतनाथ से भेंट हुई थी !

गौहर० । हां हां गली में भेंट हुई थी और कुछ ही देर बाद वहां उसके कुछ साथी भी आ पहुंचे जिनके कारण हम लोगों को भागना पड़ा था नहीं तो और भी कुछ काम की चीजें हाथ लगतीं । अगर वे लोग न आ जाते तो उन थोड़े से कागजों के अलावा जो उसके बटुए से निकले थे और भी कुछ न कुछ हम लोग जरूर पाते ।

मुन्दर० । वे कागजात सब कहां रक्खे तुमने ? होशियारी से रक्खे हैं तो ?

गौहर० । हां हां, यह देखो इसी से तो मैंने उन्हें अपने बटुए में नहीं रक्खा कह कर गौहर ने अपनी चोली के अन्दर हाथ डाला और साथ ही उसके मुंह से ताज्जुब और घबराहट की एक चीख निकल पड़ी । मुन्दर ने पूछा, 'क्यों क्यों क्या हुआ ?' वह घबराये हुए गले से बोली, "वे कागज किसी ने निकाल लिये !!"

मुन्दर० । (घबरा कर) निकाल लिये ? तब तो बड़ा गजब हो गया ! जिसके लिये इतनी जान जोखिम की गई, इतने इतने खतरों में अपने को डाला गया वे ही कागज गायब ?

गौहर० । (परेशानी और घबराहट से) बेशक काम उन्हीं लोगों का है यह जिन्होंने हमें गिरफ्तार किया था । अफसोस यह बहुत ही बुरा हुआ । हम लोगों की सारी मेहनत बेकार गई ।

मुन्दर० । केवल मेहनत ही बेकार नहीं गई बल्कि अगर वे कागज किसी दूसरे के हाथ लग गये तो गजब हो जायगा ।

गौहर० । इसमें क्या शक है? अच्छा तुम्हारे पास जो कागज थे उन्हें तो देखो, सही सलामत हैं या नहीं ?

मुन्दर ने अपने कमर पे हाथ डाला और साथ ही चौंक कर बोली, "हैं ! मेरा बटुआ कहां गया ! तो क्या वे कागज भी गये ! हाय अब क्या होगा ! उसने अच्छी तरह तलाश किया मगर कहीं कोई चीज न मिली और वह बदहवास हो कर बैठ रही ।

थोड़ी देर तक दोनों अपनी इतनी मेहनत बरबाद जाने का अफसोस करती रहीं इसके बाद गौहर ने कहा, 'खैर अब अफसोस करने से कोई फायदा नहीं । इस वक्त तो उठो, जरूरी कामों से निपट कर स्नान वगैरह करें ताकि तबीयत कुछ ताजी हो, फिर सोचा जायगा कि अब क्या करना मुनासिब है । जहां तक मैं समझती हूं, यह काम भूतनाथ का है ।'

मुन्दर बोली, 'बेशक अफसोस करने का अब कोई नतीजा नहीं मगर मेरी महीनों की मेहनत अकारथ गई !!' गौहर ने दम दिलासा दे कर उसे शान्त किया और तब दोनों जरूरी कामों की फिक्र में लगीं ।

महाराज शिवदत्त इन दोनों की राह बेचैनी के साथ देख रहे थे जिस समय लगभग घण्टे भर के बाद ये दोनों उस जगह पहुँची तो उन्होंने पुकार कर कहा, 'आप लोग कहां चली गई थीं । राह देखते देखते मैं तो घबरा गया था कि कोई नई मुसीबत में तो नहीं पड़ गईं !' गौहर ने

जवाब दिया, 'नहीं मुसीबत में तो नहीं पड़ा मगर एक बहुत बुरी बात हो गई।' शिवदत्त ने चौंक कर पूछा, 'सो क्या ?'

गौहर०। कई कागजात जो बहुत जरूरी थे और जिन्हें हम लोग बड़े एहतियात से छिपा कर अपने पास रक्खे हुई थीं गायब हो गये हैं। मालूम होता है कि किसी ने बेहोशी की हालत में हम लोगों की तलाशी लेकर निकाल लिया है।

शिवदत्त०। ऐसा हुआ तो कोई ताज्जुब नहीं क्योंकि वे लोग जरूर ऐयार थे जिनके कब्जे से मैंने तुम लोगों को छुड़ाया था, मगर उन लोगों ने बेहोश की हालत में कोई चीज निकाल ली तो ताज्जुब ही क्या है।

गौहर०। हम लोगों के बटुए भी नहीं दिखाई पड़ रहे हैं। आप ने तो नहीं रक्खा है ?

शिव०। नहीं, मुझे उनकी भला क्या खबर ? वे भी उन्हीं लोगों के हाथ लग गये मालूम होता है। खैर अब इस वक्त यह गोश्त तैयार हो रहा है खाओ और जरा सा आराम करो, फिर देखा जायगा। अगर उन कागजों का मिलना निहायत जरूरी है तो मैं अपना एक ऐयार तुम्हारी मदद के लिए भेज दूंगा। तुम लोगों की कोशिश से उनका पता लग जाना कोई बड़ी बात नहीं जिन्होंने तुमको गिरफ्तार किया था, क्योंकि तुम्हारी चालाकी मैं खूब जानता हूँ। तुम ऐयारी में मामूली ऐयारों की नाक काट सकती हो, और ईश्वर की दया से तुम्हारी साथिन भी कम नहीं जान पड़तीं!

गौहर और सुन्दर अपनी तारीफ सुन मुस्करा उठीं और इसके बाद तीनों आदमी उन तरह तरह की लजीज़ खाने की चीजों पर हाथ साफ करने लगे जिसे राजा शिवदत्त के आदमियों ने तैयार किया था। शिवदत्त ने अपनी लच्छेदार बातों के जाल में सुन्दर को भी इस तरह फंसा लिया कि कुछ ही देर बाद वह भी पूरी तरह हिल मिल गई।

भोजन के बाद शिवदत्त ने कहा, 'अब थोड़ी देर आराम करके तब कोई काम किया जायगा।' पेड़ के नीचे मामूली बिछावन बिछा हुआ था

जिस पर एक तरफ वह और दूसरी तरफ गौहर तथा मुन्दर लेट गईं। नाले के किनारे की तरी पहुँचाने वाली ठंढी हवा आ रही थी जिसने सभों की आंखें बन्द करनी शुरू कर दीं और थोड़ी ही देर बाद शिवदत्त तो नहीं मगर गौहर और मुन्दर मीठी नींद की गोद में हिलोरे लेने लगीं।

इन लोगों से थोड़ी दूर हट कर एक दूसरे घने पेड़ की आड़ में शिवदत्त के बाकी साथी पड़े गप शप कर रहे थे। गौहर और मुन्दर को गहरी नींद में मस्त देख शिवदत्त उठ खड़ा हुआ और अपने साथियों के पास जा पहुंचा। इसे देख वे सब के सब उठ बैठे और बैठने के लिये जगह करते हुए बोले—'क्या वे दोनों सो गईं ?'

शिवदत्त ने हंसते हुए कहा, "हां गौहर पूरी तरह बेहोश हो गई मगर उसके साथ साथ तुम्हारा 'बलदेव' भी गाफिल हो गया है। अब एक आदमी जाओ और उसे होश में ला कर यहां बुला लाओ! गौहर तो मुझे विश्वास है बिना होश में लाये जल्दी न उठेगी फिर उसकी चौकसी का इन्तजाम कर देना।"

एक आदमी ने कहा, "जी कभी नहीं, जो बेहोशी मैंने दी है वह घण्टों के लिए काफी है!" शिवदत्त ने कहा, "तो बस ठीक है, तुम्हीं चले जाओ और बलदेव को ले आओ। हां अब जरा वे चीजें तो मुझे फिर से दिखाओ जो इन दोनों कम्बख्तों के पास से हम लोगों को मिली हैं!"

एक आदमी तो गौहर और मुन्दर की तरफ चला गया और दूसरे ने उठ कर एक गठड़ी शिवदत्त के आगे ला रक्खी जिसमें कई चीजें बंधी हुई थीं। शिवदत्त ने उसे खोलने का इशारा किया और इसी समय मुन्दर को लिए हुए वह आदमी भी वहां आ पहुँचा। शिवदत्त ने उसकी तरफ देख कर कहा, "यहां बैठो, अपनी सूरत साफ करो, और बताओ कि तुमने उस धूर्त गौहर के पेट से क्या क्या बातें निकालीं।"

एक साथी ने गीला अंगोछा आगे बढ़ा दिया जिससे मुंह पोंछते ही मुन्दर की शकल एक दम बदल गई और नाजुक खूबसूरत औरत की जगह

एक कम उम्र ऐयार की सूरत निकल पड़ी। एक दूसरा अँगोछा लेकर शिवदत्त ने अपना मुंह भी साफ किया और अब शिवदत्त की जगह साफ भूतनाथ ऐयार की सूरत दिखाई पड़ने लगी!

हमारे पाठक तो समझ ही गये होंगे कि यह भूतनाथ ही की चालाकी थी जिसने शिवदत्त बन कर खुदाबख्श वगैरह के हाथ से मुन्दर और गौहर को छुड़ा लिया था और उनका भेद जानने की फिक्र में पड़ा हुआ था। भूतनाथ को इन दोनों का पता कैसे लगा यह भी हम थोड़े में बताये देते हैं। जब खुदाबख्श और उसके साथी बेहोश गौहर और मुन्दर को लेकर शिवदत्तगढ़ की तरफ भाग गये* तो भूतनाथ ने उनका पीछा करने का विचार छोड़ दिया और इन्द्रदेव के कैलाश भवन की तरफ चल पड़ा मगर अपने साथी के जिम्मे यह काम जरूर करता गया कि वह इस बात का पता लगावे कि वे लोग कौन हैं और दोनों बेहोशों को लेकर किधर जाते हैं। जिस समय भूतनाथ इन्द्रदेव से मिल कर वापस लौट रहा था उस समय उसके उस साथी ने उसे सब बातों की खबर दी और उसी समय से भूतनाथ ने अपना जाल फैलाना शुरू किया जिसका यह नतीजा हुआ। अस्तु, अब हम आगे का हाल लिखते हैं।

भूतनाथ ने अपने शागिर्द बलदेव की तरफ देख कर कहा, "क्यों बलदेव, उससे क्या क्या पता लगा?" बलदेव बोला, 'गुरुजी बड़ी बड़ी बातें मालूम हुईं! आपकी चालाकी खूब काम कर गई! गौहर यही समझी कि सचमुच कड़ी बेहोशी ने मेरा दिमाग खराब कर दिया और मुझे पिछला कोई भी हाल याद नहीं है। मैंने भी वह भड़ी दी कि उसने धीरे धीरे सभी कुछ उगल दिया।'

भूत०। (खुश होकर) हां क्या क्या मालूम हुआ?

बल०। पहिली बात तो यह कि आपका कोई बहुत पुराना भेद जिसके बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता इन दोनों को मालूम हो गया है। उसी

* देखिये भूतनाथ तेरहवां हिस्सा सातवां बयान।

का निश्चय करने और कुछ अधिक जानने के लिए गौहर 'कामेश्वर' बनी थी और मुन्दर ने 'भुवनमोहिनी' का रूप धरा था।

यह एक ऐसी बात थी कि जिसने एक बार पुनः भूतनाथ को दहला दिया और किसी पुराने पाप की याद ने उसके दिल के अन्दर पहुँच कर उसके कलेजे को जोर से ऐंठ दिया। मगर इस समय अपने ऐयारों और शागिर्दों के सामने उसने कोशिश करके अपने को बहुत सम्हाला और चेहरे से कुछ प्रगट न होने देकर कहा, 'कामेश्वर और भुवनमोहिनी! मगर इन दोनों को उनका भेद क्योंकर मालूम हुआ?'

बलदेव०। जमानिया में रहने वाले एक नौजवान को मुन्दर ने अपने ऊपर आशिक बनाया और उसी से यह सब बातें जानीं!

भूत०। उस नौजवान का नाम?

बलदेव०। उसका नाम श्रीविलास है और वह किसी चंचलदास का भतीजा है!

"चंचलदास" इस नाम का न जाने क्या असर भूतनाथ पर पड़ा कि उसके चेहरे से फिर घबड़ाहट और परेशानी टपकने लगी। बड़ी कोशिश करके उसने पुनः अपने को सम्हाला और उस गठड़ी की देख भाल करने लगा जिसके अन्दर गौहर और मुन्दर की तलाशी लेने पर मिली हुई चीजें थीं।

कागजों के छोटे बड़े कई मुट्ठे, कितनी ही चीठियां, कुछ डिबियाएँ, एक पुराना खंजर, दो या तीन अंगूठियाँ जिनके साथ पुरजे बंधे हुए थे, और कुछ कपड़ों के इलावे एक काठ का छोटा बक्स भी निकला। भूतनाथ सरसरी निगाह से उन चीजों को देख गया और इन्हीं में उसने वे कागज़ात भी पाये जो गौहर और मुन्दर उसे बेहोश करके ले भागी थीं। कागजों के मुट्ठों और उन अंगूठियों के साथ बँधे पुरजों को भूतनाथ ने कुछ गौर के साथ देखा और उनसे प्रगट होने वाले किसी भेद को याद कर उसका कलेजा पुनः धड़क उठा। फिर भी अपने को काबू में कर उसमें से

कुछ जरूरी चीजें उसने अपने बटुये के हवाले कीं और तब उस काठ बक्स की तरफ झुका जो उन चीजों के साथ निकला था। भूतनाथ ने अपने एक शागिर्द की तरफ उसे खोलने का इशारा किया। मामूली ही कोशिश में वह बक्स खुल गया और उसके अन्दर से पीतल की एक छोटी सन्दूकड़ी निकल पड़ी जिस पर एक निगाह पड़ते ही भूतनाथ उसे पहिचान गया। बहुत कोशिश करके रोकने पर भी उसके मुंह से एक चीख निकल पड़ी और वह कुछ देर के लिये बदहवास हो गया।

भूतनाथ के शागिर्द अपने उस्ताद को यह हालत देख बड़े ताज्जुब में पड़ गये मगर डर के मारे किसी की हिम्मत न पड़ी कि उससे कुछ पूछें या उसकी बदहवासी दूर करने का कोई उपाय करें। सब लोग कुछ देर तक चुपचाप बैठे कभी उन चीज़ों को और कभी भूतनाथ की हालत को देखते रहे। थोड़ी देर बाद धीरे धीरे भूतनाथ के हवास ठिकाने हुए और उसने एक शागिर्द की तरफ देख इशारे से पानी माँगा। वह लोटे में ठंढा जल ले आया जिसके कई छींटें आँख पर देने और कुछ पीने के बाद उसके होशहवास ठिकाने हुए और वह पुनः उठ कर बैठ गया। वह सन्दूकड़ी उसने उठा ली और गौर के साथ उलट पुलट कर चारो तरफ से देखने लगा।

यह छोटी सन्दूकड़ी जो किसी पुराने जमाने की होने पर भी साफ और चमकदार थी कुछ विचित्र ढंग की बनी हुई थी। किसी तरफ कहीं भी कोई जोड़ का निशान इसमें दिखाई न पड़ता था और न इसी बात का कुछ पता लगता था कि यह किस तरह खुलेगी परन्तु भूतनाथ शायद इसको खोलने की तर्कीब जानता था क्योंकि कुछ देर उलट पुलट करने के बाद उसने एक खास जगह पर हाथ रख न जाने क्या तर्कीब की कि एक हलकी आवाज के साथ सन्दूकड़ी का एक तरफ का हिस्सा खुल गया और उसकी भीतर की चीजें दिखाई पड़ने लगीं।

न जाने उस सन्दूकड़ी के भीतर भूतनाथ को क्या दिखाई पड़ा कि

उसकी हालत फिर खराब हो गई। उसका चेहरा पीला पड़ गया, हवास बिगड़ गये और कलेजा धड़कने लगा। मगर अपने शागिर्दों से वह अपनी हालत छिपाया न चाहता तो शायद पुनः चिल्ला उठता परन्तु बड़ी कोशिश करके उसने फिर अपने को सम्हाला, फिर भी उस संदूकड़ी के अन्दर पुनः झाँकने की उसकी हिम्मत न पड़ी, उसने उसका ढकना बन्द कर दिया और अपनी आंखें बन्द कर लम्बी लम्बी सांसें लेने लगा।

दूसरा बयान

जब उस तिलस्मी छत ने प्रभाकरसिंह को गिरफ्तार कर लिया और ऊपर की तरफ उठी उस समय प्रभाकरसिंह के मन में यह बात चक्कर मारने लगी—'अगर ऊंचे जा कर इस छत ने मेरे हाथ छोड़ दिये तो मैं इतने जोर से नीचे गिरूंगा कि मेरी हड्डी पसली का भी पता न लगेगा।' अपनी मुसीबत वे अच्छी तरह समझ सकते थे मगर फिर भी वे घबड़ा नहीं गये थे बल्कि इस बात को सोच रहे थे कि इस आफत से छूटने की क्या तर्कीब हो सकती है।

कुछ देर तक तो वे लाचारी के साथ हाथों के सहारे झूलते रहे। इसके बाद उन्हें खयाल हुआ कि जिस तरह उनकी हथेलियाँ छत के साथ चिपक गई हैं उसी तरह अगर कोई और हिस्सा अपने बदन का वे छत के साथ लगावें तो क्या वह भी चिपक जायगा? यह सोचते ही उन्होंने अपने दोनों पैर ऊपर को उछाले और दो ही तीन दफे की कोशिश में उन्हें छत तक पहुंचा दिया। ताज्जुब और प्रसन्नता के साथ उन्होंने देखा कि उनके पैर भी उस छत के साथ चिपक गये जैसे उनकी हथेलियाँ चिपकी हुई थीं। उनके मुंह से सन्तोष की एक सांस निकली और उनके हाथों पर पड़ने वाला भयानक भार कुछ कम हुआ क्योंकि अब उनके बदन का बोझ हाथ और पावों पर बराबर बंट गया था।

थोड़ी देर ठहर कर उन्होंने फिर उद्योग किया और अपनी कोहनियाँ

छत से चिपका दीं। इसके बाद धीरे धीरे करके घुटने, जंघा, कमर, पेट और तब छाती भी छत के साथ चिपका दी और अब उनका समूचा शरीर उस छत के साथ इस तरह चिपक गया मानो किसी ने गोंद से सटा दिया हो।

समूचे शरीर का छत से चिपकना था कि एक हलकी सी आवाज आई और इसके साथ ही वह छत धीरे-धीरे करवट बदलने लगी। उसका एक तरफ का हिस्सा ऊँचा होने लगा और थोड़ी ही देर के बाद वह एक दम उलट गई अर्थात् अब प्रभाकर सीधे हो कर छत के ऊपर और छत उनके नीचे की तरफ हो गई। इसी के साथ साथ शक्ति भी दूर हो गई। वे उठ कर बैठ गये और दो एक अंगड़ाई ले कर बदन की अकड़ाहट को दूर करने बाद उठ कर खड़े हो गये।

अब जिस तरह वे थे वह एक कमरा था जिसकी लम्बाई चौड़ाई तो नीचे के शीशे वाले कमरे के बराबर ही थी मगर ऊंचाई पंद्रह बीस हाथ से किसी तरह कम न होगी। कमरे की दीवारें किसी के चमकदार साफ पदार्थ की बनी हुई थीं जो देखने में तो शीशे की तरह मालूम होता था पर वास्तव में किसी तरह का पालिश था। पुरसे भर की ऊंचाई तक तो चारो तरफ कहीं भी कोई खिड़की, दर्वाजा या रास्ता दिखाई नहीं पड़ता था और इतनी दूर तक की सब दीवारें चारो तरफ से एक दम साफ थीं मगर इसके ऊपर जा कर हर तरफ की दीवार में कई बड़ी बड़ी खिड़कियां दिखाई पड़ रही थीं जिसमें से कई खुली हुई भी थीं। इसी ऊंचाई पर लगभग दो हाथ चौड़ा एक बरामदा इन खिड़कियों के साथ साथ कमरे के चारो तरफ घूम गया था और ये खिड़कियां या दर्वाजे मानो उसी बरामदे में आने जाने के लिए थे।

प्रभाकरसिंह के मन में यह ख्याल दौड़ गया कि अगर मैं उस बरामदे तक पहुँच सकूं तो जरूर उन दर्वाजों में से किसी की राह इस जगह के बाहर हो जा सकूंगा। यह सोचते ही उन्होंने अपने कपड़े दुरुस्त किये,

तिलिस्मी किताब और डण्डा सम्हाला, दुपट्टा कमर में लपेटा और जोर जोर उछले तो एक दम बरामदे को जा पकड़ा। थोड़ी ही मेहनत में इन्होंने अपने को बरामदे के ऊपर कर लिया और वहां खड़े हो कर चारो तरफ की कैफियत देखने लगे। सब से पहिली बात जो उन्हें दिखाई पड़ी, यह थी कि उनके बरामदे तक पहुंचते ही नीचे की वह छत या जिसने उलट कर उन्हें छत के ऊपर किया पुनः करवट बदलने लगी और थोड़ी ही देर में एक दम पलट कर पहिले की तरह हो गई अर्थात् वह शीशा वाला हिस्सा जिसके साथ चिपक कर वे यहां तक पहुंचे थे पुनः नीचे की तरफ घूम कर इनकी आंखों की ओट हो गया। इसके बाद ही यह भी देखा कि वह छत धीरे धीरे नीचे को उतरने लगी। एक हाथ, दो हाथ, चार हाथ, धीरे धीरे वह पचीसों हाथ नीचे को उतर गई और अब प्रभाकरसिंह को ऐसा मालूम होने लगा मानों वे किसी कूएं के ऊपर खड़े हो कर नीचे को झांक रहे हों जिसमें देखने से झांई आती थी।

यह हालत देख प्रभाकरसिंह के मुंह से निकला, "बस मालूम हो गया! केवल यहां तक मुझे पहुंचाने के लिए ही इतना बखेड़ा किया गया है! तिलिस्म बनाने वाले भी कैसे दिल्लगीबाज हैं!! अगर तिलिस्म तोड़ने के लिए मेरा यहां तक आना जरूरी ही था तो क्या नीचे के कमरे से यहां तक सीढ़ियां नहीं बनाई जा सकती थीं? व्यर्थ को इतना बखेड़ा जान जोखिम और मुसीबत का सामना करने से फायदा।"

यकायक किसी ने उनकी बात के जवाब में कहा, "अगर यही खयाल था तो तुम्हें तिलिस्म में आने की जरूरत ही क्या थी!!

प्रभाकरसिंह चौंक पड़े। ऐसी जगह पर उनकी बात का इस तरह जवाब देने वाला कौन? अगर किसी आदमी ने यह बात कही है तो वह इनका दोस्त है या दुश्मन और वह यहां पहुँचा ही क्योंकर?" वे तेजी के साथ घूम कर अपने चारो तरफ देखने लगे।

हम ऊपर कह आये हैं कि यह बरामदा उस कमरे के चारो तरफ

घूमा हुआ था और इसमें हर तरफ कई खिड़की या दर्वाजे पड़ते थे जिससे खुले और कई बन्द थे प्रभाकरसिंह को अपने पीछे की तरफ एक दर्वाजा दिखाई पड़ा जिसके पल्ले मामूली तरह पर बन्द थे जो इनके हाथ का धक्का पाते ही खुल गये। दर्वाजा खुलने के साथ ही ऐसा मालूम हुआ मानो उसकी आड़ में कोई खड़ा था जो दर्वाजा खुलते ही एक तरफ को हट कर गायब हो गया। लपक कर ये अन्दर घुसे। एक छोटे कमरे में इन्होंने अपने को पाया मगर यहां कोई न था। और भी ताज्जुब की बात यह थी कि उस कमरे में सिवाय उस दर्वाजे के जिसकी राह प्रभाकरसिंह उसके भीतर पहुँचे थे, और कोई भी रास्ता ऐसा दिखाई न पड़ता था जिसके जरिये उसके अन्दर का आदमी कहीं दूसरी तरफ निकल जा सकता हो।

उस छोटे से कमरे के अन्दर किसी को खोजने में देर ही क्या लग सकती थी ? कुछ ही सायत में प्रभाकरसिंह को विश्वास कर लेना पड़ा कि या तो वहाँ कोई आदमी नहीं था और जो झलक उन्होंने देखी वह केवल उनकी आँखों का भ्रम था और या इस जगह से किसी दूसरी तरफ को निकल जाने का कोई गुप्त रास्ता है। इस दूसरी बात पर ही उनका खयाल ज्यादा जमा क्योंकि उनके कान में पड़ने वाली आवाज यह विश्वास नहीं करने देती थी कि वहाँ पर कोई आदमी था ही नहीं। अगर कोई होता ही नहीं तो वह जवाब क्यों कर मिलता ? अस्तु वे चारो तरफ घूम घूम कर किसी छिपे हुए दर्वाजे या रास्ते को तलाश करने लगे।

छोटी कोठड़ी की दीवार के साथ साथ चारो तरफ प्रभाकरसिंह घूमने लगे। जहां तक हाथ जाता था वहां तक की दीवार को वे अपने तिलिस्मी डंडे से अच्छी तरह ठोकते भी जाते थे। जिस समय वे बाईं तरफ की दीवार के अंत में पहुंचे तो एक जगह पहुंचते ही उन्हें रुक जाना पड़ा क्योंकि उस जगह की दीवार ठोकने से उन्हें कुछ पोली होने का संदेह हुआ। उन्होंने हाथ से उस जगह जोर-जोर से दबाना शुरू किया और

उनका उद्योग सफल भी हुआ अर्थात् एक जगह पर जरा सा जोर लगाते ही दीवार का एक छोटा टुकड़ा इस तरह पीछे को हट गया मानो कब्जे पर हो। लगभग हाथ भर का एक छेद दीवार में जिसकी राह देखने से प्रभाकरसिंह को दूसरी तरफ एक विचित्र दृश्य दिखाई पड़ा।

एक बहुत बड़ा कमरा तरह-तरह के ऐश आराम के सामानों से बड़ी ही खूबसूरती के साथ सजा हुआ था। छत के साथ खूबसूरत झाड़ फानूस लटक रहे थे और दीवारगीरें भी बहुतायत से लगी हुई थीं। चारो तरफ की दीवारों के साथ जर्द गुलाबी चमकदार रौगन किया हुआ था, तरह तरह की छोटी बड़ी तस्वीरें खूबसूरत चौखटों में लगी थी तथा बीच-बीच में कद्दे आदम शीशे अपनी बहार दिखा रहे थे। जमीन पर सुफेद फर्श बिछा हुआ था जिसके एक हिस्से में तो मोटा मखमली गद्दा लगा हुआ था जिस पर कई तकिये कारचोपी के काम के पड़े थे और दूसरे हिस्से में एक सुन्दर गंगा जमुनी काम की मसहरी बिछी हुई थी जिसके पर्दे गिरे हुए थे। एक तरफ संगमर्मर की चौकी पर पीने के लिये सुनहरी सुराही में जल, सोने के कई गिलास और कटोरे तथा नीचे चांदी का एक आफताबा पड़ा हुआ था। गरज के यह किसी मनचले रईस का आरामगाह मालूम पड़ रहा था।

इन सब सामानों को देखते हुए प्रभाकरसिंह की निगाह घूमती घूमती उस तरफ पहुंची जिधर इस कमरे में आने का दर्वाजा था। यह दर्वाजा इस समय भिड़काया हुआ था और उसके सामने एक बारीक रेशमी पर्दा पड़ा हुआ था मगर उस तरफ निगाह पड़ते ही प्रभाकरसिंह को मालूम हो गया कि कोई दर्वाजा खोल कमरे के अन्दर आना चाहता है क्योंकि एक पल्ला खुल रहा था।

पल्ला बिल्कुल खुल गया और उसकी राह एक कमसिन और नाजुक औरत ने कमरे के भीतर प्रवेश किया। चेहरा दूसरी तरफ घूमा हुआ होने के कारण इसकी सूरत पूरी तो दिखाई नहीं पड़ती थी पर जो कुछ हिस्सा

दिखाई पड़ रहा था वह उसे एक बहुत ही खूबसूरत औरत बताता था, साथ ही उसकी पौशाक कह रही थी कि वह या तो किसी अच्छे खानदान की औरत है और या फिर किसी राजा महाराजा के महल की रानियों की सखी सहेली।

कमरे के अन्दर घुस वह औरत उस पलँगड़ी की तरफ बढ़ी और पास पहुंच कर उसका जालीदार पर्दा उसने हटाया। उस समय प्रभाकरसिंह को उस पर लेटी और शायद गहरी नींद में सोई एक दूसरी औरत और दिखाई पड़ी जिसका चेहरा प्रभाकरसिंह ही की तरफ घूमा होने के कारण उसकी सूरत अच्छी तरह दिखाई पड़ गई। वह भी एक बहुत ही खूबसूरत कमसिन औरत थी। इस नई आई हुई ने यकायक पास जा कर अपने हाथों से उसकी आंखें दबा दीं और तब उसे हिला कर जगाया। चौंक कर वह सोई हुई औरत नींद से जाग गई और उसी समय इस औरत ने कहा, "पहचाने तो कौन है!" "तुझ शैतान के अलावे और हो ही कौन सकता है!" कह कर वह लेटी हुई औरत इसका हाथ हटा कर उठ बैठी और तब दोनों एक दूसरे की बाहों में चिमट गई।

कुछ देर बाद वे दोनों अलग हुईं और आकर उस मखमली गद्दे पर बैठ गईं। दोनों में कुछ बातें होने लगीं जो यद्यपि जोर से नहीं होती थीं फिर भी फासला अधिक न होने के कारण प्रभाकरसिंह उसे सुन सकते थे।

नई आने वाली औरत ने कहा, "ले सखी, आज मेरा मुँह मीठा कर। मैं तेरे लिये एक खुशखबरी लेकर आई हूं।"

दूसरी ने चौंक कर पूछा, "कौन सी खुशखबरी सखी!"

पहिली०। ले जिसके गम में तू सूखी जा रही थी, वह आ पहुँचा!

दूसरी०। (ताज्जुब से) कौन? कौन?

पहिली०। प्रभाकरसिंह!

दूसरी०। हैं वे आ गये! क्या तू सच कह रही है?

पहिली० । भला मैं तुमसे झूठ कहूंगी ? मै अभी अभी उन्हें देखती आ रही हूं । शीश महल की छत ने अभी अभी उन्हें यहां पहुंचाया है ।

दूसरी० । (आकाश की तरफ आखें और हाथ उठा कर) भगवान ! क्या सचमुच तू ने मेरी प्रार्थना सुन ली !! क्या अब सचमुच मेरे दिल की मुराद पूरी होगी ! (अपनी सहेली की तरफ देख कर) तूने उन्हें कहां देखा ?

पहिली० । इसी बगल वाले कमरे में ।

दूसरी० । अच्छा ! तब तो हम लोगों को उनकी अगवानी की तैय्यारी करनी चाहिये । न जाने कब वे यहां आ पहुँचें !!

पहिली० । यही सोच कर तो मै तुझे जगाने आ गई ।

दूसरा० । तू ने बहुत अच्छा किया !

पहिली० । सबसे पहिले उनके भोजन का इन्तजाम करना चाहिये और तब उस बात की फिक्र होनी चाहिये जिसके बारे में कल हम लोगों ने बातें की थीं ।

दूसरी० । बेशक, तब फिर यहां रुकने का वक्त नहीं है, उठना चाहिये ।

दोनों उठ खड़ी हुई । पहिले तो उन्होंने उस कमरे की अच्छी तरह सफाई की और तब कुछ बातें करती हुई कमरे के बाहर निकल गईं ।

प्रभाकरसिंह हैरान थे कि यह मामला क्या है और यह औरतें कौन हैं ? पहिले तो उन्होंने समझा कि शायद ये दोनों उनके जान पहिचान या रिश्तेदारी की कोई औरतें हों पर फिर तुरन्त ही यह सोच कर उनका खयाल बदल गया कि इस भयानक तिलिस्म में जहां चिड़िया भी पर नहीं मार सकती ऐसों का आना कहां से हो सकता है । बहुत गौर किया मगर जब कुछ समझ में न आया तो उन्होंने अपनी तिलिस्मी किताब निकाली और खोल कर पढ़ने लगे । यह लिखा पाया :—

"इनके फेर में मत पड़ो । यह धोखा है । दीवार में जिस जगह कमल का फूल बना देखो, उस जगह अंगूठे से दबाओ । उस कमरे में जाने का

दर्वाजा निकल आवेगा। बगल के कमरे में पहुँचो और वहां जो कुछ सामान दिखाई पड़े उन सभों में से किसी को भी न छूते हुए इन औरतों को पकड़ने की कोशिश करो। जैसे ही वे आ जायं अपने तिलस्मी डंडे से उन दोनों के सिर को छू दो और देखो क्या होता है। खबरदार! उस कमरे की किसी चीज के साथ तुम्हारा बदन छूने न पावे नहीं आफत हो जायगी !!"

प्रभाकरसिंह ने तिलिस्मी किताब बंद करके रखी और उस बगल वाले कमरे में जाने की तैयारी की। जैसा कि किताब में लिखा था, कमल के फूल को दबाते ही एक रास्ता निकल आया, निकल क्या आया, जिस राह से अब तक यह सब हाल प्रभाकरसिंह देख रहे थे वही कुछ और बढ़ कर इतना बड़ा हो गया कि आदमी उसके अन्दर जा सके। अपनी चीजें सम्हाल कर प्रभाकरसिंह उस राह से निकल दूसरे कमरे में जा पहुंचे।

इस कमरे में जो कुछ सामान था उसे तो प्रभाकरसिंह पहिले ही देख चुके थे मगर उसके अलावे वहां कुछ चीजें ऐसी भी थीं जो आड़ में रहने के कारण उन्हें दिखाई न पड़ सकी थीं। इनमें से एक तो कमरे की उस तरफ वाली दीवार के साथ साथ खड़ी, जो उसी तरफ थी जिधर से अभी प्रभाकरसिंह इस कमरे में आये थे, किसी धातु की बनी कद आदम पुतलियों की एक कतार थी जो सभी इस सफाई से बनी हुई थीं कि पहिले पहिल तो प्रभाकरसिंह यही समझे कि ये सब जीते जागते आदमी हैं पर जब उनमें से किसी में कोई भी हरकत न देखी तो उन्हें शक हुआ और पास जा कर बहुत गौर से देखने पर विश्वास हुआ कि ये जीते जागते मनुष्य नहीं बल्कि पुतलियां हैं। ये पुतलियां गिनती में दस थीं और इनमें औरत मर्द और बच्चे सभी तरह की शकलें बनी हुई थीं। इनके अलावे एक दूसरी चीज जो उन्हें दिखाई पड़ी वह एक लोहे का कटघरा था जो इस कमरे के एक कोने में बना हुआ था और जिसके अन्दर एक भयानक और खूंखार शेर खड़ा अपनी भयानक आंखों से इनकी तरफ देख रहा

था इसे देख कर एक दफे तो प्रभाकरसिंह चिहुँक पड़े मगर जब गौर से देखा तो मालूम हुआ कि उन पुतलियों की तरह यह शेर भी बनावटी ही है असली नहीं। अब प्रभाकरसिंह कुछ निश्चिन्त हुए और एक तरफ खड़े हो कर सोचने लगे कि किस तरह उन दोनों औरतों को गिरफ्तार किया जाय।

पहले तो उनका विचार हुआ कि जिस दर्वाजे को राह वे दोनों इस कमरे के बाहर गईहैं उसी की राह वे भी कमरे के बाहर हो जायं और देखें कि वे किधर गई हैं मगर तुरत ही उन्हे खयाल हुआ कि ऐसा करने के लिये उन्हें उस पर्दे को हटाना पड़ेगा जो दर्वाजे पर पड़ा हुआ है और तिलिस्मी किताब में इस कमरे को कोई भी चीज़ छूने को सख्त मनाही की गई है अस्तु वे रुक गये और सोचने लगे फिर क्या किया जाय। मगर इन्हें ज़ादा तरद्दुद करना न पड़ा क्योंकि उसी समय कमरे के बाहर कुछ आहट मालूम पड़ी। वे घूम कर एक तरफ हो गये और उसी समय उन्हीं दोनों औरतों ने उस कमरे में प्रवेश किया।

कमरे में पहुँचते ही उन औरतों की निगाह प्रभाकरसिंह पर पड़ी। चेहरे से खुशी टपकने लगी और वे दोनों ही प्रभाकरसिंह के सामने घुटने टेक कर खड़ी हो गईं। बड़े अदब के साथ झुक कर उन्होंने प्रभाकरसिंह को हाथ जोड़ा और तब एक ने मीठे स्वर में कहा, "परमात्मा को लाखों धन्यवाद है जिसकी कृपा से आज हम लोगों की मुराद पूरी हुई क्योंकि अगर हम दोनों धोखा नहीं खाती हैं तो इस तिलिस्म को तोड़ने वाले आप ही हैं और आप ही का नाम राजा प्रभाकरसिंह है।"

प्रभाकरसिंह अपना तिलिस्मी डंडा सम्हाल कर आगे बढना ही चाहते थे पर इनकी यह बात सुन रुक गये और बोले, "हाँ मेरा नाम प्रभाकरसिंह तो जरूर है मगर तुम दोनों कौन हो?"

वह औरत यह सुन बोली, "हम दोनों किस्मत की मारी और दुश्मनों की सताई हुई बेबस औरतें हैं जो बरसों से इस तिलिस्म में कैद अपनी जिन्दगी के दिन काट रही हैं।"

प्रभाकर० । तुम्हें किसने यहां कैद किया और तुम किसके घर की औरतें हो ?

औरत० । हम दोनों महाराज गिरधरसिंह के रिश्तेदारों में से हैं और हमें गिरफ्तार करके यहां कैद करने वाली भी दो औरतें ही हैं जो न जाने किस जन्म का बैर हमसे निकाल रहीं हैं !

प्रभाकर० । (ताज्जुब से) तुम महाराज गिरधरसिंह की रिश्तेदार हो ? तुम्हारा नाम क्या है ?

औरत० । मेरा नाम चमेली है और (साथ वाली औरत को बता कर) इसका नाम जूही है ! आप हमें नहीं पहचानते पर बहिन इन्दुमति अगर यहां होती तो जरूर हम दोनों को पहिचान जातीं क्योंकि हमारा उनका साथ बराबर हुआ करता था ।

प्रभा० । (और भी ताज्जुब से) और तुम्हें यहां जिसने कैद किया उनका नाम क्या है ?

औरत० । उनका नाम.....

कहते कहते यकायक वह औरत रुक गई, उसका चेहरा पीला पड़ गया और बदन कांपने लगा । उसके साथ वाली औरत की भी यही अवस्था थी । प्रभाकरसिंह ताज्जुब के साथ इसका सबब उनसे पूछने ही वाले थे कि एक ने अंगुली से बता कर कहा, "देखिये, हमें गिरफ्तार करने वाली वे ही दोनों आ रही हैं । हाय हाय ! क्या आपके आ पहुँचने पर भी हमारा पिण्ड न छूटेगा !"

प्रभाकरसिंह ने घूम कर देखा तो दर्वाजे के पास दो औरतों को खड़े पाया जो गुस्से भरी निगाहों से उन्हें और इन बेचारी औरतों को देख रही थीं, प्रभाकरसिंह को अपनी तरफ देखते दोनों कमरे के अन्दर आ गईं और गुस्से भरी निगाहों से उन दोनों औरतों की तरफ एक बार देख प्रभाकरसिंह से एक ने पूछा, "तुम कौन हो और महल में किस लिये आये हो !" इसके पहिले कि प्रभाकरसिंह कुछ जवाब दें वह उन दोनों औरतों

की तरफ घूमी और क्रोध से कांपती हुई बोली, "मैं समझ गई कि यह तुम कम्बख्तों की शैतानी है। तुम्हीं अपने बचाने के लिये इस बदमाश को यहां बुला लाई हो, अच्छा देखो मैं तुम्हारी क्या गत करती हूं! (अपने साथ वालियों की तरफ देख कर) बहिनो इन दोनों को पकड़ कर ले जाओ और काल कोठड़ी में छोड़ दो!"

"काल कोठड़ी" का नाम सुनते ही वे दोनों औरतें चिल्ला पड़ीं और प्रभाकरसिंह की तरफ देख कर रोती हुई बोलीं, बचाइये, बचाइये हम दोनों को इस राक्षसी से बचाइये।"

प्रभाकरसिंह बेचारे हैरान थे कि यह अजब बखेड़ा मचा है। उनकी कुछ अक्ल काम नहीं करती थी। आखिर उन्होंने कुछ आगे बढ़ कर इन नई आने वालियों से कहा, "मैं तुम दोनों के काम में दखल नहीं दिया चाहता मगर साथ ही साथ बिना यह जाने कि तुम दोनों कौन हो और क्यों इन बेचारियों को कष्ट पहुंचा रही हो किसी को यहां से जाने देना भी नहीं चाहता।

उनमें से एक औरत ने तन कर जवाब दिया, "हम दोनों महाराज गिरधरसिंह के रिश्तेदार हैं। मेरा नाम चमेली है (साथ वाली को बता कर) और इनका नाम जूही है। यह मेरी बहिन है, ये दोनों शैतान की खालायें हमारी लौंडियां थीं और हमारा ही नमक खा कर पलीं मगर न जाने क्या इनके मन में आया कि हम लोगों को धोखा दे कर मकान में बंद कर दिया और खुद हमारी जगह जा बैठीं। किसी तरह हम दोनों इस कैद से छूटीं और इन्हें अब इनके कुकर्मों की सजा दे रही हैं!"

उसकी यह बात सुनते ही वे दोनों पहिली औरतें चिल्ला उठीं, "झूठ, बिलकुल झूठ! यह एक दम गलत कह रही है, इन्हीं दोनों ने हमें यहां कैद कर दिया है और हमारी जगह पर राज्य कर रही हैं, ये दोनों हमारी लौंडियां थीं! आप तिलिस्म तोड़ने वाले हैं और इस लिये हमारे ईश्वर के तुल्य हैं। आप ही हमारा इन्साफ कीजिये कि वास्तव में कसूरवार कौन है?"

प्रभाकरसिंह यह सुन और चक्कर में पड़े। उनकी कुछ समझ में नहीं आता था कि क्या करें या कहें। साथ ही जब उन्होंने गौर से इन औरतों की शक्ल देखी तो यह जान उनका ताज्जुब और भी बढ़ गया कि इन चारो ही की शक्ल सूरत और पोशाक बिल्कुल एक सी है, किसी की शक्ल में तिल भर भी फर्क नहीं है। चारो की चारो एक ही सांचे में ढली जान पड़ती थीं। इस समय अचानक उन्हें तिलिस्मी किताब की वह बात याद आई— "यह सब धोखा है।" अब उन्होंने बातचीत में और समय नष्ट करना फजूल समझा और अपना तिलिस्मी डंडा ले कर आगे बढ़े। उनका यह भाव देख वे औरतें चीखने चिल्लाने लगीं पर प्रभाकरसिंह ने एक न सुनी और पारी पारी से उन चारों के सिर अपने तिलिस्मि डंडे से छू दिये।

तिलिस्मी डंडे का उनके सिर के साथ छूना था कि वे चारों बड़े जोर से चिल्लाईं और जमीन पर गिर पड़ीं। इसके साथ ही धीरे धीरे उनकी शक्लें बदलने लगीं। वह गोरा गुलाबी चेहरा सिकुड़ कर काला और भयानक होने लगा। नाजुक कलाइयां मोटी भद्दी और काली हो चलीं, हाथ पांव भद्दे और बदसूरत हो गये, पोशाक भी बदल गई और रेशमी साड़ियों के बजाय लाल जांघिये उनकी कमर में दिखाई पड़ने लगे। ताज्जुब और घबराहट के साथ प्रभाकरसिंह ने देखा कि दस ही मिनट पहिले जहां चार खूबसूरत कमसिन औरतें उनके सामने खड़ी थीं वहीं अब वे चारो तिलिस्मी शैतान पड़े हुए थे जिन्हें कई बार पहिले देख चुके थे। इन शैतानों की डरावनी शक्ल देख और पिछली कार्रवाई याद कर प्रभाकरसिंह घबड़ा गये और डर कर इनकी तरफ देखने लगे।

थोड़ी देर के बाद प्रभाकरसिंह ने देखा कि वे चारो शैतान बिलकुल जुम्बिश न खा कर बेहोश या मुर्दों की तरह पड़े हुए हैं तो उनके हवास कुछ ठिकाने हुए और वे यह सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये। उन्होंने अपनी तिलिस्मी किताब खोली और पढ़ने लगे। यह लिखा पाया :—

जो सूरतें तुम अपने सामने देख रहे हो इन्हें पहिले भी देख चुके होगे पर इनसे घबराने की कोई जरूरत नहीं। ये सिर्फ पुतले हैं जो तिलिस्मी कारीगरी की बदौलत जीते जागते आदमियों की तरह काम करते दिखाई देते हैं। इन्हें महज इस तिलिस्म की हिफाजत और सफाई के लिये यहां रक्खा गया है और आगे भी इसी तरह के पुतले तुम्हें कई जगह मिलेंगे। तुम्हें इनसे डरने की कोई जरूरत नहीं, अपने तिलिस्मी डंडे की बदौलत जब चाहो तब तुम इन्हें बेकार कर सकते हो, खैर।

इस शीशमहल का तिलिस्म तोड़े बिना अगर तुम इसके बाहर चले जाओगे तो फिर यहां लौट कर आना मुश्किल होगा अस्तु पहिले यहां का काम खतम कर लो तो आगे बढ़ो। दीवार के साथ जो पुतले खड़े हैं उनके सिर से अपना तिलिस्मी डंडा छुआ दो। आगे की कार्रवाई ये पुतले तुम्हें बतावेंगे।"

यह जान कर कि बे तिलिस्मी शैतान जिन्होंने उनको इस कदर परेशान किया था और कुछ नहीं सिर्फ तिलिस्मी कारीगरी है प्रभाकरसिंह को बहुत कुछ संतोष हुआ और अब वे अपेक्षाकृत कुछ अधिक शान्त के साथ आगे का काम करने को तैयार हो गये। जैसा कि हम पहिले लिख आये हैं कमरे की दीवार के साथ दस पुतले बने हुए थे। प्रभाकरसिंह इन पुतलों के पास गये, बारी बारी से उनके सिर के साथ तिलिस्मी डंडा छुलाने के बाद अलग जा खड़े हुए।

डंडे का छूना था कि उन पुतलों के बदन में हरकत पैदा हुई। धीरे धीरे उनके अंग प्रत्यंग हिलने डोलने लगे। आखें इधर उधर घूम फिर कर मानों अपने चारों तरफ का दृश्य देखने लगीं। कुछ देर बाद सिर और मुंह भी हिलाने लगे। ताज्जुब के साथ प्रभाकरसिंह ने देखा कि उन पुतलों में आपस में बातें हो रही हैं। अगर उस तिलिस्मी किताब ने उन्हें आगाह न कर दिया होता तो शायद वे इन पुतलों की बातें दिलचस्पी के

साथ सुनने पर अब उन्हें कोई कौतूहल न रह गया था और वे सिर्फ यह देखना चाहते थे कि ये पुतले करते क्या हैं ?

हम लिख आये हैं कि इन पुतलों में औरत मर्द लड़के सभी की शक्लें बनी हुई थीं। कुछ देर की बातचीत के बाद उनमें से दो औरतें आगे बढ़ आईं और उन चारों तिलिस्मी शैतानों के पास खड़ी हो कर कुछ हुकूमत के साथ बाकी पुतलों से बोलीं, "अब तुम लोग सिर्फ बकवाद ही करते रहोगे या कुछ काम करोगे ? इन शैतानों की लाशों को हटाओ और यह जगह साफ कर दो।"

दो तीन आदमी आगे बढ़ आये और गौर से उन लाशों की तरफ देख कर बोले, "इन्हें कहां फेंके ?"

जवाब में दो लड़के बोल उठे, 'हमारे शेर को बहुत दिनों से खाने को नहीं मिला है उसी के पिंजड़े में डाल दो, खा जायगा !"

औरतों ने कहा, "हां ठीक है, ऐसा ही करो !"

शेर के कटघरे का दर्वाजा खोला गया और बारी बारी से वे चारों लाशें उस पिंजड़े के अन्दर डाल दी गईं। जिस समय प्रभाकरसिंह ने उस शेर को उन लाशों पर टूटते देखा तो उनके मुंह से आप से आप निकल गया, "धन्य हैं वे लोग जिन्हें इतनी बात मालूम थी ! क्या इस समय इस शेर को देख कर कोई कह सकता है कि यह बनावटी है !!"

शैतानों को शेर के हवाले करने बाद उन पुतलों ने उस जगह का फर्श भी झाड़ पोंछ कर बिल्कुल साफ कर दिया और इसके बाद कुछ देर तक इकट्ठे खड़े कुछ बातें करते रहे। थोड़ी देर बाद बातें बन्द हो गईं और एक एक करके वे पुतले फिर अपनी जगह पर जाने लगे यहां तक कि कुछ देर में सब के सब पहिले जिस तरह खड़े थे उसी तरह दीवार के साथ जा खड़े हुए, उनके बदन की हरकतें बन्द हो गईं और वे पुनः पुतलों के मानिन्द बेजान हो गये।

अब तक प्रभाकरसिंह इस विचार में थे कि ये पुतले ही किसी तरह आगे की कार्रवाई उन्हें बतावेंगे जैसा कि तिलिस्मी किताब ने उन्हें बताया था पर अब जब उन्होंने देखा कि वे सब अपना काम समाप्त करके पुनः बेजान पुतलों की तरह अपनी जगह जा खड़े हुए तो उन्हें ताज्जुब हुआ और वे सोचने लगे कि यह क्या मामला है ? कुछ देर तक तो उन्हें यह गुमान रहा कि शायद इन पुतलों के बदन में फिर हरकतें हों और इनसे कुछ पता लगे पर जब दो एक घड़ी बीत जाने के बाद भी कुछ न हुआ तो वे चिन्ता में पड़ गये कि अब क्या करना चाहिये। उन्होंने अपनी तिलिस्मी किताब खोली मगर इसमें इस विषय में कुछ भी लिखा न पाया सिवाय उन बातों के जिन्हें कि वे पहिले पढ़ चुके थे। आखिर उन्होंने किताब बन्द कर जेब के हवाले की और सोचने लगे कि क्या करना चाहिये।

यकायक उनका खयाल उस शेर की तरफ गया। उनके मन में ख्याल हुआ कि और पुतले तो अपना काम समाप्त करके अपनी जगह चुपचाप खड़े हो गये हैं पर इस शेर का काम अर्थात् उन लाशों को चीरना फाड़ना अभी तक जारी है। "शायद इसमें भी कोई मतलब हो !" यह समझ कर प्रभाकरसिंह उस पिंजड़े के पास गये और कौतूहल के साथ उस शेर की तरफ देखने लगे जो इस समय जमीन पर पैर के बल बैठा हुआ अगले पंजों से एक लाश दबाये अपने लम्बे और खूखार दांतों की मदद से उनकी हड्डियां चिचोड़ रहा था।

प्रभाकरसिंह का उस पिंजड़े के पास जा कर खड़ा होना था कि यह शेर इनकी तरफ देख कर बड़ी जोर से गुर्राया। जब ये अपनी जगह से हटे नहीं तो वह लाश पर से उठ खड़ा हुआ और अपनी भयानक आंखों से इनकी तरफ देखता हुआ दहाड़ने लगा। जब इस पर भी ये न हटे तो वह एक दम इनकी तरफ बढ़ आया और तब बड़े जोर से गरज कर ऐसी भयानक रीति से इनकी तरफ झपटा कि यह जानते हुए भी कि वह बनावटी है प्रभाकरसिंह को घबड़ा कर एक कदम पीछे हट जाना पड़ा। वह शेर

उसी जगह पिंजड़े के पास खड़ा हो गया और अपनी भयानक आंखों से प्रभाकरसिंह को देखने लगा।

मालूम होता है कि प्रभाकरसिंह का हट कर खड़ा होना भी उस शेर को नहीं भाया क्योंकि कुछ देर तक एक टक उनकी तरफ देखने बाद उसने फिर एक दहाड़ मारी और अपने ताकतवर पञ्जो से उस पिंजड़े के छड़ों को पकड़ कर जोर से झकझोरा। घबराहट और कुछ देर डर के साथ प्रभाकरसिंह ने देखा कि हिलने और झोंका खाने से वह दर्वाजा जिसे खोल कर उन पुतलों ने वे लाशें अन्दर डाली थीं और जिसे मजबूती से बन्द करना शायद वे लोग भूल गये थे, खुल गया। दूसरी ही सायत में वह खूंखार जानवर पिंजड़े के बाहर निकल आया और प्रभाकरसिंह की तरफ बढ़ा।

इस समय प्रभाकरसिंह की कुछ विचित्र अवस्था थी। वे जानते थे कि यह शेर बिल्कुल बनावटी और बेजान है और सिर्फ तिलिस्मी कारीगरी की बदौलत यह सब हरकतें कर रहा है परन्तु यह जानते हुए भी उसकी भयानक आकृति और डरावना ढङ्ग उन्हें घबड़ाये दे रहा था। जिस समय तड़प कर वह शेर उनके सामने आ खड़ा हुआ तो उनसे सिवाय इसके और कुछ न बन सका कि अपने तिलिस्मी डण्डे को हाथ में ले लें और बचाव की फिक्र करें। केवल यही नहीं, उन्होंने उस डंडे के मुट्ठे को कुछ विचित्र ढंग से इस तरह पर दबाया कि उसके सिरे से आग की लपटें और चिनगारियां निकलने लगीं। ये लपटें और चिनगारियां ठीक वैसी ही थीं जैसी कि सर्यू को छुड़ाने जा कर दारोगा पर अपना असर पैदा करने के लिये प्रभाकरसिंह ने प्रगट की थीं। इस तिलिस्मी डंडे में जो विचित्र गुण थे उनका कुछ परिचय पाठक उस अवसर पर पा चुके हैं और आशा है कि वे बातें उन्हें भूली न होंगी।

इन चिनगारियों और आग की लपटों ने उस शेर का जोश काफूर कर दिया, कहां तो वह प्रभाकरसिंह पर हमला करने की तैयारी कर रहा

था और कहां अब अपनी जगह पर दबक कर पिछले पांव सिकोड़ धीरे धीरे पीछे को हटने लगा। प्रभाकरसिंह की हिम्मत बढ़ी, वे आगे बढ़े और झपट कर वह डंडा उन्होंने शेर के माथे से छुला दिया। डंडे का सिर से लगना था कि शेर की बची खुची हिम्मत भी जाती रही, वह एक दम बिल्ली हो गया और अपनी दुम हिलाता हुआ प्रभाकरसिंह के पैरों पर लोटने लगा।

प्रभाकरसिंह की हिचक जाती रही और डर की जगह खुशी और हिम्मत ने ले ली। वे झुक कर उस बनावटी शेर का सिर थपथपाने लगे और साथ ही साथ यह भी सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये। मगर उन्हें ज्यादा सोचना न पड़ा। दो एक मिनट तक उनके पैरों पर लोट पोट करने बाद शेर उठ खड़ा हुआ और अपनी पीठ उनके पैरों के साथ रगड़ता हुआ इस तरह का भाव जाहिर करने लगा मानों वह कहीं जाना चाहता है। वह इस समय एक बहुत ही बड़े प्रेमी कुत्ते की तरह जान पड़ता था जो बहुत दिनों के बाद अपने मालिक को देख कर खुशी से फूला न समाता हो। अचानक प्रभाकरसिंह के मन में न जाने क्या समाया कि वे कूद कर उस शेर की पीठ पर चढ़ बैठे। इनका बैठना था कि शेर के मुंह से खुशी की एक हलकी गुर्राहट निकली और वह इनको लिये दिये धीरे धीरे कमरे के बाहर की तरफ बढ़ा।

इस कमरे का दर्वाजा खुला हुआ था। मगर पर्दा पड़ा था जिसे एक तरफ को हटाता हुआ वह शेर प्रभाकरसिंह को लिए हुए कमरे के बाहर निकल गया। उस समय प्रभाकरसिंह ने देखा कि बाहर एक बहुत बड़ा बरामदा है जिसका सामने का हिस्सा तो खुला हुआ है मगर दाएँ और बाएँ दोनों तरफ उसका फैलाव बहुत दूर तक चला गया है। प्रभाकरसिंह को लिए हुए वह शेर बाईं तरफ को मुड़ा और मस्तानी चाल से चलता हुआ सीधा जाने लगा। प्रभाकरसिंह ने अपने चारों तरफ गौर से देख कर गुमान किया कि यह उसी ऊँचे कमरे या शीशमहल का ही ऊपरी हिस्सा

है क्योंकि इस समय उनके बाईं तरफ थोड़ी थोड़ी दूर पर बन्द दर्वाजे दिखाई पड़ते थे और दाहिनी तरफ जिधर खुला हुआ था देखने से पेड़ों की चोटियां बताती थीं कि वह कोई बहुत ऊंचा जगह या किसी मकान का ऊपरी मंजिल है। खैर यह स्थान चाहे जो, कुछ भी हो या जहां भी हो इसमें किसी तरह की विशेषता ऐसी न थी जो ध्यान आकर्षित करता। यह केवल किसी लम्बे चौड़े महाराजी धर्मशाला का ऊपरी हिस्सा जान पड़ता था जिसमें किसी तरह की भी खूबसूरती न थी।

यकायक वह शेर एक जगह पहुंच कर रुक गया, यह एक बड़ा दर्वाजा था जो किसी कमरे में जाने का था मगर बन्द होने के कारण यह पता नहीं लगता था कि इसके दूसरी तरफ क्या है। शेर के रुक जाने से प्रभाकरसिंह को गुमान हुआ कि शायद यहीं तक लाकर उसका काम समाप्त हो जाता हो और इसी दर्वाजा के अन्दर जाने की उन्हें जरूरत हो। यह सोच वे शेर पर से उतर पड़े उनका ख्याल था कि शायद वह शेर अपनी जगह लौट जायगा पर वह ज्यों का त्यों खड़ा रहा बल्कि उस दर्वाजे की चौखटे को अपने नखों से खरोंचने लगा। अब प्रभाकरसिंह को कोई सन्देह न रहा कि इसी के अन्दर उन्हें जाना है। वे दर्वाजे के पास गये और उसे धक्का दे कर देखा कि वह बहुत मजबूती से बन्द है। वे उसे गौर से देखते हुए सोचने लगे कि इसे खोलने की क्या तर्कीब हो सकती है।

बहुत गौर से देर तक देखने बाद भी प्रभाकरसिंह को उस दर्वाजे में कोई ऐसी बात न दिखाई पड़ी जिससे उसे खोलने में उन्हें कोई सहायता मिलती या यही गुमान होता कि इस जगह कोई कारवाई करने से दर्वाजा खोलने की उम्मीद हो सकती है। हां अगर किसी ऐसी चीज पर ध्यान जा सकता था तो सिर्फ वे पीतल के चार चार अंगुल के फूल जो उस दर्वाजे के तीन तरफ अर्थात् ऊपर दाहिने और बाये बराबर बराबर फासले पर लगे हुए थे। पर ये खूबसूरती के लिये भी लगे हो सकते थे। प्रभाकरसिंह अपनी जगह से हट कर कुछ आगे बढ़े तो वैसा ही एक दूसरा

दर्वाजा दिखाई पड़ा जो लम्बाई चौड़ाई और रंगढंग में ठीक वैसा ही था हाँ उसके तीनों तरफ फूल बने हुए न थे। कुछ पीछे हटने पर प्रभाकरसिंह को एक दूसरा दर्वाजा दिखाई पड़ा जो ठीक उसी रंग ढंग और नाप का था पर वैसे फूल इसमें न थे। अब प्रभाकरसिंह को विश्वास हो गया कि इन फूलों का केवल इसी दर्वाजे पर होना जिसके सामने शेर ने उन्हें पहुँचा दिया था कोई कारण अवश्य रखता है और इस विचार के आते ही उन्होंने कुछ गौर के साथ उन फूलों को देखना और जांचना शुरू किया।

ये फूल जो एक ही रंग ढंग के और लगभग एक बालिस्त की बराबर दूरी पर दर्वाजे को घेरे हुए बने थे, गिनती में पच थे, और इतने साफ और चमकदार थे कि यही जान पड़ता था मानों कोई अभी अभी इन्हें साफ करके गया है। प्रभाकरसिंह ने इन फूलों को देखना और जांचना शुरू किया। हिलाते डुलाते दबाते और खींचते हुए, वे जब अपने दायें हाथ के चौथे फूल के पास पहुँचे तो इन्हें वह कुछ हिलता हुआ दिखाई पड़ा। उन्होंने उसे हिलाना डुलाना चाहा। घूमा तो वह नहीं पर जब जोर किया तो उसे अपनी तरफ खिचता हुआ पाया जिससे यह शक हुआ कि अगर और जोर किया जाय तो संभव है कि वह आगे खिच आवे या दर्वाजे की चौखट (जिस पर ये फूल जड़े थे) छोड़ अलग ही हो जाय। आखिर उन्होंने दीवार में पैर अड़ा और दोनों हाथ से पकड़ कर जोर किया और साथ ही वह कोई छः अंगुल आगे को निकल पड़ा जिसके साथ ही एक खटके की आवाज प्रभाकरसिंह के कान में पड़ी। वे अलग हो गये और उसी समय उन्होंने देखा कि उस फूल के बगल वाली दीवार पर से, जो संगीन बनी थी, एक पतली सिल्ली झूल कर नीचे को गिर गई और उसके नीचे से संगमर्मर का एक चौखूटा पत्थर निकल आया जिस पर बारीक अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था। खुशी खुशी प्रभाकरसिंह उस मजमून को पढ़ने लगे।

प्रभाकरसिंह को उम्मीद थी कि इस पत्थर पर उस दर्वाजे को खोलने की तर्कीब लिखी होगी पर जो कुछ उस पर लिखा हुआ था वह ऐसा था कि उसका कोई मतलब ही उनकी समझ में न आया। कुछ अजीब बे-मतलब की लिखावट उस पत्थर पर खुदी हुई थी जिसका किसी तरह कोई अर्थ नहीं निकलता था।

प्रभाकरसिंह बहुत देर तक इस मजमून पर गौर करते रहे, आखिर बड़ी मुश्किल से तरह तरह का खयाल दौड़ाने बाद उन्होंने उस लिखावट का अर्थ लगा ही लिया और तब खुश हो कर बोले, "समझ गया !!"

पत्थर पर लिखी तर्कीब से प्रभाकरसिंह ने सहज ही में वह दर्वाजा खोल लिया और तब पुनः शेर पर सवार हो गये जो उन्हें लिये हुए उसी मस्तानी चाल से भीतर की तरफ रवाना हुआ।

पाठकों की जानकारी के लिये हम वह मजमून आगे लिखे देते हैं:—

अ	ब	र
आ	४	ओ
ढ़ा	त्त	गे

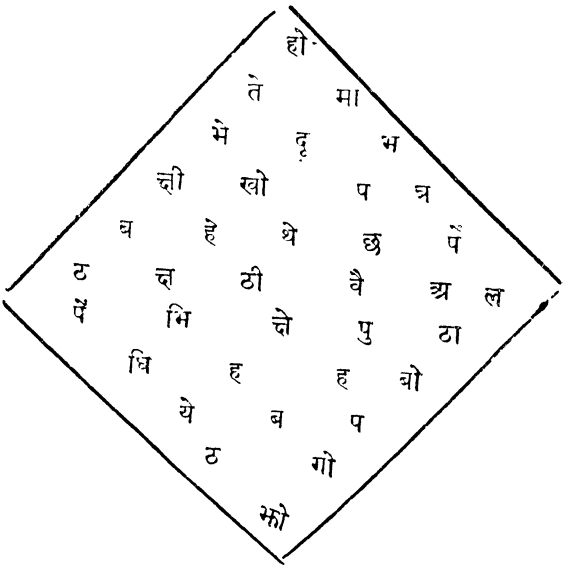

पु	शि	लों
से	*	र
या	त	हो

हमारे पाठक जानना चाहते होंगे कि इस मजमून का क्या अर्थ था और प्रभाकरसिंह ने वह दर्वाजा खोलने की क्या तर्कीब की, परन्तु इस समय हम उसे बताने में असमर्थ हैं, हां यह जरूर कह देंगे कि उस मजमून का मतलब लगा लेना बहुत मुश्किल नहीं है, थोड़ी ही कोशिश करने से आप उसका मतलब समझ जायंगे। अब हम आगे का हाल लिखते हैं।

यह जगह जिसके अन्दर प्रभाकरसिंह ने अपने को पाया एक चौखूटा सुफेद संगमर्मर का बना हुआ सुन्दर कमरा था जिसका फर्श काले और सुफेद चौखूटे पत्थरों से बना हुआ और बिल्कुल खाली था अर्थात् इस कमरे के बीचोबीच में कोई भी सामान न था पर हां इसकी दीवारों के साथ साथ चारो तरफ पत्थर के कमर बराबर ऊंचे गोल खम्भों पर तरह तरह की मूरतें बनी हुई रक्खी थीं और प्रत्येक दो खम्भों के बीच में एक एक दर्वाजा था जो इस समय बन्द था। ऊपर छत की तरफ निगाह करने से प्रभाकरसिंह ने उसे रंग बिरंगे शीशों से जड़ा हुआ पाया जो चारो तरफ बने हुए रौशनदानों की रोशनी में चमकते हुए बड़े ही सुन्दर मालूम हुए। इन रौशनदानों के दोनों तरफ भी तरह तरह की मूरतें बनी हुई थीं परन्तु प्रभाकरसिंह को इस कमरे की मूरतों या दूसरी चीजों को देखने की मोहलत न मिली। जैसे ही इन्हें लिए हुए वह शेर सामने वाले दर्वाजे के पास पहुंचा वैसे ही एक खटके की आवाज आई और उस दर्वाजे के बीचोबीच में बनी एक छोटी खिड़की खुल गई जिसके भीतर से किसी ने झांक कर इनकी तरफ देखा और फिर तुरत ही मुंह हटा लिया। अभी वे सोच ही रहे थे कि यह देखने वाला कौन है कि एक हलकी आवाज के साथ उस दर्वाजे के पल्ले खुल गये और सामने दो सिपाही नजर पड़े जो फौजी वर्दी पहिने और हथियारों से लैस बड़े ही ताकतवर और बहादुर जान पड़ते थे। इन सिपाहियों ने प्रभाकरसिंह को फौजी सलाम अदा की और तब दोनों बगल हट कर मानों उनको भीतर आने की जगह दे दी।

शेरसवार प्रभाकरसिंह एक नये कमरे के अन्दर पहुंचे जो तरह तरह के विचित्र और डरावने सामानों से भरा हुआ था।

यहां पहुंच प्रभाकरसिंह की सवारी का शेर जरा देर के लिये रुक गया और प्रभाकरसिंह अपने चारो तरफ देखने लगे। उसी समय उन सिपाहियों ने सामने आ कर पुनः सलाम किया और तब एक ने गम्भीर आवाज में कहा, "परमात्मा को धन्यवाद है कि आज आपके चरण इन स्थानों में पहुंचे। अब हम लोगों का काम पूरा हुआ और उम्मीद हुई कि हमें इस जगह से रिहाई मिलेगी जहां सब तरह से स्वतन्त्र रहते हुए भी हम लोग अपने को कैदियों से बदतर समझते थे।"

प्रभाकरसिंह ने ताज्जुब से पूछा, "तुम लोग कौन हो, यहां कैसे आये और क्या करते हो, तथा मेरे आने की खबर तुम लोगों को क्यों कर लगी?

उस सिपाही ने जवाब दिया, "हम लोग इस जगह के पहरे पर मुकर्रर किये गये हैं और बरसों से आपके आने का इन्तजार कर रहे हैं। आप अब आ गये हैं तो हमारा पूरा हाल सुन ही लेंगे। इस समय पहिले जो काम हम लोगों के सुपुर्द किया गया है उसे हम पूरा करते हैं। आप कृपा कर इधर आने का कष्ट करें।"

कहता हुआ वह सिपाही कुछ आगे बढ़ गया और एक दर्वाजे को खोलने बाद इस तरह खड़ा हो गया मानों इस बात का इन्तजार करता हो कि प्रभाकरसिंह उसके भीतर आवें। प्रभाकरसिंह इनकी बातें सुन कर ताज्जुब तो कर ही रहे थे मगर साथ ही चौकन्ने हो कर चारो तरफ देखते भी जाते थे और इन सिपाहियों से होशियार मालूम होते थे। वे उस पहिले सिपाही से बातें करते जाते थे और साथ ही कनखियों से उस दूसरे सिपाही पर भी नजर रक्खे हुए थे। उनकी निगाह जरा देर के लिये उस दर्वाजे की तरफ घूमी ही थी जिसे उस पहिले सिपाही ने खोला था और वे जरा सा गाफिल हुए ही थे कि उस दूसरे सिपाही ने अपनी तलवार म्यान से निकाल ली और इस जोर से प्रभाकरसिंह की गर्दन पर वार किया

कि अगर वे होशियार न होते तो जरूर उनका सिर कट कर दूर जा गिरता। मगर दर्वाजे पर के मजमून ने उन्हें होशियार किया हुआ था और दूसरे उस शेर ने भी इस समय उनकी मदद की जो एक दम दबक कर जमीन से सट गया जिससे वह तलवार उनके सिर से होती हुई निकल गई। इसके साथ ही आगे बढ़ कर उन्होंने अपना तिलिस्मी डण्डा उस सिपाही के सिर से छुला दिया। तिलिस्मी डण्डे का छूना था कि उस सिपाही ने बड़े जोर की चीख मारी और तब अपने सिर को दोनों हाथों से दबाये हुए पीछे को हटने लगा। उसी समय उसके सिर से आग का एक फौव्वारा निकला जिसकी एक चिनगारी दूसरे सिपाही पर पड़ते ही वह भी चिल्ला उठा। दूसरी ही साअत में उसका सिर भी इसी तरह भभक उठा और तब वे दोनों ही चीखते चिल्लाते हुए उसी दर्वाजे के अन्दर घुस कर गायब हो गये जिसे पहिले सिपाही ने खोला था। कुछ देर तक उनकी चिल्लाहट की आवाज प्रभाकरसिंह के कानों में आती रही इसके बाद कम होती हुई बिलकुल बन्द हो गई और तब वह दर्वाजा भी आप से आप पहिले की तरह बन्द हो गया।

अब प्रभाकरसिंह कुछ निश्चिन्त हुए और गौर के साथ अपने चारो तरफ देखते हुए उस कमरे की चीजों पर निगाह दौड़ाने लगे। जो कुछ सामान उस कमरे में था वह डर और घबराहट के साथ ताज्जुब भी पैदा करने वाला था।

तीसरा बयान

पन्द्रहवें हिस्से के चौथे बयान के अन्त में, हम लिख आये हैं कि अजायबघर से निकले हुए उस जख्मी नकाबपोश को घोड़े पर बैठा कर उसका साथी जमानिया की तरफ ले चला।

ये दोनों नकाबपोश वास्तव में हमारे पाठकों के अच्छी तरह जाने पहिचाने जमानिया के दारोगा साहब और उनके दोस्त जैपालसिंह हैं। ये

लोग किस मतलब से इस समय अजायबघर में घुसे थे या वहां जा कर दारोगा साहब क्यों इस बुरी तरह पर जख्मी हो गये इसके बारे में हम कुछ नहीं कह सकते, हां इनकी बातचीत सुनने से मुमकिन है कुछ पता लग जाय, मगर इस समय तो दारोगा साहब की यह हालत है कि कुछ बात भी करना उनके लिये मुश्किल है। जैपालसिंह के तरह तरह के सवालों के जवाब में वे कभी कभी सिर्फ इतना कह देते हैं, "अभी कुछ मत पूछो, घर पहुंचने दो, तब मैं बताऊँगा कि मेरे ऊपर क्या क्या गुजरी है !!!" इतना कह कर वे कांप उठते हैं मगर यह कंपकपी किस भयानक दृश्य की याद उन्हें दिलाती है यह हम नहीं जानते।

आखिर धीरे धीरे चलते दारोगा को लिये हुए जैपाल जमानिया जा पहुंचा। इस समय रात हो चुकी थी और सड़क पर आदमियों की आमदरफ्त बहुत कुछ कम हो गई थी फिर भी दारोगा साहब ने अपनी मौजूदा हालत में सदर फाटक की राह अपने मकान के अन्दर जाना मुनासिब न समझा और पीछे की तरफ के एक चोर दर्वाजे के सामने जा खड़े हुए जो बाहर की तरफ से बन्द था। जैपाल ने दर्वाजा खोला और दोनों आदमी अन्दर पहुंचे।

जख्मों की सफाई कर अपने हाथ ही से कुछ मलहम पट्टी करने बाद जब जैपाल ने दारोगा साहब को पलंग पर लेटा दिया तब जा कर उनके होश कुछ ठिकाने आये और वे इस लायक हुए कि जैपाल के सवालों का जवाब दे सकें। धीमी आवाज में रुक रुक कर उन्होंने अपना किस्सा यों सुनाना शुरू किया—

"अजायबघर के दर्वाजे पर रथ खड़ा देख कर यह तो मै समझ ही गया था कि कोई आदमी उसके अन्दर जरूर गया है जिसके दोस्त होने की बनिस्बत मेरा दुश्मन होने की सम्भावना ही अधिक थी अस्तु मैं बड़ी होशियारी के साथ सब तरह से चौकन्ना हो कर इमारत के अन्दर घुसा। जब मैं ड्योढ़ी के पास पहुँचा तो वहां मुझे रोशनी दिखाई पड़ी जो शीशे

के एक छोटे गोले के अन्दर से निकल रही थी। मैं यह रोशनी देख ताज्जुब में पड़ गया और एक खम्भे की आड़ में खड़ा हो कर चारों तरफ देखने लगा। कुछ ही देर बाद मैंने देखा कि वहां से चक्रव्यूह की तरफ जाने का जो रास्ता है उसके दर्वाजे के पास एक गठड़ी पड़ी हुई है और वह दर्वाजा खुला हुआ है। मुझे यह गुमान हुआ कि जरूर कोई आदमी उस दर्वाजे के अन्दर घुसा है और यह गठड़ी छोड़ता गया है। जब वह लौटेगा और अपनी गठड़ी उठा कर यहाँ से चलेगा मुनासिब समझूँगा तो उससे रोक टोक करूँगा यह सोच मैं अपनी जगह पर छिपा खड़ा रहा मगर जब देर हो गई और कोई उस दर्वाजे की राह बाहर न निकला बल्कि आप ही आप एक हलकी आवाज देता हुआ वह दर्वाजा बन्द हो गया तब मैंने सोचा कि शायद उसकी राह अन्दर जाने वाला अब वापस न लौटेगा। ऐसी हालत में और देर तक राह देखना फजूल समझ मैं उस गठड़ी के पास पहुँचा और यह देख ताज्जुब करने लगा कि उस गठड़ी में इन्द्रदेव की स्त्री सर्यू बंधी हुई है।

जैपाल०। (ताज्जुब से) सर्यू?

दारोगा०। हाँ सर्यू! उसे वहां देख मैं ताज्जुब में आ गया और साथ ही यह सोच खुश भी हुआ कि यह पुनः मेरे कब्जे में आ गई सो अच्छा ही हुआ नहीं तो इसके जरिये मेरा बहुत भंडाफोड़ हो जाता और शायद हो भी चुका हो तो ताज्जुब नहीं। मुनासिब तो यह था कि उसी समय उसे पुनः गठड़ी में बांध मैं बाहर निकाल लाता पर किस्मत की मार यह न कर मैंने उसे होश में ला कर यह जानना चाहा कि उसे उस जगह ले आने वाला कौन था। बस यही करना मेरे लिये काल हो गया। लख-लखा सुँघा कर मैं उसे होश में लाया और पूछने लगा कि वह वहां क्यों कर पहुँची मगर उसने कुछ भी बताना मंजूर न किया। मैं उसे मारपीट कर रास्ते पर ला ही रहा था कि यकायक चक्रव्यूह का फाटक खुल गया और उसके अन्दर किसी आदमी की आहट मालूम पड़ी जिसने डपट कर

मुझे कुछ कहा, मैंने भी जवाब दिया और इसके बाद फुर्ती से तलवार निकाल कर उसका मुकाबला करने के लिये तैयार हो गया मगर ओफ मेरे दोस्त ! मैं तुमसे क्या बयान करूँ ! मेरी निगाहें जब उस दर्वाजे की तरफ उठीं तो जिस भयानक चीज पर मेरी निगाह पड़ी उसे देखते ही मेरी तो रूह कांप उठी !! (कांप कर) ओफ ! अब भी याद आता है तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं !!"

कहते हुए दारोगा ने दोनों हाथों से अपनी आंखें बन्द कर लीं। जैपाल ने यह देख ताज्जुब से पूछा, "आखिर कुछ बताइये भी तो कि वह डरावनी चीज क्या थी ? भूत प्रेत पिशाच शैतान आखिर क्या आपको दिखा ?"

दारोगा०। वह इन सभों से बढ़ कर खौफनाक चीज थी, भूत प्रेत को देख कर तो आदमी दो चार मिनट तक अपने होश हवास कायम भी रख सकता है मगर उसे देखते ही तो मेरा यह हाल हो गया कि मानों बदन का सारा खून रगों में जम गया हो। लो सुनो वह क्या आसेब था। वह था—आदमी की हड्डियों का एक समूचा ढांचा जिसके ऊपर मांस का नाम निशान भी न था परन्तु जिसकी बिना पुतलियों की आंखों के गढ़े में से खौफनाक चमक निकल रही थी। उसके बायें हाथ में एक तलवार की मूठ थी जिसको वह सिर से ऊपर उठाये हुए था पर जिसमें फल न था केवल मूँठ ही मूँठ थी, और दाहिने हाथ में एक छोटी सी ढाल थी जिस पर लाल स्याही अथवा खून के कुछ निशान बने हुए थे। मेरे देखते देखते उसका खौफनाक जबड़ा जिसके भयानक दांत मौत के दाढ़ों की तरह जान पड़ते थे खुला और उसके अन्दर से कलेजे को दहला देने वाली एक भयानक हँसी निकली !

इतना कह दारोगा ने पुनः आंखें बन्द कर लीं और इस तरह कांप उठा मानों वह अब भी उस पिशाच को अपने सामने ही देख रहा है। जैपाल जो बड़े गौर से उसकी बातें सुन रहा था यह देख बोल उठा, "दारोगा

साहब ! आप यह आंखों देखा हाल बयान कर रहे हैं या किसी तिलिस्मी खेल को देख कर भौंचक में पड़ गये थे !"

दारोगा० । ठीक हाल कह रहा हूं ठीक ! कोई तिलिस्मी तमाशा नहीं बयान कर रहा हूँ ! तुम अगर उस वक्त होते तो देखते कि वह कैसी डरावनी शकल थी !

जैपाल० । खैर तब क्या हुआ ?

दारोगा० । उसकी भयानक हंसी ने मुझको एक दम दहला दिया और मुझमें इतनी भी ताकत न रह गई कि वहां से भाग सकूं। सर्यू तो उस आसेब को एक ही निगाह देख चीख मार कर बेहोश हो चुकी थी पर मेरी भी वही हालत होती अगर मैं थोड़ी देर भी और उसे देखता या उससे बातें करता। मैंने तो दोनों हाथों से अपनी आंखें बन्द कर लीं और उसी जगह जमीन पर बैठ गया। उस शैतान ने यह देख फिर एक भयानक हंसी हंसी और तब आहट से जान पड़ा कि वह मेरी तरफ बढ़ रहा है। मैंने तो समझा कि बस अब जान गई और यह मुझे कच्चा ही चबा कर खतम करेगा मगर नहीं, इसी समय बगल की किसी कोठड़ी में से कुछ आदमियों की आवाज सुनाई पड़ी जिसे सुनते ही वह पुनः एक बार गरजा और तब बिजली की तरह चमक कर गायब हो गया। उस जगह सिर्फ थोड़ा सा धुंआ रह गया जो थोड़ी देर बाद गायब हो गया।

जैपाल० । (ताज्जुब से) फिर क्या हुआ ?

दारोगा० । बस मुझे तो मौका मिला और मै इस तरह वहां से भागा जैसे शेर के मुंह से छुटा हुआ शिकार भागता है, पर भाग के भी मेरी जान को चैन न मिला। दस ही पांच कदम गया होऊंगा कि एक कोठड़ी से निकल कर कई आदमियों ने मुझे घेर लिया।

जैपाल० । वे लोग कौन ?

दारोगा० । क्या मेरे हवास उस वक्त इस लायक थे कि मैं दोस्त या दुश्मन को पहिचानता ! उस वक्त डर और खौफ से मै तो पागल सा हो

रहा था। मैंने बस अन्धे की तरह इधर उधर तलवार का हाथ मारना शुरू किया और भीड़ को चीरता हुआ आगे को भागा। उन्होंने मेरा पीछा किया, हमलोगों में दौड़ते भागते हुए भी दो चार हाथ हुए, उसी समय खम्भे से लग कर मेरी तलवार टूट गई मगर मैंने भागने में कसर न की और किसी तरह तुम्हारे पास पहुंचा। अब जो यह सोचता हूँ कि कैसे वहां तक आया तो खुद ताज्जुब होता है।

जैपाल०। (कुछ देर चुप रह कर) मगर यह तो आपने बड़ी विचित्र खबर सुनाई। बहुत कुछ घटनायें हमलोगों पर पड़ीं पर आज तक कभी ऐसा मामला तो देखने में नहीं आया था।

दारोगा०। देखने में क्या सुनने में भी नहीं आया था! उस शैतान की शकल जब मैं ख्याल करता हूँ मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

जैपाल०। लेकिन आखिर आप ख्याल क्या करते हैं कि वह क्या बला थी?

दारोगा०। (कुछ सोच कर) मैं तो समझता हूं कि वह चक्रव्यूह के तिलिस्म की हिफाजत करने के लिये मुकर्रर किया हुआ कोई पिशाच है। वह तिलिस्म बड़ा ही भयानक है। जब जब मैं उसके नजदीक गया धोखा ही उठाया। तुम्हें याद होगा पहली दफे जब हम लोग वहां गये थे तब भी यद्यपि यह डरावनी चीज तो नहीं देखी थी फिर भी ऐसी ऐसी चीजें मेरे देखने में आईं थीं कि हवास गुम हो गये थे और अबकी भी उसी फाटक के अन्दर से यह निकला था, इसी से मैं सोचता हूं कि हो न हो उसी तिलिस्म में रहने वाला या उसकी हिफाजत करने वाला यह कोई है।

जैपाल०। हो सकता है! लेकिन तब जरूर वह चक्रव्यूह बड़ी भयानक जगह है! अब आपको बहुत समझ बूझ कर उस तरफ जाना चाहिये!

दारोगा०। जाना! अजी अब मैं उस तरफ कभी झाँकने का तो हूं नहीं, मैंने उसी वक्त कान पकड़ा और कसम खाई कि चक्रव्यूह में जाने

का नाम तो लूंगा नहीं, अब क्या फिर जाऊंगा ? जान थोड़ी ही भारी पड़ी है !!

जैपाल० । अच्छा तो अब आप कुछ देर आराम करें और मुझे आज्ञा हो तो मैं चलूं, आज बहुत परेशानी उठानी पड़ी ।

दारोगा० । अच्छा जाओ, मैं भी लेटूंगा ।

दो चार बातों के बाद दारोगा साहब से बिदा हो जैपाल उनके मकान के बाहर हुआ और अपने घर की तरफ रवाना हुआ । जैपाल को बहुत दूर नहीं जाना था क्योंकि दारोगा साहब का अन्तरंग मित्र होने के कारण तथा इस लिये कि न जाने कब उन्हें उसकी जरूरत पड़ जाय अपने मकान से बहुत ही कम दूरी पर मगर कुछ गलियों के अन्दर के एक मकान में दारोगा साहब ने इनका डेरा कायम किया हुआ था ।

लगभग आधा रास्ता जैपाल ने तय किया होगा कि एक अंधेरी गली के मोड़ पर उसे अचानक रुक जाना पड़ा । लम्बे डील डौल का एक कद्दावर आदमी जिसका चेहरा अन्धेरे के कारण साफ नजर नहीं आ रहा था गली के बीचोबीच में खड़ा हुआ था जिसने इसे देखतेही अपने हाथ की भारी लाठी आड़ी रख के गली का रास्ता रोक लिया और अक्खड़पने के साथ इसका हाथ पकड़ कर रोकता हुआ ऐंठ कर बोला, "जरा सुनते जाइये, बाबू साहब !"

जैपाल ने झटका दे कर अपना हाथ छुड़ाना चाहा और साथ ही कुछ गुस्से से कहा, "कौन है बे ? कैसा बेहूदा आदमी है !" मगर इन दोनों ही का कोई असर उस आदमी पर न हुआ । न तो उसने उसकी कलाई छोड़ी और न उसकी बात का कुछ बुरा ही माना बल्कि हँस पड़ा और कहने लगा, "आप इतना बिगड़ते क्यों हैं ? जरा ठंढे हो कर मेरी बात तो सुनते जाइये !!"

और कोई वक्त होता अथवा कोई मददगार साथ में होता तो शायद जैपाल किसी दूसरी तरह पेश आता मगर इस समय एक तो गली में

बिलकुल अन्धेरा और सन्नाटा देख कर तथा दूसरे इस आदमी को बहुत मजबूत पा कर या शायद यह भी सोच कर कि यहां आवाज देने पर भी कोई उसकी मदद को न पहुँचेगा उसने अपने मिजाज को भीतर ही भीतर बहुत क्रोध मालूम होने पर भी ऊपर से ठंढा ही रक्खा और कहा, "अच्छा कहो क्या कहते हो ?

आदमी० । क्या आपका नाम जैपालसिंह है ?

जैपाल० । हां है तो !

आदमी० । तब यह चिट्ठी आप ही के लिये है ।

कह कर उसने कमर में खोंसी हुई एक चिट्ठी निकाल कर जैपाल के हाथ पर रख दी । जैपाल ने चीठी लेते हुए कहा, "यह किसने भेजी है ?"

उसने जवाब दिया, "किसने भेजी है और क्यों भेजी है यह सब आपको चीठी पढ़ने से मालूम हो जायगा । अगर यहां अन्धेरा समझते हों तो उस लालटेन के पास चले चलिये और जल्दी पढ़ डालिये ।"

थोड़ी दूर पर एक मकान के कोने से लगी हुई लालटेन अपनी फीकी रोशनी आस पास की दीवारों पर डाल रही थी । जैपाल कुछ सोचता विचारता उसी की तरफ बढ़ा और वह आदमी भी साथ हुआ । मगर लालटेन की रोशनी में वह कागज खोल उस पर एक निगाह डालते ही चौंक पड़ा और तब जल्दी जल्दी उस चिट्ठी को पढ़ गया जिसका मजमून इस प्रकार था :—

"मेरे प्यारे मजनू !

मै बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ गई हूँ । अगर मुझे जीता जागता देखना चाहते हो तो चिट्ठी देखते ही इस आदमी के साथ चल पड़ो । मुख्तसर में लिखे देती हूं कि तुम्हारा कैदी मेरे कब्जे से निकल गया और सारा भण्डा अब फूटा ही चाहता है । पूरा हाल यहां आने पर बताऊँगी ।

उसके सम्बन्ध के कुल कागजात और कुछ दौलत भी अपने साथ जरूर लेते आना।

तुम्हारी प्यारी—

बेगम।"

इस चिट्ठी ने जैपाल को घबड़ा दिया। कुछ देर तक वह चुपचाप खड़ा कुछ सोचता रहा और तब उस आदमी से बोला, "मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ। मेरा मकान पास ही में है वहां चल कर कुछ सामान ले लूँ। तुम्हारे साथ कोई सवारी है या सवारी का इन्तजाम करना पड़ेगा?"

उस आदमी ने जवाब दिया, "मै डोंगी पर आया हूं जिस पर आठ मल्लाह मौजूद हैं। हुक्म है कि इसी नाव पर आपको ले आऊँ एक मिनट की भी देरी न करूँ।"

जैपाल०। अच्छी बात है, मेरे साथ साथ आओ, मैं बहुत जल्द तैयार हो जाऊँगा।

उस आदमी ने कोई उज्र न किया और जैपाल के पीछे पीछे चल पड़ा। जैपाल उसे लिये अपने मकान की तरफ बढ़ा। इस समय उसका चेहरा देखने वाला कह सकता था कि वह किसी गहरे सोच में पड़ गया है।

घर पहुँच कर जैपाल ने जल्दी जल्दी कई जरूरी काम निपटाये, एक चिट्ठी दारोगा साहब के नाम की लिख कर और सुबह उनके पास पहुंचा देने की ताकीद करके नौकर के पास छोड़ी, इसके बाद कपड़े पहिन तैयार हुआ और तब एक मजबूत आलमारी खोल कर उसमें से कोई चीज निकाल कर कमर में खोंसी और वहीं से लाल रंग के कपड़े में बँधी एक छोटी गठड़ी जिसमें न जाने क्या चीज थी निकाल कर बगल में दबाई, इसके बाद आलमारी बन्द कर मकान के ऊपर वाली मञ्जिल की एक कोठड़ी में पहुंचा। यहां से भी उसने कोई सामान निकाला और एक लबादा ओढ़ने के लिये हाथ में लेकर एक छुरा कमर में छिपाया, इसके

बाद उस आदमी के पास पहुंच कर बोला, "बस मैं चलने को तैयार हूं।"

वह आदमी बिना कुछ कहे सुने उठ खड़ा हुआ और दोनों नदी की तरफ रवाना हुए जो वहां से बहुत दूर नहीं पड़ती थी। एक लम्बी हलकी और तेज जाने वाली किश्ती जिस पर मल्लाह मौजूद थे किनारे से कुछ दूर जल में खड़ी थी। जैपालसिंह के साथी ने "रामा! रामा!" कर के आवाज दी जिसके साथ ही डोंगी पर से एक आदमी ने जवाब दिया और डोंगी किनारे से आ लगी।

हाथ का सहारा दे कर एक मल्लाह ने जैपाल को डोंगी पर चढ़ा लिया। पीछे की तरफ एक कम्बल बिछा हुआ था जिस पर जैपाल बैठ गया, उसका साथी वह कद्दावर जवान उसके बगल में जा बैठा, और तब उसके एक इशारे के साथ साथ ही डोंगी किनारा छोड़ कर बीच धार में हो गई।

इस समय की खिली चांदनी में गंगा जी का सुहावना और शान्त दृश्य मन को मोह लेने वाला था। जैपाल कुछ देर तक अपने चारो तरफ की प्रकृति की छटा को देखने में लगा रहा मगर यकायक वह चौंका जब उसे खयाल आया कि डोंगी धार पर चढ़ने के बजाय उल्टे नीचे की तरफ बहाव के साथ साथ तीर की तेजी से जा रही है, क्योंकि खेने वाले सभी आदमी मजबूत और अपने काम में होशियार थे। वह घबड़ा कर सोचने लगा, "काशी तो जमानिया से ऊपर की तरफ है, ये लोग नीचे की तरफ क्यों जा रहे हैं! क्या कोई धोखा तो नहीं है?" उसने अपने साथ वाले आदमी का हाथ पकड़ा जो नाव के किनारे पर सिर रखा ऊँघ रहा था और उसे हिला कर पूछा, "हम लोग नीचे बहाव की तरफ क्यों जा रहे हैं, काशी तो ऊपर की तरफ है?"

उस आदमी ने एक बार सिर घुमा कर अपने चारो तरफ देखा और तब कड़ी आवाज में जैपाल से कहा, "बस चुप रहो और समझ रक्खो कि अपने मालिक के हुक्म से मैं तुम्हें गिरफ्तार करके ले जा रहा हूं।

अगर चुपचाप बैठे नहीं रहोगे और शोरगुल मचाने या फसाद करने की नीयत करोगे तो बुरी तौर से पेश आऊंगा !!"

जैपाल की तो यह हालत हो गई कि काटो तो बदन में लहू नहीं। एक तो वह स्वभाव का ही डरपोक और बुजदिल आदमी था, दूसरे उस मोटे ताजे पहलवान से लड़ कर पार पाना उसकी ताकत से एकदम बाहर की बात थी, और तीसरे उस पहलवान के वे साथी भी जो नाव खे रहे थे जरूर उसके ही हो कर काम करेंगे यह भी उसे विश्वास था, अस्तु किसी प्रकार भी अकेला वह इतने आदमियों पर फतेहयाबी नहीं पा सकता था। यही सब कुछ देख और समझ वह चुपचाप अपनी जगह पर दबका रह गया मगर इतना जरूर गौर करता रहा कि ये लोग किसके आदमी हो सकते हैं और इस प्रकार धोखा दे कर उसे कहां ले जा रहे होंगे। एक सायत के लिये उसका खयाल बेगम की तरफ गया जिसकी चिट्ठी पर विश्वास कर के अकेला ही इन सभों के साथ घर से निकल पड़ा था, मगर उसकी प्यारी बेगम उसके साथ दगा करेगी इस बात पर भी उसका खयाल न जमा और उसने यही स्थिर किया कि जरूर वह चिट्ठी जाली है। पर उस चीठी का मजमून ऐसा था कि इस बात पर उसका खयाल न जमा और उसने यही निश्चय किया कि या तो बेगम को धोखा दे कर वह चिट्ठी लिखा ली गई है अथवा सचमुच कोई जरूरत पड़ने पर बेगम ने किसी आदमी को वह चिट्ठी दे कर भेजा है और वह आदमी इन लोगों के कब्जे में पड़ गया है। मगर फिर ये लोग आखिर हैं कौन और इस तरह उसे गिरफ्तार कर के कहां ले जा रहे हैं ?

तरह तरह की बातें जैपाल सोच गया मगर उसकी अक्ल ने कुछ काम न दिया और अब वह इस सोच में पड़ गया कि उस चिट्ठी पर भरोसा करके जो दौलत और कागजात उसने साथ ले लिये हैं उनका क्या होगा? दौलत से ज्यादा उसे उन कागजों की फिक्र थी जिनका उसके किसी दुश्मन के हाथ में पड़ जाना उसके हक में मौत से बढ़ कर बुरा होगा ! इस

खयाल ही से वह कांप उठा कि उसके कब्जे से निकले हुए वे कागज अब उसी को बर्बाद कर देंगे।

न जाने उन कागजों में कौन सा भेद छिपा हुआ था कि उनको दुश्मनों के हाथ में दे देने की बनिस्बत एक दम नष्ट कर देना ही जैपाल को बेहतर मालूम हुआ। उसने बहुत ही आहिस्ते से, जिसमें किसी पर जाहिर न हो, अपने कमर में हाथ डाल कर कोई चीज जो वहां छिपाई थी निकाली और छिपे छिपे ढंग से ही उसे उस गठड़ी में डाला जो घर से साथ लाया था और जो इस समय उसके बगल में पड़ी हुई थी। चारो तरफ उसने जांच की निगाह फेरी। सब मल्लाह अपने अपने काम में लगे थे और उसे गिरफ्तार करने वाला अपनी जगह पर बैठा ऊंघ रहा था। मौका अच्छा था। उसने धीरे से हाथ बढ़ा कर वह गठड़ी उठाई और फुर्ती से पानी में फेंका।

मगर उसके बगल में बैठा हुआ वह मोटा ताजा आदमी देखने में यद्यपि लापरवाह और ऊंघता हुआ मालूम होता था पर भीतर ही भीतर खूब चौकन्ना और सब तरह से होशियार था। जैपाल के हाथ से गठड़ी छूटने के पहिले ही उसका हाथ उस गठड़ी पर जा पड़ा और उसने उसे पकड़ लिया। उसी समय जैपाल के हाथों में एक तेज छूरा दिखाई पड़ा मगर इस आदमी की तेज निगाहों ने उसे भी देख लिया। एक हाथ से तो वह गठड़ी ठिकाने रक्खी और दूसरे हाथ से जैपाल की कलाई पकड़ कर ऐसे जोर से उसकी बांह उमेठी कि जैपाल के मुंह से एक चीख निकल पड़ी और छूरा हाथ से छूट कर गिर पड़ा। छूरा उठा कर उस आदमी ने जोर से दूर फेंक दिया और वह चन्द्रमा की रोशनी में चमकता हुआ एक हलके छपाके के साथ पानी में गिर गया। इसके बाद उसने गरज कर कहा, "बस अब अगर तुमने जरा भी शैतानी की तो हथकड़ी बेड़ी से कस दिये जाओगे! अपनी कुशल चाहते हो तो चुपचाप बैठे रहो और भागने का ख्याल भी मत करो!!"

चौथा बयान

उस पीतल वाली संदूकड़ी के अन्दर भूतनाथ को कोई ऐसी डरावनी चीज नजर आई जिसे देखते ही वह एक दम बदहवास हो गया। उसके साथी और शागिर्द ताज्जुब के साथ उसकी यह अवस्था देख रहे थे और साथ ही यह भी सोच रहे थे कि इस संदूकड़ी में ऐसी कौन सी चीज थी जिसे देख कर भूतनाथ जैसा कट्टर जीवट वाला और बहादुर आदमी इस तरह बदहवास हो गया।

मगर भूतनाथ की यह हालत देर तक न रही। उसने कुछ ही देर में अपने ऊपर काबू कर लिया और बिगड़े हुए दिमाग को ठिकाने कर पुनः उस संदूकड़ी को उठाया। उसका विचार उस संदूकड़ी की चीजों को अच्छी तरह देखने और जांचने का था पर उसी समय उसकी निगाह साथियों की तरफ उठ गई और उनकी नजरों को गौर ताज्जुब और कौतूहल के साथ अपने ऊपर पड़ता हुआ पा उसका विचार बदल गया। उसने उस संदूकड़ी को ज्यों का त्यों बन्द कर अपने बटुए के हवाले किया और उन गठड़ियों में से निकली हुई चीजों की जांच करने लग गया।

गौहर और मुन्दर के सामानों से भरी उन गठड़ियों की जांच में भूतनाथ ने ज्यादा वक्त बरबाद न किया। कुछ जरूरी और काम का सामान तो उसने अपने पास रख लिया तथा बाकी का पुनः गठड़ी में बांध अपने शागिर्दों के हवाले करने बाद वह उठ खड़ा हुआ और बोला, "मेरे दोस्तो! मैं तुमसे छिपाना नहीं चाहता कि इन दोनों औरतों ने मेरा एक ऐसा गुप्त भेद जान लिया है कि जिसका प्रगट होना मेरे हक में मौत से बुरा होगा, अस्तु मैं बिना इस मामले की तह तक पहुँचे, जिन जिन ने इस भेद को जाना है उन्हें गिरफ्तार किये, और किस प्रकार और किसकी कार्रवाई से यह भेद प्रगट हुआ है इसे जाने, चैन से बैठ न सकूंगा। इस सामान और उन दोनों औरतों को ले कर तुम लोग लामाघाटी चले जाओ।

वहां जब तक मैं न पहुंचूं इन सभों की अपनी जान से बढ़ कर हिफाजत करना और किसी तरह भी इन्हें कब्जे से बाहर न जाने देना। तुम में से चार आदमी मेरे काशीजी वाले दोनों अड्डों पर चले जाओ और दो दो आदमी हर एक पर तब तक जमे रहो जब तक मेरा दूसरा हुक्म न पहुंचे, और (एक आदमी की तरफ बता कर) तुम बलदेव मेरे साथ चलो।"

काशी के दोनों अड्डों से भूतनाथ का मतलब अपनी दूसरी स्त्री रामदेई और तीसरी नई नवेली श्यामा से था जिनके नाम उसने यहां पर न लिये मगर उसके आदमी उसका मतलब अच्छी तरह समझ कर उसी समय उठ खड़े हुए और वहां से डेरा कूच करने की फिराक में लग गये। दो आदमी उधर चले गये जहां बेहोश मुन्दर और गौहर तथा उनकी हिफाजत के लिये मुकर्रर उनका एक साथी था और बाकी के लोग सामान बटोरने लगे। भूतनाथ ने अपने शागिर्द बलदेव को अपने पास बुला लिया और जरा दूर हट कर उससे कुछ बातें करने लगा मगर उसका ध्यान अचानक अपने एक शागिर्द की तरफ गया जो दौड़ता हुआ उसकी तरफ आ रहा था। बात की बात में वह पास आ पहुंचा और घबड़ाई हुई आवाज में बोला, "गुरूजी ! वे दोनों औरतें तो कहीं गायब हो गईं !!"

भूत०। (घबड़ा कर) हैं ! क्या कहा ? गायब हो गईं !! सो कैसे ?

शागिर्द०। जिस गुफा में वे दोनों बेहोश कर के डाल दी गई थीं वह खाली पड़ी है और हमारा साथी रामेश्वर जो उनकी हिफाजत के लिये वहां बैठाया गया था वहां कहीं दिखाई नहीं पड़ता !!

भूत०। तो क्या यह समझा जाय कि रामेश्वर ने हमें धोखा दिया ?

शागिर्द०। रामेश्वर ने ऐसा किया होगा यह बात तो दिल कबूल नहीं करता ! हां यह हो सकता है कि उन औरतों का कोई साथी आ पहुँचा हो जो उन्हें छुड़ा कर उनके साथ ही साथ रामेश्वर को भी ले गया हो।

भूत०। खैर जो कुछ हुआ हो, चारो तरफ फैल कर अच्छी तरह उन

सभों को ढूंढो। अगर कोई उन दोनों को छुड़ा ले गया होगा तो अभी दूर न गया होगा। क्या बताऊं, इन औरतों के निकल जाने से मेरा तरद्दुद और भी बढ़ गया !!

भूतनाथ के सब साथियों और स्वयम् भूतनाथ ने भी चारो तरफ दूर दूर तक अच्छी तरह खोजा मगर गौहर और मुन्दर कहीं दिखाई न पड़ीं, हां एक झाड़ी के अन्दर बेहोश रामेश्वर जरूर दिखाई पड़ा जिसे सब लोग उठा कर बाहर ले आये। भूतनाथ ने होश में लाकर उससे तरह तरह के सवाल करने शुरू किये, मगर उसने सिर्फ यही कहा— "मैं एक पेड़ के साथ उदंगा हुआ कुछ गुनगुना रहा था कि कहीं से आकर पटाके की तरह की कोई चीज मेरे पास गिरी जो गिरते ही हलकी आवाज दे कर फूट गई और उसके अन्दर से इतना धूंआं निकला कि उसने देखते देखते मुझे घेर लिया। वह धूंआ इतनी तेज बेहोशी का असर रखता था कि मैं उठ कर खड़ा भी न होने पाया था कि जमीन पर गिर पड़ा और मुझे तनोबदन की सुध न रह गई।"

यह हाल सुन भूतनाथ कुछ देर के लिये गौर में पड़ गया और तब बोला, "मुझे शक होता है कि यह कार्रवाई दारोगा या उसके किसी आदमी की है क्योंकि उसे भी इस भेद से उतना ही सम्बन्ध है जितना मुझे, मगर इसके सबब से मुझे अपना विचार बदलना पड़ता है। तुममें से दो आदमी तो गौहर और मुन्दर से मिले सामानों को ले कर लामाघाटी जाओ और बाकी के लोग सीधे जमानिया पहुँच कर टोह लगाओ। मैं इस समय एक जरूरी काम के लिये जाता हूँ और परसों किसी समय तुम लोगों से अपने नियत स्थान पर मिलूंगा।"

कुछ जरूरी बातें और भी समझाने बाद भूतनाथ वहां से हटा और केवल अपने शागिर्द बलदेव को लिये कुछ बातें करता एक तरफ को रवाना हुआ।

बीच बीच में थोड़ी देर के लिये ठहरता और सुस्ताता हुआ भूतनाथ

संध्या बल्कि कुछ रात गये तक बराबर चलता ही गया। वह किधर किस नीयत से जा रहा है यह कहना कठिन था मगर इसमें कोई शक नहीं कि अपने धुन का पक्का वह धूर्त किसी मतलब ही से यह लंबा सफर कर रहा था। दो घड़ी रात जाते जाते भूतनाथ और उसका शागिर्द गंगा तट पर एक ऐसी जगह पहुँच गये जहां किनारे पर एक छोटा गांव और उससे कुछ हट कर एक छोटा सा शिवालय था। भूतनाथ ने अपने शागिर्द के साथ इसी शिवालय में डेरा डाल दिया और रात इसी जगह काटने का निश्चय किया। दोनों आदमियों के बटुए में खाने पीने का साधारण सामान मौजूद था। कुछ मीठा खा और जल पीकर दोनों ने अपनी भूख शान्त की और मन्दिर के सभा-मण्डप के एक कोने में लेट रहे जहां से गंगाजी का दूर दूर तक का दृश्य दिखाई पड़ रहा था। दिन भर के सफर से थका हुआ उसका शागिर्द बलदेव तो शीघ्र ही खुर्राटे लेने लगा मगर तरह तरह के तरद्दुदों में पड़े हुए भूतनाथ की आंखों में नींद का नाम निशान न था। बहुत देर तक वह इधर उधर करवटें बदलता रहा पर आखिर गंगा तट की शीतल निर्मल वायु ने थपकियां दे देके उसे भी सुला ही दिया।

मगर पौ नहीं फटने पाई थी कि भूतनाथ की नींद किसी तरह की आहट पाकर खुल गई। उसने कान लगा कर सुना तो मालूम हुआ कि एक तेज डोंगी जिस पर कई डांडे चल रहे हैं उसी तरफ आ रही है और उसी की आहट ने नींद उचटा दी है। वह उठ कर बैठ गया और तब उसके देखते देखते एक पतली लम्बी डोंगी किनारे आकर लगी जिस पर से एक कद्दावर आदमी कूद कर नीचे आया। नाव किनारे से हट कर पुनः कुछ दूर चली गई और वह आदमी सीधा उस मन्दिर की तरफ बढ़ा। उसे देखते ही भूतनाथ के चेहरे पर खुशी की निशानी झलक पड़ी और उसने अपने शागिर्द को जगाते हुए कहा, "बलदेव, बलदेव, उठो, तुम्हारा भाई आ पहुंचा!!" बलदेव यह सुनते ही उठ कर बैठ गया और उसी समय वह आदमी भी मन्दिर के पास आ गया। भूतनाथ को बैठा

देख उसने लपक कर उसका पैर छूआ और भूतनाथ ने उसे गले से लगाते हुए कहा, "तुम्हारे चेहरे से खुशी जाहिर हो रही है। मालूम होता है वह काम हो गया !"

वह आदमी बोला, "जी हां, आपके चरणों की कृपा से मुझे उस काम में पूरी सफलता मिली !!" और तब अपने भाई से गले मिल कर भूतनाथ की इच्छानुसार वह उसके सामने बैठ गया। भूतनाथ ने पूछा, "अच्छा अब सुनाओ क्या क्या हुआ और क्या क्या काम तुमने किया ?"

यह आने वाला नौजवान बलदेव का भाई और भूतनाथ का शागिर्द था। इधर थोड़े ही दिनों से यह भूतनाथ की मण्डली में आकर मिला था पर इसकी हिम्मत बहादुरी चालाकी ताकत और ऐयारी ने भूतनाथ को लट्टू कर दिया था और उसे विश्वास हो गया था कि अगर यह कुछ दिन उसके साथ रह गया तो परले सिरे का ऐयार निकलेगा। इसका नाम रामगोविन्द था और हमारे पाठक इसे ऊपर वाले बयान में देख चुके हैं क्योंकि जमानिया में जैपाल को गिरफ्तार करने वाला यही शख्स था। भूतनाथ की बात सुन वह बोला :—

रामगोविन्द०। आपकी कृपा से सब काम पूरा पूरा उतरा मगर सबसे पहिले मै यह जानना चाहता हूं कि आपने यहां आने में कई दिन की देरी क्यों कर दी ? हमलोग कई दिन से बराबर राह देखते हुए यह सोच सोच घबड़ा रहे थे कि आप किसी मुसीबत में तो नहीं पड़ गये !!

भूत०। तुम्हारा खयाल ठीक है और बेशक मै एक बड़े भारी तरद्दुद में पड़ गया था, इसी से मुझे आने में तीन चार दिन की देरी हो गई। इस समय तुम्हारा हाल सुनने बाद मैं अपना हाल सुनाऊँगा बल्कि तुम्हारी मदद भी लूंगा क्योंकि एक बड़ा टेढ़ा मामला आ पड़ा है जिसमें तुम्हारे ऐसा होशियार आदमी ही मेरी मदद कर सकता है।

राम०। मैं हर वक्त दिलोजान से हाजिर रहूंगा। अपना हाल मैं संक्षेप ही में सुनाये देता हूं। आपकी आज्ञा पाकर हमलोग सीधे चुनार चले गये

और इधर उधर टोह लगाने लगे। पहिले दिन तो कुछ काम न हुआ मगर दूसरे दिन जब मैं एक चोबदार की सूरत बना हुआ इधर उधर घूम रहा था तो दो लौंडियों की बातचीत से कुछ पता लगा। मैंने उनमें से एक को अपने जाल में फँसाया और उसी की जुबानी थोड़ा बहुत हाल पाकर दीवान हरदयालसिंह के पीछे पड़ा। उन्हें धोखा देकर मैंने उनसे सब पता ले लिया। जो कुछ आपने सुना था वह बहुत ठीक था। उस घटना के बाद ही महाराज सुरेन्द्रसिंह ने अपने कुछ जासूस पता लगाने को छोड़े थे, और उन्होंने जो कुछ पता लगाया उससे यह जान पड़ा कि केवल जमानिया की महारानी, दारोगा साहब, और आप ही उस मामले में सने हुए न थे बल्कि जैपालसिंह और उनकी 'बेगम' भी उसमें मुबतिला थीं। महारानी और दारोगा के बारे में तो महाराज सुरेन्द्रसिंह कुछ कर न सके, या संभव है कि उनके बारे में गुप्त रीति से महाराज गिरधरसिंह को कुछ लिखा हो, पर जैपाल बेगम और आपको गिरफ्तार करने के लिये उन्होंने कई आदमी छोड़े और साथ ही यह मुनादी करा दी कि इस मामले की ठीक ठीक खबर देने वाले को वे मुंह-मांगा इनाम देंगे। इस इनाम की लालच ने बेगम के मन में यह खयाल पैदा किया कि वह सब कसूर आप पर थोप कर खुद साफ छुट ही न जाय बल्कि मुंहमांगा इनाम भी ले। वह उसी वक्त विजयगढ़ गई और रियासत के कई ओहदेदारों से मिल कर यह बात जाहिर की कि अगर महाराज सुरेन्द्रसिंह उसे और उसके आशिक जैपाल को छोड़ दें तो वह इस मामले का पूरा पूरा भेद, जिसने यह काम किया उसका नाम, और पूरा पूरा सबूत महाराज को दे सकती है। महाराज ने यह बात स्वीकार कर ली बल्कि यह भी कहा कि अगर वह आपको गिरफ्तार करा देगी तो मुंहमांगा इनाम ही नहीं बल्कि और भी कुछ पावेगी। बेगम खुशी खुशी लौट आई और आपके खिलाफ तरह तरह के सबूत जुटाने लगी। लेकिन इसी बीच चुनारगढ़ के राजा शिवदत्त से महाराज सुरेन्द्रसिंह की लड़ाई

लग पड़ी जिससे यह मामला ठंढा पड़ गया परन्तु अब फिर उभड़ा है और बेगम तथा जैपाल इसके सम्बन्ध में गुप्त रीति से बहुत कुछ कर रहे हैं।

यह सब हाल कुछ तो दीवान हरदयालसिंह को धोखा देकर मैंने जाना और कुछ इधर उधर नौकर चाकर लौंडी गुलामों से बातचीत कर और इनाम इकराम दे दिला कर पता लगाया। जो कुछ मैंने सुना उससे मुझे यही विश्वास हुआ कि इस मामले का असली भेद बेगम के पेट में है अस्तु मैं चुनारगढ़ से सीधा काशी पहुँचा और बेगम के मकान के चारो तरफ चक्कर लगाने लगा। आखिर एक दिन रात के समय मौका पाकर मैं उसके मकान में कमंद लगा कर घुस गया और चारो तरफ घूमने फिरने और तलाशी लेने लगा। कितने ही संदूक आलमारी और कोठड़ियों के ताले मैंने तोड़े और उनकी जांच की मगर कामयाबी कुछ न हुई जिसका सबब शायद यह था कि बेगम उस रात वहां थी नहीं, कहीं गई थी, और संभव है जरूरी कागजात कहीं छिपा कर रख गई हो या अपने साथ ही ले गई हो। लाचार असफल होकर मै लौटना ही चाहता था कि उसी समय एक बन्द कोठड़ी की जंजीर काटने पर मुझे उसके अन्दर एक कैदी दिखाई पड़ा जो इतना कमजोर और दुबला पतला हो रहा था कि साफ जान पड़ता था कि बरसों का कैदी ही नहीं है बल्कि हद दर्जे की तकलीफ में रक्खा जाता है। बैरंग वापस लौटने से अच्छा समझ कर और यह भी सोच कर कि शायद इससे हम लोगों के काम में कुछ मदद मिले मैं उसको अपने साथ ही बेगम के मकान के बाहर ले आया।

भूत०। अब वह आदमी कहां है? उसका नाम धाम कुछ मालूम हुआ?

राम०। उसे आपके अड्डे पर छोड़ आया हूं मगर नाम धाम या हाल चाल मुझे कुछ भी मालूम न हो सका, क्योंकि मैं एक दूसरे ही फेर में पड़ गया।

भूत० । सो क्या ?

राम० । उस कैदी को लेकर बेगम के मकान के बाहर होने के कुछ ही देर बाद बेगम वहां पहुंची । आते ही उसको मालूम हो गया कि कोई आदमी चोरी की नीयत से उसके मकान में घुसा था क्योंकि अपने काम के लिए मुझे कई ताले तोड़ने और जंजीरें तथा कुलाबे काटने पड़े थे जैसा कि मैंने आपसे कहा । तुरत ही चारो तरफ खोज ढूंढ़ मच गई और कुछ ही देर में लोगों क मालूम हो गया कि वह कैदी निकल गया है । यह हाल जानते ही बेगम घबड़ा गई और उसने उसी समय अपना एक आदमी चिट्ठी देकर जमानिया रवाना किया ।

भूत० । किसके पास ? जैपाल के पास भेजा होगा ?

राम० । जी हां, मुझे भी यह बात मालूम हो गई और मैंने उस आदमी का पीछा करके शीघ्र ही पता लगा लिया कि बेगम ने चिट्ठी भेज कर जैपाल को बुलवाया है और मेरा काम बन गया । आपने जैपाल को गिरफ्तार करने का हुक्म दिया ही था, इस बेगम की चिट्ठी की मदद से वह काम बखूबी बनता था, अस्तु मैंने उस आदमी को गिरफ्तार कर लिया और स्वयम् उसकी जगह काशी जाकर जैपाल से मिलने का विचार किया । बेगम के मकान से निकले हुए कैदी और बेगम के आदमी को साथियों की मार्फत अड्डे पर भेजा, और बाकी लोगों को साथ ले काशी पहुँचा । बेगम की चिट्ठी की बदौलत जैपाल सहज ही कब्जे में आ गया बल्कि कुछ और भी काम बन गया ।

भूत० । वह क्या ?

राम० । बेगम की चिट्ठी में मैंने अपनी तरफ से यह बढ़ा दिया था कि उस कैदी के सम्बन्ध के सब कागज और कुछ दौलत भी लेते आना, सो जैपाल इस जाल में फंस गया और बहुत से कागजों की एक गठड़ी और कुछ जवाहिरात लेकर घर से निकला । उसे गिरफ्तार करना कौन मुश्किल था ? हम लोग उसे पकड़ कर नाव के रास्ते यहां पहुँचे जहां

आपने मिलने का वादा किया था पर दो रोज तक आपकी राह देखने पर भी आप न मिले, लाचार मैंने जैपाल को भी दो आदमियों के साथ अड्डे पर भेजवा दिया और खुद आपकी राह देखता रह गया, आज अगर आपसे मुलाकात न हो गई होती तो मैं यहां न रुकता और काशी जमानिया या मिर्जापूर जाकर आपका पता लगाता।

भूत०। (खुश होकर और रामगोविन्द की पीठ ठोंक कर) शाबाश! तुमने तो वह काम किया कि मैं भी न कर सकता था! तुम्हारे ऐसा शागिर्द पाकर मैं अपने को भाग्यवान समझता हूं। अच्छा तो जैपाल के पास से मिले हुए कागजात अब कहां हैं?

राम०। उन्हें भी मैंने जैपाल के साथ ही अड्डे पर भेज दिया। साथ रखने से न जाने कब क्या धोखा हो जाता। क्या उनकी अभी जरूरत है?

भूत०। नहीं कोई बहुत नहीं। मैं यहां से लौटूंगा तो उनकी जाँच करूंगा। हां तुम यह तो बताओ कि उस दूसरी बात का कुछ पता लगा जो मैंने तुमसे कही थी?

राम०। वह कौन सी?

भूत०। उस तिलिस्मी किताब के बारे में जो विक्रमी तिलिस्म में से निकली थी और जिसके बारे में कहा जाता है कि उसमें जमानिया के तिलिस्म का पूरा पूरा हाल लिखा हुआ है!

राम०। हाँ ठीक है, मैंने उसके बारे में भी जाँच की थी, उस किताब के बारे में लोगों में यह मशहूर है कि वह किसी आदमी के खून में लिखी गई है और इसी लिये रक्तगन्थ के नाम से मशहूर है। उसमें किसी बहुत बड़े और भयानक तिलिस्म का हाल लिखा हुआ है मगर वह तिलिस्म जमानिया तिलिस्म ही है या कोई और यह मैं जान न सका, हाँ यह पता जरूर लगा कि उसे राजा बीरेन्द्रसिंह बहुत हिफाजत के साथ खास अपने शीशमहल में रक्खे हुए हैं और उनका विचार है कि उसकी मदद से खुद

या अपने लड़कों के द्वारा वह तिलिस्म खोलें। आपकी आज्ञा न थी नहीं तो मै उस किताब को लेने की भी कोशिश करता।

भूत०। कोई हर्ज नहीं, मै शीघ्र ही उसके लिये या तो तुम्हें भेजूंगा और या खुद जाऊंगा। तुम जो कुछ पता लगा लाये हो उसी से मेरा बहुत सा काम निकल जायेगा। अच्छा लो अब मुझसे सुनो कि मै किस फेर में पड़ गया था! चूंकि यह मामला भी बहुत कुछ उसी भेद से सम्बन्ध रखता है जिसका पता लगाने मैंने तुम्हें चुनार भेजा था इस लिये मै तुम्हें पूरा पूरा हाल सुनाता हूँ।

भूतनाथ ने पिछला सब हाल—अपना घर से निकलना, रास्ते में कामेश्वर और भुवनमोहनी बनी हुई गौहर और सुन्दर का मिल कर उसे धोखे में डालना, उनका पीछा करते हुए कैलाशभवन के पास तक पहुँचना, शिवदत्त के आदमियों के हाथ उन दोनों का फंसना, खुद शिवदत्त बन कर उन ऐयारों के हाथ से उन्हें छुड़ाना और उनका भेद दरियाफ्त करना, और अन्त में उन दोनों ही का गायब हो जाना यह सब हाल पूरा पूरा उसने रामगोविन्द से कह सुनाया मगर इस बीच में अपने इन्द्रदेव से मिलने का हाल न कहा और न यही बताया कि उनसे क्या क्या बातें हुई थीं। रामगोविन्द सब हाल बड़े गौर से सुनता रहा और अन्त में बोला, "मुझे तो यह जान पड़ता है कि ये बेगम गौहर और सुन्दर वगैरह मिल कर आप पर कोई बड़ा तूफान खड़ा करना चाहती हैं!"

भूत०। बेशक यही बात है, मगर कुशल इतनी ही है कि इस सम्बन्ध में मेरे खिलाफ काम में आने वाले जितने सबूत थे करीब करीब वे सब मेरे कब्जे में आ गये हैं। बहुत से जरूरी कागजात तो खास सुन्दर और गौहर ही से मुझे मिले हैं और बाकी के तुम जैपाल के पास से उठा लाये हो। मुमकिन है कि स्वयम् जैपाल की जुबानी भी कुछ पता लगे या उस कैदी से कुछ भेद की बातें मालूम हों जिसे तुम बेगम के यहां से ले आये हो। अस्तु जब तक ये सब कागज मेरे पास रहेंगे किसी को मेरे खिलाफ उंगली

उठाने का मौका न मिलेगा।

राम०। बेशक, मगर आपको इन सब सबूतों को या तो एक दम गारत ही कर डालना चाहिये और या फिर बहुत होशियारी से रखना चाहिये क्योंकि अब जब कि इतने दिनों का छिपा हुआ यह भेद सिर्फ प्रगट ही नहीं हो गया है बल्कि कई आदमी इसे जान भी गये हैं तो जिसके हाथ में भी ये सबूत पड़ेगें वही आपको बहुत बड़ा नुकसान पहुंचा सकेगा। मैं यह नहीं जानता कि वह भेद क्या है और आपके दुश्मन किस बात का कलक आप पर लगाना चाहते हैं मगर जो कुछ आप ही की जुबानी या इधर उधर पता लगाते हुए जान पड़ा है उससे मै यह गुमान जरूर कर सकता हूं कि वह कोई बहुत ही भयानक बात है और उसका प्रगट होना आपके हक में अच्छा नहीं होगा।

भूत०। बेशक यही बात है। तुम मेरे परमप्रिय शिष्य हो अस्तु मैं तुमसे कुछ भी छिपाना नहीं चाहता और तुम्हें साफ साफ बताए देता हूँ कि वह क्या भेद है। मेरे पास आ जाओ और गौर से सुनो मगर इतना याद रखना कि जीती जिन्दगी इसका एक भी लफ्ज किसी दूसरे के कान में न जाना चाहिये नहीं तो मै कहीं का न रहूँगा। बलदेव! तुम भी गौर से सुनो, मगर खबरदार, कभी यह सब हाल किसी पर प्रगट न करना!!

भूतनाथ के शागिर्द उसके पास खसक आये और उसने कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि यकायक एक चीख की आवाज ने कान में पड़ कर सभों को चौंका दिया। आवाज कहीं पास ही से आई थी और किसी औरत की जान पड़ती थी जिसने उसे कुछ कहते कहते रोक दिया और वह चारो तरफ निगाह दौड़ा कर गौर करने लगा कि वह किधर से आई है। इसी समय पुनः वह आवाज आई और इस बार वह चौंक कर बोल उठा, "हैं! यह तो पहिचानी हुई सी जान पड़ती है!"

भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और उसके शागिर्द भी खड़े हो इधर उधर देखने लगे।

पांचवां बयान

जिस तरफ प्रभाकरसिंह की निगाह उठती थी उधर ही एक ताज्जुब की चीज वे देखते थे।

यह कमरा जो लम्बाई में चालीस हाथ और चौड़ाई में तीस हाथ से किसी तरह कम न होगा बिल्कुल संगमर्मर का बना हुआ था और इसकी छत जो ऊंचाई में पन्द्रह बीस हाथ से कम न होगी शीशे की बनी हुई थी जिसके कारण कमरे के खिड़की या दर्वाजे खुले न होने पर भी इस जगह रोशनी की कमी बिल्कुल न थी। पहिली चीज जिस पर प्रभाकरसिंह की निगाह पड़ी कमरे के बीचोबीच में बना हुआ एक फौवारा था जो संगमूसा का बना हुआ था मगर उसकी अनगिनती खूबसूरत टोटियों में से पानी के बदले आग की छोटी बड़ी पतली लम्बी और मोटी बारीक लपटें निकल रही थीं जो तरह तरह के रंग की थीं और केवल ऊपर ही को नहीं उठ रही थीं बल्कि इधर उधर ऊपर नीचे चारो ही तरफ फैलती हुई एक अजीब हो बहार दे रही थीं। ये आग की लपटें हर एक रंग की थीं और कहीं कहीं जहां पर दो या तीन रंग की लपटें मिल जाती थीं वहां इन्द्रधनुष की तरह की अजीब ही रंगत नजर आ रही थी। लपटों की ऊंचाई या तेजी में कभी कभी फर्क भी पड़ जाता था और कभी कम कभी बेश होने के इलावे उनके रंग बदला भी करते थे। सब बातों का खयाल करते हुए कहना पड़ेगा कि ऐसा खूबसूरत फौआरा अभी तक कभी प्रभाकरसिंह के देखने में न आया था।

कुछ देर तक इस फौआरे को देखने बाद प्रभाकरसिंह की निगाहें घूमीं और एक दूसरी चीज पर जा कर रुकीं। यह एक संगमर्मर की कद्दे-आदम मूर्ति थी जो कमरे के एक कोने में दो तीन हाथ ऊँचे गोलम्बर पर बैठाई हुई थी। मूर्ति का भाव यह था कि एक सुन्दर और हाथ पांव से सुपुष्ट स्त्री ने, जिसके हाथ में धनुष बाण और पीठ पर तरकश था, अभी

अभी तीर से एक हंस को मार कर गिराया है और वह उसके पैरों के पास गिर कर आखिरी छटपटाहट में पड़ा है।

इस मूर्ति की शिल्पकला को देखते और सराहते हुए प्रभाकरसिंह उधर से भी घूमे और दूसरे कोने की तरफ देखने लगे। वहां भी एक ताज्जुब की चीज नजर आई। एक बनावटी पहाड़ का दृश्य काले और सुर्ख पत्थरों की मदद से ऐसा सुन्दर बना हुआ था कि देखने में सचमुच एक पहाड़ का धोखा होता था। विशेषता यह थी कि इस पहाड़ की एक गुफा के अन्दर से निकलता हुआ एक छोटा नाला दिखाया गया था जिसमें पानी बराबर बह रहा था। नाले के एक किनारे पर एक सारस खड़ा था जो कभी कभी अपनी चोंच पानी में डालता और फिर निकाल लेता था। गौर से देखने पर मालूम हुआ कि पानी के साथ साथ खूबसूरत रंग बिरंगी मछलियां बह बह कर आ रही हैं जिनमें से कभी कभी किसी एक को वह सारस अपनी चोंच से पकड़ता और उदरस्थ कर जाता है। सारस का पानी में चोंच डाल कर मछली पकड़ना, चोंच को ऊंची कर उसमें पकड़ी और छटपटाती हुई मछली को सीधा करके गले में डालना, गले के अन्दर उतरती हुई उस मछली के कारण गले का थोड़ा फूलना, और मछली के पेट तक पहुंच जाने पर फिर सारस का पानी पर निगाह डालना इत्यादि ऐसा स्वाभाविक हो रहा था कि यह शक करना भी मुश्किल था कि यह सचमुच का दृश्य नहीं बल्कि एक तिलिस्मी खिलवाड़ है।

कुछ देर यह तमाशा देखने बाद प्रभाकरसिंह ने कमरे के तीसरे कोने पर निगाह की और यहां उन दोनों से बढ़ कर ताज्जुब की चीज प्रभाकर-सिंह को दिखी जिसने उन्हें थोड़ी देर के लिये घबड़ा दिया, पर जब उन्हें खयाल आया कि यह सब तिलिस्मी तमाशा है तो उनकी तबीयत कुछ ठिकाने आई और वे कौतूहल के साथ उसे देखने लगे। वह चीज एक जलती हुई चिता थी जिसमें मानों अभी अभी आग लगाई गई थी। एक अधेड़ आदमी उस पर लेटाया हुआ था। एक नौजवान जो शायद उसका

बेटा होगा, झुक कर एक हाथ से अपनी आखें पोंछता हुआ दूसरे हाथ से चिता का अग्निसंस्कार कर रहा था जिसमें से कुछ कुछ धूंआ सा भी निकल रहा था। दूसरी तरफ एक औरत पछाड़ खा कर धरती पर गिरी हुई थी और दो तीन व्यक्ति उसे सम्हालने में लगे हुए थे। पीछे की तरफ कई औरत मर्दों का एक झुंड खड़ा अफसोस की निगाहों से चिता की तरफ देख रहा था। यह पूरा दृश्य ऐसा स्वाभाविक और सच्चा सच्चा बना हुआ था कि पहिली निगाह में प्रभाकरसिंह को यही खयाल हो आया कि शायद वे सच मुच ही किसी का अन्तिम संस्कार देख रहे हैं। मगर नहीं, यह भी सिर्फ एक तमाशा ही था।

इधर से भी घूमती हुई प्रभाकरसिंह की निगाह चौथे कोने की तरफ गई। यहां एक छोटा सा चबूतरा बना हुआ उन्हें दिखाई पड़ा जिसके ऊपर एक बनावटी पेड़ था जो सात आठ हाथ से ज्यादे ऊंचा न था और जिसकी एक डाली पर एक बड़ा सा हंस बैठा हुआ था। पेड़ के पीछे एक दर्वाजा था मगर उसके सामने पर्दा पड़े रहने के कारण यह पता नहीं लगता था कि दूसरी तरफ क्या है। मगर यह पेड़ और हंस भी कारीगरी से खाली न था। थोड़ी थोड़ी देर बाद इस पेड़ की डालियां और पत्ते इस तरह हिलते थे मानों मंद मंद हवा के झोंके उन्हें लग रहे हों और कभी कभी वह हंस अपने बदन झटकार कर पंख फटकारता और टखनों के नीचे चोंच से इस तरह खुजलाता मानों सचमुच ही कोई चिड़िया पानी से निकल कर बाहर धूप में अपने को सुखा रही है।

बहुत देर तक प्रभाकरसिंह अपने चारो तरफ निगाहें दौड़ाते और इन चीजों की विचित्र कारीगरी को देखते रहे। जिधर निगाह जाती थी उधर ही होशियार कारीगर की अद्भुत रचनाकुशलता उन्हें मोह लेती थी। आखिर उनके मुंह से निकल ही गया, "धन्य हैं वे लोग जिन्होंने ऐसी चीजें बनाईं! कारीगरी की हद्द हो गई! इससे बढ़ कर और कुछ हो ही क्या सकता है! भला कोई कह सकता है कि इन बनावटी चीजों

तथा जानवरों में और भगवान की सृष्टि की असली चीजों में कुछ भी अन्तर है ! पर खैर अब मुझे अपना काम शुरू करना चाहिये !!"

अपने शेर पर बैठे बैठे ही प्रभाकरसिंह ने तिलिस्मी किताब निकाली और एक जगह से खोल कर खूब गौर से पढ़ने लगे। यह लिखा हुआ पाया :—

"इस जगह तुम्हें बहुत ही होशियारी से काम करना होगा। जरा भी धोखा खाओगे या कुछ भी चूकोगे तो इसका नतीजा बहुत खराब होगा।

"तुम्हारे बाईं तरफ एक चौतरे पर एक औरत की मूरत बनी हुई है जो हाथ में तीर कमान लिये हुए है। उसके हाथ से तीर कमान लेलो और उस सारस के पास जाओ जो नाले के किनारे बैठा मछलियां खा रहा है। जिस समय वह हरे रंग की मछली खाने के लिये उठावे उसी समय उस मछली को अपने तीर का निशाना बनाओ। सारस से बारह कदम पर खड़े होकर ऐसा तीर चलाओ कि वह मछली सारस के मुंह से निकल जाय। तब उसे उठा कर उस फौवारे की हरी लपटों में डाल दो। वह फट जायगी और उसके अन्दर से तुम्हें एक अद्भुत चीज मिलेगी जिसे लिये हुए तुम उस चिता में कूद पड़ो। मगर खबरदार ! तुम्हारा निशाना बेकार न जाना चाहिये क्योंकि तीर एक ही है, पहिली ही बार में सफल न होने से फिर कुछ काम न हो सकेगा !!"

यहां पर जो कुछ उन्हें करना था उसे जब प्रभाकरसिंह अच्छी तरह समझ चुके तो उन्होंने किताब बन्द कर जेब के हवाले की और शेर पर से उतर पड़े। शेर उनके उतरते ही उस छोटे नाले के किनारे गया और उसके पानी से अपनी प्यास बुझाने बाद एक दर्वाजे के सामने जाकर जमीन पर बैठ गया और इधर प्रभाकरसिंह उस पत्थर की मूर्ति के सामने पहुँचे जो हाथ में तीर कमान लिये बनाई गई थी। हम लिख चुके हैं कि यह मूर्ति दो तीन हाथ ऊंचे एक गोलाम्बर पर खड़ी थी। इस गोलाम्बर पर चढ़ने के लिये छोटी छोटी कई सीढ़ियां बनी हुई थीं। प्रभाकरसिंह

सीढ़ियों की राह उस गोलाम्बर पर चढ़ गये और उस मूर्ति के हाथ से वह तीर कमान ले लेना चाहा। मगर अभी उनके हाथ मूर्ति के पास तक पहुंचे भी न होंगे कि गोलाम्बर का वह पत्थर जिस पर प्रभाकरसिंह खड़े थे एक तरफ से इतनी जोर से उठ गया कि प्रभाकरसिंह किसी तरह सम्हल न सके और पछाड़ खा कर गोलाम्बर के नीचे आ गिरे। उनका गिरना था कि यकायक किसी तरफ से एक जनाने गले की खिलखिला कर हंसने की आवाज उस कमरे में गूंज उठी।

फुर्ती के साथ प्रभाकरसिंह पुनः उठ खड़े हुए और यह जानने के लिये चारो तरफ देखने लगे कि वह हंसने वाला कौन था मगर कहीं कोई दिखाई न पड़ा। आखिर कुछ सोचते हुए वे गोलाम्बर के पास जाकर खड़े हो गये और सोचने लगे, "तिलिस्मी किताब लिखती है कि इस पुतली के हाथ से तीर कमान लेकर उस सारस के पास जाना और हरी मछली का शिकार करना होगा मगर उस पुतली के हाथ से तीर कमान लेना ही मुश्किल जान पड़ता है आगे न जाने क्या क्या तरद्दुद आवेंगे !!"

कुछ सोच विचार कर प्रभाकरसिंह पुनः गोलाम्बर पर चढ़े पर इस बार सामने की तरफ से न जाकर वे मूर्ति के पीछे की तरफ से गये और वहां से तीर कमान लेने का उद्योग करने लगे, मगर इस बार का उद्योग भी वृथा गया। कमान तक हाथ पहुंचने के पहिले ही उस तरफ का पत्थर भी जिस पर प्रभाकरसिंह खड़े थे पहिले वाले की तरह यकायक एक बगल से उठ गया। यद्यपि इस बार होशियार रहने के कारण वे गिरे नहीं वरन् फुर्ती के साथ कूद कर गोलाम्बर के नीचे आ रहे पर फिर भी उनका उद्योग असफल ही रहा। उनके नीचे आते ही पुनः उसी प्रकार किसी औरत के हंसने की आवाज गूंज उठी। अबकी प्रभाकरसिंह से रहा न गया और वे बोल पड़े, "यह कौन हंसा ?"

उनके सामने की तीर कमान वाली मूर्ति के होंठ हिले और उसके गले से आवाज निकली—"मै !!"

प्रभाकरसिंह के ताज्जुब का हद्द न रहा। क्या यह निर्जीव पत्थर की मूर्ति बात भी कर सकती है! वे फिर बोले, "तुम हंसी किस बात पर?"

मूर्ति बोली, "तुम्हारी गलती पर! एक बार धोखा खा कर फिर वही काम करते हो?"

प्रभाकरसिंह ने पूछा, "मैंने क्या गलती की?"

मूर्ति बोली, "सोचो और गौर करो!"

प्रभाकरसिंह ने पूछा, "तुम्हारे हाथ से तीर कमान लेने की क्या तर्कीब हो सकती है?" पर इसका कोई जवाब उस मूर्ति ने न दिया। प्रभाकरसिंह ने और भी कई बातें पूछीं मगर उस मूर्ति ने फिर किसी बात का उत्तर न दिया। आखिर उसके कथनानुसार प्रभाकरसिंह सोचने और गौर करने लगे। थोड़ी देर बाद खयाल हुआ कि वह गोलाम्बर तो सुफेद पत्थर का बना हुआ है मगर उसकी सीढ़ी और वे पत्थर जिन्होंने उठ कर उन्हें नीचे गिरा दिया था काले रंग के हैं। यह देखते ही वे समझ गये कि ये काले पत्थर ही सब आफत की जड़ हैं। तुरत ही उन्हें अपनी गलती भी मालूम हो गई और वे पुनः उस गोलाम्बर पर चढ़ गये पर इस बार सीढ़ी के रास्ते नहीं बल्कि उचक कर जा चढ़े। गोलाम्बर पर कई जगह काले पत्थर जड़े हुए थे जिन्हें बचाते हुए प्रभाकरसिंह मूर्ति के पास जा पहुंचे और उसके हाथ से तीर कमान ले लिया। इस बार उन्हें कुछ भी तकलीफ उठानी न पड़ी और वे सहज ही में तीर कमान लिये नीचे लौट आए।

अपनी सफलता पर प्रसन्न होते हुए प्रभाकरसिंह अब दूसरे कोने पर बने उस बनावटी पहाड़ के पास पहुंचे जहां नाले के किनारे खड़ा सारस मछलियें खा रहा था। प्रभाकरसिंह उस सारस के पास गये और वहां से गिन कर बारह कदम के फासले पर हट गये। यहां खड़े हो कर वे एक टक उस सारस को देखने लगे।

थोड़ी देर बाद सारस ने अपनी गरदन पानी में डुबोई और एक मछली उठाई। प्रभाकरसिंह ने तीर कमान सम्हाला पर जो मछली वह

सारस लिये था वह लाल रंग की थी और उन्हें हरे रंग की मछली को तीर का निशाना बनाना था। यह देख वे रुक गये और इस बात की राह देखने लगे कि उस सारस की चोंच में हरी मछली कब दिखाई पड़ती है। आखिर दस बारह दफे के बाद उस सारस ने एक हरी मछली उठाई मगर यह इतनी छोटी थी कि इसे खा जाने में उसे कुछ भी विलम्ब न लगा। अभी प्रभाकरसिंह अपनी कमान पर का तीर खींच ही रहे थे कि मछली सारस के पेट में उतर गई। लाचार ये पुनः राह देखने लगे मगर इस बार उन्होंने तीर कमान पर से हटाया नहीं। आखिर उन्हें फिर मौका मिला और लगभग घड़ी भर के बाद पुनः उस सारस की चोंच में एक हरी मछली नजर पड़ी। यद्यपि मछली कुछ ही सायत के लिये दिखाई पड़ी थी मगर प्रभाकरसिंह की तेज निगाहों और मंजे हुए हाथों ने उसका निशाना लगा ही लिया। उनकी कमान से छूटा हुआ तीर सनसनाता हुआ सारस की कुछ कुछ खुली दोनों चोंचों के बीच में घुसकर उस मछली को लगा और वह छटक कर चोंच से बाहर निकल कुछ दूर जा गिरी। खुशी खुशी प्रभाकरसिंह ने आगे बढ़ कर मछली उठा ली और उस फुहारे के पास पहुँचे जो कमरे के बीचोबीच अपनी रंग बिरंग की लपटों से विचित्र बहार दे रहा था। प्रभाकरसिंह इस फुहारे के पास खड़े हो कर राह देखने लगे कि कहीं हरी लपट दिखाई दे तो इस मछली को उसमें डालें हरी लपटें तो बेशक बहुत जगह दिखाई पड़ती थीं पर कभी यहां कभी वहां, कभी ऊपर कभी नीचे, और सो भी केवल कुछ ही क्षणों के लिये नजर आती थीं। पर आखिर किसी तरह प्रभाकरसिंह ने यह काम भी पूरा किया। हरी लपटों का उस मछली में लगना था कि वह आतिशबाजी की तरह उनके हाथ ही में एक तेज आवाज के साथ फट पड़ी और उसके अन्दर से कोई चमकती हुई चीज निकल कर नीचे जमीन पर गिर पड़ी। प्रभाकरसिंह ने उसे उठा कर देखा। एक ही हीरे को काट कर बनाया हुआ एक छोटा मगर विचित्र तावीज था जिसके साथ ही एक छोटे कागज

पर बहुत ही बारीक अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था। बहुत कोशिश करने के बाद प्रभाकरसिंह उस मजमून को पढ़ सके। यह लिखा हुआ था :—

"यह उस तिलिस्म की ताली है जो कुछ समय के बाद तुम्हारे या तुम्हारे लड़कों के हाथ से टूटेगा। जब तक वक्त न आवे इसे हिफाजत के साथ अपने गले से हरदम लटकाये रहा करो। जिसके पास यह चीज रहेगी वह कभी किसी तरह की तिलिस्मी मुसीबत में नहीं पड़ेगा। इस तिलिस्म के अन्दर के सब ताले और दर्वाजे इसके छुलाते ही खुल जायंगे। इसको पहिनने वाला अगर आग में कूद पड़ेगा तो आग उसका कुछ बिगाड़ न सकेगी और पानी में वह कभी डूबेगा नहीं। भूख और प्यास को एक हफ्ते तक रोक रखने की सामर्थ उसे हो जायगी!"

यह मजमून पढ़ते ही प्रभाकरसिंह की खुशी का ठिकाना न रह गया। उन्होंने उसे पुनः दुबारा पढ़ा और तब ऐसी चीज पाने के लिये परमात्मा को धन्यवाद दिया। अब वे गौर से उसे उलट पलट कर देखने लगे। मालूम हुआ कि यह हीरे का एक ही टुकड़ा है जिसे कारीगरों ने तराश कर लगभग तीन अंगुल चौड़ी पांच अंगुल लांबी और एक अंगुल मोटी तख्ती का रूप दे दिया है। इसके एक तरफ कुछ मजमून खुदा हुआ था और दूसरी तरफ बहुत ही पतली लकीरें बनी थीं जिनका कुछ मतलब तो समझ में न आता था मगर यह मालूम होता था कि यह शायद किसी तरह का नक्शा है। यन्त्र की मुटाई देखने से प्रभाकरसिंह को एक बारीक लकीर चारो तरफ घूमी हुई दिखाई पड़ी जिससे यह सन्देह हो सकता था कि शायद यह यन्त्र बीच से खुल जाता हो पर कोशिश करने पर भी वह खुला नहीं इससे उन्होंने इसका विचार छोड़ दिया। यन्त्र के दोनों बगल दो कोंढ़े बने हुए थे जिनके साथ एक बहुत ही बारीक सोने की जञ्जीर लगी हुई थी जिसके सहारे वह यन्त्र गले में लटकाया जा सकता था। प्रभाकरसिंह ने उसे गले में पहिन लिया और तब आगे का काम करने के लिये तैयार हो गये।

तिलिस्मी किताब ने यहाँ तक का काम कर चुकने बाद उन्हें उस चिता में कूद पड़ने की आज्ञा दी थी जो उस कमरे के तीसरे कोने में कुछ कुछ जलती हुई अपनी अद्‌भुत कारीगरी का नमूना दिखा रही थी। प्रभाकरसिंह उस चिता के पास पहुँचे और एक बार गौर से चारो तरफ देख भाल करने के बाद उछल कर उसके ऊपर जा चढ़े। उनका उस पर चढ़ना था कि उधर तो उसकी आग एक दम लहरा के बल उठी और इधर उस चिता के आस पास खड़े बैठे या काम करते हुए सब आदमी अपना काम छोड़ "हां ! हां !!" करते हुए उनकी तरफ झपटे और विचित्र भावभंगी के साथ कोई क्रोध कोई आश्चर्य और कोई खेद प्रकाश करते हुए उन्हें चिता पर से उतर आने के लिये कहने लगे, बल्कि दो एक ने तो उनका हाथ पकड़ लिया और जबर्दस्ती उन्हें चिता से खींच कर अलग करना चाहा परन्तु प्रभाकरसिंह ने हाथ झटकार कर अपने को छुड़ा लिया और इसी बीच में आग को लपट बहुत तेज हो जाने के कारण वे लोग लाचार हो कर चिता से दूर हो गये।

आश्चर्य की बात कि यद्यपि वह चिता अब धू धू करके जल रही थी और उसकी गर्मी से कमरा गर्म होता जा रहा था फिर भी प्रभाकरसिंह को उसकी आंच किसी तरह की तकलीफ नहीं पहुँचा रही थी। वे आश्चर्य के साथ चिता के बीचोबीच में बैठे हुए सोच रहे थे कि इसका कारण या तो वह ताबीज है जो अभी अभी उन्होंने गले में पहिनी है और या यह आंच ही किसी अद्‌भुत तरह की है जो मनुष्य शरीर को नुकसान पहुंचाने की कुदरत नहीं रखती। इसी समय उनकी निगाह उस आदमी के ऊपर जा पड़ी जो उस चिता के ऊपर लिटाया हुआ था और जिसकी गरदन तक तो ऊपर की तरफ भी लकड़ियां सजाई हुई थीं मगर चेहरा और सिर खुला तथा पीछे की तरफ कुछ लटका हुआ था। प्रभाकरसिंह ने देखा कि ज्यों ज्यों उस सिर में आग की लपटें लगती हैं उसकी रंगत बदलती जाती-है। झुर्रियां और बुढ़ापे के अन्य चिन्ह हट कर उसके बदले रंगत में

सुर्खी आ रही है और चेहरा नौजवानों का सा बनता जा रहा है। सिर्फ यही नहीं, थोड़ी देर के बाद उसकी पलकें हिलने लगीं, थोड़ी देर और बीतने पर होंठ कांपने लगे, और कुछ देर और बीत जाने बाद गर्दन भी हिलने लगी यहां तक कि कुछ ही देर में उस मुर्दे ने आंखें खोल दीं और मुह से एक लम्बी सांस फेंक कर इधर उधर देखा। उसकी निगाह प्रभाकरसिह पर पड़ी, देखते ही वह मुस्कुराया और बोला, "प्रभाकरसिंह ! तुम आ गये ! आज सैकड़ों वर्षों से मैं तुम्हारी ही राह देखता हुआ यहां पड़ा था !"

प्रभाकरसिंह ताज्जुब से बोले, "तुम कौन हो और किस लिये मेरी राह देख रहे थे ?"

उस आदमी ने जवाब दिया, "मैं इस तिलिस्म का पहरेदार हूं।

प्रभाकरसिंह ने हंस कर कहा, "तुम तो खुद ही मरे हुए पड़े थे, पहरेदारी क्या खाक करते होगे !"

यह सुन वह बोला, "अनाड़ी लोग मुझे सोया या मुर्दा समझते हैं। जब से यह तिलिस्म बांधा गया है तभी से मै यहां की पहरेदारी कर रहा हूँ और तब से आज तक बराबर ही मै जीता जागता और अपने होश हवास में था और तब तक बना रहूंगा जब तक कि इस तिलिस्म की उम्र तमाम न हो जायगी।"

प्रभाकरसिंह को इसकी बातें कुछ ऐसी विचित्र मालूम हुईं कि वे किस अवस्था में हैं या किस काम के लिये कहां बैठे हैं यह भूल गये और उस आदमी से बातें करने लगे :—

प्रभाकर०। और जब इस तिलिस्म की उम्र तमाम हो जायगी तब तुम्हारी क्या दशा होगी ?

आदमी०। तब मेरा भी काम समाप्त हो जायगा और मैं अपने बनाने वाले के पास चला जाऊंगा !

प्रभाकर०। तुम्हें बनाने वाला कौन ?

आदमी०। वही महात्मा जिन्होंने यह तिलिस्म बनवाया। अगर अभी

तक तुम्हें उनका नाम नहीं मालूम हुआ है तो शीघ्र ही मालूम हो जायगा।

प्रभाकर०। तो तुम्हें इस तिलिस्म के टूटने से दुःख होगा?

आदमी०। नहीं बल्कि प्रसन्नता, होगी क्योंकि मै कैद से छूट कर स्वतन्त्र हो जाऊंगा।

प्रभाकर०। अब इसकी उम्र समाप्त होने में कितना समय बाकी है?

आदमी०। सो मुझे बताने का अधिकार नहीं है, हां अगर तुम बराबर ही होशियारी और हिम्मत से काम करते गये तो ज्यादा दिन नहीं, लेकिन अगर तुमने कोई गलती की या धोखा खाया तो फिर न जाने कितनी सदियां मुझे यहीं पड़ा देखेंगी!

प्रभाकरसिंह और इस आदमी में बातें होती जा रही थीं और उधर उस चिता की अग्नि तेज होती हुई अब यहां यहां तक बढ़ गई थी कि कमरे की शीशे वाली छत तक आग की लपटें पहुँच रही थीं। परन्तु ताज्जुब की बात थी कि प्रभाकरसिंह को उस गर्मी से कोई विशेष तकलीफ मालूम नहीं पड़ रही थी। यद्यपि पहिले की अपेक्षा कुछ अधिक गर्मी उन्हें जरूर लग रही थी पर वह ऐसी नहीं कि जो बहुत ज्यादा तकलीफ देने वाली कही जा सके। वे लकड़ियों के बनावटी कुंदे जिनसे वह चिता बनी हुई थी और जो लकड़ियो की तरह नहीं बल्कि कपूर या राल की तरह जल रहे थे गलते हुए धीरे धीरे छोटे होते जा रहे थे।

इसी समय वह अदमी जो अभी तक पड़ा ही पड़ा प्रभाकरसिंह से बातें कर रहा था हिल डुल कर उठ बैठा और उनसे बोला, "लो अब होशियार हो जाओ!" प्रभाकरसिंह ने ताज्जुब से पूछा, "क्यों क्या मामला है?" मगर इसका कुछ जवाब पाने के पहिले ही चिता के अन्दर से गड़गड़ाहट की आवाज आने लगी जो क्षण ही भर में यहां तक बढ़ी कि प्रभाकरसिंह को दोनों हाथों से अपने कान बंद कर लेने पड़े। यकायक आग का एक शोला चिता में से निकला और दूसरी ही सायत में वह चिता इस तरह फट पड़ी मानो उसके अन्दर कोई बम का गोला फूटा

हो। उसके जबर्दस्त झटके ने प्रभाकरसिंह को गेंद की तरह उछाल कर दूर फेंक दिया और जब उनके हवास ठिकाने हुए तो उन्होंने अपने को उस चौथे कोने में बने हुए चबूतरे पर पड़े पाया। चिता की तरफ निगाह की तो देखा कि उसकी लकड़ियां चारो तरफ छितराई हुई हैं और उस जगह एक गहरा गढ़ा दिखाई पड़ रहा है जिसके अन्दर से कुछ आवाज आ रही थी। उन आदमियों का कहीं पता न था जो उसके चारो तरफ खड़े थे या जिससे कि प्रभाकरसिंह की बातचीत हुई थी।

आगे की कार्रवाई जानने के लिये प्रभाकरसिंह ने तिलिस्मी किताब खोली और पढ़ने लगे :—

"अगर आंच से तुम डरे या घबराये नहीं तो वह चिता तुम्हें उस चबूतरे तक पहुँचा देगी जिस पर एक पेड़ की डाल पर एक हंस बैठा हुआ है। इस हंस को पेड़ पर से उतार लो और पर्दा हटाकर पीछे बने दर्वाजे में फेंक दो। इसके बाद फुर्ती से उस गढ़े में उतर जाओ जो चिता की जगह दिखाई पड़ रहा होगा। अगर यह सब काम तुम फुर्ती से कर सके तो बस यहां की तिलिस्मी कार्रवाई खतम हो जायगी और इस तिलिस्म का वह हिस्सा मिलेगा जिसके बारे में पहिले तुम पढ़ चुके हो।"

प्रभाकरसिंह ने यहां तक पढ़ किताब जेब के हवाले की और उसमें लिखे मुताबिक काम करने को तैयार हो गये। उन्होंने उसे महज मामूली काम समझा हुआ था पर जब काम को हाथ लगाया तो उसकी मुशकिलें जान पड़ीं। हंस के पास जा कर उसको पकड़ने के लिये ज्यों ही उन्होंने हाथ बढ़ाया वैसे ही उसने बड़े क्रोध से इनके हाथ पर अपनी सख्त चोंच से एक कड़ी ठोकर मारी और तब उचक कर एक दूसरी डाल पर हो गया। जब प्रभाकरसिंह वहां पहुंच कर उसे पकड़ने का उद्योग करने लगे तो उसने पुनः वैसा ही किया। यहांतक कि दस ही पांच मिनट की कोशिश के बाद प्रभाकरसिंह का हाथ लोहू लोहान हो गया और वे उस बनावटी हंस के पास जाते हिचकने लगे। आखिर यहां तक नौबत आ गई कि वे

एक बगल में चुपचाप जा खड़े हुए और सोचने लगे कि अब क्या करना और किस तरह उस हँस को काबू में लाना चाहिये।

उनको इस तरह खड़ा देख यकायक उस पुतली के गले से जिसके हाथ से प्रभाकरसिंह ने तीर कमान लिया था और जो पहिले भी एक बार उन पर हंस चुकी थी फिर हंसी की आवाज निकल पड़ी। यह जान कर कि वह उनकी असफलता पर हंसी है प्रभाकरसिंह कुढ़ गये पर एक निर्जीव पुतली का जो तिलिस्मी कारीगरी की बदौलत हंसती बोलती या काम करती हो वे कर ही क्या सकते थे, अस्तु उन्होंने उसकी हंसी पर कुछ खयाल न किया और गौर करके सोचने लगे कि उस हंस को क्योंकर काबू में करना चाहिये। आखिर उन्हें एक तर्कीब सूझ ही गई। अपना कमरबन्द खोल कर उन्होने अपने हाथों पर अच्छी तरह लपेटा और तब फुर्ती से हंस के पास जा कर दोनों हाथों से उसकी वह खतरनाक चोंच खूब मजबूती से थाम ली। चोंच के पकड़ते ही उसने बड़े जोर जोर से अपने पंख फटफटाने और पंजे मारने शुरू किये, मगर प्रभाकरसिंह ने इसकी कुछ भी परवाह न की और जोर लगा कर उसे पेड़ पर से उतार लिया। मजबूती से पकड़े हुए वे उस दर्वाजे के पास आये और पैर से पर्दा हटाने बाद जोर से उसे अन्दर की तरफ फेंक दिया।

उसको फेंकने के साथ ही उस दर्वाजे के अन्दर से एक ऐसी भयानक आवाज आई मानो पचासों शेर एक साथ दहाड़ पड़े हों। वह समूचा कमरा कांप उठा। वह चबूतरा जिस पर प्रभाकरसिंह खड़े थे जोर जोर से हिलने लगा और वह पेड़ भी जोर से कांप कर यकायक गिर पड़ा। प्रभाकरसिंह अगर होशियार न होते तो पेड़ के नीचे दब कर कुछ न कुछ नुकसान अवश्य उठाते पर वे बाल बाल बच गये। उन्होंने अपनी चीजें सम्हालीं और कूद कर चबूतरे के नीचे आ गये। इसके बाद दौड़ते हुए वे उस गढ़े की तरफ बढ़े जो चिता की जगह पर बन गया था। अभी वे उससे दो एक कदम दूर ही होंगे कि बड़े जोर से एक बार भभक कर वह

आग का फौआरा जोर की आवाज के साथ फट गया और उसके टुकड़े कमरे में चारो तरफ फैल गये। कई टुकड़े ऊपर उड़ कर कमरे की छत के साथ लगे जिससे छत में से बड़े बड़े शीशे के टुकड़े टूट टूट कर गिरने लगे। कमरे की दीवारें भी हिलने और कांपने लगी और थोड़ी देर में इस तरह भीतर की तरफ ढुलक पड़ीं मानों ताश का बना मकान ढह पड़ा हो। परन्तु प्रभाकरसिंह को यह सब देखने की फुरसत ही कहां थी? वे तो दौड़ते हुए उस गढ़े के पास गये और बिना कुछ सोचे विचारे उसके अन्दर कूद पड़े। गड़हा क्या वह तो एक खासा गहरा कूंआ था जिसकी तह दिखाई नहीं पड़ती थी। इस कूंए में एक तरह का धूंआ भरा हुआ था जिसके प्रभाकरसिंह की नाक में जाते ही उनका सिर चक्कर खाने लगा और दम के दम में उन्हें तनोबदन की सुध न रह गई।

जब प्रभाकरसिंह होश में आये उस समय दिन काफी चढ़ चुका था। वे एक छोटे दालान में संगमर्मर के फर्श पर पड़े हुए थे और उनके सामने एक लम्बा चौड़ा सहन था जिसके बीचोबीच में लाल पत्थर की बनी हुई कोई मूरत खड़ी थी।

बहुत देर तक प्रभाकरसिंह गौर करते रहे कि वे कहां पर हैं या किस तरह वहां पहुंचे हैं मगर उनकी समझ में कुछ भी न आया। उनके तमाम बदन में मीठा मीठा दर्द हो रहा था जिसका कारण उनकी समझ में नहीं आता था, सिर में भी हलके हलके चक्कर आ रहे थे, और तबीयत परेशान मालूम होती थी। उन्होंने सोच विचार कर यही निश्चय किया कि उस कूंए के अन्दर जो जहरीली हवा उनके नाक में गई थी उसी का यह असर है और बाहर निकल कर थोड़ा घूमने फिरने से यह दूर हो जायगा। यह सोचते ही उन्होंने अपनी चीजें सम्हालीं और सब कुछ दुरुस्त पाकर उठ खड़े हुए।

धीरे धीरे चलते हुए प्रभाकरसिंह जब उस सहन के बीचोबीच में पहुंचे तो उस लाल मूरत ने उनका ध्यान आकर्षित किया जो किसी आदमी की

आकृति की न थी बल्कि एक भयानक पिशाच की सी सूरत की बनी हुई थी जिसके खूंखार दांत, डरावनी आंखें, भयावना चेहरा और शेर के पजों की तरह भयानक नाखून देख कर डर मालूम होता था। यह मूरत थी भी इतनी बड़ी कि उसकी खुली दाढ़ों के बीच में आदमी का सिर बखूबी जा सकता था।

यह प्रभाकरसिंह की आंखों का दोष था या सचमुच उस विकराल मूरत ने उन्हें देख कर अपने होंठ फड़काये और जबान से उन्हें इस तरह चाटा मानो कोई खूंखार शेर अपना शिकार सामने देख रहा हो !! मगर यह काम इतनी फुर्ती से हो गया कि प्रभाकरसिंह कुछ निश्चय न कर सके। पहिले तो उन्होंने इसे अपने बिगड़े हुए दिमाग की उपज समझा मगर जब थोड़ी देर रुक कर एक टक देखने पर उस मूरत ने फिर वैसा ही किया तो उनका कौतूहल बढ़ा और वे कुछ और पास आकर गौर से उसे देखने लगे।

सफेद और काले संगमर्मर के तीन चार हाथ ऊंचे चबूतरे पर, जिसमें बीचबीच में लाल पच्चीकारी का काम किया हुआ था, लाल पत्थर की वह भयंकर आकृति मूरत बैठाई हुई थी, जिसकी ऊंचाई इतनी थी कि उन कई पतली और चौड़ी सीढ़ियों पर चढ़ जाने पर भी जो उस खंभे के चारो तरफ बनी हुई थीं, वह मूरत आदमी के सिर से ऊंची ही रहती थी। मूरत का नीचे का धड़ तो आदमी का सा था परन्तु चेहरा इत्यादि किसी महा भयानक राक्षस या शेर का सा था। पालथी मारे वह पिशाच उस खम्भे पर बैठा था। उसके हाथों के नाखून बहुत लम्बे थे और शेर के पंजों की याद दिलाने वाले थे। दोनों बाहों से लिपटे हुए दो साँप बने हुए थे जो फन काढ़े हुए मूर्ति के दायें और बायें इस तरह खड़े थे मानों पास जाते ही डस लेंगे। मूर्ति के सर पर एक लाल पत्थर ही का चाँद बना था जिस पर सिन्दूर से रंगा एक त्रिशूल लगा हुआ था।

मूर्ति जिस खम्भे पर बैठी हुई थी उसके सामने वाले हिस्से में एक

छोटा ताखा (आला) था जिसके बीचोबीच में मनुष्य के सिर का हड्डी का एक ढांचा रक्खा हुआ था।

कुछ देर तक वहीं खड़े प्रभाकरसिंह गौर से इस मूरत की बनावट को देखते रहे। उनके देखते देखते कई बार उस मूरत ने अपना भयानक मुंह खोला और लाल लंबी जीभ से अपने होंठ चाटे। दो या तीन दफे उन सापों ने भी सिर घुमा कर इनकी तरफ देखा और इस तरह फुंकार छोड़ी मानो वे इन्हें सामने खड़े देख क्रोध में आ गये हों।

खूब गौर से देखने पर प्रभाकरसिंह को उस खंभे के ऊपरी हिस्से पर कुछ अक्षर खुदे हुए दिखाई पड़े जिन्हें पढने के लिये उन्होंने एक कदम आगे रक्खा और एक सीढ़ी चढ़ कर उसे पढ़ा ही चाहते थे कि यकायक किसी तरह की आहट ने उन्हें चौंका दिया सिर घुमा कर निगाह उठाई तो उनके बायें तरफ के ऊंचे बुर्ज पर उन्हें कोई औरत खड़ी दिखाई दी। जरा गौर करते ही मालूम हो गया कि वह मालती है। उनके मुंह से एक खुशी भरी आवाज निकल पड़ी। मगर यकायक वह चीख में बदल गई जब उन्होंने देखा कि उस भयानक नर पिशाच ने अपनी लम्बी बाहें फैला कर उन्हें पकड़ लिया है। देखते ही देखते उन लोहे के शिकञ्जों की तरह मजबूत हाथों ने प्रभाकरसिंह को जमीन से उठा कर अपने पास खींच लिया, मूर्ति का खौफनाक जबड़ा खुला और उसने प्रभाकरसिंह का सिर अपने मुंह के अन्दर रख लिया।

यही वह समय था कि जब मालती की निगाह प्रभाकरसिंह पर पड़ी और वह उन्हें इस खौफनाक हालत में पड़ा देख कर चीख उठी जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं।

छठवां बयान

काशी की पवित्रता और शोभा को सहस्त्रगुना बढ़ाने वाली भगवती गंगा इस आधी रात के सन्नाटे में भी अपूर्व छवि दरसा रही हैं।

सारे शहर में सन्नाटा है। सिवाय उन लोगों के जिनका काम ही रात के अंधियारे की ओट में होता है और कहीं कोई भी चलता फिरता नजर नहीं आता, परन्तु गंगातट के घाटों पर फिर भी इक्के दुक्के नहाने वाले कहीं कहीं दिखाई ही पड़ रहे हैं और "हर हर महादेव" के शब्द के साथ उसके त्रितापनाशी प्रवाह में गोते लगाने वाले इस समय भी मौजूद ही हैं। तारों की साड़ी पहिने हुए भगवती गंगा इस सूनसान समय में मधुर शब्द करने वाली लहरों का नूपुर बजाती हुई मानों भगवान विश्वनाथ की सेवा में जाने को व्याकुल जान पड़ती हैं पर करें क्या? जो मुमुक्षु दूर दूर से उनके दर्शन और स्पर्श से जन्म जन्म का पाप धोने के लिए उनके तट पर आन बैठे हैं उन्हें त्राण दिये बिना वे वहां से कैसे हटें, मानों यही सोच मन मसोस कर रह जाती हैं। रात का समय होने पर भी न तो स्नानार्थियों का तांता टूटता है और न इधर भगवती को अवकाश मिलता है कि वे बाबा विश्वनाथ के मन्दिर में जायं और उनकी चरण-सेवा कर अपने को कृतार्थ करें।

प्रसिद्ध मणिकर्णिका का दृश्य तो और भी विचित्र है। एक तरफ तो अभी अभी आया हुआ यात्रियों का एक छोटा दल स्नान की तैयारी कर रहा है, दूसरी तरफ धू धू करती हुई एक चिता जल रही है। उससे थोड़ा ही हट एक मढ़ी पर कुछ साधू खंजड़ी की आवाज पर भजन गा रहे हैं और दम पर दम गांजे की ऊंची उठने वाली लपटें उनकी विचित्र भाव भंगी दिखला रही हैं तथा चौथी तरफ कुछ यात्री भोजनादि से निवृत्त हो घाट किनारे लगे तख्तों पर ही लेटने की तैयारी कर रहे हैं। गरज कि आधी रात बीत चुकने पर भी गंगा माता को विश्राम नहीं है।

परन्तु हम पाठकों को ऐसे बेवक्त इन सब मामूली चीजों को दिखाने नहीं लाये हैं। हम तो इस समय किसी और ही मतलब से यहां आये हैं और एक विचित्र ही दृश्य देखने में आपको अपना साथी बनाया चाहते हैं। इधर आइये, वह देखिये, एक बहुत बड़ा बजरा अभी अभी आकर यहां

लगा है। इधर ही हमारे साथ चुपचाप चले आइये और देखिये कि उसके अन्दर क्या है।

रात का समय यद्यपि ठीक ठीक यह पता नहीं लगने देता कि बजरे के ऊपर किस तरह का सामान है या कितने आदमी सवार हैं पर उसके भीतर के हिस्से में बलने वाली रोशनी की मदद से वहां का कुछ हाल जाना जा सकता है, जो यद्यपि डरावना तो नहीं मगर चौंका देने वाला जरूर है। दस बारह हाथ लम्बी और करीब छः या सात हाथ चौड़ी कोठड़ी जो बजड़े के कद को देखते हुए बता रही है कि इसके बाद इस तरह की दो एक कोठड़ियें और भी होंगी, तरह तरह के विचित्र सामानों से भरी हुई है। पीछे की दीवार से सट कर बिछी ऊंची गद्दी पर कोई लेटा हुआ है पर वह औरत है या मर्द यह हम नहीं कह सकते, क्योंकि लाल रंग की एक हलकी ऊनी चादर से उसका तमाम बदन सिर से पैर तक ढंका हुआ है। उसके बांई तरफ गद्दी के नीचे और उससे कुछ हट कर दो मजबूत चौकोर पिंजड़े रक्खे हुए हैं जिनमें दो चीते के बच्चे पुआल के ऊपर बैठे हैं मगर इधर उधर देखते हुए वे कभी कभी हलकी आवाज से गुर्रा उठते हैं और गर्दन ऊँची कर हवा को इस तरह सूंघते हैं मानों उन्हें कोई परिचित गंध मालूम हो रही है। पिंजड़ों के पीछे बजड़े की खिड़कियों से सटे हुए दो तीन ऊंचे ऊंचे सन्दूक रक्खे हुए हैं मगर ढकना बंद रहने के सबब से यह नहीं जाना जा सकता कि उसके अन्दर क्या है? गद्दी के दूसरी तरफ अर्थात् पिंजड़ों के सामने की तरफ एक तलवार और ढाल रक्खी हुई है, तलवार खून से रंगी हुई है और ढाल पर भी खून के छींटे पड़े हुए हैं पर यह खून जम कर काला हो गया है और ऐसा जान पड़ता है मानों बहुत दिन का हो। तलवार का कब्जा शीशे की एक बहुत बड़ी बोतल के ऊपर पड़ा हुआ है जिसका पेटा हाथ भर से किसी तरह कम न होगा। इस बोतल के अन्दर भी कोई चीज रक्खी हुई है मगर वह क्या है यह जान नहीं पड़ता, क्योंकि बोतल और गद्दी के नीचे की तरफ बलने वाली

रोशनी के बीच में लाल पत्थर की बनी हुई और कोई हाथ डेढ़ हाथ ऊंची एक मूर्ति रक्खी हुई है जिसकी आड़ में वह बोतल पड़ गई है। बजड़े के चारो तरफ की दीवारों के साथ तरह तरह के हथियार, कपड़े और दूसरी चीजें टंगी हुई हैं।

हम अभी इसी बात को देख रहे थे कि इन सामानों का मालिक भी यहां कोई है या नहीं कि अचानक ऊपर की तरफ घाट की सीढ़ियां उतरते हुए दो आदमी दिखाई पड़े। पास आने पर मालूम हुआ कि इनमें से एक तो मर्द है और दूसरी औरत। औरत जो आगे आगे आ रही है अपना समूचा बदन एक सफेद चादर से ढंके हुए है इस कारण उसकी उम्र या सूरत शक्ल का अन्दाजा लगाना कठिन है मगर वह मर्द जो कुछ बातें करता हुआ औरत के पीछे पीछे चला आ रहा है एक नौजवान आदमी मालूम पड़ता है जिसकी पौशाक यह भी बता रही है कि वह ऐयार या इस पेशे की जानकारी रखने वाला कोई है क्योंकि उसकी कमर से एक बटुआ और कंधे से कमन्द लटक रही थी।

तेजी से घाट की सीढ़ियां उतरते हुए दोनों आदमी बजरे के पास पहुँच गये। उस समय उस ऐयार ने "गोपाल, गोपाल!" करके कई आवाजें दीं जिसे सुनते ही एक दूसरा नौजवान लालटेन लिये हुए बजड़े के बाहर निकल आया। हाथ का सहारा दे इस आदमी ने उस औरत को बजरे पर चढ़ा लिया और उसके पीछे पीछे वह ऐयार भी चढ़ गया। गोपाल ने अपने पास से एक ताली निकाल कर बजरे के अन्दर वाले कमरे में जाने का दर्वाजा खोला और तब वे तीनों आदमी अन्दर उसी कमरे में जा पहुंचे जिसके विचित्र सामान का हाल हमने ऊपर लिखा है। दर्वाजा भीतर से बन्द कर लिया गया।

एक सरसरी निगाह उस औरत ने वहां पड़े सामानों की तरफ डाली और तब अपने साथी ऐयार से गद्दी पर पड़े आदमी की तरफ उंगली दिखा कर पूछा, "क्या यही वह.....

ऐयार० । हां यही वह शख्स है । मगर मुझे यह बताते सख्त अफसोस होता है कि उस लड़ाई में जो हम लोगों को इसे अपने कब्जे में करने के लिये लड़नी पड़ी, इसने हमारे दुश्मनों का साथ दिया और कैद की सख्तियों के सबब कमजोर होते हुए भी हमलोगों पर इतना कड़ा हमला किया कि हमलोग ताज्जुब में आ गये तथा गिनती में उन लोगों से बहुत ज्यादे होने पर भी हमें अपने बचाव की फिक्र करनी पड़ गयी । जब लड़ाई खतम हो गई तो देखा क्या कि यह बहुत जगह से जख्मी होकर जमीन पर पड़ा है और उसी सबब से ..."

औरत० । (घबरा कर) हां, हां, उसी सबब से.. ? क्या हुआ ?

ऐयार० । (धीमी आवाज में) थोड़ी देर हुई कि इसने दम तोड़ दिया ।

यह सुनते ही उस औरत ने एक चीख मारी और यह कहती हुई कि "आह कम्बख्त तूने यह क्या खबर सुनाई !!" वह बेतहाशा उस आदमी की तरफ झपटी जो गद्दी पर पड़ा हुआ था । अपनी चादर उतार कर फेंक दी और तब हमने देखा कि यह एक बहुत ही हसीन नाजुक और खूबसूरत औरत है । उसने वह चादर जो उस आदमी पर पड़ी हुई थी उतार कर अलग कर दी, एक निगाह उसके पीले मगर खूबसूरत चेहरे पर डाली और तब बेतहाशा उसके बदन से चिपट कर जार जार रोने लगी ।

दोनों आदमी लाचारी की सी हालत में खड़े उस औरत की यह बदहवासी की हालत देख रहे थे । आखिर कुछ देर के बाद उस ऐयार ने आगे बढ़ कर उसकी पीठ पर हाथ रक्खा और दिलासा देने वाले मगर साथ ही साथ कुछ हुकूमत मिले लहजे में कहा, "छीः छीः ! यह तुम्हारी क्या हालत है ! क्या इसी दिल को लेकर अपना काम खतम करोगी ? तुम्हारी उन लम्बी चौड़ी बातों का क्या यही नमूना है ? अरे इनको तो हम लोग आज के बरसों पहिले मुर्दा समझ चुके थे ! तुम तो न जाने कब से इनकी सब उम्मीदें छोड़े बैठी हो, अब क्या इस तरह अधीर होने से

काम चलेगा ! उठो, अपने को सम्हालो ! गये गुजरे के ग़म में अपने को बरबाद करने का यह वक्त नहीं है बल्कि यह बदला लेने का वक्त है। जिस दिन की तुम इतने समय से राह देख रही थीं वह अब आया है ! उठो, होशहवास सम्हालो, और देखो कि हम लोगों की मेहतन तुम्हारे लिये क्या क्या सामान लाई है ! अब रोने बिलखने का वक्त नहीं रह गया, काम करने और बदला लेने का वक्त आया है !"

इस आदमी की बातें सुन उस औरत ने आंसुओं से तर अपनी आंखें इसकी तरफ उठाईं और एक सायत के लिये कुछ सोचने बाद कहा, 'ठीक कहते हो ! इन्हें तो मैं आज के बरसों पहिले ही मुर्दा समझे बैठी थी ! मेरे लिये तो ये तब भी मुर्दा थे और अब भी मुर्दा हैं। फिर भी इनके पाये जाने की बात सुन कर मैं पागल हो गई थी ! खैर अब मैं इस कमजोरी को अपने से बिलकुल दूर करे देती हूँ ! अब इनकी मौत का बदला, सिर्फ बदला लेना ही मेरी जिन्दगी का अकेला काम रहेगा !! (लाश की तरफ देख कर) प्यारे ! घबराओ नहीं ! तुम चले गये तो क्या हुआ ! मैं तो बैठी हूं ! जो जो तकलीफें तुमने उठाई हैं उनमें से एक एक का ऐसा बदला मैं लूंगी कि दुश्मन को भी याद आ जायगा ! नहीं नहीं एक दिन जब उसे भी तुम्हारे ही तरह जमीन पर मुर्दा पड़ा हुआ देखूंगी और उसके सिर को अपने पैरों से ठुकराऊंगी तब मेरे चित्त को शान्ति मिलेगी और तभी मैं तुम्हारी आत्मा को शान्ति दे सकूंगी !"

आवेश में भरी हुई उस औरत ने एक बार फिर उस लाश को अपने बदन से चिपटा लिया और तब उसके ठंढे होठों पर कुछ सायत के लिये अपने क्रोध से लाल और आवेग से गर्म भये हुए होंठों को रख दिया। इसके बाद वह उठ बैठी, एक आखिरी निगाह उस लाश पर डाली और तब एक ठण्ढी सांस लेकर उसी चादर से लाश को ढांक सम्हल कर बैठ गई, अपने आंसू आंचल से पोंछ डाले और उन दोनों आदमियों की तरफ देख कर बोली, "हां अब बताओ क्या कहते हो ?"

उस ऐयार ने जो उसके साथ आया था जवाब दिया, "पहिले इन सब चीजों को देख लो जो इनके साथ साथ हम लोग लाये हैं और तब इस बात पर विचार करो कि हमें दुश्मन के साथ क्या कार्रवाई करनी चाहिये !!"

औरत० । (जोश के साथ) क्या कार्रवाई करनी चाहिये ! अजी उसे एक दम नेस्तनाबूद कर देना चाहिये ! उसकी ऐसी हालत कर देनी चाहिये कि गली के कुत्तों को भी उसके हाल पर रहम आवे ! और क्या करना चाहिये !

ऐयार० । तुम भूल रही हो कि वह कितना भारी ऐयार है और कितनी जबर्दस्त ताकत रखता है !!

औरत० । मैं यह खूब जानती हूं, क्या तुम समझते हो कि मैं भूतनाथ की ..

ऐयार० । (रोक कर) चुप चुप रूप !! दीवारों के भी कान होते हैं ! खबरदार, कोई नाम अपनी जुबान से न निकालो ! और यह याद रक्खो कि हम लोगों को सब से बड़ी ताकत हमारा छिपे रहना और छिपे छिपे ही काम करना होगा । अपने को प्रगट करके या यह जाहिर करके कि हम लोग फलाने के साथ दुश्मनी की नीयत रखते हैं, लोग अपने को ज्यादा देर तक स्वतन्त्र नहीं रख सकते !

औरत० । बेशक तुम ठीक कहते हो ? खैर इधर आओ और मुझे बताओ कि ये क्या क्या चीजें तुम लाये हो ? क्या यह सब सामान तुम्हें उसी जगह से मिला है ?

ऐयार० । नहीं यह किसी एक जगह से नहीं बल्कि कई जगहों से हम लोगों को मिला है । सच तो यह है कि इस वक्त ईश्वर ही ने हमारी मदद की है और ऐसे ऐसे सबूत हमारे हाथ में जुटा दिये हैं कि जिन्हें पाने की हम लोग स्वप्न में भी आशा नहीं कर सकते थे ! (वह तलवार उठा कर) देखो यही वह तलवार है जिससे वह भयानक काम किया गया था ! इसी

तलवार ने उस बेबस लाचार दुखिया और बेकसूर औरत की गर्दन काटी थी और इस पर पड़े हुए खून के ये दाग अभी तक उस भयानक कार्रवाई की गवाही देने को मौजूद हैं।

औरत०। (तलवार हाथ में लेकर और उसे गौर से देख कर) इस पर इस जगह मूंठ के पास कुछ अक्षर खुदे जान पड़ते हैं।

ऐयार०। हां, मैंने भी उन्हें देखा मगर इन खून के छीटों की वजह से उन्हें पढ़ नहीं सका, अगर ये दाग साफ किये जायं तो वे अक्षर पढ़े जा सकते है मगर... ...

औरत०। ये दाग उन अक्षरों से ज्यादा कीमती होंगे ! क्यों यही तो ?

ऐयार०। ठीक है, यही मेरा ख्याल है ! जिस समय यह तलवार उस कातिल के सामने रख दी जायगी ये खून के छींटे उसके काले दिल को जला जला कर उसे उसकी करतूतों की याद दिलावेंगे और उसे अपना कसूर कबूल करने पर मजबूर करेंगे !!

औरत०। बेशक श्यामसुन्दर ! यह तुम्हारा कहना बहुत ठीक है ! एक सायत के लिय मैंने सोचा कि तलवार को साफ करके वह मजमून पढ़ूं मगर अब मैं भी तुम्हारी ही तरह सोचती हूं कि यह तलवार ज्यों की त्यों ही रहना ठीक और मुनासिब है। अच्छा इस बोतल में क्या है ?

"देखो और पहिचानो !" कह कर इस ऐयार ने जिसे अभी अभी इस औरत ने श्यामसुन्दर के नाम से सम्बोधित किया था, वह बोतल उठा ली और रोशनी की तरफ की। श्यामसुन्दर के साथी गोपाल ने लालटेन उठा कर दिखाई जिसकी रोशनी में एक ही झलक डाल कर वह औरत चिल्ला उठी और दोनों हाथों से अपनी आंखें ढांक कर बोली, "हैं हैं ? भुवनमोहिनी !! क्या यह भुवनमोहिनी का सिर है ?"

सचमुच उस बड़ी बोतल के अन्दर एक कमसिन नाजुक औरत का कटा हुआ सर रक्खा हुआ था। इसमें कोई शक नहीं कि वह बहुत दिन से उस बोतल में रक्खा हुआ होगा पर किसी तरह के मसाले में डूबा

रहने के कारण वह किसी तरह से बिगड़ा न था और नाजुक चेहरे की एक एक शिकन साफ साफ दिखाई पड़ रही थी। ओफ ! कैसी भोली वह सूरत थी ! पतले होंठ, नुकीली नाक, कटीली आंखें, किसी समय कैसा गजब करती होंगी, मगर इस समय किसी बेदर्द कातिल के संगदिल कलेजे को याद दिलाती हुई मौत की आखिरी तकलीफ बयान कर रही थीं। आह ! कैसा पत्थर का वह कलेजा होगा जिसने ऐसी नाजुक कमसिन गुलबदन की पतली गरदन पर छुरी चलाई होगी ? हाय क्या ऐसे ऐसे संगदिल भी दुनिया में हैं !!

उस औरत के मुंह से "भुवनमोहिनी" का नाम निकला ही था कि श्यामसुन्दर ने कड़ी निगाहों से उसकी तरफ देखा और कहा, "फिर तुमने वही काम किया ! मैंने कहा कि दीवारों के भी कान होते हैं, जो काम तुम कर रही हो उसमें कोई नाम मुंह से निकलना कभी माफ न किया जाने वाला कसूर होगा, जिसके लिये शायद तुम्हें पछताना पड़े !!"

औरत डरी हुई निगाहें उस सर पर डालती हुई बोली, "बेशक मुझसे गलती हुई ! मगर यकायक इतने दिनों के बाद इस सूरत को अपने सामने देख मैं होश हवास में नहीं रह गई थी ! यह सूरत मुझे क्या क्या याद दिला रही है इसे पूरा पूरा तुम भी नहीं समझ सकते, खैर तुमने इसे पाया कहां ? यह सर किसने और किस नीयत से इस बोतल में बन्द कर रक्खा है !"

श्याम०। यह सब हाल मैं तुम्हें खुलासा सुनाऊंगा, पहिले तुम इन बाकी चीजों को भी देख लो !

औरत०। अच्छी बात है, यह पत्थर की मूरत कैसी है !

श्याम०। यह भी उसी जगह हमलोगों को मिली जहां यह बोतल मिली थी। इसका ठीक ठीक हाल मैं नहीं जानता पर ऐसा जान पड़ता है कि इस मूरत का इस खून से कोई सम्बन्ध है।

औरत०। जरा लालटेन ऊंची करो तो मैं इसे देखूं ?

गोपाल के लालटेन ऊंचा करने पर उस औरत ने झुक कर गौर से उस मूरत को देखा। लाल पत्थर या मिट्टी की यह मूरत राक्षस की सी बनी हुई थी जिसका भयानक मुंह और डरावने दांत देखने से भय मालूम पड़ता था। इसके हाथ के पंजों में शेरों के से नाखून थे और इसकी दोनों बाहों पर से दो सांप फन काढ़े हुए ऊपर को उठे हुए थे।

एक निगाह इस मूरत को देखते ही वह औरत चमक उठी, मगर उसने अपने को सम्हाला और दिल के भाव को छिपाती हुई बोली, "अच्छा और क्या क्या चीज तुम लोग लाये हो ?"

श्याम०। उठो तो मैं तुम्हें दिखाऊं ! इन सन्दूकों में कई बहुत ही काम की चीजें हैं !

श्यामसुन्दर ने एक बगल रक्खे हुए सन्दूकों में से एक का ढकना खोला और उस औरत ने पास जाकर उसके अन्दर देखा। तरह तरह के कपड़ों से वह सन्दूक भरा हुआ था। श्यामसुन्दर ने उनमें से दो चार कपड़े बाहर निकाले और रोशनी की तरफ कर के कहा, "मै समझता हूँ कि तुम इन्हें जरूर पहिचानती होगी।"

"मैं इन्हें बखूबी पहिचानती हूँ !!" कह कर उस औरत ने एक लम्बी सांस ली और तब दूसरे सन्दूक की तरफ बढ़ी। श्यामसुन्दर ने इसका भी ढकना खोला। इसमें तरह तरह के फुटकर सामान, कुछ बरतन, बहुत से कागजात और चिट्ठियां, तथा कुछ जेवरात थे जिन्हें सरसरी निगाह से वह औरत देख गई और तब तीसरे सन्दूक की तरफ बढ़ी। श्यामसुन्दर ने ढकना खोला और उसने झांक कर भीतर देखा।

न जाने इस सन्दूक के अन्दर क्या चीज उस औरत को दिखाई पड़ी कि उसके मुंह से एक दम चीख की आवाज निकल पड़ी और वह डर कर पीछे हटती हुई बदहवासी की हालत में जमीन पर बैठ गई। श्यामसुन्दर ने जल्दी से सन्दूक का ढकना बन्द कर दिया और उस औरत के पास जा उसके मुंह पर हवा करने लगा। गोपाल एक बर्तन में पानी ले आया जिस

के कई छींटे चेहरे पर देने और देर तक हवा करने पर उस औरत के होश ठिकाने आए मगर उस सन्दूक की तरफ निगाह पड़ते ही उसने डर कर पुनः अपनी आंखें बन्द कर लीं। श्यामसुन्दर ने यह देख हंस के कहा, "बस ऐसा ही दिल लेके तुम इस भयानक काम में हाथ डालना चाहती हो जिसमें कदम कदम पर खतरा है।"

औरत०। नहीं मेरे दोस्त! मौका पड़ने पर तुम देखोगे कि मेरा दिल पत्थर से भी कड़ा हो सकता है, पर इस तरह यकायक उस चीज को देखने की आशा न थी जो इस वक्त मैंने देखी, खैर अब बस करो। अब मैं और कोई चीज इस वक्त देखना नहीं चाहती। जो कुछ मैंने देखा वही बहुत है।"

श्याम०। जैसी तुम्हारी इच्छा। तो अब यह बताओ कि तुम्हारा इरादा क्या होता है? ये सब चीजें इस तरह इस बजरे पर रहने दी जायं या तुम्हारे घर भेज दी जायं?

औरत०। क्या इस बजरे में कोई ऐसी जगह नहीं है जहां बैठ कर हम लोग सलाह मशविरा कर सकें? इस जगह इन डरावनी याददाश्तें जगाने वाली चीजों के बीच में बैठ कर कुछ निश्चय करना मेरे लिये कठिन होगा।

श्याम०। हां हां इसके बगल में एक छोटी कोठड़ी और है, उसमें बैठकर हम लोग बातें कर सकते हैं।

इस कमरे का दर्वाजा भीतर से बन्द कर दिया गया और एक दूसरे दर्वाजे को खोल ये तीनों आदमी उस दूसरी कोठड़ी में जा पहुँचे जो इससे सटी हुई थी और जहां एक मामूली फर्श के इलावे किसी तरह का कोई सामान न था। तीनों आदमी फर्श पर बैठ गये और आपुस में बातें करने लगे।

घण्टे भर से कुछ ऊपर ही समय तक इन सभों में किसी गुप्त विषय पर बातें होती रहीं। वे बातें किस विषय की थीं या उसके जरिये क्या क्या

तय हुआ यह हम भी नहीं जान सके पर इसमें शक नहीं कि आगे चल कर इसका पूरा पूरा पता लग जायगा

बातें समाप्त होने पर वह औरत उठ खड़ी हुई और उसके तीनों साथी भी खड़े हो गये। तीनों बजरे के बाहर आये जहां श्यामसुन्दर ने उस औरत से पूछा, "तुम अकेली चली जाओगी या मैं साथ चल कर पहुंचा आऊं ?" जवाब में उसने कहा, "मैं बखूबी चली जाऊँगी तुम्हारे साथ की मुझे कोई जरूरत नहीं मगर तुम अब बिल्कुल देर न करो और जहां तक जल्द हो सके यहां से रवाना हो जाओ।"

इसके जवाब में श्यामसुन्दर ने कहा "तुम विश्वास रक्खो कि सूरज की पहिली किरणों के साथ यह बजड़ा घाट छोड़ देगा और जहां तक जल्द हो सकेगा मैं उस ठिकाने पर पहुँच कर तुम्हारी राह देखूंगा मगर तुम बहुत होशियार रहना, ऐसा न हो कि किसी को पता लग जाय और सब करी कराई मेहनत बेकार जाय।"

औरत०। नहीं नहीं, ऐसा कभी न होगा और मुझसे किसी को कुछ भी पता न लगेगा, हां तुम लोग अलबत्ते होशियार रहना और किसी बेजाने पहिचाने आदमी को इस बजरे के पास फटकने मत देना। मैं समझती हूँ कि इस पर के मल्लाह सब तुम्हारे जांचे हुए और विश्वासी आदमी होंगे।

श्याम०। हां इसमें से हर एक को मैं अच्छी तरह जानता और जांचे हुआ हूँ। इधर से किसी प्रकार का डर करने की कोई जरूरत नहीं।

औरत०। अच्छा तो फिर मैं जाती हूं। ठीक मौके पर उसी जगह तुमसे मिलूंगी।

औरत बजड़े पर से उतर पड़ी और तेजी के साथ सीढ़ियां चढ़ती हुई देखते देखते आंखों की ओट हो गई। श्यामसुन्दर और गोपाल बजड़े के अन्दर चले गये। इस समय पौ नहीं फटी थी मगर पूरब तरफ का आसमान रङ्गत बदल रहा था।

सातवां बयान

लामाघाटी के नीचे वाले गुंजान जंगल के अन्दर से दो आदमी तेजी के साथ जा रहे हैं जिनमें से एक औरत है दूसरा मर्द ।

पाठकों को इनका परिचय देने की जरूरत नहीं है क्योंकि इन्हें वे पहिले भी कई बार देख चुके हैं। इस मर्द का नाम तो सांवलसिंह है और वह औरत गिल्लन है। शेरअलीखां की लड़की गौहर के साथ इन दोनों ही को हमलोग पहिले बहुत दफे देख चुके हैं परन्तु इधर बहुत दिनों के बाद ये दोनों दिखाई पड़े हैं। आइये पास चल कर इनकी बातें सुनें शायद उससे कुछ पता लगे कि अब तक ये कहां रहे या क्या करते रहे।

सांवल०। (पीछे की तरफ देख कर) हम लोग काफी दूर निकल आये और किसी तरह का डर नहीं रहा। अब इतनी तेजी से चलने की जरूरत नहीं है।

गिल्लन०। नहीं अभी थोड़ी दूर और निकल चलना चाहिये। क्या जाने भूतनाथ का कोई शागिर्द या नौकर देख ले तो मुश्किल हो जायगी और हमें फिर कैद की हवा खानी पड़ेगी।

सांवल०। ऐसे खुले मैदान हम लोगों को पकड़ लेना कुछ हंसी खेल थोड़े ही है खैर तुम्हारी तबीयत है, तो मुझे कोई आपत्ति भी नहीं है, थोड़ी दूर और निकल चलो तब कहीं बैठ कर सुस्ताओ और सोचो कि अब क्या करना चाहिए।

गिल्लन०। न मालूम गौहर इस वक्त कहां होगी ?

सांवल०। इधर इतने दिनों में क्या हुआ यह कहना मुश्किल है पर यदि वह स्वतन्त्र है और किसी की कैद में नहीं पड़ गई है तो या तो जमानिया में होगी और या शिवदत्तगढ़ में।

गिल्लन०। या यह भी सम्भव है कि पटने चली गई हो।

सांवल०। हो सकता है।

गिल्लन० । उससे जहां तक हो जल्दी मुलाकात करना चाहिये । मैं समझती हूं कि अगर हम लोग शिवदत्तगढ़ चले चलें तो उसकी कुछ न कुछ टोह खबर जरूर पा सकेंगे । महाराज शिवदत्त उस पर दिलोजान से फरेफ्ता हैं और उसका पता जरूर रखते होंगे । शिवदत्तगढ़ यहां से बहुत दूर भी न होगा ।

सांवल० । दूर नहीं तो नजदीक भी नहीं है । मगर मैं चलने को तैयार हूँ क्योंकि तुम्हारा यह सोचना बेशक ठीक है कि महाराज शिवदत्तसिंह को गौहर का पता जरूर मालूम होगा ।

इन दोनों ने अपना रुख जरा बदल दिया और शिवदत्तगढ़ की तरफ जाने लगे । लगभग दो घण्टे के ये लोग इसी तरह चलते गए, इसके बाद एक पक्के कूंए के पास पहुँच कर गिल्लन ने कहा, "अब मैं थक गई हूं, इस जगह कुछ देर ठहर कर सुस्ताये बिना चल न सकूंगी ।

सांवलसिंह भी यही चाहता था । दोनो आदमी कूएं की ऊंची जगत पर चढ़ गए और सांवलसिंह ने अपने सामान में से कपड़े का डोल और पतली डोरी निकाल कर पानी खींचा । हाथ मुंह धो उन लोगों ने जल पीया और देर तक सुस्ताने की नीयत से लेट रहे । घंटे भर के आराम ने इन दोनों की थकावट बहुत कुछ दूर कर दी और ये लोग फिर सफर करने लगे ।

लगभग आधे घण्टे के तेजी से चले जाने बाद ये दोनों एक ऐसी जगह पहुंचे जहां कुछ नीची पहाड़ियों ने इनका रास्ता रोका हुआ था जिसके आस पास कई झरने भी दिखाई पड़ रहे थे । इन दोनों ने पहाड़ी पर चढ़ना आरम्भ किया ही था कि यकायक गिल्लन रुक गई और सांवलसिंह का हाथ पकड़ कर बोली, 'क्या यह मेरा शक ही है कि कहीं पास में कुछ आदमी आपस में बातचीत कर रहे हैं ।"

सांवलसिंह ने गौर किया और कहा, "बेशक कुछ आदमियों के बातचीत की आवाज आ रही है ।"

गिल्लन० । क्या हर्ज है अगर हमलोग कुछ रुक कर यह जानने की कोशिश करें कि ये लोग कौन हैं ।

सांवल० । (कुछ सोच कर) अच्छी बात है, तुम इस पत्थर की आड़ में छिप कर बैठो मैं जाकर पता लगाता हूँ ।

"अच्छा, मगर जल्दी आना ।" कह कर गिल्लन आड़ में हो गई और सांवलसिंह पीछे को लौट कर थोड़ी ही देर में आंखों की ओट हो गया ।

सांवलसिंह को गये देर हो गई मगर वह लौट कर न आया यहां तक कि अकेली बैठी गिल्लन घबरा उठी और सोचने लगी की कहीं वह किसी मुसीबत में तो नहीं पड़ गया । आखिर वह अपनी जगह से उठी और टोह लेती हुई उस तरफ को बढ़ी जिधर से अब तक कुछ आदमियों के बातचीत करने की बहुत ही धीमी आवाज आती थी, जो यह बता रही थी कि ये बात करने वाले कहीं दूर पर बातें कर रहे हैं । मगर अभी वह उधर कुछ ही कदम रखने पाई थी कि अपनी बाईं तरफ किसी तरह की आहट पा कर चौंकी और घूम कर देखा तो सांवलसिंह पर निगाह पड़ी जो एक गट्ठर पीठ पर उठाये हुए था और जिसके पीछे पीछे गौहर चली आ रही थी । गौहर को देखते ही गिल्लन झपट कर उसके गले से चिपट गई और उसने भी प्यार से चिपटा लिया मगर तुरत ही अलग होकर बोली, "यहां जरा भी रुकने या बात करने का मौका नहीं, बस चुपचाप चली आओ और जहां तक जल्दी हो सके दूर निकल चलो ।" यह सुन गिल्लन को कुछ भी पूछने की हिम्मत न पड़ी और वह चुपचाप गौहर का हाथ पकड़े चलने लगी ।

लगभग आधे घन्टे तक बिना कुछ बातचीत किये ये सब तेजी से चलते रहे । सांवलसिंह सीधी राह से नहीं जा रहा था बल्कि इधर उधर चक्कर काटता और पेड़ों तथा पहाड़ी ढोकों की आड़ देता हुआ घने जंगल की तरफ बढ़ा जा रहा था । जब वह पहाड़ी जहां से ये लोग आ रहे थे एक

दम आंखों की ओट हो गई और ये लोग एक गहरे नाले के अन्दर जा पहुंचे जहां यकायक किसी की निगाह नहीं पड़ सकती थी तब सांवलसिंह रुका और अपनी पीठ की गठड़ी उतार सुस्ताने लगा। गौहर भी थकावट की मुद्रा से एक किनारे बैठ गई और गिल्लन को पास बैठने का इशारा किया। दोनों में धीरे धीरे बातें होने लगी।

संक्षेप में और बहुत कुछ घटा बढ़ा कर गौहर ने इधर का सब हाल, मुन्दर से उसकी मुलाकात, भूतनाथ का भेद जानने की कोशिश, और अन्त में उसके हाथ पड़ जाना इत्यादि बयान किया, मगर कामेश्वर और भुवन-मोहिनी वाले भेद को बिल्कुल छिपा गई अर्थात् यह न बताया कि भूतनाथ का कौन सा भेद उसने तथा मुन्दर ने जान लिया है। अन्त में उसने कहा, "मुझे और मुन्दर को भूतनाथ ने गिरफ्तार करके एक गुफा में रक्खा था जहां से सांवलसिंह ने मुझे छुड़ाया और गठड़ी में मुन्दर को ले आये क्योंकि उसे होश में लाने का समय न था। हम लोगों का पता तुम्हें या सांवलसिंह को क्योंकर लगा यह मै नहीं जानती मगर अब सुनना चाहती हूँ कि इतने दिन तक तुम दोनों कहां रहे और क्या करते रहे तथा इस समय ऐसे मौके पर क्योंकर यहां पहुँचे।

गिल्लन बोली, "हम लोगों का हाल कोई कौतूहलवर्धक नहीं है। हम लोगों को भी इसी भूतनाथ ने गिरफ्तार करके अपनी लामाघाटी में रक्खा था जहां से आज रात को किसी तरह हम लोग निकल भागे और तुम्हारा पता लेने शिवदत्तगढ़ की तरफ जाने का इरादा कर रहे थे कि यहां रास्ते में तुमसे भेंट हुई। हां तुम्हारा पता क्योंकर लगा यह बात सांवलसिंह ही अच्छी तरह बता सकते हैं।

इतना कह कर गिल्लन ने सांवलसिंह की तरफ देखा जिसने उसकी बात सुन कर यों कहा, "तुमसे अलग हो कर जब मैं आहट की सोध पर चला तो कुछ दूर जाने बाद एक जगह मुझे कई आदमी बैठे दिखाई पड़े। मै छिपता हुआ उनके पास गया और उनकी बातें सुनी तो मालूम हुआ कि वे

लोग भूतनाथ और उसके शागिर्द हैं यह भी उनकी बातचीत से मालूम हुआ कि (गौहर की तरफ इशारा करके) इन्हें तथा मुन्दर नाम की किसी औरत को गिरफ्तार कर के उन लोगों ने पास ही कहीं रक्खा हुआ है। यह सुनते ही मेरे कान खड़े हुए और मैं वहां से हटा। इधर उधर घूम फिर कर देखा तो यहां से कुछ ही दूरी पर एक दो बहुत बड़ी गुफायें दिखाई पड़ीं जिनमें से एक के आगे एक आदमी जो भूतनाथ का ही कोई शागिर्द या नौकर मालूम होता था एक पेड़ के सहारे उठंगा बैठा हुआ ठण्ढी ठण्ढी हवा के थपेड़ों में ऊंघ रहा था। मैं समझ गया कि हो न हो इसी गुफा में वे लोग होंगो अस्तु कदम दबाता हुआ मैं उसके पास पहुँच गया। भाग्य ने मेरी मदद की और उसी समय वह आदमी दो एक जंभाई लेकर आलस्य की मुद्रा से जमीन पर लेट गया तथा आंखें बन्द कर लीं। मैंने चट आगे बढ़ कर बेहोशी की बुकनी उनके नाक से लगाई जिसके असर से वह आंखें भी न खोलने पाया था कि दो चार छींकें मार कर बेहोश हो गया। मैं उसे उठा कर एक झाड़ो में रख आया और जब गुफा में घुसा तो इन्हें तथा एक दूसरी औरत को बेहोश पड़े पाया। लखलखा सुंघा कर इन्हें होश में लाया और तब इनकी आज्ञानुसार उस दूसरी औरत को गठड़ी में बांध निकल भागा। पता नहीं कि पीछे क्या हुआ या उस ऐयार ने होश में आने पर क्या किया अथवा अपनी गफलत का हाल भूतनाथ पर क्योंकर बयान किया मगर इतना कह सकता हूं कि यहां तक आ जाने पर भी हम लोग खतरे से खाली नहीं हैं और जहां तक जल्द हो सके हम लोगों को यहां से भी और दूर निकल जाना चाहिये क्योंकि कोई ताज्जुब नहीं कि पता लगाता हुआ खुद भूतनाथ या उसका कोई शागिर्द यहां तक आ पहुँचे उस समय बहुत मुश्किल होगी।"

इसी समय यकायक पेड़ों की एक झुरमुट के अन्दर से आवाज आई, "बेशक मगर अब तुम लोग भाग कर भी कहां जा सकते हो?"

सब कोई यह आवाज सुनते ही चौंक पड़े। गौहर कांप कर गिल्लन के

साथ सट गई और सांवलसिंह भी चिहुंक पड़ा मगर फिर हिम्मत कर के उठा और खञ्जर हाथ में ले उस झाड़ी की तरफ लपका जिसके अन्दर से यह आवाज आई थी। पत्तों की चरमराहट ने किसी आदमी के भागने की सूचना दी जिस पर यद्यपि निगाह तो किसी की न पड़ी मगर आहट पर गौर करता हुआ सांवलसिंह उस तरफ लपक ही गया और गौहर तथा गिल्लन की आंखों की ओट हो गया।

गौहर ने डरी हुई आवाज में गिल्लन से पूछा, "अब क्या होगा?" गिल्लन ने दिलासा दिलाने के ढंग से कहा, "डरो नहीं हम लोगों के रहते तुम्हारा कोई कुछ बिगाड़ न सकेगा मगर यह जरूरी है कि तुम्हारी साथिन होश में कर दी जाय क्योंकि अगर हम लोगों को यहां से भागना पड़े तो बेहोश की गठरी लिए हुए भागने में बहुत तकलीफ होगी, और अगर वह होश में रहेगी तो हम लोगों के साथ साथ जा सकती है।" गौहर ने इस राय को पसन्द किया और गिल्लन ने उठ कर मुन्दर की गठरी खोल उसे बाहर निकाला, ऐयारी के बटुए से बेहोशी दूर करने का मलहम निकाल कर उसे सुंघाया तथा कुछ नाक पर मला जिससे मुन्दर की बेहोशी बात की बात में दूर हो गई और वह कई छींकें मार होश में आ कर उठ बैठी तथा ताज्जुब से चारो तरफ देखने लगी। गौहर को अपने पास ही बैठा पा उसकी घबराहट कुछ दूर हुई और वह निश्चिन्त सी हो कर बोली, "यह क्या मामला है? हम लोग कौन सी जगह आ गये? और महाराज शिवदत्त तथा उनके आदमी सब कहां चले गये?"

गौहर हम लोगों ने बहुत बड़ा धोखा उठाया। वह महाराज शिवदत्त न थे बल्कि भूतनाथ ऐयार था जिसने हमें भुलावे में डाल कर सब हाल जान लिया और हमारे सब सबूत भी ले लिए।

मुन्दर०। (चौंक और घबरा कर) हैं! वह भूतनाथ था और हमारे सब सबूत उसके हाथ में चले गये।

गौहर०। हां, मेरी इस सहेली गिल्लन तथा ऐयार सांवलसिंह ने

अभी अभी हम दोनों को उसके हाथों से छुड़ाया और यहां ले आये हैं।

मुन्दर०। (इधर उधर देख कर) तब तो तुम्हारी सहेली और ऐयार का बहुत बड़ा अहसान मेरी गर्दन पर है मगर यहां तो मै केवल (गिल्लन की तरफ इशारा करके) इन्हीं को देख रही हूं। तुम्हारे ऐयार सांवलसिंह क्या कहीं चले गये हैं ?

गौहर०। हां, यहां तक पहुँच कर भी हम लोग आफत से नहीं छूटे। भूतनाथ को हम लोगों का पता लग ही गया और वह या उसका कोई आदमी पीछा करता हुआ यहां तक आ पहुँचा जिसकी बात सुन कर सांवलसिंह उसे गिरफ्तार करने गये हुए हैं। (बाईं तरफ देख कर) वह लो सांवलसिंह आ पहुँचे। मगर अकेले आ रहे हैं। मालूम होता है वह ऐयार निकल गया। (आवाज देकर) क्यों सांवलसिंह ! कुछ पता लगा, वह आवाज देने वाला कौन था ?

सांवलसिंह ने पास आ कर जवाब दिया, "जी नहीं, वह कम्बख्त भाग गया मगर मेरी समझ में अब यहां रहना मुनासिब नहीं, कौन ठिकाना वह दो चार आदमियों को अपनी मदद के लिए लेकर यहां आ जाय तो मुश्किल होगी, यहां से डेरा कूंच कर देना मुनासिब है।"

गौहर०। (उठती हुई) मैं भी यही मुनासिब समझती हूँ और यही समझ कर मैं अपनी सखी मुन्दर को भी होश में लाई थी। अब हमलोग कुछ सुस्ता भी चुके हैं, यहां से दूर निकल जाना कोई मुश्किल न होगा।

गौहर गिल्लन और मुन्दर उठ खड़ी हुईं और सांवलसिंह के बताये रास्ते से चलती हुई बहुत जल्द उस जगह से दूर निकल गईं।

जब वह नाला बहुत पीछे छूट गया और पीछा किये जाने का डर जाता रहा तो इन लोगों ने पुनः अपनी चाल धीमी की। उस समय मुन्दर ने कहा, "हम लोग इतनी तेजी से और ऐसे अनजान रास्ते से आये हैं कि मुझे इस बात का कुछ भी पता नहीं लग रहा है कि यह कौन सी जगह है। क्या तुम कुछ बता सकती हो ?" गौहर ने यह सुन जवाब

दिया, "जहां तक मैं समझती हूं अब हम लोग महाराज शिवदत्त के इलाके में आ गये हैं और (सामने की तरफ उंगली उठा कर) उस पहाड़ी को पार करने पर हम लोगों को शिवदत्तगढ़ दिखाई पड़ने लग जायगा। (सांवलसिंह की तरफ देख कर) क्यों सांवलसिंह।"

सांवल०। जी हां यही बात है। हम लोग शिवदत्तगढ़ के बहुत पास आ पहुँचे हैं। अब जहां तक मैं समझता हूँ कोई हमलोगों का पीछा न कर रहा होगा या अगर करता भी होगा तो हमारा कुछ बिगाड़ न सकेगा। आप चाहें तो यहां कुछ देर सुस्ता सकती हैं या नहीं तो सीधी चली चलें शिवदत्तगढ़ पहुंच कर ही डेरा लगाया जायगा।

गौहर०। (मुन्दर से) क्यों क्या राय है ?

मुन्दर०। तुम्हारी जो इच्छा चाहे करो और चाहे जिधर जाना हो जाओ मगर मैं अब तुम से अलग होउंगी और सीधी अपने घर जाऊंगी जहां से निकले कई दिन हो गये और जहां जरूर मेरी राह बेचैनी के साथ देखी जाती होगी।

गौहर०। तो क्या तुम अकेली ही जाओगी। नहीं नहीं दुश्मन का डर कदम कदम पर है और इस तरह अकेले तुम्हारे जाने से मुझे बहुत फिक्र होगी। मेरी समझ में तो तुम मेरे साथ शिवदत्तगढ़ चली चलो, मैं वहां बहुत कम देर ठहरूंगी। बस सफर की थकावट मिटा और महाराज शिवदत्त से कुछ बातें करने बाद ही मैं वहां से चल पड़ूंगी और जहां तुम कहो वहां चलने को तैयार रहूंगी।

मुन्दर०। नहीं नहीं, इतना तरद्दुद करने की कोई जरूरत नहीं है। मैं अकेले बहुत लम्बे लम्बे सफर कर चुकी हूँ और किसी तरह डरती या घबराती नहीं तुम बेफिक्री के साथ शिवदत्तगढ़ जाओ और जब तक तुम्हारी मर्जी हो रहो मगर इतना बतलाती जाओ कि अब हम लोगों में कहां और कब मुलाकात होगी।

गौहर०। जब और जहां कहो।

मुन्दर०। क्या आज के चौथे दिन अजायबघर वाले जंगल में दोपहर के वक्त मिल सकती हो ?

गौहर०। बखूबी।

मुन्दर०। तो बस ठीक है, वहीं हम लोगों की भेंट होगी।

इतना कह मुन्दर आगे झुकी और गौहर के कान में बोली, "हम लोगों के जो सबूत भूतनाथ के हाथ चले गये हैं उन पर फिर से दखल करना चाहिए। तुम्हारे साथ कई मददगार हैं, अगर हो सके तो कुछ पता लगाना, मैं भी कोशिश करूंगी।"

गौहर ने यह सुन मुन्दर का हाथ पकड़ लिया और कुछ दूर ले जाकर बातें करने लगी। लगभग आधी घड़ी तक दोनों में धीरे धीरे कुछ बातें होती रहीं इसके बाद दोनों अलग हुईं और मुन्दर जमानियाकी तरफ तथा गौहर गिल्लन और सांवलसिंह शिवदत्तगढ़ की तरफ रवाना हुए।

गौहर इत्यादि का साथ छोड़ कर हम मुन्दर के साथ चलते हैं और देखते हैं कि वह किधर जाती और क्या करती है। मुन्दर गौहर से बिदा होकर अभी बहुत थोड़ी ही दूर गई होगी की अचानक उसे अपने पीछे कुछ आहट सुनाई पड़ी और घूम कर देखने से सांवलसिंह पर निगाह पड़ी जो तेजी से इसकी तरफ आ रहा था। उसे आते देख यह रुक गई और जब वह पास आ गया तो बोली, क्यों क्या हुआ जो तुम इतनी तेजीसे चले आ रहे हो, खैरियत तो है !

सांवलसिंह ने कहा, "सब ठीक है।" गौहर ने यह समझ कर कि आपका अकेले इतना लम्बा सफर करना मुनासिब नहीं है मुझे आपके साथ साथ जाकर जमानिया या जहां आप जाना चाहें पहुँचा देने को कहा है और यह भी कहा है कि अगर आप मुझे साथ रखना पसन्द न करें तो मै हट जाऊं मगर छिपा छिपा पीछे पीछे तब तक चला जाऊं जब तक कि आप अपने ठिकाने पहुंच न जायं। अब आप कहिये तो मैं आपके साथ साथ चलूं नहीं तो उनका दूसरा हुक्म बजाऊं और छिप कर आपका पीछा करूं।"

मुन्दर यह सुन हंस कर बोली, "नहीं नहीं, छिप कर पीछा करने की जरूरत नहीं तुम खुशी से मेरे साथ चल सकते हो और मै उनकी शुक्रगुजार हूँ जो उन्होने मेरा इतना खयाल किया मगर बात यह थी कि मैने तुम्हें साथ न लेना इसलिये सोचा था कि तुम लोग खुद ही कैद की तकलीफ भोग कर आ रहे हो उस पर से इतना लम्बा सफर मुनासिब न होगा। इसी खयाल से मैने उनके कहने पर भी किसी को साथ लेना मुनासिब न समझा था।"

सांवल०। ऐसा सोचना आपकी मेहरबानी थी, पर फिर भी उसकी कोई जरुरत न थी। हम ऐयारों का तो पेशा ही दौड़ धूप परेशानी और मुसीबत उठाने का है। जब इसी बात की रोटी ही खाते हैं तो कैद की तकलीफों का ख्याल कहां तक किया जायगा। और फिर आपका साथ तो मेरे हक में इसलिये बहुत ही अच्छा होगा कि जैसा कि मैने गौहर से सुना, आप ऐयारी के फन में बहुत ही होशियार हैं और बड़े बड़े खतरनाक भेदों का पता लगा चुकी हैं। सचमुच ईश्वर ने आपको जैसी खूबसूरती दी है वैसा ही दिल और दिमाग भी दिया है।

तरह तरह की मीठी और खुशामद की बातें कर कर के सांवलसिंह ने बहुत जल्द मुन्दरका मन अपने हाथ में कर लिया और तरह तरह की बातें करते हुए दोनों आदमी जमानिया की तरफ रवाना हुए।

वह समूचा दिन, और रात का भी कुछ हिस्सा, सफर में बीत गया। मुन्दर की इच्छा एक दम सीधे अपने घर अर्थात् पिता के यहां चले जाने की थी मगर दूरी बहुत ज्यादे थी और कैद तथा बेहोशी की तकलीफ से वह नाजुक औरत कमजोर भी हो रही थी फिर भी वह तब तक चली गई जब तक कि कदम कदम पर यह मालूम होने लगा कि अब दूसरा कदम न रख सकेगी बल्कि कोशिश करेगी तो ठोकर खा कर गिर पड़ेगी। सांवलसिंह ने यह देख बहुत कुछ समझा बुझा कर उसे कुछ देर आराम करने को राजी किया और उसके यह वादा करने पर कि पौ फटने के घण्टा भर

पहिले ही वह पुनः सफर शुरू कर देगा मुन्दर ने चलना बन्द किया। दोनों आदमी अपना रुख बदल कर थोड़ी देर चलने के बाद ही गंगा तट पहुंच गये जहां मुन्दर ने हाथ मुंह धोया और सांवलसिंह का दिया हुआ कुछ मीठा खाकर एकदम चूर हुई भई एक पेड़ के नीचे पड़ गई जहां सांवलसिंह ने कुछ पत्ते बटोर और अपना दुपट्टा उस पर बिछा उसके लेटने का इन्तजाम कर दिया था। उसे एक दम बेफिक्र हो कर आराम करने को कह सांवलसिंह जरूरी कामों से छुट्टी पाने चला गया और इधर थकी हुई मुन्दर भी जमीन से पीठ लगाने के कुछ ही देर बाद इस तरह की गाफिल नींद में सो गई कि मालूम होता था कि सुबह होने पर भी न जगेगी।

लगभग घण्टे भर बाद सब कामों से निपट जिस समय सांवलसिंह वहां लौटा जहां मुन्दर को छोड़ आया था तो उसे गहरी नींद में पाया। उसने भी यह देख मुन्दर से कुछ हट कर एक पेड़ के नीचे आसन जमाया। कुछ देर तक पेड़ के तने के साथ उठंगा हुआ वह न जाने क्या क्या सोचता रहा मगर धीरे धीरे थकावट और नींद ने उस पर भी कब्जा कर ही लिया और मुन्दर की तरह लम्बा हो कर वह भी गहरी नींद में बेसुध हो गया।

अचानक किसी तरह की आवाज ने मुन्दर की तो नहीं पर सांवलसिंह की निद्रा भंग कर दी। उसने दो एक करवटें बदल कर आंखें खोल दीं और इधर उधर देखने लगा, चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ था जिसके बीच केवल गंगा का मधुर कलरव या कभी कभी दरियाई चिड़ियों या जंगली जानवरों के बोलने की आवाज सुनाई दे जाया करती थी। मुन्दर उसी तरह मुर्दों से बाजी लगाये पड़ी हुई थी और इन लोगों का थोड़ी बहुत सामान उसी तरह पेड़ की डाली पर रखा हुआ था जिस तरह रख कर सांवलसिंह लेटा था। सब ज्यों का त्यों था पर फिर भी सांवलसिंह को ऐसा भास होता था मानो कोई न कोई बात वहां पर जरूर हो गई है जिसे यपि वह देख या जान न रहा था पर अनुभव कर सकता था। आखिर

उससे न रहा गया और वह उठ कर बैठ गया, बैठने के साथ ही उसे ऐसा मालूम हुआ मानो कोई झपट कर उसके बगल से होता हुआ पास की झाड़ी में घुस गया हो। वह यह नहीं समझ सका कि वह कोई आदमी था या जंगली जानवर क्योंकि उसकी निगाह दूसरी तरफ थी पर फिर भी उसका शक्की मन चञ्चल हो उठा और वह फुर्ती से उठ खड़ा हुआ। साथ ही उसका हाथ उसकी कमर में गया पर उसे खाली पाया अर्थात् वह खंजर जिसे रात को कमर में खोंस वह सोया था मौजूद न था। यह देखते ही वह चौंक पड़ा और समझ गया कि उसके सोये रहने की हालत में कोई न कोई वहां जरूर आया है। वह जो कोई भी हो, सिर्फ उसकी कमर का खंजर लेने नहीं आया होगा बल्कि कुछ फसाद भी मचा गया होगा, यह खयाल बिजली की तरह उसके मन में दौड़ गया। वह झपट कर उस जगह पहुंचा जहां मुन्दर सोई हुई थी। मुन्दर के बदन पर हाथ रखते ही वह चौंक गया और उसके मुंह से बेतहाशा चीख की आवाज निकल पड़ी क्योंकि मुन्दर का बदन बर्फ की तरह ठण्ढा था।

घबड़ाये हुए सांवलसिंह ने जल्दी जल्दी अपना सामान उतार कर रोशनी की और पुनः मुन्दर के पास पहुंचा। उसके मुंह से दुबारा एक चीख निकल पड़ी जब उसने देखा कि मुन्दर मुर्दा है, एक खंजर उसकी छाती में दस्ते तक घुसा हुआ है, और बहुत सा खून निकल कर चारो तरफ फैला हुआ है, पहिली ही निगाह ने यह भी बता दिया कि जो खञ्जर उसकी मौत का सबब हुआ वह उसी का है।

केवल इतना ही नहीं, अभी सांवलसिंह मुन्दर को छूने जा कर अपनी उंगलियों में लग गये हुए खून की तरफ डरी हुई निगाहों से देख रहा था कि चारो तरफ से आ कर कई आदमियों ने उसे घेर लिया और "यही है, यही है, इस औरत का खूनी यही है !!" कह कर चिल्लाने लगे।

आठवां बयान

किसी तरह की आवाज सुन कर भूतनाथ चौंक पड़ा और उठ कर इधर उधर देखने लगा।

मन्दिर से कुछ फासले पर और गंगाजी से बहुत दूर मिट्टी की एक कच्ची और लम्बी दीवार भूतनाथ को दिखाई पड़ी जिसको देखने से किसी देहाती मकान के आँगन का भ्रम होता था मगर जो नई ही बनी जान पड़ती थी। भूतनाथ का ध्यान इसी दीवार की तरफ गया क्योंकि उसे सन्देह हुआ कि हो न हो वह आवाज इसी के अन्दर से आई है। आखिर उससे रहा न गया और वह मन्दिर से उतर उसी तरफ को बढ़ा। उसके शागिर्द भी साथ हुए पर उसने यह कह कर उन्हें रोक दिया कि तुम लोग यहीं रहो मैं अभी वापस आता हूँ, अगर तुम्हारी मदद की जरूरत पड़ेगी तो सीटी बजाऊँगा। लाचार वे दोनों वहीं रह गये और अकेला भूतनाथ उस दीवार की तरफ बढ़ा।

बहुत जल्दी ही यह उस जगह पहुँच गया और तब उस दीवार के चारो तरफ इस उम्मीद में घूमने लगा कि कहीं कोई खिड़की या दर्वाजा दिखाई पड़ जाय तो अन्दर के हाल चाल का पता लगावें, क्योंकि वह आवाज जो उसने सुनी थी इसी के अन्दर से आई जान पड़ती थी। मगर ताज्जुब की बात थी कि चारो तरफ घूम आने पर भी कहीं कोई ऐसा रास्ता दिखाई न पड़ा जिससे अन्दर जाया या अन्दर का कुछ हाल देखा सुना जा सके। फिर भी यह सन्देह भूतनाथ को जरूर हो गया कि इस दिवार के अन्दर कोई न कोई जरूर है क्योंकि कभी कभी एक बहुत ही हलकी आवाज जो इस तरह की थी मानों कोई आदमी गहरी सांसे ले रहा हो, भीतर से जरूर आती थी। आखिर भूतनाथ से रहा न गया। उस दीवार की ऊँचाई बहुत न थी और मिट्टी की बनी हुई तथा ऊबड़ खाबड़ होने के कारण उसके ऊपर चढ़ जाना भी कठिन न था अस्तु वह दीवार पर चढ़ गया और

भीतर झांक कर देखने लगा। मगर न जाने भीतर भूतनाथ को क्या सामान दिखाई पड़ा कि उसका चेहरा पीला पड़ गया और एक ही निगाह देखने बाद वह कांपता हुआ नीचे उतर आया।

इस समय भूतनाथ की सूरत जो देखता यही समझता कि उसे जूड़ी बुखार चढ़ आया है। या वह बरसों का बीमार है उसका चेहरा पीला हो गया था, बदन कांप रहा था, शकल से हवाई उड़ रही थी और माथे पर पसीना आया हुआ था। वह सिर नीचा कर के दीवार के साथ उठग बल्कि गिर गया और न जाने क्या क्या सोचने लगा।

मगर ऐसी हालत भी उसकी देर तक न रही, वह फिर हिम्मत कर के उठा और न जाने क्या सोच पुनः उस दीवार पर चढ़ा। इस बार भी पहिले की तरह केवल सिर भीतर झुका कर देर तक वह कुछ सोचता रहा, तब दीवार पर चढ़ा और भीतर की तरफ कूद गया। आइये, पाठक हम लोग भी भूतनाथ के साथ ही साथ भीतर चलें और वहां का रंग ढंग देखें।

एक छोटा सा मैदान चारो तरफ करीब पुरसा भर ऊंची दीवार से घिरा हुआ था। दीवार जो बाहर से कच्ची और मिट्टी की तथा ऊबड़ खाबड़ थी, भीतर की तरफ बहुत साफ और चिकनी थी और मालूम होता था मानों संगीन बनी हुई है पर कुछ ही गौर करने पर यह भ्रम दूर हो जाता था और पता लगता था कि यह चालाक मुसौवर की कारीगरी है जिसने रंग रौगन की मदद से ऐसा भ्रम पैदा करने वाला सामान तैयार कर दिया है। चार दीवारी के साथ साथ चारो तरफ तरह तरह की इमारतें बनी हुई दिखाई पड़ रही थीं। बीच की जमीन जिस पर पेड़ पौधे की किस्म में घास की एक पत्ती तक न थी, एक दम साफ और चिकनी थी और उसे भी सरसरी निगाह में देखने से यही भ्रम होता था मानो पत्थर का फर्श बिछा हुआ हो पर यह भी उस दीवार की तरह केवल कारीगर की कारीगरी ही थी जिसने जमीन को रंग और उस पर कूंची से लकीरें खींच संगीन फर्श की नकल बनाई थी।

मगर जो चीज वास्तव में ताज्जुब करने की थी वह इस सरजमीन के बीचों बीच में बना हुआ एक खम्भा था जिसके ऊपर लाल रंग के एक दैत्य की शकल बैठाई हुई थी। इस मूरत से कुछ ही फासले पर तथा पीछे की तरफ एक औरत की सिर कटी लाश पड़ी हुई थी जिसका बदन एक दम नंगा था और जिसके धड़ से निकला हुआ खून चारों तरफ फैला हुआ था तथा सामने की तरफ एक डरावना आदमी खड़ा हुआ था जिसका समूचा बदन यहां तक कि चेहरा भी काले कपड़ों से ढंका हुआ था। इस आदमी के दाहिने हाथ में खून से भरी एक तलवार थी और बायें हाथ में एक औरत का सिर था जिसे वह बालों के जरिये पकड़े हुये था। इस सिर से टपकते हुये खून से उस मूर्ति के पैर तथा वह खम्भा लाल हो रहा था।

यह एक ऐसा भयानक दृश्य था जिसे देख बड़े बड़े जीवट वालों की धोती ढीली हो सकती थी अस्तु भूतनाथ इसे देख कर घबड़ा गया यह कोई ताज्जुब की बात न थी। परन्तु उसके साथ ही साथ हमारे पाठकों के लिये भी यह डर के साथ ही साथ ताज्जुब की जगह थी। हमारे पाठक जो हमारे साथ साथ तिलिस्मों की सैर कर आये हैं वे इस स्थान को देखकर जरूर चौकेंगे क्योंकि यह जगह उन्हे कुछ पहिचानी हुई सी मालूम पड़ेगी। और वास्तव में बात भी यही है क्योंकि जरा गौर करने ही से वे समझ जायंगे कि यह वही स्थान अथवा उस स्थान की सच्ची और अचानक देखने से धोखे में डाल देने वाली नकल बनाई गई है जहां पहुँच कर प्रभाकरसिंह के आफत में पड़ने का हाल हम दो बयान में ऊपर लिख आये हैं। वैसा ही संगीन सहन, चारो तरफ की वैसी ही इमारतें, बीच की वही मूर्ति, ठीक उस तिलिस्मी जगह की याद पैदा कर देती थी जहां प्रभाकरसिंह के साथ हम लोग जा चुके हैं, अगर कुछ फर्क है तो इतना ही कि वह नकाब पोश आदमी, वह औरत की लाश और वह कटा हुआ सिर वहां नहीं था जो यहां दिखाई पड़ रहा है। साथ ही साथ अगर पाठक कुछ भी

गौर करेंगे तो एक बात ताज्जुब की उन्हें और भी दिखाई पड़ेगी जो यह थी कि यह सब सामान नकाबपोश आदमी, सिर कटी लाश, और वह कटा सिर, असली न था बल्कि मोम या मिट्टी का, बिल्कुल बनावटी बना हुआ था, पर कारीगर ने रंग रंगा कर उसे कुछ ऐसा बना दिया था कि एक दम असली का धोखा होता था।

चालाक भूतनाथ ने यह बात पहिली ही निगाह में जान ली थी कि यह सब बनावटी खेल है। तब फिर उसके इस तरह डरने का क्या कोई खास सबब था ? क्योंकि यह लाश, यह सिर, यह मूरत और यह समय उसके एक पिछले पाप की याद दिला रहा था, ऐसा पाप जिसे उसने अपने दिल की सबसे भीतरी तहों में छिपा कर रक्खा था और जो अभी तक कभी किसीपर प्रगट न हुआ था !

सकते की सी हालत में उस नकाबपोश शक्ल के सामने खड़ा भूतनाथ यही सोच रहा था कि वह स्वप्न देख रहा है या जीता जागता यह सब हाल देख रहा है। इस समय जो खयाल उसके मन में सब से तेजी के साथ चक्कर मार रहा था वह यह था कि जिस आदमी ने यह सब मूरतें इस तरह पर बना कर यहां रक्खी हैं वह बेशक उसके इस पुराने भेद का रत्ती रत्ती हाल जानता है और इस तरह पर उस प्राचीन और करीब भूले जा चुके हुए दृश्य को उसके सामने ला कर जरूर कोई न कोई फसाद खड़ा करने का उसका इरादा है।

जिस तरह रास्ता चलता हुआ कोई मुसाफिर यकायक अपने सामने खूंखार शेर को देख कर चौंक उठता है और डर कर सकते की सी हालत में खड़ा हो जाता है उसी तरह खड़ा होकर भूतनाथ अपने सामने की चीजें देख रहा था कि यकायक किसी तरह की आवाज ने उसका ध्यान बंटाया। उसे ऐसा मालूम हुआ मानो कोई आदमी उसके पास ही कहीं खूब जोर जोरसे सांस ले रहा हो। यही आवाज उसने इस दीवार के अन्दर आने के पहिले भी सुनी थी। वह ताज्जुब से अपने चारो तरफ देखने लगा

मगर कहीं किसी आदमी की सूरत दिखाई न पड़ी. उसका ताज्जुब और भी बढ़ा और वह गौर करने लगा कि वह आवाज कहां से आती है, परन्तु शीघ्र ही मालूम हो गया कि खम्भे पर बैठी हुई उस लाल मूरत के दोनों होंठ कुछ खुले हुए हैं और उन्हीं के अन्दर से वह आवज इस प्रकार आ रही है मानों वह मूरत सांस ले रही हो। भूतनाथ को घबराहट और भी बढ़ गई और उसने चाहा मूरत के कुछ और पास पहुंच कर गौर से देखे कि यह क्या माजरा है मगर वह यकायक रुक गया जब उसने देखा कि वह आवाज कुछ बदल रही है और ऐसा जान पड़ता है मानों वह मूरत कुछ बोल रही हो। भूतनाथ ने डर और घबराहट से उस मूरत के मुंह से ये शब्द निकलते हुए सुने :—

कौन ? भूतनाथ ? आओ मेरे दोस्त !! इतने दिनों तक तुम कहां थे ? तुम्हारी राह देखता हुआ मै अभी तक प्यासा बैठा हुआ हूं।

न जाने इन शब्दों में क्या असर था कि भूतनाथ इन्हें सुनते ही एक दम बदहवास हो गया और इस तरह इधर उधर देखने लगा मानों वहां से भाग जाने की राह खोज रहा हो, साथ ही साथ डरती हुई निगाहें अपने चारो तरफ इस मतलब से भी डालने लगा कि किसी और ने तो उस मूरत के मुंह से निकले हुए वे शब्द नहीं सुन लिये ?

वह मूरत दो एक सायत तक चुप रही, इसके बाद पुनः उन पत्थर के होठों में से ये शब्द निकले :—

"क्या तुम यह बलिक्रिया पूरी न करोगे ? क्या मेरे शताब्दियों के सूखे हुए होठों में इस सिरसे निकली हुई लहू की बूंदें डाल उन्हें तर न करोगे ? अगर ऐसा न करोगे तो किस प्रकार तुम वह चीज पाओगे जिसकी आशा में तुमने यह हत्या की है ?"

भूतनाथ की हालत इन शब्दों को सुन कर और भी खराब हो गई। उसने पीछे हटना चाहा मगर ऐसा मालूम हुआ मानों जमीन ने उसके पैर पकड़ लिये हैं और वे कभी छूटेंगे ही नहीं ! वह लाचारी की सी हालत

में खड़ा हुआ कभी उस मूरत की तरफ और कभी अपने चारो तरफ देखने लगा। थोड़ी देर बाद वह मूरत फिर बोली :—

"खैर तुम जानो ! मैं हजारों बरस से प्यासा हूँ, और न जाने कब तक ऐसा रहूँगा ! तुमने मुझे आशा दिला के निराश किया ! खैर तो मैं अब चुप हो जाता हूँ पर तुम भी यह याद रक्खो कि यह हत्या व्यर्थ ही तुमने अपने सिर ली। बिना इस खून की बून्दे मेरे मुंह में पड़े तुम 'शिवगढ़ी' का खजाना नहीं पा सकते !!"

इतना कह कर वह मूरत चुप हो गई मगर भूतनाथ की हालत अब इतनी खराब हो गई थी कि वह खड़ा न रह सका और आधी बेहोशी की सी हालत में उसी जगह जमीन पर गिर पड़ा। न जाने कब तक वह इसी हालत में पड़ा रहता अगर थोड़ी देर बाद किसी प्रकार की आहट ने उसे चौंकाया न होता। उसने सिर उठाया और अपने दोनों शागिर्दों को दीवार के ऊपर से झांकते पाया।

हम नहीं कह सकते कि इस समय अपने शागिर्दों को वहां देख कर भूतनाथ खुश हुआ या नाखुश, मगर अपनी बेबसी की हालत पर उसे कुछ शर्म जरूर आई और वह फुर्ती से उठ कर खड़ा हो गया। इसी समय रामगोविन्द ने दीवार पर से पुकार कर कहा, "आपको लौटने में बहुत देर करते देख कर हम लोग यहां चले आये ! मगर गुरूजी ! यह कैसा नाटक यहां रचा गया है ! ये सब आदमी कौन है ! वह राक्षस क्या है ! और वह लाश कैसी है ?"

भूतनाथ ने कुछ रुकते हुए कहा, "यह सब किसी शैतान की शैतानी मालूम होती है। यही सब खेल देख इसकी जांच करने यहां रुक गया था पर अभी कुछ निश्चय नहीं कर पाया कि यह क्या बला है। खैर अब तुम लोग यहां तक आ ही गये हो तो भीतर भी चले आओ और यह जांचने में मेरा हाथ बंटाओ कि यह सब क्या और किसकी कार्रवाई है !!"

आज्ञा पाते ही भूतनाथ के दोनों शागिर्द अहाते के अन्दर कूद आये और भूतनाथ के पास आकर खड़े हो गये। भूतनाथ बोला, "ये सब मूरतें जो बनावटी हैं और मोम की बनी मालूम होती हैं किसी खास मतलब से यहां रक्खी गई हैं मगर सब से ताज्जुब की बात जो मैंने देखी सो यह है कि ये मूरतें बोलती भी हैं।"

दोनों शागिर्द०। (ताज्जुब से) मूरतें बोलती हैं !!

भूत०। हां अभी यह (हाथ से उस पिशाच की तरफ बता कर) शैतान बोल रहा था और मैं यही जानने की कोशिश कर रहा था कि यह आवाज इसके मुँह से कैसे निकली है ! इसमें तो कोई शक ही नहीं है कि मिट्टी पत्थर या मोम की पुतलियें आप से आप बोल नहीं सकतीं, जरूर किसी ने कुछ चालाकी की हुई है ! मैं कई बार इस तरह की मूर्तियों को बोलते सुन चुका हूं पर हर दफे इनके भीतर किसी न किसी प्रकार की ऐयारी ही पाई। इस जगह भी जरूर कुछ वैसा ही मामला है।

रामगोविन्द०। जी हां आपने एक बार मुझसे कहा था कि अगस्ता-श्रम नामक किसी स्थान में·····

भूत०। (जल्दी से) हां हां वैसा ही कुछ मामला यहां भी जान पड़ता है और जरूर इन मूरतों के भीतर कोई खास तर्कीब की गई है जिसके जरिये ये बोलती चालती हैं। (अपने चारो तरफ देख के) यह सब सामान मुझे नया ही बना हुआ जान पड़ता है क्योंकि पहिले इस जगह किसी तरह की कोई इमारत नहीं थी। इसके चारो तरफ घूम फिर कर देखने से शायद कुछ सुराग लग सके मगर इसके पहले मैं इन मूरतों की जांच करना चाहता हूं (रामगोविन्द से) तुम जरा इस खम्भे पर की मूरत को धक्का दे कर देखो तो सही कि जड़ी हुई है या अलग है।

रामगोविन्द उस शैतान की मूरत के पास गया और उसे हाथ से धक्का दिया, जब वह न हिली तो दोनों हाथ लगा और जमीन से पैर अड़ा

जोर से धक्का देना चाहा मगर इसी समय उस मूरत के मुंह से जोर से आवाज आई, "बस खबरदार !"

यह अचानक की आवाज जो किसी पिशाच की आवाज की तरह भयानक मालूम पड़ती थी सुन कर रामगोविन्द चौंक गया और कुछ डर के साथ कभी उस मूरत और कभी भूतनाथ की तरफ देखने लगा। भूतनाथ यह देख बढ़ावा देने वाले शब्दों में बोला "तुम उस शैतान के फेर में न पड़ो जो इन मूरतों के मुँह से इस तरह की बातें कर रहा है ! मैं ऐसे तमाशे बहुत देख चुका हूँ, मैंने जो कहा सो करो और जोर लगा कर उस खम्भे को उलट दो (बलदेव से) तुम भी जरा अपने भाई की मदद करो तो !"

दोनों भाई भूतनाथ की बात सुन आगे बढ़े मगर कुछ सकपकाते हुए। अभी दोनों ने मूरत को हाथ भी नहीं लगाया था कि यकायक फिर जोर से आवाज आई, "कंबख्तों ! क्या तुम्हारी शामत आई है ! क्या तुम मेरी बातों पर यकीन नहीं करते !!" भूतनाथ के साथ साथ क्या तुम लोग भी जहन्नुम में जाना चाहते हो !

भूतनाथ भी मूरत के पास आ गया और कड़क कर बोला, "बेशक में तुम्हारी बात पर कुछ भी विश्वास नहीं करता ! भला यह क्या कभी संभव है कि निर्जीव मूरत आदमियों की तरह बातें करे ! जरूर यह किसी तरह की ऐयारी है !!"

मूरत जोर से हंस पड़ी और तब बोली, "किसी तरह तुम्हें यह विश्वास होगा कि यह किसी ऐयार की ऐयारी नहीं !! क्या मैं अपने वास्तविक शरीर से तुम्हारे सामने आ जाऊं !!"

भूत०। अगर इस मूरत के इलावे तुम्हारा कोई अलग अस्तित्व भी है तो मैं जरूर उसे देखना चाहता हूँ !!

मूरत०। अच्छी बात है तो मैं भी तुम्हारे सामने आने को तैयार हूँ। तुम या तुम्हारे ये शागिर्द डरेंगे तो नहीं ?

भूत० । नहीं, बल्किुल नहीं, बल्कि तुम्हें तुम्हारी शैतानी का मजा चखाने को तैयार रहेंगे ।

मूरत० । अच्छी बात है, तो लो देखो, मैं आया !!

यकायक जोर से एक पटाखे की सी आवाज आई और इन तीनों के सामने जमीन पर कुछ धूआं दिखाई पड़ने लगा । यह धूआं धीरे धीरे गाढ़ा हुआ और अब उसके अन्दर कोई चीज दिखाई देने लगी जो वास्तव में मनुष्य की हड्डियों का एक ढांचा था । धूआं तो कुछ देर बाद हलका हो कर उड़ गया मगर वह मनुष्य की हड्डियों का ढांचा (जिसे देख कर हमारे पाठक तुरत पहिचान जायंगे क्योंकि यह वास्तव में वही तिलिस्मी शैतान है जिसे वे कई बार पहिले देख चुके हैं) दो कदम आगे बढ़ आया और अपने बिना ओठों के मुंह से भयानक हंसी हंस कर आस्मान गूंजा देने वाले भारी स्वर में बोला, "क्यों मुझे देख लिया न ! अब क्या चाहते हो ? क्या मैं तुम तीनों को कच्चा ही चबा जाऊं ?"

भूतनाथ और उसके दोनों शागिर्दों का डर के मारे बुरा हाल हो रहा था । भूतनाथ तो खैर किसी तरह होश सम्हाले हुए भी था पर उसके दोनों शगिर्द तो इस तरह कांप रहे थे मानों उन्हें जूड़ी चढ़ आई हो । वे लोग कांपते हुए धीरे धीरे भूतनाथ की तरफ खसकते जा रहे थे और जिस समय अपनी हिम्मत को हाथ में ले भूतनाथ एक दो कदम आगे बढ़ आया तो दोनों दबक कर उसके पीछे हो गए ।

उस शैतान ने डरावनी आवाज में कहा, "क्यों भूतनाथ ! अब क्या कहते हो ? क्या अब और कोई भी सबूत चाहते हो ?"

भूतनाथ सकपकाना सा हो कर बोला, "आखिर आप कौन हैं और क्या चाहते हैं ?"

शैतान अपनी डरावनी आवाज में बोला, "कौन हूँ ? क्या तुम्हें यह अभी तक जानना बाकी है ! तुम तो आज बहुत दिनों से मुझे जानते हो ? खैर अगर भूल गये हो तो मैं तुम्हें परिचय देने को तैयार हूँ । अच्छा मैं

अपना कौन सा परिचय तुम्हें दूँ ? भिन्न भिन्न अवस्था और भिन्न भिन्न स्थानों में मैं भिन्न भिन्न नाम से पुकारा जाता हूं। तुम मेरा कौन सा परिचय जानना चाहते हो ?"

भूतनाथ कुछ जवाब न दे सका। वह शैतान कुछ देर तक बिना होठों के मुँह की डरावनी मुस्कुराहट के साथ उसकी तरफ इस आशा से देखता रहा कि शायद यह कुछ बोले, मगर उसे चुप पा खुद ही बोला, "अच्छा मैं अपना वह परिचय तुम्हें देता हूँ जिससे तुम बहुत सहज में मुझे पहिचान लोगे। मैं वही हूँ जिसके सामने तुम अपने एक कमीने दोस्त के साथ आये थे ! मैं वही हूँ जिसके सामने तुमने भुवनमोहनी के 'आंचल पर गुलामी की दस्तावेज' लिख देने को कहा था! और मैं वही हूँ जिसके सामने तुमने शिवगढ़ी का खजाना लेने की लालच में उससे की हुई अपनी प्रतिज्ञा को बिल्कुल भूल कर एक बेकस औरत का सिर काट डाला था और उस सिर से निकले हुए खून की आखिरी बूंदें मेरे मुंह में डाल कर उस खजाने की चाभी पाना चाहा था पर कुछ विघ्न पड़ जाने से वह काम पूरा न करके और मुझे प्यासा छोड़ के भाग गये थे ! दूसरे शब्दों में मैं 'रोहतासमठ का पुजारी' हूँ !! कहो अब तुम मुझे पहिचान गये या कोई और परिचय देने की आवश्यकता है !!!"

बादल की गरज की तरह गंभीर शैतान का स्वर आकाश में फैल गया, मगर किसी ने उसका उत्तर न दिया। उसकी बातों में न जाने क्या असर था कि भूतनाथ बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ा था और उसकी डरावनी शकल न देख सकने के कारण भूतनाथ के दोनों शागिर्द दोनों हाथों से अपना अपना मुंह ढांके जमीन पर औंधे पड़े हुए थे।

॥ सोलहवां हिस्सा समाप्त ॥

*

पृष्ठ संख्या ४३ में दिये हुए मजमून का अर्थ यह है :—

"४ अक्षर आगे बढ़ाओ।

"कोने वाले फूल खींचो, मगर के पेट में तख्ती है उसमें लिखे मुताबिक करो। शेर मत छोड़ो।

"पुतलों से होशियार !"

❀ श्रीः ❀

भूतनाथ

उपन्यास

अथवा

भूतनाथ की जीवनी

सत्रहवां हिस्सा

—❀—

पहिला बयान

अपने दोनों साथियों श्यामसुन्दर और गोपाल से विदा होकर वह औरत घाट की सीढ़ियां चढ़ उन तंग और बदबूदार गलियों में घुसी जिनके लिये काशी मशहूर है।

कितने ही अन्धेरे रास्तों को पार करती हुई वह शीघ्र ही एक ऐसे महल्ले में जा पहुँची जहां के ज्यादातर मकान यद्यपि संगीन और तिमंजिले चौमंजिले थे फिर भी गलियां उसी तरह की तंग और अन्धेरी ही थीं जैसी कि अब तक मिलती आई थीं। यद्यपि सुबह का समय हो रहा था और इस सबब से गंगास्नान के लिये जाने वाले औरत मर्दों की गिनती बढ़ने लगी थी फिर भी अन्त में जिस गली में पहुँच एक संगीन मकान के सामने वह औरत रुकी उस जगह कोई भी चलता फिरता नजर नहीं आ

रहा था और सन्नाटा ऐसा था कि किसी नये आने वाले को यही मालूम होता कि इन मकानों में किसी का रहना होता ही नहीं है। मगर वास्तव में यह बात नहीं है और इन मकानों में रहने वाले भी किसी तरह कम नहीं हैं लेकिन अगर कुछ फर्क है तो सिर्फ इतना ही कि यहां के ज्यादातर बाशिन्दे उन लोगों में से हैं जिन्हें दिन के सूर्य की जगमगाती रोशनी के बजाय रात की अन्धेरी ही ज्यादा प्यारी होती है।

जिस मकान के सामने वह औरत आकर रुकी उसका दर्वाजा छोटा मगर बहुत ही मजबूत बना हुआ था। वह औरत कुछ देर तक तो चुपचाप खड़ी कुछ सोचती या आहट लेती रही, इसके बाद बहुत ही धीरे से उसने लोहे का मोटा कुण्डा सिर्फ एक दफे खटखटाया।

धीमी आवाज मुश्किल से बन्द हुई होगी कि ऊपर के मंजिल की एक खिड़की आहिस्ते से खुली और किसी ने सिर निकाल कर नीचे की तरफ झांका। सिर्फ एक औरत को खड़ा पा देखने वाले ने पूछा, "कौन है ?" औरत ने जवाब दिया, "रामधनी !" "अच्छा" कह कर पूछने वाले ने सिर भीतर कर लिया और खिड़की पुनः बन्द हो गई।

थोड़ी देर बाद दर्वाजे के भारी कोंढ़े और बेंवड़े के हटने की आवाज आई और तब दर्वाजा जरा सा खुला। किसी ने भीतर से पूछा, "पहिचान बताओ ?" इस औरत ने जवाब दिया "कामेश्वर !"

मालूम होता है कि जो इशारा इस औरत ने कहा उसके सुनने के लिये पूछने वाला तैयार न था क्योंकि "कामेश्वर" शब्द सुनने के साथ ही उसके मुंह से एक आश्चर्य की आवाज निकल गई जिसको उसने तुरत ही दबाया और साथ ही कहा, "अरे तुम ! अच्छा जल्दी भीतर आ जाओ !!" आने वाले को भीतर कर दर्वाजा तुरत ही बन्द कर लिया गया जिससे उस जगह घोर अन्धकार छा गया क्योंकि वहां किसी तरह की रोशनी न थी, पर सामने का दालान पार कर बाद में पड़ने वाले चौक (आंगन) में सुबह का पहिला चांदना कुछ कुछ झलक मारने लगा था। आगे आगे

दर्वाजा खोलने वाली (क्योंकि वह भी औरत ही थी) और पीछे पीछे उसका इशारा पा कर बढ़ती हुई यह नई आने वाली चल कर उस चौक में पहुंची और वहां पर एक ने दूसरे की शकल अच्छी तरह देखी। आने वाली के मुंह से निकला, "बेगम !" दर्वाजा खोलने वाली के मुंह से निकला, "नन्हों !" और दोनों एक दूसरे के गले से लिपट गईं।

बहुत दिनों के बिछुड़े हुए प्रेमियों की तरह ये दोनों बहुत देर तक एक दूसरे से चिमटी रहीं और जब अलग हुईं तब भी एक ने दूसरे का हाथ न छोड़ा। आंगन के दक्खिन तरफ के एक बड़े दालान में चौकी के ऊपर साफ सुथरा फर्श बिछा हुआ था जिस पर एक दूसरे का हाथ पकड़े दोनों जा कर बैठ गईं और आपुस में बातें करने लगीं।

हमारे पाठक इस बेगम को आज के पहिले कई दफे देख चुके हैं और उसे अच्छी तरह पहिचानते हैं पर नन्हों को आज के पहिले देखने का शायद उन्हें कोई मौका नहीं पड़ा है। फिर भी चन्द्रकान्ता सन्तति में इसका नाम कई दफे आ चुका है और प्रेमी पाठक इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि इसका भी भूतनाथ की जिन्दगी से किसी तरह का बहुत ही गहरा ताल्लुक था। इसी लिये हम इस जगह इसका नखसिख कुछ खुलासे तौर पर बयान करके तभी आगे बढ़ेंगे क्योंकि सम्भव है कि आगे भी कई दफे इसको देखने का पाठकों को मौका पड़े क्योंकि भूतनाथ की जिन्दगी को चौपट करने वालियों में से यह भी एक ऐसी औरत थी जिसने उसको जीते जी मुर्दे से बदतर बना कर छोड़ दिया था।

नन्हों की उम्र वास्तव में पचीस बरस से कुछ ऊपर ही होगी पर इसका नखसिख कुछ ऐसा था तथा काठी भी ऐसी अच्छी विधाता ने इसे दे रक्खी थी कि खूब गौर से देखने वाला भी इसे किसी तरह पन्द्रह सोलह बरस से ऊपर की नहीं बता सकता था। इसका रङ्ग साफ गोरा, चेहरा गोल और बड़ा नमकीन, आंख कटीली मगर नाक के दोनों बगल कुछ ज्यादा हटी हुई, और होंठ लाल यद्यपि कुछ मोटे थे। इसके गालों पर कुदरती

गुलाबी रंग ऐसा सुन्दर मालूम होता था कि देखने वाले का मन बेतहाशा हाथ से निकल जाता था। ठुड्डी यद्यपि कुछ चिपटी और चौड़ी थी जो इसके जिद्दी स्वभाव का परिचय देती थी पर फिर भी बुरी नहीं मालूम होती थी। कद नाटा, शरीर भरा हुआ, और हाथ पांव मुलायम और सुडौल थे। गरज कि सरसरी निगाह से देखने में यकायक यही मालूम होता था मानों इन्द्रलोक की कोई परी संसार में उतर आई है, पर इस औरत का दिल गजब का काला था और यह एक ऐसी जहरीली नागिन थी कि जिसके काटने का कोई इलाज ही नहीं था। इस समय यह मामूली पौशाक में थी पर यदि कीमती और सुन्दर कपड़े पहिरे रहे तो इसमें कोई शक नहीं कि बड़े बड़े ऋषियों और मुनियों का मन भी इसे देखते ही हाथ से निकल जाय।

बेगम ने नन्हों से पूछा, "तुमको यकायक यहां देख मुझे आश्चर्य होता है और मैं यह पूछते डरती हूँ कि मेरी चीठी लेकर जो आदमी गया था वह तुमसे मिला या नहीं ?"

नन्हों०। मैं इसी तरफ आ रही थी इससे शहर के बाहर होते ही उसकी मुलाकात मुझसे हो गई। मैंने तुम्हारी चीठी का मजमून पढ़ा और उसी समय अपने दो आदमियों के साथ दोनों ऐयारों को उधर रवाना कर दिया जिधर का तुमने इशारा किया था।

बेगम०। अर्थात् लामाघाटी की तरफ ?

नन्हों०। हां, तुम्हारे दोनों खयाल ठीक थे यानी भूतनाथ के ही आदमी उसको ले भागे थे और उसे ले कर लामाघाटी ही की तरफ गये भी थे।

बेगम०। मेरे मन में यही शक बैठा कि हो न हो यह भूतनाथ का ही काम है और मैंने सोचा कि उसका सब से गुप्त और मजबूत अड्डा लामाघाटी ही है जो यहां से पास भी पड़ता है अस्तु अगर उसके कब्जे में वह आदमी पड़ा होगा तो जरूर वहीं भेजा भी गया होगा। तब फिर क्या

हुआ ? तुम लामाघाटी का रास्ता बखूबी जानती हो। क्या तुम्हारे आदमी वहां तक पहुंचे और वहां उसका पता मिला ?

इसका जवाब नन्हों ने कुछ भी न दिया बल्कि सिर नीचा कर लिया और अपनी आंखों से गर्म आंसू की बूंदें गिराने लगी जो शीघ्र ही यहां तक बढ़ीं कि हिचकी आने लगी और वह बिलख बिलख कर रोने लगी। बेगम को उसकी यह हालत देख बड़ा ही ताज्जुब हुआ। उसने प्रेम से नन्हों का पञ्जा पकड़ लिया और पूछा, "यह क्या बहिन ! तुम रोने क्यों लगीं ? क्या उसका कुछ पता नहीं लगा या कोई और घटना हुई ?" नन्हों यह सवाल सुन और भी फूट फूट कर रोने लगी, यहां तक कि बेगम मुहब्बत के साथ उसके गले से लिपट गई और अपने आंचल से उसका आंसू पोंछती हुई बोली, "हैं बहिन, यह मामला क्या है, आखिर तुम कुछ बताओ तो सही ! हुआ क्या है कुछ यह भी तो मालूम हो ! तुम इतने कड़े कलेजे वाली हो कर भी इस तरह बच्चों की तरह रो क्यों रही हो ?"

बड़ी मुश्किल से हिचकियां लेते लेते नन्हों के मुंह से निकला, "वह जान से मारा गया !!"

चौंक कर बेगम ने कहा, "हैं ! जान से मारा गया ! नहीं नहीं, सो भला कैसे हो सकता है ! यह तुम गलत कह रही हो !"

नन्हों ने लाल आंखों को आंचल से पोंछते हुए कहा, "नहीं बहिन मैं बिलकुल सही कह रही हूं, मेरा भाग्य सम्हलता सम्हलता फिर फूट गया, और वह सचमुच ही मारा गया !"

बेगम०। जान से मारा गया !

नन्हों०। हां !!

बेगम०। आखिर कैसे ? भूतनाथ के हाथ से तो यह बात हो ही नहीं सकती, रह गये उसके शागिर्द और नौकर, वे भी.....

नन्हों०। बात यह है कि जिस वक्त मेरे आदमी उसको लामाघाटी से छुड़ा कर ले चले तो भूतनाथ के आदमियों ने देख लिया और लड़

पड़े। मेरे आदमियों से उनकी घमासान लड़ाई हो गई जिसमें उसने कमजोर और बीमार होते हुए भी मेरे दुश्मनों का ही साथ दिया और मेरे आदमियों पर ऐसा सख्त हमला किया कि वे घबड़ा उठे। लड़ाई कुछ ऐसी गुत्थमगुत्था की हो गई कि उसी के दरमियान उसे कुछ जख्म आ गये जिनकी बदौलत कल रात उसने दम तोड़ दिया।

इतना हाल कह नन्हों फिर सिसक सिसक कर रोने लगी। बेगम के ऊपर भी उस कैदी के मारे जाने के समाचार ने बहुत ही गहरा असर किया था, पर इस समय अपनी सखी को समझा बुझा कर शान्त करना बहुत जरूरी समझ उसने अपने को सम्हाला और नन्हों को दम दिलासा दे कर शान्त करने की कोशिश करने लगी। बहुत तरह की बातें और तरह तरह की कसमें दे दिला कर उसने उसका अफसोस कुछ कम किया और जब देखा कि वह कुछ शान्त हुई है तो बोली, "तुम्हें तो उसकी मौत का बदला लेना चाहिये नकि इस तरह पर रंज और अफसोस को पल्ले बांधना! जो हो गया वह तो हो ही गया और मरा हुआ आदमी लाख अफसोस करने पर भी लौट कर आता नहीं। तुम्हारे लिये तो अब सिर्फ यही रास्ता हो सकता है कि उसकी मौत का बदला लो और जब तक ऐसा न हो चुके शान्त न हो। जिसकी बदौलत यह हुआ है उस आदमी को दुनिया से उठा देना ही तुम्हारे दिल में सब से ज्यादा शान्ति देगा। रोना और बिलबिलाना कायरों का काम है और इससे सिर्फ दिल की कमजोरी ही जाहिर होती है!"

नन्हों ने यह सुन आंसुओं से भरी अपनी आंखें बेगम की तरफ उठाईं और कहा, "मैंने कसम खाई है और अब फिर उस कसम को दोहराती हूँ कि जैसे बन पड़ेगा वैसे उस भूतनाथ को इस दुनिया से उठा दूंगी जिसकी बदौलत मेरा सुख मिट्टी में मिल गया!!"

बेगम०। बेशक यही अब तुम्हारे लिये मुनासिब रास्ता है, और मुझे विश्वास है कि अगर तुम कोशिश करोगी तो यह कोई मुश्किल काम न

होगा। तुमको भूतनाथ की जिन्दगी के ऐसे ऐसे अनूठे भेद मालूम हैं कि अगर चाहो तो दम के दम में उसको मिट्टी में मिला सकती हो। रहा उस मरने वाले का गम, सो तुम इतने दिनों से बराबर उसको मरा ही समझती चली आई थीं और तुम्हारे लेखे वह अब तक मरा हुआ था भी, अब भी उसे वैसा ही समझो और हिम्मत के साथ कमर कस कर मैदान में उतर आओ, ईश्वर जरूर तुम्हारी मदद करेगा।

नन्हों०। (जिसकी आंखें बेगम की बातें सुन डरावनी तौर पर लाल हो गई थीं) मगर यह भी तो याद रक्खो सखी कि भूतनाथ गजब का कांइयां चालाक धूर्त और हिम्मतवर ऐयार है और उसका मुकाबला करना किसी ऐसे वैसे का काम नहीं है!

बेगम०। सो ठीक है पर तुम यह भी जानती हो कि चिउटी की जब जान पर आती है तो हाथी को मारने को तैयार हो जाती है। अगर हम लोग मिल कर कोशिश करेंगी तो एक भूतनाथ क्या कितनों को जहन्नुम में मिला सकती हैं! उसके खिलाफ जो मसाला हम लोगों के पास है वह क्या कभी बेकार जा सकता है? तुम्हीं ने न उस दिन कहा था कि कामेश्वर और भुवनमोहिनी वाले भेद के बारे में जो सबूत तुम दे सकती हो कि उससे भूतनाथ का पूरा कसूर साबित हो जायगा और वह किसी तरह भी अपनी बेकसूरी साबित न कर सकेगा। क्या तुम कोशिश करके उस सबूत को काबू में नहीं कर सकती हो?

नन्हों०। कर सकती ही नहीं बल्कि कर चुकी भी!!

बेगम०। (चौंक कर) हैं! क्या कहा तुमने?

नन्हों०। यही कि उस सबूत को मैंने अपने हाथ में कर लिया!

बेगम०। (खुश हो कर) सो कैसे! सो कैसे?

नन्हों०। जब आ गई हूँ तो वह सब हाल तुम्हें सुनाऊंगी ही पर पहिले यह बताओ कि आज इस मकान में इस कदर सन्नाटा क्यों है, मनोरमाजी कहां हैं और उनके आदमी सब कहां चले गए जो घर भर में कोई दिख-

लाई ही नहीं पड़ता। मैं यहां मनोरमाजी से ही मिलने आई थी पर अपने गम में ऐसा डूब गई कि इस बात को पूछना ही भूल गई।

बेगम०। वे एक दूसरे मकान में हैं और इस मकान में कभी कभी ही आती हैं। तुम तो जानती ही होगी कि आज कल उन्होंने श्यामा का रूप धारण किया हुआ है और भूतनाथ की ब्याहुता स्त्री बनी हुई हैं।

नन्हों०। हां दारोगा साहब की जुबानी यह हाल मैंने सुना था, तो जान पड़ता है वे इस मकान में नहीं किसी दूसरी जगह रहती भी हैं?

बेगम०। वे इसके ठीक पिछवाड़े के एक दूसरे मकान में रहती हैं जहां से यहां आने का एक गुप्त रास्ता है उसी की राह कभी कभी जब भूतनाथ के आने का डर नहीं रहता वे इधर आती हैं।

नन्हों०। ठीक है, तो अब कब उनसे मुलाकत हो सकेगी?

बेगम०। आज कुछ रात रहते ही उन्होंने आने को कहा था पर अभी तक आईं नहीं, देखूं शायद अब आ सकती हों।

इतना कह बेगम उठ खड़ी हुई। जिस दालान में ये दोनों बैठी हुई थीं उसके पीछे एक बहुत लम्बी चौड़ी कोठरी थी जिसके पांच दर्वाजे जो सभी इस वक्त बन्द थे, इसी दालान में खुलते थे। बेगम ने एक दर्वाजा खोला और कोठड़ी के अन्दर घुसी। कौतूहलवश नन्हों भी साथ हुई। भीतर घुस कर बेगम बाईं तरफ घूमी और इस कोठरी की पूरी लम्बाई तय कर एक दूसरे दर्वाजे के पास पहुँचीं। यह दर्वाजा भी खोला गया और अब ये दोनों जिस कोठरी में पहुंची उसके अन्दर इतना अन्धेरा था कि हाथ को हाथ नहीं दिखाई पड़ता था। किसी जगह से सामान निकाल बेगम ने मोमबत्ती बाली जिसकी हलकी रोशनी की मदद से नन्हों ने कोठरी के एक तरफ की दीवार में एक आलमारी बनी हुई देखी जिसमें पल्ले या तख्ते लगे हुए न थे और इसी सबब से वह इस लायक थी कि दो आदमी उसके अन्दर बखूबी खड़े हो सकते थे। इस आलमारी के निचले हिस्से में एक टुकड़ा रस्सी का दिखाई पड़ रहा था जिसे पकड़ कर बेगम ने

खींचा। कुछ देर तक इन दोनों को खड़े रहना पड़ा और तब एक छोटी घण्टी दो बार बज उठी जिसकी आवाज सुन बेगम ने कहा, "मनोरमा जी आ रही हैं।"

थोड़ी ही देर बाद एक खटके की आवाज हुई और उस आलमारी के पीछे की दीवार में एक रास्ता दिखाई पड़ने लगा। मनोरमा उस जगह के बाहर हुई जिसने कोई तर्कीब ऐसी की कि वह रास्ता बन्द हो गया, तब वह नन्हों की तरफ घूमी और उसको पहिचानने की निगाह से देखा। नन्हों को पहिचानते ही वह बड़ी मुहब्बत के साथ "प्यारी नन्हों, तू आ गई!" कह कर उसकी तरफ झपटी और उसे गले से लगा लिया। कुछ देर बाद अलग हुई तो बेगम से भी मिली और तब नन्हों का हाथ पकड़े यह कहती हुई उस कोठरी के बाहर निकली—"प्यारी नन्हों, मैं तेरी राह बड़ी बेचैनी के साथ देख रही थी क्योंकि तुझसे बहुत सी बातें करनी हैं!" तीनों आदमी उसी दालान में पहुँचे और फर्श पर बैठ इस तरह बातें करने लगे :—

बेगम०। मैं कल ही से यहां बैठी तुम्हारी राह देख रही हूं और अकेली पड़ी एक दम घबड़ा गई थी।

मनो०। क्या बताऊँ सखी, कम्बख्त भूतनाथ ने गुप्त रीति से तो पहरे का इन्तजाम कर ही रक्खा था इधर उसने अपने एक शागिर्द को खास तौर पर मेरे मकान में रह कर मेरी हिफाजत करने के लिये भेज दिया है जिससे मैं और भी परेशान हो गई हूं। आज बड़ी मुश्किल से उसे किसी बहाने से दूर किया है तो आने पाई हूं पर फिर भी डर बना ही हुआ है और इसी से बहुत जल्द वापस जाऊंगी क्योंकि न जाने भूतनाथ या उसका वह कम्बख्त शागिर्द कब आ पहुंचे। मैं यह सुन कि न जाने कौन उस कैदी को निकाल ले गया, खुद तुझसे मिलने और खुलासा हाल सुनने को व्याकुल थी पर मौका नहीं मिलता था, अब बतला कि कैसे क्या क्या हुआ?

बेगम० । बहिन नन्हों ने अभी उस कैदी के बारे में एक बड़ा ही दुख-दायी समाचार सुनाया है जिससे अब उसका कोई जिक्र करना इनको दुःख पहुँचाने का ही कारण होगा । मुख्तसर में तुम इतना ही सुन लो कि जिस समय मैं चुनारगढ़ राजा बीरेन्द्रसिंह के कारिन्दो से मिलने गई हुई थी उसी समय भूतनाथ के कुछ ऐयार मेरे घर में घुस कर उसे निकाल ले गये और लामाघाटी में ले जा कर बन्द किया जहां (नन्हों की तरफ बता कर) इनके आदमी उसे छुड़ाने के वास्ते गए पर इसमें लड़ाई हो पड़ी और वह जान से मारा गया ।

मनो० । हैं, वह जान से मारा गया !!

बेगम० । हां अभी अभी नन्हों ने यह समाचार मुझे सुनाया है ।

मनो० । (नन्हों से) क्या तुम सही कह रही हो ?

नन्हों० । (जिसकी आंखें यह जिक्र उठने पर पुनः भर आई थीं और जो बड़ी मुश्किल से रुलाई रोके हुई थी) हां मैं उसकी लाश अभी अभी छोड़ती आ रही हूं ।

मनो० । (नन्हों का पंजा पकड़ कर, अफसोस के साथ) अफसोस, उसका मिलना न मिलना बेकार ही हुआ ! सचमुच मेरी सखी, तू बड़ी अभागिन है !!

नन्हों० । (आंखों से आंसू टपकाती हुई) कैसी कुछ ! इतने दिनों बाद अचानक उसके जीते रहने की खबर पा मैं चौंक गई थी और मेरे मन में रह रह कर यही खयाल उठता था कि क्या मैं ऐसी भाग्यवान निकलूंगी कि उसे फिर से देख सकूं, पर आंखिर मेरा डर सही निकला और कम्बख्त भूतनाथ की बदौलत.....

इतना कहते कहते वह अपने को रोक न सकी और बिलख बिलख कर रोने लगी । मनोरमा ने बहुत कुछ समझा बुझा कर उसे शान्त किया और कहा, "तेरे लिये तो वह अब तक मरा हुआ था ही ! अब मरा तो क्या, और दस वर्ष पहिले मरा तो क्या ? अब तुझे अगर कोई कोशिश

करनी चाहिये तो यही कि उसका ध्यान दिल से निकल जाय और साथ ही दुश्मन से बदला भी लिया जा सके।"

नन्हों०। उसका ध्यान तो इस जिन्दगी में मेरे दिल से निकलने वाला नहीं हां भूतनाथ से बदला लेने की मैं कसम खा चुकी हूं और चाहे इस कोशिश में मेरी जान भी चली जाय पर मैं अपनी कसम जरूर पूरा करूंगी और भूतनाथ को बर्बाद करके छोड़ूंगी।

मनो०। बेशक ऐसा ही करना चाहिये! हम लोगों में से कोई भी अगर इस लायक है तो बस एक तू ही है। तुझे भूतनाथ के ऐसे ऐसे भेद मालूम है कि जिनके खयाल से ही वह घबराता है और जिनका भंडाफोड़ करके वह सहज ही में मिट्टी में मिला दिया जा सकता है। बल्कि अगर मेरी याद-दाश्त ठीक है तो आखिरी दफे जब तुझसे मेरी भेंट हुई थी तो तूने मुझसे कहा था कि उसके पापों के कुछ सबूतों का तुझे हाल ही में पता लगा है और तू उनको अपने कब्जे में करने की कोशिश कर रही है, तथा तूने यह भी कहा था कि उनका सामना करने की बनिस्बत भूतनाथ मर जाना पसन्द करेगा।

नन्हों०। हां ठीक है, मैंने यह बात कही थी और ठीक कही थी, तथा मुझे यह कहते भी बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि उनमें से कई चीजें मेरे हाथ आ भी गईं।

मनो०। (खुश होकर) ऐसा! तब तो बड़ी अच्छी बात है। मगर वे चीजें क्या है और क्योंकर तेरे हाथ लगीं?

नन्हों०। मैं सब हाल खुलासा कहती हूं, तुम दोनों ही गौर से सुनो क्योंकि यह एक ऐसा भेद है जो अगर दुनिया में प्रकट हो गया तो भूतनाथ कहीं का न रहेगा। उसने जब मेरे कलेजे को चोट पहुँचाई है तो मैं कब किसी बात का खयाल करने लगी! (कुछ रुक कर) तुम लोगों ने कभी भुवनमोहिनी का नाम सुना है या उसका कुछ हाल मालूम है?

मनो०। हां कुछ कुछ, वह जमानिया के सेठ चञ्चलदास की पतोहू

थी जो सांप काटने से मर गई थी तथा उसके मरने के कुछ ही समय बाद उसका पति कामेश्वर भी दुश्मनों के हाथ ...

नन्हों०। ओह तब तुम्हें असली हाल नहीं मालूम !!

बेग०। मैंने इतना और सुना है कि जमानिया के बड़े महाराज गिरधरसिंह का उससे कुछ ताल्लुक था जिससे रंज होकर बड़ी महारानी ने उसको जहर दिलवा दिया, और इस काम में भूतनाथ और दारोगा साहब ने उनकी मदद की।

नन्हों०। नहीं यह भी सही नहीं है। अच्छा सुनो मैं उसका हाल सुनाती हूं। भुवनमोहिनी राजा बीरेन्द्रसिंह के रिश्तेदार और दर्बारी सर्दार अजयसिंह की इकलौती लड़की थी और रिश्ते में दलीपशाह की मौसेरी बहिन लगती थी। अजयसिंह का कुछ सम्बन्ध शिवदत्त के ससुर रणधीरसिंह से भी था जिनके भतीजे दयाराम को मारने का इलजाम बहुत से लोग भूतनाथ पर लगाते हैं। रणधीरसिंह के महल में भुवनमोहिनी का आना जाना बराबर होता था और वहां ही दामाद होने की हैसियत से कभी कभी शिवदत्त भी जाया आया करता था। भुवनमोहिनी गजब की खूबसूरत लड़की थी जिसके सबब से शिवदत्त की बुरी निगाह उस पर पड़ चुकी थी पर चूंकि शिवदत्त की चालचलन से रणधीरसिंह के खानदान वाले भी अच्छी तरह वाकिफ हो चुके थे इसलिये वे उस पर बड़ी कड़ी निगाह रखते थे। इस कारण शिवदत्त को अपनी ससुराल में किसी तरह की बेहूदी कार्रवाई करने का मौका किसी तरह नहीं मिल सकता था और यही कारण था कि भुवनमोहिनी वहां उसके पंजे में नहीं पड़ने पाई, खैर।

भुवनमोहिनी की शादी जमानिया के सेठ चञ्चलदास के लड़के कामेश्वर से हुई और इसके बाद ही वह जमानिया चली गई। इसी सबब से कुछ दिनों के लिये वह शिवदत्त की निगाहों की भी ओट हो गई पर वह इसे भूला नहीं। जमानिया के महाराज गिरधरसिंह न जाने क्यों महारज सुरेन्द्रसिंह और उनके खानदान से बड़ी ही मुहब्बत करते थे। उन्हें जब

पता लगा कि बीरेन्द्रसिंह के खानदान की एक लड़की उनके शहर में ब्याह कर आई है तो भुवनमोहिनी को उन्होंने अपने महल में बुलवाया और उसको अपनी लड़की से बढ़ कर इज्जत और प्यार करने लगे, बल्कि उसी के सबब से उसके पति कामेश्वर पर भी बहुत मेहरबानी की।

दरोगा साहब और चुनार के राजा शिवदत्त में पहिले तो बड़ी दोस्ती थी पर बीच में न जाने किस कारण से शायद किसी औरत ही के सबब से, आपुस में कुछ खटक गई थी। इधर भुवनमोहिनी के ससुर चञ्चलदास से भी दारोगा साहब को खटकी हुई थी जिसका कारण शायद यह था कि वह इनकी कार्रवाइयों की राजदर्बार में अक्सर निन्दा किया करता था जिस कारण से दारोगा साहब भी उससे बदला लेने की बराबर कोशिश किया करते थे। जिस समय भुवनमोहिनी का वहां आना हुआ और महाराज के महल में उसकी इज्जत और कदर बढ़ी तथा उसी के कारण कामेश्वर और चञ्चलदास का भी मर्तबा बढ़ने लगा तो दारोगा साहब को शायद डर हुआ की अब दर्बार में उनको ये लोग ज्यादे तंग करने लगेंगे। इस खयाल से वे इस फिक्र में पड़े कि कोई ऐसी तर्कीब करनी चाहिये कि उस खानदान का डर हमेशा के लिये जाता रहे। उन्हें महाराज शिवदत्त के भुवनमोहिनी से प्रेम का हाल किसी तरह मालूम हो गया और वे इस कोशिश में लगे कि अगर किसी तरह वह लड़की शिवदत्त तक पहुंचा दी जा सके तो इधर तो उससे जो कुछ मनमुटाव हो गया है वह दूर हो जायगा और उधर खानदानी बदनामी के सबब से चञ्चलदास फिर सिर उठाने लायक न रहेगा। इस तरफ एक ही ढेले से दो शिकार मारने की नीयत उन्होंने की और इसकी तर्कीब क्या की कि इधर एक तरफ तो महारानी का कान भरना शुरू किया और उन्हें यह समझाने लगे कि महाराज की भुवनमोहिनी पर बुरी निगाहें पड़ती हैं और उधर दूसरी तरफ महाराज का कान इस तरह पर भरने लगे कि भुवनमोहिनी का चरित्र अच्छा नहीं है और वह महाराज शिवदत्त से फंसी हुई है। मैं उन दिनों जमानिया महल

में ही थी इस लिये मुझे न केवल इस बात की पूरी पूरी खबर ही है बल्कि मुझसे दारोगा साहब ने इस मामले में कुछ मदद भी ली थी अस्तु मुझे अच्छी तरह मालूम है कि उनकी तरह तरह की कार्रवाइयों की बदौलत एक तरफ तो महारानी को इस बात का विश्वास हो गया कि महाराज का भुवनमोहिनी से अनुचित सम्बन्ध है और वे उसको दुश्मनी की निगाह से देखने लगीं और दूसरी तरफ महाराज का दिल उससे कुछ फिर गया। नतीजा यह हुआ कि कामेश्वर दर्बार से हटा कर कहीं दूर भेज दिया गया और भुवनमोहिनी भी उसके साथ ही चली गई।

ऐसा करने में दारोगा साहब ने और बातों के सिवाय यह भी सोचा हुआ था कि वह जब जमानिया से हटी रहेगी तो कोई न कोई तर्कीब ऐसी निकल सकेगी जिससे जिससे उसको शिवदत्त के हवाले किया जा सकेगा मगर यह इच्छा उनकी पूरी उतरी नहीं। कुछ ही दिनों बाद महाराज को विश्वास हो गया कि वह लड़की बेकसूर थी। उन्होंने उसको माफ करके फिर जमानिया बुलवा लिया और कामेश्वर को भी आने का हुक्म दिया। इससे उसको शिवदत्त के हवाले करने का काम तो न हो सका मगर इतना फायदा जरूर हुआ कि महारानी का शक बढ़ गया और उन्हें यह विश्वास हो गया कि महाराज को जरूर उससे प्रेम है तभी तो उसके बिना रह न सके और फिर उसको बुलवा लिया। क्योंकि पहिले की तरह भुवनमोहिनी का आना जाना महल में फिर शुरू हो गया था। वे मन ही मन इस बात से बहुत कुढ़ गईं और उन्होंने हुक्म दिया कि भुवनमोहिनी जान से मार दी जाय। दारोगा साहब ने खुशी खुशी इस काम का बीड़ा उठाया पर महाराज के डर से खुल्लमखुल्ला स्वयं इस काम को करते डरते थे इसलिये किसी दूसरे होशियार आदमी की इस बारे में मदद लेना चाहते थे। उन दिनों गदाधरसिंह ऐयार से उनकी दोस्ती गठ रही थी जिसको महारानी भी कुछ कुछ जानती थी। इसका सबब यह था कि जैसा कि शायद तुमको मालूम ही होगा वे रोहतासगढ़ के राजा त्रिभुवनसिंह की लड़की और

दिग्विजयसिंह की बहिन थीं जिनकी रियासत में गदाधरसिंह का भाई शेरसिंह नौकर था। उस शेरसिंह के पास गदाधरसिंह बराबर आया जाया करता था और इसी सबब से महाराज त्रिभुवनसिंह भी उससे मुहब्बत करते थे तथा महारानी भी भूतनाथ को अच्छी तरह जानती थीं। दारोगा ने इसी भूतनाथ को महारानी के सामने पेश किया जिन्होंने भूतनाथ को बहुत कुछ इनाम की लालच दे कर इस काम के लिये राजी कर लिया और इधर से दारोगा साहब का जोर तो था ही। इधर महाराज शिवदत्त ने भी बहुत कुछ इनाम की लालच देकर भुवनमोहिनी को चुरा लाने का काम भूतनाथ पर सौंपा था। गरज कि सब तरफ के जोर और बहुत गहरे इनाम की लालच ने भूतनाथ को इस बात पर राजी कर लिया और उसने न जाने क्या चालाकी और ऐयारी की कि कुछ ही दिनों बाद यह मशहूर हो गया कि भुवनमोहिनी को जंगल में सांप ने काट लिया। प्रायः सांप का काटा आदमी जलाया नहीं जाता जमीन में गाड़ा या नदी में बहा दिया जाता है, और ऐसा ही भुवनमोहिनी की लाश के साथ भी किया गया जिसे उसके दो रिश्तेदार जंगल में गड्ढा खोद कर गाड़ आये* जहां से उन दोनों के जाने के तुरत ही बाद शिवदत्त के आदमियों ने खोद कर उसे निकाल लिया और उठा ले गये। इस काम के लिये भूतनाथ ने महारानी से एक कीमती कण्ठा और 'शिवगढ़ी' के खजाने की ताली पाई और महाराज शिवदत्त से भी गहरा इनाम पाया।

यहां तक सुन मनोरमा ने कहा, "शिवगढ़ी का खजाना कैसा ?"

नन्हों०। शिवगढ़ी रोहतासगढ़ के इलाके में एक पहाड़ी स्थान है। कहा जाता है कि वह कोई तिलिस्म है और उसके अन्दर बेइन्तहा दौलत रक्खी है जिसको निकालने की तर्कीब एक किताब में लिखी है जो वहां की ताली कहलाती है। महारानी के पिता ने उस स्थान को विवाह के समय

* भूतनाथ बारहवें हिस्से के तीसरे बयान में मालती ने इसी घटना का जिक्र महाराज गिरधरसिंह से किया है।

दहेज में महारानी को दे दिया था पर चूंकि वे खुद ही एक बहुत बड़े तिलिस्म और बेइन्तहा दौलत की मालिक हुई थीं इस लिये उस खजाने को खोलने की उन्हें कभी जरूरत ही नहीं पड़ी और बरसों बीत जाने पर भी वह ज्यों का त्यों बन्द ही पड़ा रह गया। उसी खजाने को भुवनमोहिनी को मारने के लिये इनाम के तौर पर महारानी ने भूतनाथ को दे दिया, और सच तो यह है कि उसी खजाने की लालच ने ही भूतनाथ से ऐसा काम कराया था। मगर फिर यह भी बात है कि भूतनाथ को वह खजाना दिलवाने में दारोगा साहब का भी स्वार्थ था जिन्होंने उससे यह वादा करा लिया था कि उसके अन्दर से जो कुछ दौलत निकलेगी उसका एक हिस्सा उन्हें भी मिलेगा। खैर जो कुछ हो, गरज यह कि भूतनाथ को उस खजाने की ताली मिल गई और वह उसे खोलने की नीयत से तिलिस्म के अन्दर घुसा तथा इसी मौके पर उससे वह काम किया जिसने उसको दुनिया में मुंह दिखाने लायक न रक्खा। अब तक जो वह इस दुनिया में बना हुआ है उसका सबब सिर्फ यही है कि उसके इस दुष्कर्म का हाल सिर्फ दो चार इने गिने आदमी ही जानते हैं और मुझे भी उसका पूरा पूरा हाल नहीं मालूम है पर जितना मालूम हुआ वह यह है कि भूतनाथ तिलिस्म के अन्दर घुसा तो वहां उसे पत्थर की बनी हुई एक नरपिशाच की मूरत मिली जो जीते जागते मनुष्य की तरह बोल सकती थी। उस नरपिशाच के मुंह में आदमी का ताजा गरम गरम खून डालने से शिवगढ़ी के खजाने का मुंह खुलता था। कहा जाता है कि अहिल्या नामी किसी औरत को लिये हुए वह तिलिस्म में घुसा और उसी को मार कर उसका खून उस नर-पिशाच के मुंह में डालना चाहा पर यकायक कोई ऐसा विघ्न पड़ गया कि यह काम पूरा उतर न सका और वह अहिल्या की लाश को तिलिस्म में ही छोड़ कर भागने पर मजबूर हुआ, दारोगा साहब को न जाने कैसे इस घटना का पता लगा, वे तिलिस्म में गए, उनके हुक्म से हेलासिंह और जैपालसिंह ने वह लाश बाहर निकाली और इस तरह पर भूतनाथ

के इस दुष्कृत्य का भंडा फूटा।*

मनो०। ठीक है, इस घटना का कुछ पता मुझे दारोगा साहब की ही जुबानी लगा था पर बहुत कुछ पूछने पर भी उन्होंने पूरा पूरा हाल मुझे नहीं बताया और कह दिया कि वे इस मामले को छिपाने की कसम खा चुके हैं।

बेगम०। ठीक है, मैंने जैपालसिंह के भी मुँह से ऐसा ही कुछ हाल सुना था पर उन्हें यह नहीं मालूम था कि वह औरत कौन थी जिसे भूतनाथ ने मारा था।

नन्हों०। वह अहिल्या थी। कौन अहिल्या, समझ गईं !!

मनोरमा०। हां हां जी अच्छी तरह जान गई, वही दामोदरसिंह की भतीजी और मालती की प्यारी सखी न ?

बेगम०। (हँसती हुई) हां वही मालती जिसका रूप धर कर प्रभाकरसिंह को फंसाने तुम तिलिस्म में घुसी थीं और कुछ कर न सकने के कारण बैरंग वापस लौटी थीं ?

मनो०। (कुछ कुरुखी से) हां हां भया, (नन्हों से) सखी तुम आगे का हाल कहो कि फिर क्या हुआ ? वह खजाना फिर खुला या नहीं ?

नन्हों०। नहीं, वह ज्यों का त्यों बन्द ही रह गया क्योंकि भूतनाथ उस घटना के बाद फिर उसके अन्दर कभी नहीं गया। उसने उसकी ताली तक नष्ट कर डाली और फिर कभी उस तरफ जाने का नाम भी नहीं लिया।

मनो०। तब फिर तुम्हें इसका सही हाल नहीं मालूम। वह ताली अभी तक भूतनाथ के पास मौजूद है और वह पुनः इस फिराक में है कि किसी तरह उसको खोले और वहां की दौलत निकाले।

नन्हों०। (ताज्जुब से) यह तुम कैसे जानती हो ?

मनोरमा इसका कुछ जवाब देना ही चाहती थी कि कहीं पर बजती

---

* अपना किस्सा कहती समय मालती ने इसका भी जिक्र किया है, देखिये भूतनाथ बारहवां हिस्सा तीसरा बयान।

हुई एक घण्टी की आवाज ने उसे चौंका दिया जो कुछ रुक रुक कर किसी खास इशारे के साथ बज रही थी। उसने घबड़ा कर नन्हों से कहा, "अरे भूतनाथ आ गया! मैं जाती हूं, पर तू अभी यहीं रहियो, मैं बहुत जल्द फिर तुझसे मिलूंगी।" और झपटती हुई उसी आलमारी की तरफ लपकी जिसकी राह इस जगह आई थी, जब वह उस रास्ते के अंदर चली गई तो नन्हों और बेगम बातें करती हुई वापस लौटीं।

नन्हों०। कम्बख्त भूतनाथ बड़े बेमौके आया! अब न जाने कब मनोरमा को फुरसत मिलेगी और वह इधर आवेगी।

बेगम०। देखो कह तो गई हैं कि जल्दी ही आवेंगी।

नन्हों०। मगर मुझे ताज्जुब यह है कि यह बात उन्हें किस तरह मालूम हुई कि वह ताली अभी तक भूतनाथ के पास है और वह उस खजाने को निकालने की पुनः कोशिश करना चाहता है।

बेगम०। क्यों इसमें ताज्जुब की क्या बात है! मालूम होता है कि तुम्हें अभी तक इधर के मामलों की पूरी पूरी खबर नहीं हुई है और तुम शायद इतना भी नहीं जानतीं कि मनोरमा किस काम के लिये श्यामा के रूप में भूतनाथ की व्याहुता का स्वांग रचे हुई हैं।

नन्हों०। दारोगा साहब ने इतना मुझे बताया था कि भूतनाथ के कई गुप्त भेद जानने और उसको अपने वश में कर लेने की नीयत से ही उन्होंने यह कार्रवाई की है।

बेगम०। तो इतना कहना शायद वे भूल गये कि उसी ताली को भूतनाथ के कब्जे से निकालने के लिये ही यह सब चालाकियां रची गई हैं! मनोरमा और गौहर ने इस बात का बीड़ा उठाया है कि अगर भूतनाथ के पास वह ताली होगी तो जैसे भी बनेगा उसको जरूर कब्जे में करेंगी। मनोरमा श्यामा बन कर यहां विराज रही है और उधर नागर रामदेई का स्वांग रचे हुए उसके दूसरे घर पर जमी हुई और इन दोनों को पूरा भरोसा है कि जरूर अपने काम में सफल होगी।

नन्हों० । (कुछ सोचती और गौर करती हुई) लेकिन अगर ऐसी ही बात है तो दारोगा साहब ने मुझसे यह बात क्यों छिपाई जब कि आज कल में सब तरह से उनकी मदद कर रही हूँ ।

बेगम० । इस बारे में कुछ कहना बड़ा कठिन है, दारोगा साहब के दाव पेंच समझना सहज काम नहीं है ।

नन्हों ने कोई जबाब न दिया और किसी बहुत ही गंभीर चिन्ता में डूब गई । बेगम कुछ देर तक उसका मुंह देखती रही और तब बोली, "खैर अब यह सब फिक्र जाने दो और ऊपर चल कर नहाने धोने का काम करो । जब मनोरमा आवेंगी तो फिर ये सब बातें होंगी ।"

दोनों मकान की ऊपरी मंजिल पर चढ़ने लगीं ।

दूसरा बयान

यकायक कई आदमियों ने आकर सांवलसिंह को चारो तरफ से घेर लिया और "यही है, यही है, इस औरत का खूनी यही है !!" कह कर चिल्लाने लगे ।

सांवलसिंह चौंक कर खड़ा हो गया और ताज्जुब से उन सभों की तरफ देखता हुआ सोचने लगा कि ये सब कौन हैं जो ऐसे बेमौके यहां आ मौजूद हुए । बहुत गौर करने पर भी वह उन्हें पहिचान तो न सका मगर यह जरूर समझ गया कि ये ऐयार हैं और अपनी सूरतें बदले हुए हैं । आखिर उसने एक से जो उन सभों का सरदार मालूम होता था पूछा "आप लोग कौन हैं और किस बात का इल्जाम मुझ पर लगाया चाहते हैं ?"

उस आदमी ने गुस्से में भरे हुए जवाब दिया, "हम लोग उसी के नौकर हैं जिसका तुमने खून किया है !"

सांवलसिंह ने सुन्दर की लाश की तरफ बता कर कहा, "मेरी समझ

में तो आप लोग शायद किसी भ्रम में पड़ गये हैं !! यह कौन औरत है क्या आप जानते हैं ?"

आदमी० । हम लोग किसी तरह की भूल नहीं कर रहे हैं ! यह औरत जिसका तुमने खून किया है हमारे मालिक सेठ राधाकृष्ण के घराने की है और हम लोग उसे पटने पहुंचाने जा रहे थे । रास्ते से यकायक वह गायब हो गई और ढूंढ़ते तथा परेशान होते हम लोग अब यहां उसकी लाश देख रहे हैं ।

सांवल० । अगर सिर्फ इतनी ही बात है तो मैं आपको बहुत जल्द विश्वास दिला सकता हूँ कि यह औरत वह नहीं है । आगे बढ़िये और गौर से लाश को देख कर पहिचानिये कि क्या यह वही औरत है ?

वह आदमी आगे बढ़ा और गौर से मुर्दा मुन्दर की सूरत देखने लगा । शायद सूरत से कुछ फर्क जाहिर हुआ क्योंकि उसने ताज्जुब के साथ गर्दन हिलाई और कुछ सोचने लगा ।

उसकी हालत देख उसके साथियों में से एक आगे बढ़ आया और बोला, "अजी आप किस फेर में पड़े हुए हैं ! यह ऐयार आपको अपनी बातों के जाल में फंसाना चाहता है । आप पहिले इस बदमाश को कहिये कि अपनी सूरत धोकर साफ करे और तब इस लाश का भी चेहरा धोकर देखिये, आप ही सब भण्डा फूट जायगा !!"

उस आदमी ने यह सुनते ही कहा, "हां यह तो तुम बहुत ठीक कहते हो, किसी से कहो कि एक लोटा पानी ले आवे । हम जरूर इस ऐयार की सूरत धुलवा कर देखेंगे और अपना शक दूर करेंगे ।"

मगर ताज्जुब की बात थी कि जब एक आदमी ने आगे बढ़ कर पानी का लोटा सामने रख दिया तो सांवलसिंह ने चेहरा धोने से इन्कार किया और कहा, "मालूम होता है कि आप लोग मेरी बेइज्जती करने पर तुले हुए हैं ! मैंने जो कुछ कहा बहुत ठीक कहा है और मैं किसी तरह भी चेहरा धोना मंजूर न करूंगा !!"

उस दूसरे आदमी ने यह सुन कहा, "देखा आपने ? मैं कहता था न कि यह ऐयार आपको धोखा देना चाहता है ? बताइये अगर यह सच्चा होता तो चेहरा धोने से क्यों इन्कार करता ?"

उस सरदार ने कहा, "बेशक यही बात है !" और तब सांवलसिंह की तरफ देखकर कहा, "अब या तो चुपचाप मेरे साथ चलो और नहीं तो हम लोगों को जबर्दस्ती करनी पड़ेगी और हाथ पांव बांध कर तुम्हें अपने मालिक के सामने पहुँचाना पड़ेगा।"

"जब तक दम में दम है तब तक कदापि नहीं !" कहते हुए सांवलसिंह ने अपना खञ्जर कमर से खींच लिया और उसकी देखा देखी उन आदमियों ने भी अपने अपने हथियार निकाल लिये।

सांवलसिंह को विश्वास था कि वे सब के सब एक साथ ही उस पर टूट पड़ेंगे मगर ऐसा न हुआ और उसके सामने सिर्फ वही एक दुश्मन हुआ जो अभी तक इनसे बातें कर रहा था। सांवलसिंह के हाथ में सिर्फ खंजर देख उसने भी अपनी तलवार कमर में रख खंजर निकाल लिया और उसी से सांवलसिंह पर हमला किया।

इसमें कोई शक नहीं कि ये दोनों ही अपने अपने ढङ्ग पर बहुत ही अच्छे और होशियार लड़ाके थे जिन्होंने आधे घण्टे तक बड़ी ही बहादुरी तेजी और हिम्मत से एक दूसरे का मुकाबिला किया। यहां तक कि दोनों ही के बदन पर हलके हलके कई जखम दिखाई पड़ने लगे और दोनों ही के दम फूलने और थकावट के चिन्ह नजर आने लगे। क्षण भर के लिये दोनों ने अपने अपने हाथ रोके और एक दूसरे की तरफ गौर से देखने लगे।

यकायक वह सरदार धीरे से बोल उठा, "मालूम होता है कि अब पानी न बरसेगा !" जवाब में चौंक कर सांवलसिंह ने कहा, "नहीं, क्योंकि हवा का रुख बदल गया !" इतना सुनना था कि सरदार ने अपने हाथ का खञ्जर फेंक दिया और सांवलसिंह के गले से चिमट गया जिसने अपना

खञ्जर दूर फेंक उसको छाती से लगा लिया।

कुछ देर बाद दोनों अलग हुए और सांवलसिंह ने कहा, "भला यह किसको उम्मीद हो सकती थी कि यहां दलीपशाह की सूरत दिखाई पड़ जायगी ?" जवाब में सरदार ने कहा, "और अर्जुनसिंह के ही यहां होने का गुमान कौन कर सकता था !!" दोनों ने फिर प्रेम से एक दूसरे का हाथ दबाया और तब बातें करते हुए थोड़ा एक तरफ को हट गये।

सरदार अर्थात् दलीपशाह ने कहा, "वह तो कहो कि मुझे कुछ शक हो गया और मैंने परिचय का शब्द कहा नहीं तो आज न जाने यह लड़ाई कहां खतम होती !! "

सांवलसिंह बने हुए अर्जुनसिंह ने जवाब दिया, "मुझे भी कुछ कुछ सन्देह होने लग गया था। खैर जो कुछ हुआ अच्छा ही हुआ, पर तुम अचानक यहां कैसे आ पहुँचे और यह मुन्दर किसके हाथों मारी गई ?"

दलीप०। यह तो हमी लोगोंकी कारीगरी है ! वह कोई असली लाश नहीं है बल्कि मोम की बिल्कुल बनावटी और सिर्फ तुमको धोखा देने के लिये रक्खी गई थी। वास्तव में हम लोग बहुत देर से तुम दोनों का पीछा करते हुये इस बात का मौका ढूंढ़ रहे थे कि कोई ठिकाने की जगह आ जाय तो गिरफ्तर करें पर जाने किस तरह खबर पाकर मुन्दर होशियार हो गई और हमारे कब्जे से निकल भागी फिर भी तुम्हें धोखे में डालने और परिचय लेने के लिये हमें यह कार्रवाई करनी पड़ी। अब तुम बताओ कि कैसे उस शैतान के पीछे हो लिये और अब किधर जा रहे थे।

अर्जुन०। मैं कल ही से उसके पीछे लगा हूँ। गौहर के साथ साथ मुन्दर को भी भूतनाथ ने गिरफ्तार कर लिया था पर गौहर के ऐयार सांवलसिंह की मदद से दोनों छूट निकलीं। गौहर तो शिवदत्तगढ़ गई और मुन्दर अपने घर की तरफ चली। मौका समझ मैं सांवलसिंह का रूप धर उसके साथ हो लिया और इस फिक्र में लगा कि जमानिया के पास पहुंच जाऊं तब इसे बेहोश करके ठिकाने ले चलूं पर न जाने कैसे—जैसा कि तुमने

कहा—वह होशियार हो गई और निकल भागी। हां और यह तो बताओ कि तुमने हम लोगों की सुनगुन कहां पाई और कब से उन दोनों के साथ हो ?

एक साफ जगह देखकर बैठते हुए दलीपशाह ने कहा, "तुमसे कहीं पहिले से। मुझे इन्द्रदेवजी ने खबर दी कि उन्होंने तिलिस्म के अन्दर गौहर और मुन्दर को कामेश्वर भुवनमोहिनी का भेष धारण करते हुए देखा है..... "

पास ही बैठते हुए अर्जुनसिंह ने चौंक कर कहा, "क्या कहा ? कामेश्वर और भुवनमोहिनी का रूप धरते देखा ?"

दलीप०। हां, और इस पर उन्हें हद से ज्यादा ताज्जुब हुआ। इस भेद के साथ मेरा कितना घनिष्ट सम्बन्ध है यह तो तुम जानते ही हो अस्तु उन्होंने इसकी खबर मुझे दी और यह पता लगाने को कहा कि ये दोनों इस रूप में कहां जाती और क्या करती हैं और यह भेद इन दोनों को मालूम किस तरह हुआ। बस उसी समय से मैं या मेरे शागिर्दों में से कोई न कोई बराबर ही इन दोनों के साथ लगे हुए हैं। गौहर के पीछे मेरे दो आदमी लगे हुए हैं और इस समय मैंने यही सोचा था कि मुन्दर को पकड़ कर उधर ही जाऊँ और देखूँ कि उधर का क्या हाल है पर अफसोस मुन्दर कम्बख्त हाथ में आकर निकल गई।

इतना कह दलीपशाह ने गौहर और मुन्दर का वह सब हाल जो उन्हें मालूम था कह सुनाया। अर्जुनसिंह गौर और ताज्जुब से सब कुछ सुनते रहे और अंत में बोले, "यह तो बड़े ताज्जुब की बात है ! मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसा छिपा हुआ भेद जिसे गिनती के आदमी ही जानते हैं इन छोकरियों ने क्योंकर जान लिया। साथ ही जो मैं खयाल करता हूं तो मालूम होता है कि और चाहे कुछ हो या न हो पर अब कम से कम भूतनाथ की कुशल नजर नहीं आती। उसके जो कुछ पाप प्रगट हो रहे थे उन्हीं के मारे वह छिपा छिपा और भागा भागा फिरता था अब

यह भेद प्रगट होकर उसको और भी कहीं का न छोड़ेगा।"

दलीप०। इसमें क्या शक है, उसे दुनिया में मुँह दिखाना मुश्किल हो जायगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि जान दे देनी पड़े।

अर्जुन०। बहुत सम्भव है। लेकिन उसे जब इस बात की खबर लग चुकी है और गौहर तथा मुन्दर कामेश्वर और भुवनमोहिनी के रूप में उससे मिल भी चुकी है तो वह जरूर इस फिक्र में होगा कि इस भण्डा-फोड़ का पता लगावे और बन पड़े तो इसे फिर से जमीन में गाड़ दे।

दलीप०। जरूर वह ऐसा करेगा पर इसमें कहां तक सफल होगा यह अभी कहा नहीं जा सकता। मगर इस सम्बन्ध में तरद्दुद में डालने वाली बात कुछ दूसरी ही है।

अर्जुन०। वह क्या?

दलीप०। भूतनाथ का शक घूम फिर कर मुझी पर जायगा और वह यही समझेगा कि मैंने ही इस छिपे हुए भेद को प्रगट कर दिया है। एक तो दयाराम के मामले के कारण वह पहिले ही मुझ पर जला भुना है, ऊपर से अगर यह शक उसे हो गया तो वह मेरा जानी दुश्मन बन बैठेगा और मुझे दुनिया ही से उठा देने की कोशिश करेगा।

अर्जुन०। बेशक यह सोचना आपका तो बहुत ठीक है। उसका शक जरूर आप ही पर जायगा क्योंकि आप ही को इस मामले से सबसे गहरा सम्बन्ध है।

दलीप०। और तब..... (रुक कर और सामने से आते हुए एक आदमी की तरफ गौर से देख कर) वह लो गिरिजाकुमार आ पहुँचा। इसे मैंने मुन्दर की टोह में भेजा था। पर इसका साथी इस समय नहीं है। मालूम होता है उसे कहीं छोड़ मुझे कुछ खबर देने आ रहा है। मगर इसकी पीठ पर एक गठरी भी है। जरूर किसी को गिरफ्तार करके ला रहा है। कहीं मुन्दर ही न हो!!

बात की बात में वह आदमी पास आ गया और पीठ पर की गठरी

उतार जमीन पर रखने बाद एक खास इशारे के साथ प्रणाम करता हुआ बोला, "गुरूजी, आपका सोचना बहुत ठीक निकला ! उस बजड़े वालों ही का वह काम था और मुन्दर को होशियार करके वे ही उसे अपने साथ ले भी गये थे !!"

दलीपशाह ने कहा, "अच्छा आओ यहां बैठो, सुस्ताओ, और बताओ कि इस गठरी में किसे ला रहे हो ?"

गिरजा० । उस बजरे के एक माझी को पकड़ लाया हूँ, शायद इसकी सूरत बन कुछ काम निकाला जा सके, और सहदेव को उन लोगों का पीछा करने के लिये छोड़ आया हूँ । मगर गुरूजी, वह बजड़ा तो मुझे कुछ आफत करता सा दिखाई पड़ता है । उसके अन्दर तो बड़ी बड़ी ताज्जुब की चीजें मैंने देखीं जिनका हाल सुन आप आश्चर्य में पड़ जाइयेगा ।

दलीप० । सो क्या ?

गिरिजाकुमार यह सुन सांवलसिंह बने अर्जुनसिंह की तरफ देखने लगा । उसको आश्चर्य में पड़े देख दलीपशाह ने हँस कर कहा, "घबराओ नहीं, ये वास्तव में हमारे कोई दुश्मन नहीं हैं बल्कि अर्जुनसिंह हैं, किसी कारण-वश सांवलसिंह बने मुन्दर का पीछा कर रहे थे !"

इतना सुनते ही गिरिजाकुमार ने प्रसन्न होकर अर्जुनसिंह को प्रणाम किया और तब उस बजरे पर जो कुछ देखा था उसे बयान करना शुरू किया । इस जगह हम यह न बतावेंगे कि गिरिजाकुमार ने क्या क्या देखा हां यह कह सकते हैं कि इन लोगों में घण्टे भर से ज्यादा देर तक बातचीत और सलाह मशविरा होता रहा और इस सिलसिले में गिरिजाकुमार ने जो कुछ कहा उसे इन दोनों आदमियों ने गौर से सुना और पसन्द किया ।

बातें समाप्त होने पर दलीपशाह ने गिरिजाकुमार से कहा, "बस तो तुम जाओ और अपने साथियों को लिये दिये उस जगह पहुँचो, मैं इस माझी की सूरत बन कर बजरे पर जाता हूं और ये अर्जुनसिंह मदद के लिये मेरे साथ रहेंगे । लाओ मल्लाह को मेरे सामने करो ।"

गिरिजाकुमार ने मलाह की गठरी खोल उसे बाहर निकाला और दलीपशाह अपने बटुये में से सामान निकाल अपनी शकल उसके जैसी बनाने लगे। जल्दी ही उन्होंने इस काम से छुट्टी पा ली और तब उस मलाह के कपड़े पहिन अपने कपड़े गिरजाकुमार के हवाले करने के बाद उठ खड़े हुए। गिरिजाकुमार ने कहा, "यह बताना मै भूल गया कि इस मलाह का नाम रामा था।"

दलीपशाह ने कहा, "बस ठीक है, अब मैं रामा मलाह हो गया। (अर्जुनसिंह की तरफ देख कर) क्यों ठीक सूरत बनी या कोई कसर है?"

"सिर्फ एक कसर रह गई है!" यह कह कर अर्जुनसिंह ने अपने बटुये में से एक शीशी निकाली जिसमें किसी तरह का अर्क था और उसे दलीपशाह के हाथ में देते हुए कहा, "बस इसे थोड़ा सा चेहरे पर मल लीजिये तो वह कसर भी दूर हो जायगी।"

दलीपशाह ने शीशी लेकर ताज्जुब के साथ पूछा, "वह कसर क्या है और इस शीशी में क्या चीज है जिससे वह मिट जायगी?"

अर्जुनसिंह ने हंस कर कहा, "आप यह बात भूल गये कि आप मलाह की शक्ल बने हैं जिसको हर दम पानी से काम पड़ता है। अगर आपके चेहरे पर पानी के छींटे पड़ गये या किसी कारणवश आपको पानी में उतरना ही पड़ा तो आपकी नकली सूरत क्या प्रगट न हो जायगी?"

दलीपशाह चौंक कर बोले, "ओ हो, यह बात तो मैं बिल्कुल भूल ही गया था! आपका कहना बेशक ठीक है। पानी रङ्ग का दुश्मन है और अगर मैं पानी में जाने से इन्कार करूंगा तो लोगों को जरूर शक होगा। मगर आपकी यह दवा ऐसे मौके पर मेरी क्या मदद करेगी?"

अर्जुन०। यह दवा मैंने बड़ी मेहनत से तैयार की है। इसकी तारीफ यह है कि चाहे आप जिस तरह के भी रंग से जैसी भी सूरत बनावें जरा सा इस अर्क को हथेली में ले उससे अपना रंगा हुआ चेहरा तर कर लें,

हवा लगते ही यह सूख जायगा और फिर लाख पानी से धोया जाय क्या मजाल कि जरा सा भी रङ्ग छूट जाय ?"

गिरजा० । (जो गौर से अर्जुनसिंह की बात सुन रहा था) और जब उस रंग को मिटाने की जरूरत पड़े तो क्या करना होगा ?

अर्जुन० । उस समय कच्चे पपीते के अर्क से आधी घड़ी तक अपना चेहरा तर रक्खें । उसकी तासीर से यह रौगन उतर जायगा और तब पानी से रंग धुल जा सकेगा ।

गिरजा० । (प्रसन्न होकर) वाह, यह तो बड़े काम की चीज है !

अर्जुन० । बेशक, और इसी लिए मै बराबर इसकी एक शीशी अपने बटुए में रखता हूं । इसकी एक तासीर और भी खूबी की है । बनावटी सूरत पर यह रौगन लगा कर उसके ऊपर से फिर कोई दूसरा रंग भर लीजिये । अब अगर पानी से मुंह धोएंगे तो वह ऊपरी रंग छूट जायगा और वह नीचे वाली सूरत जिस पर यह रौगन लगाया गया था निकल आवेगी जिस पर पानी का कोई असर न होगा । इस तरह पर बहुत मजेदार धोखा लोगों को दिया जा सकता है । क्या तुम्हें याद नहीं कि एक मौके पर मैने भूतनाथ को गहरा धोखा दिया था यहां तक कि उसने खुद अपने ही हाथों अपने शागिर्द बहादुर और पारस की जान ले ली थी जिसका गम शायद वह अब तक भूला न होगा । *

गिरजा० । हां हां, आपने वह हाल कहा था, और मैं बहुत दिनों तक इस गौर में पड़ा रहा था कि आपने कैसी ऐयारी की कि भूतनाथ इतना गहरा धोखा खा गया ! तो वह इसी अर्क की करामात थी ! अच्छा यह अर्क बनता किन मसालों से है ?

अर्जुनसिंह गिरजाकुमार का यह सवाल सुन जोर से हंस पड़े और बोले, "ये बातें क्या इतनी सहज में बताई जाती हैं ! ऐसी ऐसी दवाओं के बनाने और ईजाद करने में खून पानी एक कर देना पड़ता है तब कहीं

* देखिये आठवां हिस्सा सत्रहवां बयान ।

जाकर ये तैयार होती हैं। क्या इतनी मुश्किल से मिली चीज ऐसे सहज में बता दूँ! हां इतना कर सकता हूँ कि तुम्हें भी इसमें की कुछ दवा दे दूँ।

पर गिरिजाकुमार ने यह बात स्वीकार न की और असल नुसखा जानने ही पर जिद्द करने लगा। अर्जुनसिंह ने तरह तरह के बहाने करके टालना चाहा पर उसने यहां तक खुशामद की कि जमीन पर गिर पड़ा और दोनों पैरों पर सिर रख कर बोला—"जब तक आप बताइयेगा नहीं मैं सिर न उठाऊंगा!" अर्जुनसिंह ने लाख कोशिश की पर उसने सिर उठाना किसी तरह मंजूर ही नहीं किया।

दलीपशाह जो अपने शागिर्द के जिद्दी स्वभाव और किसी नई बात को जानने की उसकी धुन से अच्छी तरह वाकिफ थे कुछ देर तक मुस्कुराहट के साथ यह द्वन्द देखते रहे, आखिर देर होती देख उन्होंने कहा, "अरे लड़के, इतना घबराता क्यों है? ये भी तो तेरे गुरु-तुल्य ही हैं, कभी न कभी बता ही देंगे। ऐसी जल्दी क्या है?" गिरिजाकुमार यह सुन अर्जुनसिंह का पैर पकड़े ही पकड़े बोला, "कहिये अब भी बताइयेगा कि नहीं?" वे आखिर हंस कर बोले, "जब इनकी सिफारिश हो गई तो लाचार बताना ही पड़ेगा, मगर लड़कों को इतना जिद्दी नहीं होना चाहिए! (दलीपशाह से) तुमने अपने शागिर्दों को बहुत सिर चढ़ा रक्खा है।"

गिरिजाकुमार ने हंसते हुए अपना सिर उठा लिया और तब हाथ बढ़ा कर कहा, "लाइये!" अर्जुनसिंह बोले, "मैंने कहा न कि बता दूँगा! ऐसी जल्दी क्या है? किसी मौके पर मालूम हो जायगा!" मगर उसने सिर हिला कर कहा, "सो नहीं, अभी लाइये, आखिर देर करने से फायदा ही क्या होगा? शुभस्य शीघ्रम्! न जाने कब कैसा मौका आन पड़े!"

उनको हीला हवाला करते देख आखिर दलीपशाह ने कहा, "अजी क्या दिल्लगी करते हो, बता कर छुट्टी भी करो! यह कम्बख्त एक जिद्दी है, क्या बिना लिये तुम्हारा पिण्ड छोड़ेगा!" लाचार हो अर्जुनसिंह ने अपने बटुए में से एक कागज निकाला और उसे गिरिजाकुमार की तरफ

बढ़ाया। उसने दोनों हाथों से ले सिर से लगाया और तब फिर उनके पैरों पर गिर पड़ा। उन्होंने उठा कर छाती से लगाया और पीठ ठोंक कर कहा, "शाबाश, मैं तुम्हारी जिद्द से नाराज नहीं बल्कि खुश हुआ हूं! अच्छी चीज के हासिल करने की इतनी लगन हुए बिना कोई अच्छा ऐयार बन ही नहीं सकता !!"

अर्जुनसिंह के बटुए में एक शीशी उस अर्क की और मौजूद थी जिसे उन्होंने गिरिजाकुमार के हवाले किया और तब कहा, "लो बस अब तुम जाओ और इस मलाह को भी लेते जाओ। जैसी सलाह हुई है उस मुताबिक काम करना और जहां तक जल्द हो वहां पहुँच कर खूब सावधानी से रहना। हम दोनों में से कोई न कोई बहुत जल्द तुम्हारे पास पहुंचेगा।"

"बहुत अच्छा" कह कर गिरिजाकुमार ने बेहोश मल्लाह को पीठ पर लाद लिया और दोनों को प्रणाम कर वहां से हट उन अपने बाकी साथियों की तरफ बढ़ गया जो दलीपशाह को सलाह मसविरे में मशगूल देख अपने अपने काम के लिये इधर उधर फैल गये थे। अर्जुनसिंह के बताये ढङ्ग से दलीपशाह ने वह अर्क जहां रंग रोगन इस्तेमाल हुआ था वहां वहां लगा लिया, तब शीशी ठिकाने रख दोनों आदमी उठे तथा आपुस में कुछ बातें करते हुए गंगा के किनारे किनारे नीचे की तरफ जाने लगे।

लगभग तीन चार कोस तक तेजी से चले जाने के बाद गंगाजी के बीचोबीच में से बहते हुए एक बड़े बजरे पर इनकी निगाह पड़ी। दलीपशाह ने कहा, "मालूम होता है यही वह बजरा है।" अर्जुनसिंह ने कहा, "यही होगा, मगर यह नीचे की तरफ जा रहा है और इस से गुमान होता है कि रामा मलाह की तरफ से ये लोग नांउम्मीद हो चुके हैं। ऐसी हालत में उस पर जाने में तरद्दुद उठांना होगा।" दलीपशाह ने कहा, "कोई तरद्दुद न होगा बशर्ते कि बजरा वही हो।"

इसी समय पास ही कहीं से बजती हुई एक सीटी की हलकी आवाज इन लोगों के कानों में पड़ी जो शायद किसी अपने आदमी की बजाई थी

क्योंकि उसे सुनते ही दलीपशाह ने भी उसके जवाब में सीटी बजाई और साथ ही एक आदमी को पेड़ों की झुरमुट के बाहर निकल आते देखा। पहिली ही निगाह ने बता दिया कि वह दलीपशाह का शागिर्द सहदेव है जिसने पास आ उन्हें एक खास इशारे के साथ प्रणाम किया और जवाब पाकर कहा, "मैं बहुत देर से आप की राह देख रहा था।" दलीपशाह ने जवाब दिया, "हां, मझे जरूर देर हो गई और शायद इसी सबब से बजरे वाले रामा मलाह की आशा छोड़ चले जा रहे हैं। मैं समझता हूं कि यह वही बजरा है जिसका गिरिजाकुमार ने मुझसे जिक्र किया?"

सहदेव०। जी हां वही है और उस पर के लोग अपने मलाह से नाउम्मीद होकर नहीं गये हैं बिल्क किसी को लेने वास्ते उस पार जा रहे हैं शीघ्र ही फिर यहां वापस आवेंगे। उनके दो आदमी और भी अभी इसी पार हैं जो किसी काम से उतर गये थे और बजरे के वापस आने पर सवार होंगे

दलीपशाह० तब तो फिर सब ठीक ही है! अच्छा तो हमें क्या करना चाहिये?

तीनों आदमी एक आड़ की जगह में चले गए और आपुस में सलाह करने लगे।

तीसरा बयान

पत्थर की उस विकराल मूरत ने दोनों हाथ बढ़ा प्रभाकरसिंह को पकड़ कर अपनी तरफ खींचा और उनका सिर अपनी दाढ़ों के बीच में दबा लिया।

इस अचानक की विपद ने प्रभाकरसिंह के होश हवास गायब कर दिये और उनके मुंह से अनजानते एक चीख निकल पड़ी। ताज्जुब की बात थी कि चीख की आवाज सुन उस मूरत के गले से एक डरावनी हंसी निकल पड़ी। उसने अपना मुंह खोल दिया और प्रभाकरसिंह ने जल्दी

से अपना सर बाहर निकाला पर बहुत कोशिश करने पर भी वे उसके वज्र जैसे हाथों से छूट न सके। उसी समय मूरत के मुंह से निकला, "बस खबरदार! छूटने की कोशिश न करो नहीं तो मै तुम्हें जिन्दा ही चबा जाऊंगा!!"

बड़ी कोशिश से अपने को सम्हाल कर प्रभाकरसिंह ने कहा, "आखिर कुछ मालूम भी तो हो कि तुम मुझसे क्यों इतने खफा हो गए कि अकारण ही मुझे चबा जाना चाहते हो?"

मूरत ने जवाब दिया, "मेरा नाम भूतनाथ है, मैं रोहतासमठ का पुजारी हूँ, और यहां पर उस खजाने की हिफाजत करने के लिये बैठाया गया हूँ जो शिवगढ़ी में बन्द है।"

प्रभाकरसिंह ने ताज्जुब से कहा, "मगर तब मुझसे तुम्हारी क्या दुश्मनी हो सकती है?"

भूतनाथ०। खास तौर पर तो कुछ भी नहीं, मगर अब जब तुम मेरे कब्जे में आ ही गये तो मैं तुम्हें छोड़ना भी नहीं चाहता। हां एक काम अगर तुम कर सको तो मैं अलबत्ता तुम्हें छोड़ सकता हूँ।

प्रभाकर०। सो क्या?

भूतनाथ०। मैं बहुत दिनों से प्यासा हूं और मेरी प्यास खून से ही मिट सकती है। तुम्हारे साथ एक औरत है। उसका सिर काट कर ताजा लहू अगर मुझे पिला सको तो मैं तुम्हें छोड़ दूँ।

यह जान कर कि यह शैतान चाहता है कि मालती का लहू पीये, प्रभाकरसिंह का बदन गुस्से के मारे कांपने लगा और आंखें कबूतर के खून की तरह सुर्ख हो गईं। क्रोध के मारे उनके मुंह से किसी तरह की आवाज न निकली मगर उन्हें ऐसी हालत में देख वह मूरत पुनः बोली, "क्यों, चुप क्यों हो गये? शायद सोच रहे होगे कि यदि ऐसा करने पर भी मैं तुम्हें न छोड़ूं तो तुम क्या करोगे? पर मै तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि यदि तुमने ऐसा किया तो मैं न केवल तुम्हें छोड़ ही दूंगा बल्कि शिवगढ़ी

का खजाना भी जो बिल्कुल मेरे कब्जे में है तुम्हारे सपुर्द कर दूंगा। उसमें इतनी दौलत है कि तुम दस जन्म में भी उसे खर्च नहीं कर सकते। बताओ अब तो मेरी बात तुम्हें मञ्जूर है!"

क्रोध के मारे प्रभाकरसिंह कुछ कह न सके पर वे जोर कर के उस प्रेत के हाथों से छूटने की कोशिश अवश्य करने लगे। उनके इस उद्योग को देख उस मूरत ने अपने हाथों को जरा कस लिया और प्रभाकरसिंह को ऐसा मालूम हुआ कि वह अब अगर जरा सा भी और दबावेगा तो उनकी हड्डियां कड़कड़ा जावेंगी। अपने को मौत के मुंह से छुड़ाने की कोई तर्कीब इस समय उन्हें नजर न आती थी और वे यह सोच ही रहे थे कि अब क्या करना मुनासिब है कि इसी समय वह मूरत फिर बोल उठी, "मालूम होता है कि तुम्हें मेरी बातों पर अब भी विश्वास नहीं हुआ और या फिर तुमने शिवगढ़ी के खजाने की अद्भुत दौलत का हाल नहीं सुना! उसमें ऐसी ऐसी अनूठी चीजें हैं कि जिन्हें पाकर तुम अपने को धन्य समझोगे। अच्छा मैं तुम्हें छोड़ देता हूँ। जाओ और अपने दोस्तों से इस खजाने के बारे में दरियाफ्त करो। इसके बाद अगर तुम्हारा मन भरे तो अपनी साथिन को लेकर फिर मेरे पास आना और उसके खून से मेरी प्यास बुझाना। बस, उसी दम मैं वह खजाना तुम्हारे लिये खोल दूँगा!!"

यकायक उस मूरत के हाथ ढीले पड़ गये और प्रभाकरसिंह ने अपने को छूटा हुआ पाया, मगर इस समय उनकी यह हालत हो रही थी कि होशहवास ठिकाने न थे। वे उसी जगह जमीन पर, उस पिशाच से कुछ ही दूर हट कर, बैठ गये और बहुत देर के बाद जब उनके हवास ठिकाने आये तो इस नीयत से तिलिस्मी किताब खोल कर देखने लगे कि शायद उसमें इस भयानक मूरत या इसकी खौफनाक बातों का कोई जिक्र हो, पर उसमें इसका कोई भी जिक्र न था बल्कि यह लिखा हुआ था :—

"लोहगढ़ी के तिलिस्म के चार हिस्सों में से पहिले हिस्से के तोड़ने पर हम तुम्हें बधाई देते हैं। अब तुम्हें दूसरा और तीसरा हिस्सा तोड़ने में

हाथ लगाना चाहिये और इसके लिये बेहतर होगा कि अगर तुम लोग दो आदमी हो तो दोनों अलग अलग होकर काम करो। गोलाम्बर वाले बुर्ज के तिलिस्म को तोड़ने के लिये एक अलग हो जाय और उसी रीति से काम करे जैसा कि पहिले लिखा जा चुका है, और दूसरा जो दोनों में अधिक जिस्मानी ताकत रखता हो तिलिस्म के तीसरे दर्जे को तोड़ने का काम हाथ में ले।

"तुम जिस जगह अब अपने को पाओगे उस दालान का फर्श काले और सुफेद संगमर्मर का होगा। तुम्हें उस दलान के बाहर आने की जरूरत नहीं, अगर आओगे तो खतरे में पड़ सकते हो। (प्रभाकरसिंह ने दिल में कहा—ठीक लिखा है, मैंने यहां इधर आकर गलती की जो अपने को इस भूतनाथ के हाथ में फंसाया) उस फर्श में एक जगह का पत्थर और पत्थरों से कुछ उभरा हुआ पाओगे, उसे उखाड़ लो और उसके नीचे से जो रास्ता प्रगट हो उसको साफ कर उसकी राह उस बाग में पहुंचो जहां से तिलिस्म का तीसरा हिस्सा शुरू होता है।

"तिलिस्म का यह हिस्सा यद्यपि बहुत छोटा है और आठ पहर के अन्दर तुम इसको तोड़ सकते हो पर इसको तोड़ने में ताकत होशियारी और फुर्ती की बहुत ज्यादा जरूरत पड़ेगी और अगर तुम कहीं भी जरा भी चूकोगे तो भारी नुकसान उठाओगे। इस लिए आगे लिखी बातों को खूब गौर के साथ कई बार पढ़ कर दिल में अच्छी तरह नक्श कर लो ताकि कहीं किसी तरह को गलती न होने पावे।"

प्रभाकरसिंह ने ऐसा ही किया अर्थात् इसके आगे जो कुछ बातें लिखी हुई थीं उनको कई बार पढ़ा और जब वे सब अच्छी तरह याद हो गईं तो आगे का काम करने के लिये उठ खड़े हुए।

जिस दालान में से निकल कर वे इस आंगन में पहुंचे थे वे लौट कर पुनःउसी दालान में पहुँचे। कुछ ही कोशिश से उस पत्थर का पता लग गया जिसके बारे में तिलिस्मी किताब में लिखा हुआ था और उन्होंने उसको

उखाड़ने की कोशिश की। मगर इस काम को उन्होंने जैसा सहल समझा हुआ था वैसा न पाया क्योंकि उनके पास कोई ऐसी चीज न थी जो पत्थर उखाड़ने के काम में आ सकती और इसी लिए इस काम में उनका बहुत ज्यादा वक्त खराब हुआ। आखिर किसी तरह यह काम पूरा हुआ और प्रभाकरसिंह ने वह सिल्ली उठा कर अलग रख दी। नीचे जाने के लिये कुछ सीढ़ियां नजर पड़ीं, पर दो तीन डण्डों के बाद पानी और कीचड़ नजर आया। प्रभाकरसिंह ने कपड़े उतारे, केवल लँगोट पहिन रक्खा और तब उस रास्ते को साफ करने लगे। भीतर का कीचड़ निकाल निकाल कर बाहर करने में इनको आधे घण्टे से ऊपर का समय लग गया पर आखिरकार किसी तरह यह काम भी पूरा हुआ और कीचड़ सब निकल गया पर उसकी जगह न जाने कहां से आता हुआ पानी उन सीढ़ियों पर दिखाई पड़ने लगा। वे समझ गये कि यदि इस राह से कहीं जाना होगा तो इस पानी के भीतर से हो कर जाना पड़ेगा।

कुछ देर तक तो प्रभाकरसिंह इस नीयत से इधर उधर सीढ़ियों के चारों तरफ की दीवारों की जांच करते रहे कि शायद और कोई रास्ता नजर आ जाय पर कोई दिखाई न पड़ा तो लाचार पानी में उतरे। लगभग सात आठ डण्डा सीढ़ियां उतर जाने के बाद पानी गरदन तक आ पहुँचा। यह देख दम बांध कर उन्होंने गोता लगाया और पानी के अन्दर धंसे। सामने की तरफ बढ़ कर आंखें खोलीं तो कुछ उजाला सा नजर आया और ऐसा मालूम हुआ कि कोई पतली सुरंग बावली तालाब या ऐसे ही किसी खुलासे जलाशय में जाकर समाप्त हुई है जिसके ऊपर चमकने वाले आस्मान की रोशनी पानी के अंदर से इस तरफ झलक मार रही है। वे पुनः पीछे लौट आये, अपने कपड़ों की एक गठरी बना तिलिस्मी किताब जहां तक सावधानी से हो सका उसके अन्दर कस कर लपेट के रक्खा और तब बाकी सामानों की एक गठरी बांध कमर में लगाई, तिलिस्मी डंडा हाथ में लिया और भगवान का नाम ले फिर पानी उतरे। खूब गहरा दम लेकर

गोता लगाया और अगल बगल की दीवारों का सहारा लेते हुए जहां तक तेजी के साथ बन पड़ा आगे की तरफ बढ़े ।

फासला जितना कि प्रभाकरसिंह ने अन्दाज किया था उससे कहीं ज्यादा निकला और यद्यपि वे अच्छे तैराक थे और एक सांस में नदी पार करने का कई दफे उनको मौका मिल चुका था पर इस तंग और अनजानी जगह में उनका दम उखड़ने की नौबत आ गई यहां तक कि जिस समय इस सुरंग को उन्होंने तय किया उनका दम एक दम टूट चुका था । फटते हुए कलेजे के साथ वे पानी के ऊपर आये और तब आधी बदहवासी की हालत में कुछ देर के लिए सुस्त पड़ गये ।

कुछ देर बाद उनके होशहवास ठिकाने आये और उन्होंने अपने चारों तरफ निगाह डाली । काले संगमर्मर से बनी हुई एक बावली के किनारे सीढ़ी पर उन्होंने अपने को पड़ा पाया जो किसी बागीचे या मैदान के बीच में बनी हुई सी मालूम होती थी और जिसके चारो तरफ बनी इमारतों का कुछ हिस्सा उन्हें नजर आ रहा था । प्रभाकरसिंह कुछ गौर के साथ उन इमारतों की तफर देख ही रहे थे जो उन्हें कुछ कुछ पहिचानी हुई सी जान पड़ती थीं कि यकायक अपने पास ही जल में किसी तरह की खलबलाहट की आवाज सुन चौंके और उधर देखते ही घबरा कर जल्दी जल्दी कई सीढ़ियां ऊपर चढ़ गये ! दो घड़ियालों पर उनकी निगाह पड़ी जिनका भयानक मुंह और बहुत बड़े बड़े दांत डर पैदा करते थे और जो अपनी कांटेदार दुम से पानी को मथते और क्रूर हरी आंखों से उनकी तरफ देखते हुए धीरे धीरे बढ़े आ रहे थे । दो तीन सीढ़ियां और ऊपर उठ कर उन्होंने अपने को उन डरावने जानवरों की पहुंच से एक दम बाहर कर लिया और तब कुछ देर उनकी तरफ गौर से देखते रहने के बाद धीरे से यह कहते हुये बावली के बाहर हुये, "क्या ये असली जानवर हैं या नकली ?"

बावली के बाहर निकल कर जब प्रभाकरसिंह ने अपने चारो तरफ

निगाह की तो उन्हें मालूम हुआ कि वे एक छोटे बाग में हैं जिसे चारो तरफ से तरह तरह की ऐसी इमारतों ने घेरा हुआ है जिनमें से कई उनकी पहिले की देखी हुई हैं। उस पहिले स्थान अर्थात् 'भूतनाथ' वाले आंगन से जो इमारतें उन्हें अपने दाहिनी तरफ दिखाई दी थीं वे ही इस समय उनके बांई तरफ मौजूद थीं और इससे उन्होंने गुमान किया कि उस पानी वाली सुरङ्ग के जरिये वे उन इमारतों के नीचे से होते हुए इस दूसरी तरफ आ गये हैं और इसी बात से उन्होंने यह भी समझ लिया कि ये इमारतें लम्बाई में चाहे जहां तक भी फैली हुई हों पर इनकी चौड़ाई या मुटाई बहुत अधिक नहीं है।

इस बाग में बड़े पेड़ तो अधिक न थे पर छोटे छोटे मेवों के दरख्त बहुतायत से थे और वे एक नहर की मदद से जो बाग के बीच में से होती हुई बह रही थी हर दम हरे भरे रहते थे। उन्होंने अपने कपड़े इन पेड़ों पर सूखने को डाल दिये और तब जरूरी कामों से निपट तथा उसी नहर के पानी से स्नान कर सन्ध्या पूजा आदि से छुट्टी पाई, इसके बाद कुछ मेवा खाया और सब तरह से निश्चिन्त हो तिलिस्म तोड़ने के काम में लगे, क्योंकि तिलिस्मी किताब ने उन्हें बता दिया था कि अब आगे उन्हें इन बातों की सुविधा न मिलेगी और तिलिस्म का यह हिस्सा तोड़ने के काम में कई पहर लग जा सकते थे।

अपने कपड़े पहिन तिलिस्मी किताब कमर में खोंस और तिलिस्मी डण्डा हाथ में ले प्रभाकरसिंह उस बाग के चारो तरफ घूमने लगे। उनका लक्ष्य वे इमारतें या दीवारें थीं जिन्होंने चारो तरफ से इस बाग को घेरा हुआ था और उन्हीं पर गौर की निगाह डालते हुए वे अपने मतलब की चीज खोज रहे थे। आखिर घूमते फिरते वे एक ऐसी जगह पहुंचे जहां नीचे से लगभग दो पुरसा की ऊंचाई तक की दीवार तो एक दम साफ थी पर उसके ऊपर की तरफ एक बड़ी बारहदरी बनी हुई दिखाई पड़ रही थी। इस जगह की दीवार को बहुत गौर के साथ देखने पर उन्हें एक

जगह पर एक चौकोर निशान इस ढङ्ग का दिखाई पड़ा जिससे यह गुमान किया जा सकता था कि शायद यहां कोई गुप्त दर्वाजा या खिड़की है।

प्रभाकरसिंह गौर के साथ उस निशान को देखने लगे और साथ ही इस बात को जाननें का भी उद्योग करने लगे कि किस प्रकार यहां पर रास्ता पैदा किया जा सकता है। बहुत ही बारीक एक दरार चारो तरफ घूमी हुई किसी रास्ते के उस जगह होने का शक जरूर पैदा कर रही थी पर इससे ज्यादा और कुछ न था। प्रभाकरसिंह उस स्थान को दबाने ठोकने पीटने और जांचने लगे पर किसी तरह भी यह पता न लगा कि यहां पर रास्ता कैसे पैदा किया जा सकेगा। आखिर उस जगह से कुछ पीछे हट कर पुनः गौर करने लगे। उस दाग के नीचे की तरफ की जमीन का एक छोटा सा हिस्सा उन्हें कुछ उभरा सा दिखाई पड़ा मानों उसके नीचे कोई चीज दबी या गड़ी हुई हो। प्रभाकरसिंह उस जगह को खोदने लगे। कुछ मेहनत के बाद वहां एक छोटा सा गढ़ा हो गया जिसके नीचे की तरफ पत्थर की एक सिल्ली जिसमें कड़ा लगा हुआ था दिखाई पड़ी। गड़हे को और बड़ा कर प्रभारकरसिंह ने उस सिल्ली को बाहर किया। उसके नीचे पत्थर का एक चौकोर टांका सा नजर आया जिसकी तह में कोई चीज दिखाई पड़ रही थी। गौर से देखने बाद हाथ डाल कर उस को निकाला। किसी तरह के सुफेद पत्थर की एक वालिस्त लम्बी और इससे कुछ कम चौड़ी एक तख्ती थी जिस पर बारीक अक्षरों में कोई मजमून लिखा हुआ था। प्रभाकरसिंह उस मजमून पर गौर करने लगे और आखिर कुछ देर की मेहनत में उन्होंने उसका मतलब निकाल ही लिया। पाठकों का कौतूहल दूर करने के लिये हम वह मजमून यहां लिखे देते हैं—

दीरर
वासाक रतर
पबाबा ररह जोकर
निसखीं शाकच नरलो दिठोंश्रौ
खाकोर ईतघ पबड़ि ड़पया ताल्लेलों
हैकीको उतखि सरला केहश्रो
ऊऊबा पपव ररली
केउमें दाठासे
हिश्रोजो
नेसकु
कोबछ नेशमि
कोरीले एरउ कभीसे
बातउ ररठा बांमक एतर
कोडाय नेलहां कोनाला चासाश्रो रमश्रौ
बानेर रजोइ नीकुसी चेछके
केदिश्रं कोखाद नोंईर
कोपडा दोडेल
श्रौजोदो

प्रभाकरसिंह ने वह तख्ती वहीं छोड़ दी और पुनः दीवार के पास पहुँचे। अपने हाथ के तिलिस्मी डण्डे से किसी खास क्रम के साथ उन्होंने उस चौकोर निशान के चारो कोनों को ठोंकना शुरू किया। कुछ ही देर बाद एक खटके की आवाज आई और तब कुछ जोर लगाते ही वहां का एक टुकड़ा चूहेदानी के पल्ले की तरह नीचे के हिस्से से पीछे ऊपर की तरफ उठ गया और हाथ डेढ़ हाथ लम्बा चौड़ा एक रास्ता दिखाई देने लगा। जमीन पर लेट कर प्रभाकरसिंह ने अपना अगला धड़ उस छेद में डाल दिया और भीतर की तरफ देखने लगे। एक बहुत लम्बी कोठरी दिखाई

पड़ी जिसके पिछले हिस्से में क्या था यह अन्धकार के कारण नजर न आता था क्योंकि वहां जो कुछ रोशनी थी वह उसी छेद की थी जिसकी राह प्रभाकरसिंह अपना धड़ अन्दर किये हुए थे पर सामने की तरफ जमीन पर एक औरत की लाश पड़ी जरूर दिखाई पड़ी जिसकी छाती में एक छुरा घुसा हुआ था।

यकायक ऐसी ऐसी चीजें जिनके देखने की भी उम्मीद न हो सकती थी अपने सामने पा प्रभाकरसिंह घबड़ा गये पर फिर कुछ सोच बिचार उन्होंने हिम्मत की और उस लाश को खींच कर बाहर निकाल लिया।

बाहर निकाल कर जब गौर से उस लाश को देखा तो मालूम हुआ कि वह एक दम बनावटी है। उसका सिर मोम का और नखसिख से दुरुस्त था और समूचा बदन किसी तरह के ऐसे पदार्थ का बना हुआ था जो चमड़े और मांस की तरह दिखाई देता हुआ भी वास्तव में कुछ और ही वस्तु थी। कुछ देर तक वे गौर से उसकी बनावट और कारीगरी को देखते रहे, इसके बाद उसे उठा लिया और उसी बावली के पास पहुँचे जहां से इस बाग में आए थे, घाट की सीढ़ियां उतरते हुए जल के पास पहुँचे और सीढ़ी पर लाश रख घड़ियालों की राह देखने लगे। कुछ ही देर बाद वे दोनों भयानक जानवर पुनः तैरते हुए नजर आये। प्रभाकरसिंह ने वह लाश उठा कर पानी में डाल दी और आश्चर्य के साथ देखा कि लाश को देखते ही वे उस पर झपटे और उसे अपने खौफनाक दांतों से पकड़ कर पानी के नीचे चले गये।

इस बात को घड़ी भर से ऊपर न बीता होगा कि यकायक वे दोनों जानवर पुनः जल के ऊपर दिखाई पड़े पर इस बार वे दोनों बड़ी बेचैनी और घबड़ाहट के साथ इधर उधर भाग रहे थे और ऐसा जान पड़ता था मानों किसी तरह की गहरी तकलीफ में हैं। कभी नीचे जाते कभी पुनः ऊपर आते कभी पानी के अन्दर से बाहर मुंह निकाल कर हांफते और कभी पुनः गोता लगाते हुए उन लोगों ने समूची बावली छान डाली

और तब यकायक एक आखिरी तड़प दिखला कर सुस्त पड़ गये। उनका पेट ऊपर की तरफ हो गया और वे उलटे होकर इस तरह तैरने लगे जैसे मरी हुई मछलियाँ जल पर तैरती हैं। पर यह अवस्था भी उनकी देर तक न रही। कुछ ही देर बाद बड़े जोर की आवाज के साथ उनके पेट फट गये और वे पुनः पानी में डूब गये।

मुरदा घड़ियालों का डूबना था कि बावली के पानी में एक तरह की खलबलाहट शुरू हुई और उसका जल तेजी से इस तरह कम होने लगा मानों तह के किसी छेद की राह कहीं निकला जा रहा हो। लगभग घड़ी भर के अन्दर ही आधे से ऊपर पानी सूख गया। बाकी पानी भी जल्दी ही सूख गया और तह में सिर्फ कुछ कीचड़ रह गया। अब प्रभाकरसिंह आगे बढ़े और बाकी की सीढ़ियां तय कर नीचे पहुँचे। दोनों घड़ियाल जिनके पेट फूट की तरह फटे हुए थे आधे आधे कीचड़ में दबे दिख रहे थे और उनके पास ही कोई चमकती हुई चीज नजर आ रही थी जो करीब हाथ भर के पेटे में होगी। प्रभाकरसिंह ने आगे बढ़ कर उस चीज को उठाना चाहा पर हाथ लगने के साथ ही उनके बदन में एक ऐसा कड़ा झटका लगा कि वे बदहवास हो गये और लौट आ कर पुनः सीढ़ी पर बैठ बल्कि गिर गये। उस झटके ने उनके शरीर का पोर पोर हिला दिया था और ऐसा मालूम हो रहा था मानों उनके बदन पर बिजली गिर पड़ी हो।

कुछ देर बाद अपने होश हवास सम्हाल वे फिर उठे और उस चीज से कुछ दूर ही खड़े हो कर उसे गौर से देखने लगे। मोटे दलदार शीशे का एक सन्दूक था जो न जाने किस कारण से ऐसा चमक रहा था कि उस पर निगाह नहीं ठहरती थी। पहिली दफे जब प्रभाकरसिंह उसके पास गये थे तो इस चमक पर उनका ध्यान न गया था, यह भी सम्भव है कि पहिले वह चमक न रही हो और अब पैदा हुई हो, और शीघ्र ही मालूम हो गया कि वास्तव में यही बात थी। बावली का पानी ज्यों ज्यों कम होता जा रहा था उस बकस की चमक भी बढ़ती जा रही थी। प्रभाकरसिंह को

यह विश्वास था कि इसी चीज को उठा कर उस जगह ले जाने के बारे में तिलिस्मी मजमून ने उनको आज्ञा दी है पर इसे उठावें तो कैसे ? इसका तो छूना तक भी गजब करता है ! आखिर सोचते विचारते उन्हें एक बात खयाल आई । पहिली दफे जब वे उसके पास गये थे तो अपना तिलिस्मी डंडा बाहर सीढ़ी पर ही छोड़ गये थे । शायद पास में उसके न रखने से ही ऐसा हुआ हो यह सोच वे उसे उठा लाये और पुनः धीरे से उस चीज को हाथ लगाया । इस बार भी कुछ झटका तो उन्हें अवश्य लगा पर वह ऐसा न था कि बर्दाश्त के बाहर हो । यद्यपि कुछ तकलीफ जरूर हुई पर वे उस बक्स को उठा सीढ़ियां चढ़ते हुए बावली के ऊपर हो गये । वह बकस यद्यपि छोटा पर बड़ा ही भारी था यहां तक कि नीचे से ऊपर तक जाने में ही वे हांफने लग गये, पर जरा सुस्ता कर फिर उन्होंने उसे उठाया और जल्दी जल्दी चल कर उसी जगह पहुंचे जहां पहिले गये थे । पहिली तर्कीब से पुनः वह छेद प्रगट किया और तब जोर लगा कर उस शीशे के बक्स को उसके अन्दर फेंक दिया ।

बकस का अन्दर डालना था कि दीवार के दूसरी तरफ से तरह तरह की आवाजें इस प्रकार की आने लगीं मानों बहुत से कल पुरजे तेजी के साथ चलने लग गये हों जिनके गूंजने की आवाज बाहर तक आ रही थी । यह आवाज बहुत तेजी के साथ बढ़ने लगी यहां तक कि प्रभाकरसिंह को दीवार पर उसकी कंपकपी मालूम होने लगी और थोड़ी देर बाद तो ऐसा जान पड़ने लगा मानों वह दीवार कांप रही हो । यह हाल देख प्रभाकरसिंह वहां से हट कर कुछ दूर पर जा खड़े हुए मगर अपनी निगाह उस दीवार की तरफ ही रक्खी ।

यकायक दीवार ने एक तरह की लहर सी खाई और तब उसका वह हिस्सा जो प्रभाकरसिंह के सामने था जोर से कांप कर गिर गया । यदि वे होशियारी कर के पहिले ही दूर न हट गये होते तो इसमें शक न था कि दीवार के नीचे दब कर चुटीले हो गये होते ।

मगर यह क्या प्रभाकरसिंह की आंखों का भ्रम है या कोई तिलिस्मी खेल ? उनके सामने यह क्या नजारा दिखाई पड़ रहा है ? वह कौन औरत है जो सामने के खम्भे के साथ बंधी हुई है ? क्या मालती है ? नहीं नहीं, मालती की यह दुर्दशा भला क्यों कर हो सकती है !! तब और कोई है ? नहीं नहीं मालती ही है, जरूर मालती है, और वे दोनों कौन हैं और क्या कर रहे हैं ? हैं, ये तो तलवारें हाथ में लिये हैं और किसी की जान लिया चाहते हैं ! हैं हैं, ये तो मालती की गर्दन मारना चाहते हैं ! उनके मुंह से बरबस निकल पड़ा, "ठहर तो जाओ कम्बख्तो, जरा मुझे तो आ जाने दो !!"

तड़प कर प्रभाकरसिंह उस टूटी दीवार के अन्दर झपटे पर अफसोस दो तीन कदम से ज्यादा न जा सके। लोहे की तरह मजबूत कई हाथों ने उनको दोनों तरफ से पकड़ लिया और साथ ही कहीं से यह आवाज आई, "अच्छे मौके पर यह भी आ गया ! इन्हीं दोनों ने समूचे तिलिस्म में तहलका मचा रक्खा था ! अब इसे भी साथ ही बलि दे दो और हमेशा के लिये सब झंझट मिटा डालो !!"

चौथा बयान

खास बाग के अपने सोने वाले कमरे में कुंअर गोपालसिंह अभी अभी सो कर उठे हैं और खिड़की की राह आने वाली मन्द मन्द हवा के झोंकों का आनन्द ले रहे हैं।

परन्तु यकायक वे चिहुँक पड़े। पहिले तो अधलेटे से तकिया के सहारे पड़े थे, पर अब उठ कर बैठ गये और गौर से खिड़की की राह नीचे बाग की तरफ देखने लगे। मगर इतने पर भी मन न माना, कुछ आगे को झुके और खिड़की में से झांक कर नीचे देखने बाद आप ही आप बोल उठे, "बेशक वही है !!"

पर वे चमक पड़े जब किसी ने पीछे से उनकी बात के जवाब में पूछा, "कौन वही है ?"

उनके सोने वाले कमरे में इस तरह बिना इत्तला इस वक्त आने वाला कौन है जिसने यह बात कही ? चौंक कर गोपालसिंह ने गर्दन घुमा कर पीछे देखा और साथ ही इन्द्रदेव को एक काला लबादा ओढ़े पलंग के पैताने खड़े पा आश्चर्य से बोल उठे, "हैं, आप इस वक्त कहां ?"

इन्द्रदेव ने लबादा उतार पलंग के पैताने की एक सङ्गमर्मर की चौकी पर रख दिया और तब सामने आ कर कहा, "एक बड़े ही जरूरी काम से ऐसे बेमौके आपसे मिलने आना पड़ा ! वह तो कहिये आपके दिये निशान की बदौलत बेरोक टोक यहां तक आ पहुँचा नहीं तो न जाने कितनी देर रुकना पड़ता !"

गोपालसिंह ने पलंग से उतरते हुए पूछा, "ऐसा जरूरी काम क्या निकल आया जिसने ऐसे वक्त आपको यहां आने पर मजबूर किया ? मगर आपकी सूरत देखने से मालूम होता है कि आप रात भर के जागे हुए हैं और साथ ही कहीं दूर का सफर करते हुए भी आ रहे हैं।"

इन्द्रदेव ने कहा, "हां आपके दोनों ही अनुमान सही हैं और मैं अभी बताऊँगा कि वह काम क्या है, पर आप पहिले यह बतलाइये कि नीचे बाग में किसको इतने गौर से देख रहे थे कि मेरे आने की आहट तक आपको न मिली ?"

गोपालसिंह ने यह सुनते ही चौंक कर कहा, "हां यह भी एक ताज्जुब की बात है ! (पुनः खिड़की के पास जाकर और नीचे बाग में देख कर) नहीं है, कहीं चली गई !"

इन्द्रदेव० । (खिड़की के पास पहुंच कर) क्या कोई औरत थी ? कौन थी वह ?

गोपाल० । आपको याद होगा कि कुछ दिन हुए मैंने नीचे बाग में इसी तरह सुबह के वक्त एक औरत को घूमते हुए देखा था और जब उसका पीछा किया तो उसको तीसरे दर्जे में पाया, पर वह वहां से भी गायब हो गई और फिर कहीं नजर न आई।

इन्द्र० । हां हां, मुझे बखूबी याद है, उस घटना के बाद ही एक लौंडी को हमलोगों ने बातें सुनते पकड़ा था और बहुत कुछ तकलीफ उठाने पर भी उसने कुछ न बताया कि वह क्यों ऐसा कर रही थी ।*

गोपाल० । हां हां, वही औरत आज फिर नीचे घूमती फिरती दिखाई पड़ी पर आपके आने के साथ साथ कहीं गायब हो गई ।

इन्द्र० । अच्छा ! आश्चर्य की बात है !! लेकिन क्या वह उस दिन के बाद फिर आज ही दिखाई पड़ी ? इस बीच में कहीं एक दफे भी दिखलाई नहीं दी ?

गोपाल० । नहीं, बिल्कुल नहीं !

इन्द्रदेव० । (चिन्ता के साथ) न जाने कौन बला है ! खास बाग के अन्दर इस तरह किसी का मनमानते आना जाना बड़े ताज्जुब और साथ ही तरद्दुद की बात है ।

गोपाल० । इसमें क्या शक है ! कहीं यह भी उसी गुप्त कमेटी की कोई कार्रवाई तो नहीं है !!

इन्द्रदेव० । (सोचते हुए) हो सकता है, खैर देखा जायगा ।

गोपाल० । (चौंक कर) देखिये देखिये वह फिर दिखलाई पड़ी !

इन्द्रदेव ने खिड़की में से देखा । एक कमसिन औरत नीचे के बाग में रविशों पर चेहलकदमी कर रही थी । एक सायत के लिये उसकी निगाह ऊपर उस खिड़की की तरफ उठी जिसमें से ये दोनों देख रहे थे और तब तुरत ही न जाने क्यों जरा चिहुँक वह पीछे की ओर हटी और चमेली की झाड़ियों में जा निगाहों की ओट हो गई । इसके साथ ही झपटते हुए इन्द्रदेव गोपालसिंह से यह कह कमरे के बाहर हुए—"आप यहीं ठहरिये, मैं उसका पीछा करता हूँ ।"

गोपालसिंह एक कुरसी खिड़की के पास खींच उस पर बैठ गये और नीचे का हाल देखने लगे । अभी सूर्योदय होने में बहुत विलम्ब था और

* देखिए तेरहवां हिस्सा, पहिला बयान ।

इसी कारण बाग में कोई चलता फिरता नजर नहीं आता था। गोपालसिंह ने देखा कि इन्द्रदेव छिपते हुए उसी चमेली की झाड़ियों की तरफ बढ़े और एक जगह रुक कुछ आहट लेने के बाद उन्हीं झाड़ियों के अन्दर जा कहीं गायब हो गये।

आधे घण्टे से ऊपर समय तक इन्द्रदेव गायब रहे और तब तक गोपालसिंह भी अपनी जगह से न टले। आखिर उन्हीं टट्टियों की आड़ से निकलते हुए उन्होंने इन्द्रदेव को देखा पर वे अकेले थे जिससे ये समझ गये कि वह औरत इन्द्रदेव के हाथ न लगी। बीच का रास्ता तय कर जैसे ही इन्द्रदेव ने कमरे में पैर रक्खा वैसे ही गोपालसिंह ने पूछा,—"मालूम होता है आपके हाथ भी वह नहीं लगी!"

परेशानी की मुद्रा से इन्द्रदेव एक कुरसी पर बैठ गये और बोले, "हां ऐसी ही बात है। उसका पीछा करता हुआ मै बहुत दूर तक चला गया पर वह गायब हो ही गई! न मालूम वह कौन थी या किस मतलब से यहां घूम रही थी पर इसमें कोई शक नहीं कि उसे तिलिस्म का हाल बहुत कुछ मालूम है।"

गोपाल०। तो क्या वह तिलिस्म के अन्दर चली गई?

इन्द्र०। हां मगर साथ ही एक ताज्जुब की चीज मेरे लिये छोड़ गई।

गोपाल०। वह क्या?

इन्द्रदेव ने एक छोटा कागज का टुकड़ा निकाल कर गोपालसिंह के सामने रख दिया और कहा, "जहां से वह आखिरी दफे मेरी आंखों की ओट हुई वहां यह कागज का टुकड़ा पड़ा हुआ मिला जिसे शायद वह मेरे ही लिये छोड़ गई थी।"

गोपालसिंह ने वह कागज का टुकड़ा उठा कर पढ़ा। किसी बहुत ही हलकी स्याही से जो शायद किसी पौधे का रस भी हो सकता था यह लिखा हुआ था :—

"मुझे दुश्मनों ने चक्रव्यूह में बन्द कर रक्खा है। क्या

कोई दयालु वह तिलिस्म तोड़ मुझे छुड़ावे और मेरे मां बाप के पास पहुंचावेगा ? मैं अकेले ही वहां बन्द नहीं हूँ बल्कि मेरी तरह और भी कई दुखिया मुसीबत की घड़ियां काट रहे हैं।"

बड़े ताज्जुब के साथ गोपालसिंह यह मजमून पढ़ गये और तब देर तक कुछ गौर करते रहे। यकायक वे उठे और एक आलमारी खोल उसमें से कोई चीज निकाल लाये। इन्द्रदेव ने देखा कि वह भी कागज का एक छोटा सा टुकड़ा है। गोपालसिंह के कहने से उन्होंने उसे पढ़ा, उसी तरह की फीकी रोशनाई से उस कागज पर यह लिखा हुआ था, "मैं चक्रव्यूह में कैद हूं।" पढ़ कर इन्द्रदेव ने गोपालसिंह की तरफ देखा जिन्होंने कहा, "आपको शायद याद होगा कि पिछली मर्तबा जब वह मुझे दिख कर गायब हुई थी तो यह पुर्जा मिला था पर उस समय मै यह निश्चय नहीं कर सका था कि यह वास्तव में उसी की चीठी है या किसी दूसरी घटना का सूत्रपात है पर आज का यह पुर्जा विश्वास दिलाता है कि यह भी उसी का भेजा हुआ है जिसने यह पहिली चीठी भेजी थी।"

इन्द्रदेव ने दोनों चीठियों के अक्षर मिला कर कहा, "दोनों के अक्षर एक ही से हैं। बेशक ये दोनों मजमून एक ही हाथ के लिखे हुए हैं।"

गोपाल०। तब इससे क्या समझा जाय ?

इन्द्रदेव०। क्या बताऊं, मेरी अक्ल तो आप हैरान है ! अगर लिखने वाले का कहना सही है तो वह जरूर एक ऐसी जगह में बन्द है जहां से बढ़ कर भयानक स्थान तिलिस्म भर में कोई न होगा और जहां से किसी को खोज निकालना या उसे छुड़ा लाना भी कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। फिर अगर वह वहां बन्द ही है तो इस तरह स्वतन्त्रता के साथ घूमती फिरती हम लोगों को क्यों दिखाई देती है ? अगर कहा जाय कि यहां तक आने की उसे स्वतन्त्रता है तो वह तिलिस्म में कैद किस

तरह मानी जा सकती है ? और ऐसी हालत में फिर उसका लिखना गलत साबित होता है।

गोपाल०। बेशक ऐसा ही है और फिर अगर उसका कहना सही भी मान लिया जाय तो उसका छुड़ाना भी कोई मामूली काम नहीं है। चक्रव्यूह का तिलिस्म कोई ऐसा तिलिस्म नहीं है कि जो जब चाहे उसके अन्दर चला जावे और उसमें फंसे हुए किसी व्यक्ति को छुड़ा लावे। बल्कि मैं तो समझता हूँ बिना उस तिलिस्म को तोड़े यह काम हो ही नहीं सकता।

इन्द्रदेव०। कदापि नहीं, बिना तिलिस्म टूटे उसके अन्दर से कोई कैदी किसी तरह नहीं निकाला जा सकता और तिलिस्म टूटना कोई खिलवाड़ नहीं, तिस पर चक्रव्यूह का !

गोपाल०। मैंने चाचाजी (भैयाराजा) की जुबानी सुना था कि चक्रव्यूह ऐसा भयानक तिलिस्म है कि तिलिस्म का राजा भी अगर वहां के चक्कर में पड़ जाय तो कुछ नहीं कर सकता। मगर वे यह भी कहते थे कि उसके अंदर ऐसी ऐसी अनूठी चीजें हैं कि देख कर अचम्भा होता है, पर बिना तिलिस्म तोड़े वे किसी को मिल नहीं सकतीं। उनका यह भी कहना था कि उस तिलिस्म के चक्कर में जो कोई फंस जाय वह बिना तिलिस्म टूटे किसी तरह भी बाहर निकाला नहीं जा सकता।

इन्द्रदेव०। बहुत ठीक बात है। जहां तक मुझे पता है उसके ऐसा भयानक तिलिस्म कोई दूसरा नहीं है।

गोपाल०। मैंने एक बार उनसे जिद्द की थी कि उसके अंदर चल कर मुझे वहां की सैर करा दें जिस पर वे बोले कि उसका भेद बताने वाली एक तिलिस्मी किताब है, जब तक वह हाथ में न हो कोई उसके अन्दर जा नहीं सकता। अगर जाने की कोशिश करेगा तो फंस जायगा और अपनी जिन्दगी से हाथ धोएगा !

इन्द्रदेव०। (कुछ कौतूहल के साथ) आपने उनसे पूछा नहीं कि वह कताब कहां है या कैसे मिल सकती है ?

गोपाल० । पूछा, पर उन्होंने कहा कि मुझे मालूम नहीं, हां बड़ों से सुनने में आता है कि किसी बहुत ही गुप्त जगह में छिपा कर रक्खी हुई है और तभी प्रगट होगी जब उस तिलिस्म की उम्र समाप्त होने को आवेगी। अब मालूम नहीं कि वे सही कहते थे या बहाना करके सिर्फ टाल देने की नीयत से उन्होंने यह बात कही थी।

इद्रदेव० । नहीं उन्होंने सही कहा था। एक बार बड़े महाराज से बातें होने पर उन्होंने भी मुझसे यही बात कही थी।

गोपाल० । खैर जाने दीजिये इस विषय को, अब यह बताइये कि आप इतना सुबह किस जरूरी काम से आये थे ?

इन्द्रदेव० । हां मै अब यही बताया चाहता हूं क्योंकि अब मुझे यहां से चले जाना चाहिए। मै इस वक्त यहां दो कामों से आया था।

गोपाल० । कौन कौन ?

इन्द्र० । (एक लंबा कागज उनके आगे रख कर) पहिला काम तो यह है।

गोपाल० । (कागज उठा कर पढ़ते हुए, ताज्जुब के साथ) ये नाम किनके हैं ?

इन्द्र० । यह उस गुप्त कमेटी के बचे हुए मेम्बरों के नामों की फेहरिस्त है। जिन लोगों का नाम मैं पहिले आपको बता चुका हूँ उनके इलावे ये इतने लोग उस कमेटी से सम्बन्ध रखने वाले और हैं और अगर ये गिरफ्तार कर लिये जायं तो बस वह कुमेटी टूट जायेगी।

गोपाल० । (खुश होकर) वाह वाह, यह तो बड़ी अच्छी चीज आप लाये ! (नामों को पढ़ते हुए रुक कर) मगर यह मैं किनके नाम इसमें देख रहा हूँ—रमानाथ मिश्र, श्रीनिवासदास, गोविन्दसिंह, रघुनन्दनशुक्ल, गोकुल, छोटे, शारदा ! क्या आपका कहना है कि ये सभी उस गुप्त कुमेटी के सदस्य हैं जिसने मेरे पिता की जान ली है !!

इन्द्र० । जी हां।

गोपाल० । (फिर सूची पढ़ते हुए) ताज्जुब की बात है ! मुरलीधर ओझा, रामदहिन शर्मा, प्यारेलाल,—क्या सचमुच ये लोग भी उस कुमेटी में शामिल हैं, या आपको किसी तरह का धोखा हुआ है ?

इन्द्र० । (हंस कर) मुझे किसी तरह का धोखा नहीं हुआ है और ये सब लोग निश्चय रूप से उस कम्बख्त कुमेटी के मेम्बर हैं । आप बे-खटके इन लोगों को गिरफ्तार कीजिये और सजा दीजिये । ये नाम मुझे ऐसे जरिये से मालूम हुए हैं कि इनके सही होने में किसी तरह का शक हो ही नहीं सकता ।

गोपाल० । इसका क्या मतलब ? क्या आपको ये नाम किसी दूसरे से मिले हैं ? क्या आपने स्वयं इनका पता नहीं लगाया है ? तब तो माफ कीजियेगा जरूर इसमें कोई न कोई गलती हुई है क्योंकि मैं मान नहीं सकता कि ये ऐसे ऐसे लोग जिनके हवाले मैं बेफिक्री से अपनी जान कर सकता हूँ उस कुमेटी के मेम्बर होंगे !!

इन्द्र० । (हंस कर) आपको मेरे काम में किसी तरह का भी शक करने की जरूरत नहीं है । यह फिहरिस्त खास उस कुमेटी के मन्त्री द्वारा बनाई गई है और इसकी सचाई पर किसी तरह का शक नहीं किया जा सकता ।

गोपाल० । (और भी आश्चर्य के साथ) सभा के मन्त्री द्वारा बनाई गई ! वह मन्त्री कौन है और आपको उसका पता क्योंकर लगा ?

इन्द्र० । उस सभा के मन्त्री खास मेरे ससुर ही थे और यह सूची उन्हीं की बनाई हुई है ।

गोपाल० । आपके ससुर यानी दामोदरसिंह ! क्या वे उस सभा के मन्त्री थे ! नहीं नहीं, यह जरूर आप कोई दिल्लगी कर रहे हैं !!

इन्द्र० । (हंस कर) नहीं मै दिल्लगी नहीं कर रहा हूं, बहुत सही कह रहा हूं ! मेरे ससुर उस कुमेटी के मन्त्री थे । पहिले पहल वह सभा इसलिए बनी थी कि राज्य के साथ भलाई करे और इसी लिये मेरे ससुर ने उसमें

भाग भी लिया था, पर जब उसका ढङ्ग बदलने लगा और उसने राज्य के साथ दुश्मनी करना शुरू किया तो वे उसका साथ छोड़ने को तैयार हुए पर दुश्मनों के डर से खुल्लमखुल्ला ऐसा कर न सके और मौके का इन्तजार करने लगे। उन्होंने उस कुमेटी के सम्बन्ध के सब कागजात तथा सदस्यों के नाम और उसकी सब कार्रवाइयों का एक कच्चा चिट्ठा तैयार किया और वह सब सामान एक विश्वासी आदमी के सपुर्द कर दिया कि वक्त पर काम आवे, पर दुश्मनों को इस कार्रवाई का पता लग गया और उनकी वह गति हुई। मेरे एक दोस्त ने अभी हाल ही में उन चीजों का पता लगाया और तभी मुझे भी ये बातें मालूम हुईं।

गोपाल०। वह कौन सा दोस्त है?

इन्द्र०। गदाधरसिंह ऐयार।

गोपाल०। गदाधरसिंह !!

इन्द्र०। जी हां, अच्छा सुनिए मै आपको सब हाल सुनाता हूं, क्योंकि बिना पूरा हाल सुने आपका सन्देह दूर न होगा, पर इन बातों को बहुत गुप्त रखियेगा, किसी के आगे कदापि जाहिर न होने दीजियेगा!

संक्षेप में और थोड़ा बहुत घटा बढ़ा कर इन्द्रदेव ने पिछला वह सब हाल उस कलमदान के सम्बन्ध में जिसमें दामोदरसिंह ने सभा के काग जात बन्द किये थे गोपालसिंह से कह सुनाया जो हम ऊपर के बयानों में लिख आये हैं, पर न जाने क्यों दारोगा का नाम इस सम्बन्ध में न आने दिया। या तो उसकी दोस्ती का पास किया हो और या भूतनाथ के साथ किये हुए अपने वादे का खयाल कर गये हों। गोपालसिंह बड़े ताज्जुब के साथ सब किस्सा सुनते रहे और जब वे समाप्त कर चुके तो बोले, "यह तो आपने बड़े ताज्जुब की बात सुनाई! आपका गदाधरसिंह तो सचमुच गजब का ऐयार जान पड़ता है!!"

इन्द्र०। इसमें क्या शक है! वह अगर जरा ऐयाश और लालची न होता तो कमाल का आदमी था। खैर अब इतना तो आपको विश्वास

हों ही गया कि ये सब आदमी जिनके नाम आपके सामने हैं उस सभा के सदस्य हैं।

गोपाल०। हां अब इस फिहरिस्त के सही होने में क्या शक हो सकता है? मै आज ही इन शैतानों को उनकी करनी का फल चखाऊंगा। मगर जरा सोचिये तो सही कि कैसे कैसे लोग इस काम में शामिल थे? क्या कभी इस बात का शक भी हो सकता था कि ये लोग मेरे साथ दुश्मनी कर रहे होंगे!

इन्द्र०। ऐसे लोगों के हाथ में कुमेटी होने के सबब से ही तो उसका भण्डा नहीं फूटता था! जिनको आप इस काम के लिये मुकर्रर करते थे कि उसका भेद लें वे खुद ही उसके सदस्य होते थे, फिर पता चलता तो क्योंकर?

गोपाल०। यही बात है। खैर यह तो आज एक बड़ा भारी काम हो गया, अच्छा अब वह दूसरा काम बताइये जिसके लिये आपका आना हुआ, क्योंकि आपने कहा था कि दो कारणों से आप इस वक्त आये थे?

इन्द्र०। हां ठीक है, वह दूसरी बात यह है कि—मगर ठहरिए,—आपने अपनी शादी के बारे में क्या निश्चय किया?

गोपाल०। खास तौर पर तो कुछ भी नहीं, क्यों?

इन्द्र०। बलभद्रसिंहजी का एक पत्र मेरे पास आया है। उनके ऊपर जो कुछ मुसीबतें आईं उनका हाल तो आपने सुना ही होगा?

गोपाल०। हां मैंने बहुत अफसोस के साथ सुना कि उनका लड़का जाता रहा।

इन्द्र०। केवल लड़का ही नहीं उनकी स्त्री का भी इन्तकाल हो गया।

गोपाल०। (चौंक कर अफसोस के साथ) यह कब की बात है? मैंने नहीं सुना!!

इन्द्र०। परसों ही की तो, बस लड़के के जाने के दो ही तीन पहर बाद अफसोस और गम से उस बेचारी ने भी अपनी जान दे दी!!

गोपाल० । (रंज के साथ) अफसोस ! उनका घर बर्बाद हो गया !!

इन्द्र० । इसमें क्या शक है ! बेचारे को वही एक लड़का था, और वैसी सुशील स्त्री भी जल्दी किसी को नहीं मिलती, मगर इसी से इन मौतों ने उस बेचारे को एक दम उदास कर दिया है । कल उनकी चीठी मुझे मिली जिससे उस हाल के सिवाय यह भी मालूम हुआ कि उनका इरादा जल्द से जल्द अपनी बड़ी लड़की का व्याह कर इस दुनिया से अलग हो जाने का है ।

गोपाल० । मगर ऐसा करने से फायदा क्या निकलेगा ? अभी दो दो लड़कियां और भी तो हैं !!

इन्द्र० । उनका जिम्मा मैं उठाने को तैयार हूं, बल्कि यह बात मैंने उन्हें लिख भी दी है । आपसे इस सम्बन्ध में मैं यही कहने आया था कि अगर आपका विचार किसी तरह पर बदला नहीं है तो आप जहां तक जल्द हो सके लक्ष्मीदेवी से विवाह कर डालें ।

गोपाल० । आपकी सलाह मान इतना तो मैं पहिले ही निश्चय कर चुका हूँ कि इस साल विवाह कर ही डालूंगा ।

इन्द्र० । हां सो तो आपने कहा था, पर अब इस बात में और भी जल्दी होनी चाहिये । महाराज को गुजरे काफी जमाना बीत चुका, इस लिए वह बाधा भी अब नहीं रही, अब इस काम से भी छुट्टी पा लेना ही मुनासिब है ।

गोपाल० । (कुछ सोच कर) जैसी आपकी इच्छा । मुझे किसी बात में उज्र नहीं है । मैं यह काम आपके ही ऊपर छोड़ता हूं, जो चाहे और जैसा चाहे प्रबन्ध कीजिये ।

इन्द्र० । बस तो ठीक है, मैं आज ही से इस काम में लग जाता हूं और दिन आदि का निश्चय कर बलभद्रसिंहजी को भी सूचना दे देता हूँ ।

गोपाल० । जो मुनासिब समझिये करिये ।

पांचवां बयान

घोर जंगल के बीच में से जाने वाली एक पतली पगडण्डी पर से दो आदमी धीरे धीरे जमानिया की तरफ बढ़ रहे हैं। पाठक इन दोनों को पहिचानते हैं क्योंकि इनमें से एक तो भूतनाथ है और दूसरा उसका विश्वासी साथी और प्रिय शिष्य रामेश्वरचन्द्र, और इसी लिए इनमें जो बातें हो रही हैं वे भी जरूर सुनने लायक होंगी। आइये जरा आगे बढ़ कर सुना जाय।

भूतनाथ ने एक लम्बी सांस ले कर कहा, "सच तो यह है कि अब मेरी बदकिस्मती का जमाना पूरी तरह से शुरू हो गया है। जब कि इतना पुराना और छिपा हुआ भेद जिसको कि मैं समझता था कि शायद यमराज भी न जानते होंगे इस तरह पर प्रगट हो रहा है तो अब बाकी ही क्या रह गया, सिवाय इसके कि या तो मैं अपने हाथ से अपनी जान दे दूँ और या सभी की नजरें बचा कर जानवरों की तरह जंगलों और पहाड़ों में छिपा छिपा फिरूं।"

रामेश्वर०। नहीं नहीं, आपको इस तरह निराश न हो जाना चाहिये। पहिले भी कई दफे इस तरह की घटनाएं आपके साथ हो चुकी हैं, पर आपने हिम्मत के साथ हर बार अपने दुश्मनों का मुकाबला किया और अच्छी तरह उन्हें जक पहुंचाया। जरूर इस बार भी आप वैसा कर सकेंगे। आपको इस वक्त स्थिर हो कर खूब गौर के साथ यह सोचना चाहिये कि यह कार्रवाई किन लोगों की हो सकती है और आप उन्हें किस तरह नीचा दिखा सकते हैं।

भूत०। (एक साफ पत्थर की चट्टान देख उस पर बैठता हुआ) आओ तुम भी यहां बैठ जाओ और यह निर्णय करने में मेरी मदद करो कि यह काम किन लोगों का हो सकता है। मेरी बुद्धि इस समय बेकार हो

रही है, शायद तुम्हारी सहायता पाकर कुछ कर सके।

रामेश्वर०। (भूतनाथ के सामने बैठता हुआ) पहिले तो आप यह सोचें कि किन किन लोगों का इस भेद से सरोकार था और उनमें से कौन अब तक ऐसे बचे हुए हैं जो आपके साथ दुश्मनी करने की नीयत कर सकते हैं।

भूत०। तुम ठीक कहते हो, तो सुनो। यों तो कइयों को इस मामले की जानकारी हो सकती है, पर जो इसके भीतरी रहस्य में शामिल थे या जिनको इस मामले से किसी प्रकार का सम्बन्ध हो सकता है वे सिर्फ इने गिने इतने लोग हो सकते हैं—भुवनमोहिनी का पति कामेश्वर एक, महाराज गिरधरसिंह दो, भुवनमोहिनी का स्वसुर चंचलदास तीन, जमानिया की बड़ी महारानी अर्थात् मायारानी चार, दारोगा पांच, हेलासिंह छः, महाराज बीरेन्द्रसिंह सात, और दलीपशाह आठ। यों तो इन्द्रदेव शेरसिंह प्रभाकरसिंह के पिता दिवाकरसिंह आदि आदि कुछ लोग और भी हैं जिनको इस मामले की थोड़ी बहुत खबर होगी पर जिनका इसके साथ खास तौर पर सम्बन्ध है और जो इस विषय में कुछ कर सकते हैं वे सिर्फ ये ही आठ आदमी हैं।

रामेश्वर०। ठीक है, अच्छा तो अब देखिये कि इनमें से कौन कौन ऐसे हैं जो इतने दिनों के बाद अब आपसे इस पुरानी घटना की कसर निकालने पर आमादा हो सकते हैं। आपके बताये इन आठ आदमियों में से चार तो इस दुनिया को ही छोड़ चुके हैं अर्थात् महाराज गिरधरसिंह, कामेश्वर, चंचलदास, और महारानी, अस्तु इन चारो से तो किसी तरह का खतरा हो ही नहीं सकता। अब रह गये बाकी के चार यानी दारोगा, हेलासिंह, राजा बीरेन्द्रसिंह और दलीपशाह। इनमें से भी जहां तक मैं समझ सकता हूँ और जितना हाल आपने मुझे सुनाया है उससे जो अन्दाज लगा सकता हूं वह यह है कि महाराज बीरेन्द्रसिंह इतने दिनों बाद अब इस पुरानी घटना को लेकर उठ नहीं सकते और अगर मेरी बुद्धि धोखा नहीं

देती तो दारोगा स्वयम् ही इसमें इस कदर सना हुआ है कि इस मामले को उठा या इसमें अगुआ बन आपसे दुश्मनी मोल लेने को तैयार नहीं हो सकता। क्यों आपका क्या खयाल है ?

भूत०। तुम ठीक कहते हो। राजा बीरेन्द्रसिंह और दारोगा इस मामले को उठावें ऐसी सम्भावना तो मुझे नहीं दिखाई पड़ती और यद्यपि दारोगा से मेरी दुश्मनी जरूर है पर वह किसी हालत में भी मुझसे कम इस पाप में सना हुआ नहीं है।

रामेश्वर०। अच्छा तो अब रह जाते हैं सिर्फ दो—हेलासिंह और दलीपशाह। इन दोनों के बारे में आप क्या खयाल करते हैं ?

भूत०। यद्यपि उस गुप्त कुमेटी के मामले में मुझे हेलासिंह के साथ बेमुरौवती करनी पड़ी थी पर फिर भी ऐसा गुमान नहीं होता कि वह इस प्रकार आगे बढ़ कर मुझ पर ऐसी चोट करेगा, क्योंकि वह खुद भी इस मामले में कुछ कम सना हुआ नहीं है। मुझे तो कभी कभी यह भी शक होता है कि दारोगा ने जान बूझ के जैपाल और हेलासिंह को उस मौके पर साथ रक्खा था कि कभी ये बिगड़ कर उसी के खिलाफ न चले जायं। और फिर आखिर उसे भी तो अपनी जान का खौफ होगा और वह यह समझता होगा कि भूतनाथ से दुश्मनी करके वह अपने को किसी तरह सही सलामत नहीं रख सकता। फिर एक बात इसके अन्दर और भी है। तुमको मैंने बताया कि वहां पर जो नकशा खींचा गया था वह हूबहू उस मौके और स्थान की नकल थी जब और जहां वह दुर्घटना मेरे हाथों हुई, और वह स्थान तिलिस्म के अन्दर था। अस्तु उसकी ऐसी सच्ची नकल वही शख्स उतार सकता है जिसने उस स्थान को अपनी आंखों से देखा हो, जिसका मतलब यह कि जो खुद तिलिस्म के अन्दर वहां तक गया हो जहां वह घटना हुई थी, और यह मैं तुमसे कह चुका हूं कि उस समय मै बिल्कुल अकेला था, अस्तु हेलासिंह को वह जगह देखने का न तो मौका ही मिला था और न वह ऐसी ठीक नकल ही उतार सकता है। तो बस, अगर यह काम

किसी का हो सकता है तो दलीपशाह का।

रामेश्वर०। सो कैसे ? क्या दलीपशाह तिलिस्म के अन्दर का हाल जानते हैं, या वह स्थान देखे हुए हैं जहां की यह बात है ?

भूत०। हां, वह उस जगह तक पहुंच चुका है जहां की यह घटना है। (कुछ गौर करने के बाद) हां ठीक है, मुझे अच्छी तरह खयाल है कि जब मैं घबड़ाया हुआ उस जगह के बाहर हो रहा था तो रास्ते में दलीपशाह को मैंने देखा था, यद्यपि उस वक्त भागने की फिक्र में मैं इस बात पर बिल्कुल गौर न कर सका कि वह वहां किस लिए आया है या क्या कर रहा है। ठीक है, यही बात है, यह काम जरूर दलीपशाह का ही है। किसी दूसरे का नहीं।

रामेश्वर०। आपका सोचना ठीक हो सकता है, पर मुझे विश्वास नहीं होता कि दलीपशाह की यह कार्रवाई होगी।

भूत०। क्यों ?

रामेश्वर०। एक तो जब इतने दिनों तक दलीपशाह ने इस बारे में कुछ न किया तो अब क्या कारण हुआ कि वे यकायक इस तरह आपके ऊपर हमला कर बैठे, दूसरे इधर आपसे उनसे बहुत दिनों से किसी तरह का कोई नया झगड़ा भी नहीं हुआ, तीसरे वे इस समय खुद अपनी जमींदारी की झंझटों में इस कदर सख्त परेशान हैं कि आप जैसे कट्टर आदमी को अपना दुश्मन बना कर और भी बड़ी एक आफत मोल खरीद लें ऐसी गलती नहीं कर सकते, अस्तु उनका यह काम होगा ऐसा कम से कम मेरी बुद्धि तो नहीं कहती।

भूत०। मगर उसके सिवाय किसी दूसरे का यह काम हो भी नहीं सकता। भुवनमोहिनी उसकी बहुत ही प्यारी बहिन थी और मुझे खूब मालूम है कि जिस समय की यह घटना है उस समय उसने तलवार हाथ में ले कर इस बात की प्रतिज्ञा की थी कि जिसने इस लड़की का खून किया है उसका सिर अपने हाथ से काटेगा। पर वह तो कहो घटनाक्रम ऐसा हो

गया कि उसे अब तक ठीक ठीक इस बात का पता ही न लगने पाया कि वह काम था किसका। अगर वह जान गया होता कि मैंने ही वह काम किया है तो वह आज तक कभी का मेरी जान पर वार कर चुका होता। यह सम्भव हो सकता है कि अब उसे यह बात मालूम हो गई हो और उसने यह ढंग मुझसे बदला लेने का निकाला हो ?

रामेश्वर० । हो सकता है, आपसे ज्यादा इस विषय में मैं कुछ सोच नहीं सकता, मगर फिर भी दलीपशाह का यह काम है ऐसा मानने का यकायक·····

भूत० । मुझे तो सौ में नब्बे दर्जे यह काम उसी का मालूम होता है और मैं यही मुनासिब समझता हूँ कि इस बारे में सबसे पहिले उसी की जांच की जाय। इतना ही नहीं, बल्कि इस सम्बन्ध में मै तुमसे भी कुछ काम लेना चाहता हूँ।

रामेश्वर० । जो आज्ञा हो मै बजा लाने को तैयार हूं, पर अपनी तरफ से इतना जरूर कहूँगा कि दलीपशाह के विरुद्ध कोई कड़ी कार्रवाई करने के पहिले आपको इस बात की जांच अच्छी तरह पर कर लेनी चाहिये कि यह काम उसी का है। मुमकिन है कि किसी दूसरे ही की यह कर्तूत हो और आप दलीपशाह पर केवल व्यर्थ का शक ही न कर रहे हों बल्कि उस शक के कारण उन असल में इस काम को करने वालों की तरफ से बेफिक्र रह जांय और वे बेखौफ आगे की कार्रवाई करते चले जांय, क्योंकि इसमें तो कोई शक नहीं हो सकता कि जब इतने दिन का पुराना यह फोड़ा इस तरह पर फूटा है तो अभी आपको अच्छी तरह तकलीफ दिये बिना सहज में आराम न होगा। यह बात मैं सिर्फ इसी खयाल से नहीं कहता कि अगर दलीपशाह बेकसूर हैं तो आपकी कार्रवाइयों पर नाराज हो कर आपके दुश्मन बन बैठेंगे, बल्कि यह सोच कर भी कह रहा हूँ कि जिन लोगो ने इस अद्‌भुत ढंग से इस काम का श्रीगणेश किया है वे सिर्फ इतना ही करके रह न जायंगे बल्कि और भी कुछ रंग लायेंगे।

भूत० । इसमें क्या शक है ! परन्तु मैं इस तरफ से भी बेफिक्र नहीं हूं । इसी बात की जांच करने के वास्ते मैं अपने दोनों शागिर्दों रामगोविन्द और बलदेव को ताकीद कर आया हूं कि उसी जगह रह कर बड़ी सावधानी के साथ छिपे छिपे इस बात का पता लगावें कि उस मूरत आदि को वहां बैठाने और वह विचित्र तथा मेरे लिये त्रासदायक नाटक करने वाला कौन है । इसमें कोई शक नहीं कि उन सब चीजों की जांच करने या उनको वहां से हटा देने के लिये वह जरूर वहां फिर भी कभी न कभी पहुंचेगा । उस समय उसको पहिचान लेना या गिरफ्तार कर लेना कोई कठिन बात न होगी और उसी समय इस बात का भी पता लग जायगा कि इस काम का करने वाला अगर दलीपशाह नहीं है तो कौन है ।

रामेश्वर० । ठीक है, यह आपने बहुत अच्छी बात सोची है, अगर बलदेव और रामगोविन्द होशियारी के साथ काम कर सके तो बेशक कुछ न कुछ पता लग ही जावेगा ।

भूत० । वे दोनों बहुत ही होशियार और चालाक हैं, उनकी कारीगरी पर तुम्हें किसी तरह का शक नहीं करना चाहिये ।

रामेश्वर० । नहीं, मैंने उनकी कारीगरी पर शक करके यह बात नहीं कही बल्कि उस भयानक पिशाच को लक्ष्य करके कही जिसके बारे में आपने कहा कि वह अचानक प्रगट हुआ और फिर गायब भी हो गया ।

भूत० । (उस पिशाच की याद से कांप कर) हां ठीक है, उस नर-पिशाच से अगर वे अपने को बचाये रह सकें तभी कुछ कर पावेंगे नहीं तो कुछ नहीं ।

रामेश्वर० । बेशक यही बात है । मगर यह तो कहिये कि उस शैतान की उत्पत्ति को आप क्या समझते हैं ? क्या वह भी किसी की ऐयारी या चालकी की पैदाइश है या वह किसी तरह का आसेब है ? जैसा वर्णन आपने उस भयानक पिशाच का किया उसे सुन कर मैं तो कांप गया ।

भूत० । तुम उसका विवरण सुन कर कांप गये और मैं उसको अपने

सामने प्रगट होता हुआ देख कर भी अपने होशहवास में रहा और जब तक उसकी भयानक बातों ने मुझे बदहवास न कर दिया बराबर इसी बात पर गौर करता रहा कि यह वास्तव में कोई भूत प्रेत या आसेब है या किसी तरह की ऐयारी।

रामेश्वर०। तब आपने क्या निश्चय किया? क्या वह कोई भूत या प्रेत था अथवा.....

भूत०। (हंस कर) भला तुम भी लड़कों की तरह भूत प्रेतों पर विश्वास करने लगे! बलदेव और रामगोविन्द की अभी कच्ची उमर है, उन्होंने अगर उसे कोई अद्भुत जीव मान लिया तो दूसरी बात है पर मैं कब ऐसा कर सकता हूँ? जो विचित्र जीव हम लोगों के सामने प्रगट हुआ वह अवश्य ही किसी तरह की चालाकी और कारीगरी का नमूना था। उसकी घबड़ाहट पैदा कर देने वाली बातें सुनता हुआ भी मैं बराबर इस बात पर गौर कर रहा था कि वह विचित्र सूरत किस प्रकार की थी और मैंने देखा कि उस शैतान का सामने का हिस्सा यद्यपि मनुष्य की हड्डियों के ढांचे के आकार का था पर पिछला हिस्सा वैसा न था और उस तरफ से देखने से इस बात का शक हो सकता था कि किसी तरह के पर्दे के पीछे छिपी कोई चीज—चाहे वह जो कुछ भी हो—यह सब काम कर रही है। अगर मैं उसकी आखिरी बातें सुन बदहवास न हो जाता तो जरूर इस मामले पर कुछ और गौर करता और सम्भवतः इसकी जांच भी करता कि वह क्या बला है पर, अफसोस इसका मौका ही न मिला। फिर भी यह बात मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि अबकी अगर वह विचित्र शकल मेरे सामने आवे तो मैं उसके बारे में बिना कुछ पता लगाये न रहूं, इसमें कोई शक नहीं कि वह जरूर किसी तरह की ऐयारी या तिलिस्मी कारीगरी है और यह भी एक ऐसी बात है जो दलीपशाह पर होने वाले मेरे शक को बढ़ाती है क्योंकि दलीपशाह इन्द्रदेव का दोस्त है और इन्द्रदेव को जरूर किसी न किसी तिलिस्म से कोई सम्बन्ध है, जिसकी बदौलत सहज ही में वे

ऐसी कोई चीज दलीपशाह की मदद के लिये निकाल कर दे सकते हैं।

रामेश्वर०। हो सकता है कि आपका खयाल ठीक हो! अच्छा तो अब मुझे आप क्या आज्ञा देते हैं?

भूत०। बस वही जो मैं पहिले कह चुका। तुम इस बात का पता लगाओ कि दलीपशाह को इस घटना से कहां तक सम्बन्ध है, मगर इसके पहिले कि तुम इस काम पर रवाना होवो कुछ देर तक और मेरे साथ रहो। जैसा कि मैं पहिले कह चुका हूं—मैं इस सम्बन्ध में सब से पहिले दारोगा से मिल कर इस बात की जांच करना चाहता हूँ कि इस घटना से उसका कहां तक सम्बन्ध है, पर उसके घर जाने के लिये कुछ मदद साथ ले कर जाना मुनासिब है। इधर मैंने उसे बहुत तंग किया है जिससे वह मुझसे बेतरह जला हुआ है, शायद अकेले जाने से वह किसी तरह का वार मुझ पर करे, इसलिये आज कल जब भी मैं उससे मिलने जाता हूं गुप्त रूप से कोई न कोई मददगार जरूर अपने साथ रखता हूँ। उससे मिल कर मैं खाली हो जाऊं तो फिर मैं रोहतासगढ़ चला जाऊंगा और तुम मिर्जापुर चले जाना।

रामेश्वर०। रोहतासगढ़ क्या करने जाइयेगा?

भूत०। वही पुराना झगड़ा और क्या?

रामेश्वर०। क्या वह अभी तक खतम नहीं हुआ?

भूत०। नहीं कहां से! तुमने शायद सुना ही होगा कि अब नन्हों वहीं जा कर बस गई है और घर आने का नाम भी नहीं लेती और इससे मेरा तरद्दुद और भी बढ़ रहा है।

रामेश्वर०। वह कम्बख्त भी एक ही कमीनी है! मैंने उसके बारे में इधर कुछ ऐसी बातें सुनी हैं जिनसे मालूम होता है कि कभी न कभी उसके हाथों आपको तकलीफ उठानी पड़ेगी।

भूत०। बेशक यही बात है और इसी लिये तो मैं इस फेर में पड़ा हुआ हूँ कि उसका खरखशा हमेशा के लिये मिटा दिया जाय। पर मालूम

होता है कि उसको किसी तरह मेरे इरादे का पता लग गया है क्योंकि जब से मैं उसके पीछे पड़ा हूं तभी से वह भी भागी भागी फिर रही है, कभी काशी कभी जमानिया कभी शिवदत्तगढ़ और कभी रोहतासगढ़ भागती रहती है।

रामेश्वर०। तो क्या आप उसे गिरफ्तार करना चाहते हैं?

भूत०। नहीं नहीं, उसे पकड़ कर मै क्या करूंगा!

रामेश्वर०। तब फिर क्या कीजिएगा? इधर कई बार आपके मुंह से मै उसका नाम सुन चुका हूँ और यह भी जानता हूं कि आपको उसके कारण बहुत तरद्दुद पैदा हो गया है पर ठीक ठीक क्या बात है यह जानने में न आया।

भूत०। इसका किस्सा बहुत लंबा चौड़ा है, खुलासे तौर पर तो फिर कभी सुनना, संक्षेप में बात यह है कि इसको भी मेरे मामले से बहुत गहरा सम्बन्ध है। यह रिश्ते में दलीपशाह की कोई होती है और पहिले रणधीरसिंह के महल में सहेलियों की तरह रहती थी। चालचलन ठीक न रहने से इसको उन्होंने निकाल दिया। स्वतन्त्र होने से यह और भी खुल खेली। न जाने किस तरह शिवदत्त के पास चुनार जा पहुँची। वह जब राजा बीरेन्द्रसिंह से हार कर भाग गया तो यह फिर मिर्जापुर लौटी पर तब तक इतनी बदनाम हो चुकी थी कि दलीपशाह ने उसे उस शहर में रहने देने में अपनी बदनामी समझी और दूसरी जगह जाकर बसने के लिये कहा। तब यह जमानिया पहुँची और दारोगा साहब की प्रेमपात्री हुई। उनके यहां जब मनोरमा का जोर बढ़ा तब यह उनसे रूठ कर वहां से भी चल दी और कई बरस तक न जाने कहां कहां की खाक छानती रही, अब रोहतासगढ़ में दिखाई देने लगी है। मेरे मामलों में इसको न जाने क्यों शुरू से ही बड़ी दिलचस्पी रही और इसे मेरा बहुत कुछ हाल भी मालूम है, कुछ तो दलीपशाह के कारण कुछ रणधीरसिंह के यहां रहने के कारण और कुछ दारोगा और शिवदत्त के साथ की बदौलत।

पर अभी तक कभी इसके तरफ से कोई ऐसी बात नहीं हुई थी कि जिससे मुझे यह शक होता कि यह मुझसे सिवाय डरने के और किसी तरह का भाव रखती है ?

रामेश्वर० । तो अब क्यों वह आपसे दुश्मनी करने लगी ?

भूत० । ठीक ठीक तो मैं कुछ नहीं कह सकता पर शक करने लायक बहुत सी बातें मिली हैं, खास तौर पर तब से जब से मुझे यह मालूम हुआ है कि रणधीरसिंह के यहां नौकरी करने के पहिले यह जमानिया महल में थी और उस समय मायारानी की बहुत मुंहलगी सहेलियों में से थी जब की वह घटना है ।

रामेश्वर० । तब क्या यह सम्भव नहीं है कि उस घटना के बारे में भी यह जानकारी रखती हो ?

भूत० । बेशक यही बात है और इसलिये मैं उसकी तरफ से निश्चिन्त नहीं हूँ ।

रामेश्वर० । लेकिन अगर सिर्फ इतनी ही सी बात है तो बहुत ज्यादा परेशानी की कोई बात तो नहीं जान पड़ती ।

भूत० । रोहतासगढ़ में उसका जाना मतलब से खाली नहीं है । तुम्हें शायद न मालूम होगा कि दिग्विजयसिंह को तिलिस्म से बहुत गहरा सरोकार है और साथ ही वह शिवगढ़ी भी उसी की रियासत के अन्दर पड़ती है जिसके अनमोल खजाने की लालच ने मुझसे वह काम कराया था । दिग्विजयसिंह बहुत दिनों से इस फिराक में है कि शिवगढ़ी की ताली उसके हाथ लग जाय और वह वहां की दौलत अपने कब्जे में कर ले पर इस काम में सफल नहीं होता क्योंकि वहां की ताली अब किसके पास है यह उसे मालूम नहीं है ।

रामेश्वर० । मगर इससे आपको तरद्दुद क्यों ? क्षमा कीजियेगा, अगर मैं बहुत खोद बिनोद कर रहा हूं तो इसका कारण यही है कि आपकी बातें मेरा कौतूहल बढ़ाती जा रही हैं और मैं नन्हों का ठीक ठीक

भेद जानने को व्याकुल हूं जिसका एक सबब और भी है जो मैं फिर कभी आपसे कहूंगा, अस्तु वह यदि कोई ऐसी बात न हो जिसको आप बहुत गुप्त रखना चाहते हैं तो मुझे बताइये। आप विश्वास रखिये कि मेरी जुबान से आपका कोई गुप्त भेद कदापि किसी दूसरे पर प्रगट नहीं होगा चाहे कोई मेरे बदन के टुकड़े टुकड़े भी कर डाले।

भूत०। (मुस्कुरा कर) नहीं नहीं रामेश्वरचन्द्र! तुम मेरे सब से विश्वासी शिष्य हो और तुमसे मैं कोई भी बात छिपाना पसन्द नहीं करता। अगर कभी कुछ छिपाने की जरूरत पड़ भी जाती है तो मौका आते ही मैं तुम पर सब बातें प्रगट कर देता हूं, जिसे तुम बखूबी जानते भी हो। अस्तु मैं इस भेद को भी तुमसे छिपाऊँगा नहीं, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि जीते जी कभी तुम्हारी जुबान से यह किसी दूसरे पर प्रगट न होगा। मगर अब यहां बैठने से कोई लाभ नहीं, अब हम लोगों को अपना सफर शुरू कर देना चाहिये जिसमें रात होने के पहिले ही जमानिया पहुंच जा सकें।

इतना कह भूतनाथ खड़ा हुआ और रामेश्वरचन्द्र ने भी वैसा ही किया। दोनों आदमी आपुस में बातें करते हुए जमानिया की तरफ रवाने हुए।

छठवां बयान

रात आधी से कुछ ऊपर जा चुकी है। भयानक जङ्गल सांय सांय कर रहा है। रह रह कर दरिन्दे जानवरों के बोलने की आवाजें आती हैं जो कमजोर कलेजों को दहला सकती हैं पर उन दो बहादुरों पर इसका कोई असर नहीं है जो एक छोटे मन्दिर के बाहरी चबूतरे पर बेफिक्र पड़े सो रहे हैं।

पर नहीं, हमारा खयाल गलत है। ये दोनों नींद में गाफिल नहीं हैं बल्कि होशियार और चौकन्ने होते हुए भी शायद किसी कारणवश इस तरह पड़े हुए हैं, क्योंकि यकायक किसी तरह की आहट पाते ही उनमें से एक ने करवट बदली और कुछ देर तक आवाज पर गौर करने बाद दूसरे

को जगाने का इरादा करके घूमा परन्तु उसे भी अपनी ही तरह जागा और उस आहट पर गौर करता हुआ पाया। आवाज तेज होने लगी और थोड़ी ही देर में साफ मालूम हो गया कि कोई हलकी डोंगी तेजी के साथ उस तरफ आ रही है। अब एक ने दूसरे से कहा, "कोई आ रहा है।" दूसरे ने कहा, "जरूर, और सम्भव है ये लोग वे ही हों जिनकी हम राह देख रहे हैं।" पहला बोला, "यहां से हट जाना बेहतर होगा।" दूसरे ने जवाब दिया, "बेशक, मगर यहां से दूर भी न जाना चाहिये।"

दोनों ने जल्दी जल्दी कुछ और सलाह की और तब वहां से हट कर उस बड़े बरगद के पेड़ के ऊपर जा चढ़े जो उस मन्दिर के सामने और नदी से कुछ ही हट कर था। अभी मुश्किल से कुछ ऊंचाई पर पहुँच कर इन्होंने अपने को पत्तियों की आड़ में किया होगा कि वह आने वाली डोंगी उस मन्दिर के नीचे पहुँच कर रुक गई और उस पर से कई आदमी उतर कर उधर ही बढ़ते हुए दिखाई पड़े।

ये आने वाले गिनती में पांच या छः थे पर इनकी शकल सूरत या पौशाक के बारे में कुछ भी जानने की इजाजत वहां का घना अन्धकार हमें नहीं देता। कुछ देर तक तो ये लोग उस मन्दिर के पास खड़े आपुस में कुछ बातें करते रहे और तब वहां से हट कर एक तरफ को रवाना हुए। उनके जाने के कुछ ही देर बाद पेड़ पर चढ़े वे दोनों आदमी भी उतरे और दबे पांव उनके पीछे पीछे जाने लगे। थोड़ी दूर गये होंगे कि एक ने दूसरे से धीरे से कहा, "गोविन्द, ये सब तो उधर ही को जा रहे हैं!" दूसरे ने जवाब दिया, "हां भैया! और जरूर इनको उस मामले से कुछ सरोकार है!!" पहिले ने कहा, "ऐसा ही मेरा भी दिल कहता है।"

पाठकों की जानकारी के लिए हम बता देना चाहते हैं कि ये दोनों भूतनाथ के शागिर्द वे ही बलदेव और रामगोविन्द हैं जिन्हें वह उस स्थान का भेद लेने के लिये छोड़ गया है और जिनका हाल हम सोलहवें हिस्से के अन्तिम बयान में लिख आये हैं।

नाव पर से आने वाले वे आदमी सीधे उसी चहारदीवारी के पास पहुँचे और पारी पारी से एक एक करके उसके अन्दर टप गये। हम अब थोड़ी देर के लिये भूतनाथ के ऐयारों का साथ छोड़ देते हैं और इन लोगों के साथ चल कर देखते हैं कि ये किस नीयत से यहां आये और क्या चाहते हैं।

वे सब के सब उस बीच वाली मूरत के पास जाकर खड़े हो गये और कुछ देर तक चारो तरफ की आहट लेते रहे। जब अच्छी तरह विश्वास हो गया कि वहां एक दम सन्नाटा है और कोई गैर आदमी उनकी कार्रवाई देखने वाला वहां पर नहीं है तो एक आदमी ने अपने कपड़ों के अन्दर से चोर लालटेन निकाल कर बाली। उसको हलकी रोशनी में मालूम पड़ा कि वे लोग गिनती में पांच हैं और सब के सब काली पौशाक और नकाब से अपने अपने बदन और सूरतें छिपाये हुये हैं।

इन पांचों में से एक आदमी जो सभों का सरदार मालूम होता था आगे बढ़ा और लालटेन उठा कर उसकी रोशनी में उसने वहां की चीजों को खूब गौर से देखा, तब उसने अपने साथियों से कहा, "सब कुछ ठीक है, तुम लोग अपने हाथ का सामान रख दो और सब कोई मिल कर इस मूर्ति को हटा इसके नीचे वाला रास्ता खोल डालो।"

लालटेन की रोशनी में दिखाई दिया कि वे सभी आदमी तरह तरह का सामान हाथों में उठाये हुए थे जो उन्होंने वहीं जमीन पर रख दिया और तब सर्दार के हुक्म मुताबिक पास जाकर उस मूर्ति को जमीन से उठाने लगे। अब मालूम हुआ कि वह मूरत जमीन में जड़ी हुई न थी बल्कि सिर्फ रक्खी हुई थी और साथ ही भीतर से पोली भी थी क्योंकि मूर्ति के हटते ही उसके नीचे से एक छोटी सी लाल रंग की पिंडिका निकल पड़ी जो लम्बाई चौड़ाई में बालिश्त या डेढ़ बालिश्त से अधिक न होगी। यह पिंडिका एक छोटे से संगीन चबूतरे पर बनी हुई थी जो किसी वक्त जरूर जमीन की सतह से ऊंचा रहा होगा पर इस समय तो आस पास की जमीन

के मुकाबले ही में दबा हुआ या दबा दिया गया था। उस सरदार ने अपने आदमियों से कहा, "मूरत को अलग रख दो और पिंडिका के नीचे वाला चबूतरा खाली करो।"

जमीन खोदने का सामान उनके साथ मौजूद था जिसकी मदद से बात की बात में उस पिंडिका के चारो तरफ की हाथ हाथ भर जमीन खोद डाली गई और अब काले पत्थर का बना हुआ एक चबूतरा साफ दिखाई पड़ने लगा। खोदी हुई मट्टी हटा कर दूर कर दी गई और तब वह सरदार आगे बढ़ कर उस चबूतरे के पास पहुँचा। पिंडी पर हाथ रख कर उसने कोई खास तर्कीब की जिसके साथ ही उस चबूतरे का पश्चिम तरफ वाला पत्थर खुल कर किवाड़ के पल्ले की तरह भीतर को घूम गया और एक छोटा रास्ता जिसके अन्दर आदमी मुश्किल से जा सकता था दिखाई देने लगा। वह आदमी अब पीछे हट आया और बाकी लोगों से बोला, "लो रास्ता खुल गया, अब नाव से लाया हुआ सब सामान तथा यहां की भी ये चीजें अन्दर ले चलो।"

उनमें से एक आदमी ने उस रास्ते के पास जाकर कहा, "और सब चीजें तो चली जायंगी पर इस मूरत का इस छोटे रास्ते जाना कठिन होगा।" सरदार ने कहा, "वही तो मैं भी सोच रहा हूँ। अच्छा गोपाल! तुम भीतर जाकर देखो तो सही? शायद वहां देखा भाली करने से इस मूरत को भी अन्दर करने की कोई तर्कीब निकल आवे!"

उनमें से एक आदमी जो सब में फुर्तीला और चालाक मालूम होता था यह सुनते ही आगे बढ़ा और उस छेद के अन्दर सिर डाल कर कुछ देर तक देखने के बाद भीतर चला गया। पर अन्दर जाते ही उसने फिर सिर बाहर निकाला और कहा, "भीतर एक लम्बी चौड़ी और काफी कुशादा सुरंग है जिसमें दो आदमी साथ साथ बखूबी चल सकते हैं पर इस सुरंग के अन्दर कुछ दूर पर एक रोशनी दिखाई पड़ रही है जो पल पल में तेज होती जा रही है। जान पड़ता है कि कोई आदमी रोशनी लिये इसी

तरफ को चला आ रहा है।" यह बात सुन सर्दार ने कहा, "अच्छा तुम बाहर निकल आओ, मैं अंदर जाकर देखता हूं कि क्या मामला है।"

उस आदमी के बाहर आते ही वह सर्दार उस सुरंग के अन्दर घुसा और तब उसकी भी निगाह उस रोशनी पर पड़ी जिसके बारे में पहिले आदमी ने कहा था। यह रोशनी कुछ कुछ हरापन लिये हुए एक विचित्र ढंग की थी जिसको देखते ही इस आदमी ने पहिचान लिया और कहा, "गुरूजी आ रहे हैं! मगर ताज्जुब की बात है कि इन्हें हम लोगों के आने की खबर क्योंकर लगी!"

यह आदमी उसी तरफ बढ़ा और शीघ्र ही उस आने वाली रोशनी के पास पहुंच गया। उसने देखा कि वह रोशनी एक पीतल की जालदार लालटेन की है जिसे हाथ में लिये एक आदमी जिसकी सूरत अन्धेरे के कारण साफ दिखाई नहीं पड़ रही है तेजी के साथ उसी तरफ को आ रहा है। पास पहुंचते ही उस आगन्तुक ने लालटेन वाला हाथ ऊंचा किया किया और इस सर्दार की तरफ देख जिसने उसके सामने होते ही अपनी नकाब उलट दी थी कहा, "कौन, श्यामसुन्दर!" सर्दार ने कहा, "हां गुरुजी मैं ही हूं!" और तब उसके पैरों पर गिर पड़ा। उस आदमी ने प्रसन्नता के साथ उसे उठाया और गले से लगाते हुए कहा, "मालूम होता है सब काम पूरा पूरा उतरा है क्योंकि तुम्हारे चेहरे से प्रसन्नता प्रगट हो रही है।"

श्यामसुन्दर ने कहा, "जी हां गुरूजी, आपकी कृपा से हमलोग अपने काम में पूरी तरह सफल हुए और वह सब सामान जिसके बारे में आपने कहा था यहां पर मौजूद है। हम लोग उसे इस सुरंग के अन्दर लाने की ही कोशिश कर रहे थे कि आपके हाथ की रोशनी दिखाई पड़ी जिससे रुक गये।" "वाह शाबाश!" कह कर उस आदमी ने श्यामसुन्दर की पीठ पर हाथ फेरा और तब कहा, "अच्छा चलो पहिले सब सामान अन्दर कर लें तब तुम बताओ कि कैसे क्या क्या हुआ।"

जब तक कि उसका नाम या असल परिचय न मालूम हो तब तकके

लिए हम इस नये आदमी का नाम रामचन्द्र रख देते हैं। श्यामसुन्दर और रामचन्द्र उस सुरंग के मुहाने पर पहुंचे जहां आवाज देकर श्यामसुन्दर ने अपने बाकी साथियों को भी सुरंग के भीतर बुला लिया। रामचन्द्र ने अपने हाथ की लालटेन ऊंची कर कोई खटका ऐसा दबाया कि उसमें से निकलने वाली रोशनी इतनी तेज हो गई कि अब उन बाकी आदमियों की शकल अच्छी तरह देखी और पहिचानी जा सकती थी। श्यामसुन्दर के के इशारे पर गोपाल ने भी रामचन्द्र के पैरों पर सिर रक्खा जिसने उसको प्यार के साथ उठा कर गले लगाया और कहा, "श्यामसुन्दर से यह सुन मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम लोगों को जिस नाजुक काम पर मैंने लगाया था उसमें तुम लोग अच्छी तरह सफल हुए। मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ जिसने ऐसे होशियार और बुद्धिमान शागिर्द मुझे दिये। अच्छा अब फुर्ती करो और जो कुछ सामान तुम्हें मिला है उसे भीतर करके सुरंग का रास्ता बन्द कर दो क्योंकि अभी हम लोगों को बहुत दूर जाना और बहुत कुछ करना है।" श्यामसुन्दर ने यह सुन कहा, "और सब सामान तो आ जायगा पर वह मूरत बहुत बड़ी है और इस तंग रास्ते से अन्दर न आ सकेगी।" रामचन्द्र ने यह सुन कर कहा, "यह तरद्दुद तो बहुत सहज में दूर किया जा सकता है!" और तब सुरंग की दीवार में बने एक आले में हाथ डाल कर कोई तर्कीब ऐसी की कि उस मुहाने के बगल की एक सिल्ली और भी हट कर घूम गई और अब वहां पर काफी बड़ा रास्ता दिखाई पड़ने लगा। श्यामसुन्दर ने यह देख अपने आदमियों से कहा, "लो अब तुम लोग फुर्ती करो।" जिसे सुनते ही वे लोग बाहर चले गये और वहां का सब सामान उठा उठा कर सुरंग के अन्दर पहुँचाने लगे।

बाहर के मैदान में क्या क्या चीजें थीं यह हमारे पाठक बखूबी जानते हैं क्योंकि वे इस सामान को उस समय देख चुके हैं जब कि वे भूतनाथ के साथ इस जगह आये थे, और बाकी का जो कुछ सामान नाव के जरिये ये लोग लाये थे वह भी वही है जिसे वे सोलहवें हिस्से के छठे बयान में

देख चुके हैं अस्तु उन सभों का यहां पर जिक्र करने और उनका बयान इस जगह दोहरा कर कहने की कोई जरूरत नहीं। मुख्तसर यह कि बात की बात में वह सब सामान सुरंग के अन्दर आ गया और बाहर का मैदान एक दम साफ हो गया। अब उस सुरंग का दर्वाजा बन्द कर दिया गया, रामचन्द्र के हुक्म से वह सब उठा लिया गया, और आगे आगे रामचन्द्र हुआ तथा उसके पीछे वे सब आदमी जाने लगे

यह सुरंग बहुत ही लम्बी पेचीली और घुमावदार थी जिसमें जगह जगह पर दर्वाजे भी बने हुए थे जिन्हें रामचन्द्र बराबर खोलता और बन्द करता हुआ चला जा रहा था। दो घण्टे से ऊपर समय तक ये लोग बराबर चले गये और इस बीच में गर्मी थकावट और बन्द हवा में चलने की परेशानी से सभी लोग पसीने पसीने हो गये। आखिर किसी तरह सुरंग खतम हुई और उन लोगों ने अपने को एक ऐसी कोठरी में पाया जो आठपहली बनी हुई थी और जिसके बीचोबीच में एक मोटे खम्भे के ऊपर एक शेर की मूरत बैठाई हुई थी। रामचन्द्र ने इस शेर की बाईं आंख में अपनी उँगली डाली और जोर से दबाया। इसके साथ ही सामने की दीवार की एक सिल्ली चूहेदानी के पल्ले की तरह ऊपर को उठ गई और वहां एक रास्ता दिखाई पड़ने लगा। एक दूसरी सुरंग दिखाई पड़ी जो पहिली सुरंग की बनिस्बत कुछ पतली थी पर इसकी लम्बाई हजार गज से ज्यादा न थी जिस कारण इसे इन सभों ने शीघ्र ही पार कर लिया और तब सब लोग एक दर्वाजे के पास पहुंचे जो बन्द था। एक खटका दबा कर यह दर्वाजा भी खोला गया और सामने की कुछ सीढ़ियां चढ़ ये लोग एक छोटे से बाग में पहुँचे।

हमारे पाठक इस बाग को देखते ही पहिचान लेंगे क्योंकि यह वही है जिसमें सरस्वती उस समय आई थी जब तिलिस्मी घाटी में घुस कर दारोगा और जैपाल जमना और दयाराम को पकड़ ले गये थे और वह उनका पीछा करती हुई एक चबूतरे पर चढ़ कर शेरों वाले कमरे में पहुंची

थी, और यह छोटी सुरंग भी वही है जिसकी राह जमना सरस्वती और दयाराम को तिलिस्म में कैद कर दारोगा और जैपाल पुनः इस बाग में वापस लौटे थे।*

सब आदमियों ने अपने अपने बोझ जमीन पर रख दिये और जमीन पर बैठ कर सुस्ताने लगे, पर रामचन्द्र श्यामसुन्दर को लिये हुए कुछ दूर हट गया और एक संगमर्मर के चबूतरे पर बैठ कर बातें करने लगा।

रामचन्द्र०। अच्छा अब कह जाओ कि क्या क्या हुआ और तुम लोगों ने क्या क्या काम किया?

श्याम०। बहुत अच्छा, मैं सब हाल शुरू से कहता हूं। आपका पत्र लेकर मैं सीधा दारोगा साहब के पास चला गया। वे कुछ बीमार थे पर यह सुन कर कि मैं रोहतासगढ़ से आ रहा हूं उन्होंने तुरत मुझे अपने पास बुलवा लिया। मैंने पत्र उनके हाथ में दे दिया।

रामचन्द्र०। पढ़ कर तो वे बड़ा चकराये होंगे!

श्याम०। बेतरह, देर तक ताज्जुब के साथ मेरा मुंह देखते रहे, अन्त में बोले, "इन बातों का पता उन्हें क्योंकर लगा?" मैंने जवाब दिया कि इस बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता—जिस पर वे बहुत झुंझला कर कहने लगे, "अगर मुझसे साफ साफ सब बातें नहीं कहनी हैं तो सीधे बैरंग वापस जाओ और अपने गुरूजी से कह दो कि मैं इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कर सकता।

रामचन्द्र०। (हंस कर) तब तुमने क्या जवाब दिया?

श्याम०। मैंने कहा कि बहुत अच्छा, जो कुछ आपका जवाब हो उसे इसी चीठी की पीठ पर लिख दीजिये मैं जाकर दे दूंगा। इस पर बोले कि अच्छा कल आना मैं सोच कर जवाब लिख रक्खूंगा, लेते जाना। मैंने कहा, "कोई हर्ज नहीं मैं कल ही आ जाऊँगा, क्योंकि आपका जवाब सुन कर अब मुझे गदाधरसिंह से मिलना जरूरी हो गया।" इस पर वे घबराए

* भूतनाथ दसवां हिस्सा सातवां बयान देखिये।

और बोले कि गदाधरसिंह से तुम्हें क्या काम ? मैंने जवाब दिया कि गुरूजी ने कहा है कि अगर दारोगा साहब इस बारे में कुछ न करें तो भूतनाथ के पास जाना और उसे सब हाल कहना, आशा है कि वह सब कुछ सही सही बता देगा। गुरूजी ने उसके नाम की भी एक चीठी मुझे दी है। इससे आज का दिन समाप्त हो जायगा क्योंकि वह न जाने कहां मिलें। आप जवाब तैयार रखिये मै कल आ कर ले जाऊंगा। यह सुनते ही तो वे ठण्ढे पड़ गये और कहने लगे कि भूतनाथ वाली चीठी में उन्होंने क्या लिखा है क्या तुम जानते हो ? मैंने जवाब दिया कि नहीं ठीक ठीक तो नहीं मालूम पर जो आपके पत्र का मजमून है करीब करीब वही उनके पत्र का भी होगा। मेरी बात सुन कुछ गौर में पड़ गये और फिर देर तक कुछ सोचने के बाद बोले, "तुम जानते ही हो कि तिलिस्म कैसी भयानक जगह है और उसके अन्दर जाने वाला किस तरह कदम कदम पर खतरे में पड़ सकता है। पर खैर वे जब ऐसा चाहते ही हैं तो मै तुम्हें ले चल कर वह स्थान दिखा दूगा।" मैंने खुश हो कर कहा, "तब कब चलियेगा !!" उन्होंने दूसरे दिन सुबह चलने को कहा।

दूसरे दिन सुबह ही मै उनकी खोपड़ी पर फिर जा मौजूद हुआ। कुछ देर बाद वे उठे और मुझे लेकर तिलिस्म में चलने को तैयार हुए। हम लोग लोहगढ़ी पहुंचे और वहां से बहुत से चक्करदार रास्तों से होते हुए उस जगह पहुंचे जहां का हाल आपने बताया था। उस स्थान को मैंने ठीक वैसा ही पाया जैसा कि आपने बयान किया था और एक बार आंख से देख लेने से मेरे मन में वहां का बिल्कुल नक्शा बैठ गया। जब उन्होंने पूछा कि बस देख चुके न ? तो मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और कहा कि जी हां बस अब मेरा काम बखूबी बन जायगा। हम लोग वापस लौटे। उनसे मैंने छुट्टी ली और तुरत अपने काम में लग गया। उस मन्दिर के पास ही जहां भूतनाथ अकसर आकर टिकता है, मेरे आदमियों ने मिट्टी का एक बाड़ा तैयार कर रक्खा था जिसके बीचोबीच में वह रास्ता पड़ता

है जिसकी राह हम लोग अभी आये हैं। मैंने उस स्थान को भीतर की तरफ से रंग रंगा कर ठीक वैसा ही दुरुस्त कर लिया जैसा कि अपनी आंख से देख आया था। इस बीच हमारे आदमी उन सामानों को जुटाने की फिक्र में पड़े हुए थे जिनका पता आपने दिया था और जिसकी फिक्र में गोपाल शुरू से ही पड़ा हुआ था। इस काम में शिवदत्तगढ़ के आदमियों से उन लोगों को बहुत कुछ मदद मिली और थोड़ी ही कोशिश में वे सब चीजें उन लोगों के हाथ आ गईं। इसी बीच नन्हींजी भी अपना काम खतम करके आ गईं, वह सामान देख उन्होंने बड़ा ताज्जुब प्रगट किया और उनके असली होने की ताईद की। अस्तु वह जगह ठीक होते ही वे सब चीजें लाकर ठीक उसी तरह सजा दी गईं जैसा कि आपने बताया था। इतना कर हम लोग इस बात की राह देखने लगे कि भूतनाथ आवे तो किसी तरह से उसे उस जगह ले चलें और देखें कि उस दृश्य को देख कर उसकी क्या हालत होती है। बारे बहुत जल्दी ही हमारी यह इच्छा पूरी हो गई। भूतनाथ अपने दो शागिर्दों के साथ उस मन्दिर में आ के टिका और हम लोग उसे धोखा देकर उस जगह ले आए।

रामचन्द्र०। यह सब सामान देखकर उसकी क्या हालत हुई? घबड़ाया तो बेतरह होगा?

श्याम०। बेतरह, पर उससे भी ज्यादा उन बातों से और वह विचित्र सूरत देख कर चकराया जो शायद आपकी कारीगरी थी।

राम०। (ताज्जुब से) सूरत और बातें कैसी? क्या वहां पर कोई और भी घटना हुई थी?

श्याम०। (आश्चर्य करता हुआ) क्या वह आपकी कारीगरी नहीं थी और क्या वह विचित्र आसेब जो उस जगह प्रगट हुआ और जिसने रोहतासमठ के पुजारी के नाम से अपना परिचय देकर भूतनाथ को परेशान कर दिया वह आप ही न थे?

राम०। यह क्या कह रहे हो तुम! मेरी समझ में कुछ नहीं आता।

मैं तो तब से अपने काम में इस तरह फँसा रहा कि बस आज चूंकि तुमसे वहां पर मिलने का वादा कर चुका था इसीलिए वहां गया। आज के पहिले दम भर के लिये भी वहां जाने की मोहलत न मिली। तुम सब हाल खुलासा बयान करो तो पता लगे।

इसके जवाब में श्यामसुन्दर वह सब घटना पूरी कह गया जो हम ऊपर सोलहवें हिस्से के अन्त में बयान कर आये हैं। रामचन्द्र ज्यों ज्यों उसकी बातें सुनता था उसके चेहरे से घबराहट और परेशानी प्रगट होती जाती थी और अन्त तक सुनते सुनते तो वह एक दम घबड़ा कर बोल उठा, "यह तुम सही हाल मुझसे कह रहे हो या कोई मनगढ़न्त कहानी सुना रहे हो !!"

श्याम०। मै बिल्कुल ठीक हाल कह रहा हूं। उस भयानक आसेब की सूरत ऐसी डरावनी थी कि अगर उस समय तक हम लोग इसी गुमान में न रहे होते कि यह आपकी ही कोई कारीगरी है तो जरूर भूतनाथ की तरह हम भी बदहोश हो जाते। मगर अब जो आप यह कहते हैं कि वह आप नहीं थे तो मुझे बड़ा ताज्जुब मालूम होता है।

राम०। बेशक वह मैं नहीं था और मुझे इस बात पर भी विश्वास नहीं होता कि ऐसी विचित्र बात हुई होगी। मैं समझता हूँ कि जरूर तुम्हें किसी तरह का धोखा हुआ है।

श्याम०। मै आपके चरणों की कसम खा कर कहता हूँ कि मै उस वक्त पूरे होशहवास में था जब कि वह घटना हुई। मै ही क्यों गोपाल तथा इन बाकी के सभी आदमियों ने वह विचित्र शक्ल देखी और मेरी तरह सभी अब तक इसी भ्रम में पड़े हुए हैं कि आपने ही भूतनाथ को छकाने के लिये किसी तरह की कारीगरी की थी।

राम०। अगर ऐसा है तो तुम मेरी यह बात अभी उन पर प्रगट न करो कि वह मै नहीं था नहीं तो उन पर शायद इसका उलटा असर पैदा हो। मैं इसकी जांच करूंगा और देखूंगा कि यह क्या बात हो सकती है।

मगर उस आसेब की जो बातें तुमने कहीं उन्हें सुन कर भी मुझे ताज्जुब हो रहा है क्योंकि उनमें दो चार बात ऐसी हैं जिनके बारे में मैं भी कुछ नहीं जानता पर भूतनाथ पर उनका जो असर हुआ उससे जान पड़ता है कि उसके जीवन से कोई बहुत गहरा सम्बन्ध रखती हैं। एक बार फिर तो कह जाओ कि उस पिशाच ने भूतनाथ से क्या क्या कहा ?

श्यामसुन्दर फिर से उन बातों को दोहरा गया और रामचन्द्र ताज्जुब गौर और तरद्दुद के साथ इस बात पर देर तक विचार करता रहा कि असल मामला क्या हो सकता है पर उसकी समझ में ठीक तरह से कुछ भी न आया और आखिर उसने कहा, "मैं कुछ भी नहीं कह सकता कि वह आसेब क्या बला थी पर इसमें शक नहीं कि वह अगर कोई भूत प्रेत या पिशाच नहीं है और सचमुच किसी की कारीगरी ही है तो उस को पैदा करने वाले को जरूर भूतनाथ की जीवनी की दो एक घटनायें ऐसी मालूम हैं जिनके बारे में हमलोगों को भी कुछ खबर नहीं है और जिनके प्रगट होने से भूतनाथ घबड़ाता है। खैर इसके बारे में फिर पता लगाया जायगा !"

श्याम०। जरूर पता लगाना चाहिये, लेकिन अब दो एक बातें मैं भी पूछना चाहता हूं. अगर आपकी आज्ञा हो तो पूछूं।

राम०। हां हां पूछो क्या पूछते हो।

श्याम०। जब वह आसेब आप नहीं थे तो मैं यह जानना चाहता हूँ कि उस स्थान की नकल करने और भूतनाथ को उसे दिखाने से आपका क्या अभिप्राय था जहां भूतनाथ द्वारा उस भयानक घटना के होने का हाल आप मुझसे कह चुके हैं ?

राम०। यह बात तो मैं पहिले ही तुम्हें बता चुका हूँ, मेरा मुख्य अभिप्राय यही है कि भूतनाथ को डरा धमका कर किसी तरह शिवगढ़ी की ताली उससे ले ली जाय।

श्याम०। लेकिन ऐसा वह करेगा ही क्यों ?

राम। हमारी कार्रवाइयों से इतना तो वह समझ ही गया होगा कि

उसके पुराने पापों का जानकार कोई ऐसा व्यक्ति पैदा हो गया है जिसको उसके विषय में सब बातों की पूरी पूरी खबर है।

श्याम०। माना मैंने, मगर उससे फिर क्या? जो कुछ कार्रवाई की गई उससे वह काम क्यों कर निकलेगा जिसके लिये हमलोग यहां पर आये हैं? अपनी पिछली करतूतों का यह नाटक देख कर भूतनाथ डरे और घबरावे चाहे जितना भी पर उससे क्या वह शिवगढ़ी की ताली दे देगा! मैं तो समझता हूं कदापि नहीं।

राम०। (हंस कर) तुम्हारी बुद्धि यों तो बहुत तेज है पर कभी कभी मनुष्य की प्रकृति समझने में तुम बड़ी भारी भूल कर जाया करते हो। क्या तुमने भूतनाथ की तबीयत को इतने दिनों तक जांच के यह भी नहीं समझा कि वह अपने पुराने पापों की छाया से भी डरने लगा है और केवल यही नहीं चाहता कि ये पाप ढंके रहें बल्कि यह भी चाहता है कि वह दुनिया में नेकनाम और ईमानदार ऐयार कह के प्रसिद्ध हो।

श्याम०। बेशक इस कोशिश में तो वह जरूर है।

राम०। अस्तु इसी से यह बात भी सहज ही में समझी जा सकती है कि उसको जब इन दोनों बातों में से किसी एक को चुनना पड़ेगा कि या तो उसका पिछला पाप दुनिया में प्रगट हो और या फिर उस पाप के सब सबूत उसके हाथ में इसलिये दे दिये जांय कि वह स्वयम् उन्हें नष्ट करके हमेशा के लिये निश्चिन्त हो जाय मगर इसके बदले में शिवगढ़ी की ताली हमें दे दे तो क्या वह बिना एक मिनट का भी आगा पीछा विचारे यह दूसरी बात मन्जूर न कर लेगा और ताली देकर अपनी नेकनामी कायम न रक्खेगा?

श्याम०। (कुछ सोच कर) हां यह बात तो आपकी ठीक मालूम होती है। तब शायद आपका इरादा यह है कि वह अगर ताली आपको दे दे तो आप यह सब चीजें जो हम लोगों को मिली हैं उसके सपुर्द कर दें?

राम० । बेशक, अगर वह हमारी चीज हमें दे देगा तो हमलोग भी उसकी चीज उसे वापस कर देंगे ।

श्याम० । लेकिन मान लीजिये कि उसने यह बात मन्जूर न की ?

राम० । उस हालत में हम लोग बराबर उसको तंग करते रहेंगे, जमाने भर में उसकी बदनामी मशहूर करते रहेंगे, और तब तक उसके पीछे पड़े रहेंगे जब तक कि वह हमारी मन्शा पूरी नहीं करता । मगर तुम इस बात का कुछ भी अंदेशा न करो । मेरा दिल कहता है कि जहां एकाध बार और उसे उसकी काली करतूतें याद कराई गईं और भुवनमोहिनी के सिर या तिलिस्म के भूतनाथ से उसकी भेंट कराई गई तहां वह मोम हो जायगा और धीरे से हमारी चीज उगल देगा । मुझे इस बात का पूरा यकीन है, मगर खैर यह जिक्र इस वक्त जाने दो और यह बताओ कि नन्हों ने इन चीजों को देख कर क्या कहा ।

श्याम० । वे इन चीजों को देख कर बहुत प्रसन्न हुईं और उन्होंने विश्वास दिलाया है कि इनकी मदद से हमारा काम जरूर निकल जायगा । मेरी उनकी बहुत सी बातें हुईं और अब आगे क्या क्या करना होगा इसके बारे में वे बहुत जल्द आपसे मिलने वाली हैं । मैंने उनको आपका वही पुराना ठिकाना बता दिया है और यह भी कह दिया है कि भरसक कल रात को आप वहां पर रहेंगे और उनसे मुलाकात कर सकेंगे । उन्होंने आने को कहा भी है ।

राम० । बहुत ठीक किया, मै खुद उससे मिलने को उत्सुक हूँ, कल जरूर मिलूंगा । हा, वह मनोरमा से मिली या नहीं ?

श्याम० । जी अब तक तो नहीं मिली थीं पर अब हम लोगों से मिलने और यह सब सामान देख लेने बाद गई हैं और आशा है जरूर मिली होंगी ।

राम० । उससे क्या क्या बातें होती हैं यह सुनने लायक होगा ।

श्याम० । जरूर कल वे आपसे मिलेंगी, उसी समय पता लगेगा ।

(कुछ रुक कर) हां एक बात का जिक्र करना तो मै बिल्कुल भूल ही गया।

राम०। सो क्या ?

श्यामसुन्दर ने अपने चारो तरफ देखा। गोपाल तथा बाकी के सब आदमी इधर उधर बैठे लेटे या टहलते हुए सुस्ता रहे थे और इनके पास में कोई न था। श्यामसुन्दर ने यह देख धीरे से न जाने कौन सी बात कही कि जिसे सुनते ही रामचन्द्र चौंक उठा और उसके चेहरे से परेशानी और घबराहट जाहिर होने लगी। उसने दबी जुबान से कुछ कहा और तब इन दोनों में बहुत ही धीरे धीरे इस तौर पर कुछ बातचीत होने लगी कि हम भी न सुन सके। पर आखिर ये बातें खतम हुईं और रामचन्द्र ने उठते हुए कहा, "तुम्हारे आदमी सुस्ता चुके होंगे, अब चलना चाहिये।"

श्यामसुन्दर ने पूछा, "क्या अभी और कहीं जाना है ?" रामचन्द्र ने जवाब दिया, "हां यह सब सामान लोहगढ़ी पहुंचाना होगा।" जिस पर वह बोला, "जब लोहगढ़ी ही जाना था तो बाहर ही बाहर वहां क्यों नहीं हम लोगों को भेज दिया ? वहां से तो वह इमारत बहुत नजदीक पड़ती है जहां यह नाटक किया गया था !!"

राम०। नहीं बाहर बाहर जाने में बहुत से खतरे थे जिनमें से सबसे बड़ा यह कि शायद भूतनाथ ने इसलिये कुछ आदमी वहां पर छोड़ रक्खे हों कि कोई अगर उन चीजों को हटाने के लिये आवे तो उसके पीछे जांय और देखें कि उन्हें कौन और कहां ले जाता है, मुझे तो यही शक बना हुआ है कि तुम लोगों को उस जगह आते और इन चीजों को उठाते उसने या उसके आदमियों ने न देख लिया हो।

श्याम०। नहीं इसकी कोई सम्भावना नहीं जान पड़ती क्योंकि हम लोग पूरी तरह से चौकन्ने थे और इस बात से पूरे खबरदार भी कि कोई हमारा पीछा न करे, जहां तक मै कह सकता हूं हम लोगों को किसी ने नहीं देखा।

राम०। तभी खैरियत है, अच्छा चलो।

श्याम० । अब किस तरफ चलियेगा ?

राम० । वही बन्दरों वाले बंगले में । उसी जगह से लोहगढ़ी में जाने का रास्ता है ।

अपने साथियों को सब चीजें उठा कर पीछे पीछे आने को कह रामचन्द्र और श्यामसुन्दर पुनः वहां से रवाने हुए ।

यहां से उस बंगले तक जाने के रास्ते का हाल जिसमें दयाराम जमना और सरस्वती रहती थीं अथवा जिसकी छत पर बने हुए बन्दरों की बदौलत उसका नाम हमने बन्दरों वाला बंगला रख दिया है हमारे पाठक जानते ही होंगे क्योंकि उन्हें कई बार हमारे साथ वहां से यहां तक आने जाने का मौका पड़ चुका है अस्तु उसका हम कोई जिक्र न करेंगे । मुख्तसर यह कि उसी मामूली रास्ते से यह गरोह उस बंगले के अन्दर जा पहुँचा । उस कमरे में पहुँच कर जहां प्रभाकरसिंह की सूरत में आने के मौके पर भूतनाथ जोखिम में पड़ गया था या जहां वह शीशे वाली पुतली थी* रामचन्द्र ने बाकी लोगों को रुक जाने को कहा और आप श्यामसुन्दर को लिये हुए बगल की एक कोठरी की राह होता हुआ उस बंगले की छत पर पहुँच गया । यहां छत के मुँडेरे पर बने हुए वे बन्दर दिखाई पड़ रहे थे जिन्हें मालती ने पहिले पहिल उस वक्त देखा था जब कि उसे इन्द्रदेव की बदौलत इस घाटी में कुछ दिन रहना पड़ा था † और वह छत भी यहां से दिखाई पड़ रही थी जहां से मालती ने यह सब हाल देखा था । इस समय पौ फट चुकी थी और पूरब तरफ का आसमान लाली पकड़ रहा था ।

रामचन्द्र पश्चिम तरफ के मुंडेरे की तरफ गया जिधर थोड़ी थोड़ी दूरी पर आठ बन्दर एक दूसरे से बराबर फासले पर बैठाये हुए थे । ये बन्दर किसी तरह की धातु के बने हुए थे और साथ ही तिलिस्मी कारीगरी

---

* देखिये आठवें भाग का अन्त ।

† देखिये हिस्सा तेरहवां, बयान छठवां ।

से खाली न थे। रामचन्द्र ने एक बन्दर का दाहिना कान पकड़ा और उसके बदन को जोर से धक्का दिया। वह अपनी जगह से खसक पड़ा। ढकेलते हुए वह उसको एक कोने की तरफ ले चला और वहां ले जा कर छोड़ दिया, इसके बाद दूसरे बन्दर को उसी तरह वहां तक पहुचाया, यहां तक कि एक एक करके आठों बन्दर उसी एक स्थान पर इकट्ठे हो गये रामचन्द्र ने अब उन सभों की गर्दन उमेठनी शुरू की जो जरा से जोर में ही घूम जाती थी। जब सब का मुंह पश्चिम और उत्तर के कोने की तरफ हो गया तो उन बन्दरों के मुंह से एक तरह की किलकारी की आवाज सी सुनाई पड़ी जिसे सुन उसने कहा, "लोहगढ़ी में जाने का दर्वाजा खुल गया, चलो नीचे चलो।"

श्यामसुन्दर ने कहा, "उस रात को जब मैं आपके साथ यहां आया था तब आपने कोई तर्कीब ऐसी की थी कि इन बन्दरों की आंखों से चमक निकलने लगी थी और तब दर्वाजा खुला था पर आज वैसा नहीं हुआ, इसका क्या सबब ?"

रामचन्द्र ने जवाब दिया, "वह तर्कीब रात के वक्त काम लेने के लिये है। तुम देखते हो कि इन सब बन्दरों का मुंह हर तरफ को घूम सकता है। इस घाटी से आठ तरफ को जाने के लिये आठ सुरंगे निकली हैं। जिस तरफ की सुरंग का रास्ता खोलना हो उसी तरफ सब बन्दरों का मुंह हो जाने पर उस तरफ की सुरंग का दर्वाजा खुल जायगा। इस समय चांदना हो गया है इसलिये सहज ही में यह काम हो गया पर रात के वक्त अंधेरे में ऐसा करने में बहुत तरद्दुद हो सकता है क्योंकि किसी बन्दर का मुंह अगर जरा भी दूसरी तरफ घूमा रह जायगा तो दर्वाजा न खुलेगा। उस समय काम में मदद करने के लिये इनकी आंखों से रोशनी निकालने की तर्कीब तिलिस्म बनाने वालों ने रक्खी है। रोशनी पैदा करने की तर्कीब देखो यह है।"

कह कर रामचन्द्र ने एक बन्दर का बायां कान पकड़ा और जोर से

उमेठ दिया। साथ ही उसकी आंखों से बहुत ही तेज और चकाचौंध डाल देने वाली रोशनी निकलने लगी। कान उलटा घुमाते ही रोशनी बन्द हो गई। श्यामसुन्दर ने कहा, "ठीक है, मै समझ गया। मगर यहां से जाने के पहिले एक बात मैं और पूछा चाहता हूं अगर कोई हर्ज न हो तो बता दीजिये।"

राम०। (हंस कर) पूछो क्या पूछते हो?

श्यामसुन्दर०। पिछली दफे हम सब लोग यहां उस वक्त आये थे जब मुन्दर और हेलासिंह भी यहां पर थे और जब नन्हींजी हम लोगों के साथ थीं, उस समय उन्होंने न जाने क्या किया था कि सब बन्दर एक विचित्र रीति से कवायद करने लगे थे। वह क्या बात थी?

राम०। (हंस कर) मै समझ रहा था कि यही बात तुम पूछोगे। वह कोई खास या विचित्र बात नहीं बल्कि यहां रहने वालों का मन बहलाने के लिये मजाक के तौर पर कारीगरों ने बना दी है। मै उसकी भी तर्कीब अभी तुमको बताये देता हूँ पर इसके पहिले जब जिक्र आ ही गया है तो एक बात और भी कह दू जिसका पता शायद तुमको नहीं होगा और जिसको जान कर मुझे अफसोस हुआ क्योंकि उस मौके पर हम लोगों से एक भूंडी गलती हो गई जिसका नतीजा भयानक हो सकता था।

श्याम०। (ताज्जुब से) सो क्या?

राम०। जिन आदमियों को हमने हेलासिंह और मुन्दर समझ कर उन पर हमला किया था वे वास्तव में इन्द्रदेव और मालती थे।

श्याम०। (चौक कर) हैं, इन्द्रदेव और मालती!!

राम० हां।

श्याम०। ओह तब तो हमलोगों से भारी भूल हो गई! (कुछ सोच कर) अवश्य वे लोग हेलासिह और मुन्दर न होंगे क्योंकि ये दोनों उस तरह आपके हाथ के बाहर न हो सकते थे जैसा कि वे हो गये, और इन्द्रदेव के सिवाय और किसी की मजाल भी न थी कि हमलोगों को इस तरह

परेशान करता। आप उस वक्त बड़े मौके से पहुंचे थे नहीं तो जिस वक्त मैंने अपने को कोठरी में बन्द होते देखा तो यही समझा कि बस अब हुआ, तिलिस्म के चक्कर में फँस गया और अब जिन्दगी गई! मगर आपको यह बात किस तरह मालूम हुई?

राम०। तुम लोगों को छुड़ा कर रवाना कर देने के बाद जब मैंने आलमारी में बेहोश मालती और लोहगढ़ी की चाभी वाला डिब्बा पाया तब। उसी समय से मैंने अपना रुख बदल दिया और दूसरे ढंग से काम करने लगा।

श्याम०। ठीक है, अच्छा अब यह बताइये कि इन बन्दरों को नचाने की तर्कीब क्या है?

रामचन्द्र श्यामसुन्दर को लिये हुए छत के एक कोने की तरफ गया जहां एक अकेला बन्दर जो औरों से कुछ बड़ा था बैठाया हुआ था। इसके पेट के पास एक छोटा सा मुट्ठा लगा हुआ था जिसको रामचन्द्र ने घुमा दिया और अलग जा खड़ा हुआ। मुट्ठा घुमाते ही वह बन्दर उठ खड़ा हुआ और बाकी के सब बन्दरों के बदन में भी हरकत होने लगी। कुछ देर तक वे इधर उधर उछलते कूदते रहे और तब उस बड़े बन्दर ने उन सभों से कुछ इस ढंग से कवायद कराना शुरू किया कि देखते ही ये दोनों हंस पड़े। कुछ देर तक यह तमाशा देखने बाद इसे बन्द कर वे दोनों नीचे उतरे और बाकी के आदमियों को साथ लेने की नीयत से उस कोठरी में पहुंचे जहां उन लोगों को छोड़ गये थे, पर ताज्जुब की बात थी कि वहां उन चारों में से एक भी आदमी न था हां वह सब सामान जो वे लोग उठाये आये थे वहीं जमीन पर जरूर पड़ा हुआ था। यह समझ कर कि शायद वे लोग बाहर कहीं निकल गये हों रामचन्द्र ने कमरे की खिड़की खोल उन लोगों को कई आवाजें भी दीं पर उनका कहीं पता न लगा। चारो तरफ के कमरों और कोठरियों में तलाश किया और तब बाहर निकल कर घाटी में चारो तरफ घूम घूम कर भी खोजा पर कहीं भी ये लोग नजर

न आये । आखिर दोनों ताज्जुब करते हुए मैदान में खड़े हो गये और एक दूसरे का मुंह ताकने लगे ।

इतना पढ़ कर हमारे पाठक यह तो समझ ही गये होंगे कि ऊपर तेरहवें हिस्से के छठवें और नौवें बयान में जो कुछ ताज्जुब की बातें हम लिख आये हैं वह इन्हीं रामचन्द्र श्यामसुन्दर और गोपाल आदि की करतूत थी और इन्द्रदेव ने जिस औरत को छत पर देखा था वह नन्हों थी । पर इस बात का अभी पता न लगा कि यह रामचन्द्र वास्तव में कौन है तथा वह श्यामसुन्दर गोपाल और बाकी के लोग किसके नौकर या शागिर्द हैं । खैर कभी न कभी इसका भी पता लग ही जायगा । अब हम इनको इसी जगह छोड़ते हैं और पाठकों को एक दूसरे ही अनूठे स्थान की सैर कराते हैं ।

सातवां बयान

दिन लगभग तीन पहर से ऊपर ढल चुका है । जङ्गल मैदान पहाड़ और खेत धूप और लू से झुलस रहे हैं और सड़कों पर सन्ध्या के पहिले ही अपना सफर खतम करने की जरूरत रखने वाले मुसाफिरों के सिवाय और कोई चलता फिरता नजर नहीं आता । शहरों के लोग तरी और ठंढक की खोज में तंग गलियों में बने चबूतरों या ऊंचे और अंधेरे मकानों की निचली मंजिलों में पड़े हैं और देहात के लोग बड़े पेड़ों के नीचे खाट डाले लेटे हुए बिना सूर्यास्त का समय आये उठने की इच्छा नहीं कर रहे हैं जब तक कि उनकी जरूरत उन्हें ऐसा करने पर मजबूर न करे ।

परन्तु अपने पाठकों को ले कर हम जिस स्थान पर चल रहे हैं वहां ऐसे समय में भी गर्मी और लू की तकलीफ बिल्कुल नहीं है और तपिश तो एक दम नहीं के बराबर है ।

एक लम्बे चौड़े बाग की हवा जिसके ओर छोर का कुछ ठिकाना नहीं लग रहा है, चारो तरफ बने और छूटते हुए सैकड़ों ही फौव्वारों की तरी

की बदौलत इस गर्मी के वक्त भी काफी ठण्डी हो रही है और घने तथा गुञ्जान पेड़ों की बदौलत वहां धूप का भी जोर बिल्कुल मालूम नहीं होता है। इस बाग के बीचोंबीच में संगमर्मर की एक बहुत बड़ी बारहदरी है जिसकी कुरसी जमीन से एक पुरसा ऊंची है और इस समय उसके ऊपर पहुँचने वाली सीढ़ियों पर से न जाने कहां से आता हुआ बहुत सा पानी बह कर नीचे पहुंच उस नाले में मिल रहा है जिसका पानी छोटी बड़ी सैकड़ों नालियों में से होता हुआ उस समूचे बाग में फैल गया है और इस गर्मी के मौसिम में भी उस बाग को एक दम हरा भरा और तर बनाये हुए है। इस बारहदरी की छत पर भी चारो तरफ बहुत से फौव्वारे बने हुए हैं जिनकी चक्करदार टूटियों से निकलता हुआ पानी चारो तरफ बहुत ही हलकी बून्दों में नीचे को गिरता हुआ बरसात का खासा मजा दे रहा है और साथ ही उस बारहदरी को भी इतना ठण्डा बनाये हुए है कि इस घोर गरमी के मौसिम और तीन पहर का समय होते हुए भी वहां एक दम तरी है। धूप की किरणें पानी से मीली इस बारहदरी की चमकदार सुफेद दीवारों और खम्भों पर पड़ती हैं तो वह शीशे की तरह चमक उठती हैं और बड़ी ही सुन्दर मालूम होती है।

धूप लू और गर्द का मारा एक नौजवान मुसाफिर जब इस बाग में पहुँचा तो यकायक चौंक कर इस ताज्जुब में पड़ गया कि वह कहीं स्वर्ग में तो नहीं आ पहुँचा है। बाग की चारदीवारी डांकते ही यह एक ऐसा सोहावना दृश्य और बदला हुआ मौसिम उसकी आंखों के सामने पड़ा कि वह अपनी सब थकावट और परेशानी भूल गया और एक गुञ्जान पेड़ के नीचे खड़ा हो एक टक उस बारहदरी की तरफ देखने लगा जो इस समय एक खिलौने की तरह उसके सामने नजर आ रही थी और जिस पर से गिरती हुई पानी की बौछारें और उसके ऊपर पड़ने वाली धूप की किरणें तरह तरह के रंगों वाले पचासों इन्द्रधनुष पैदा कर उसे देवताओं का आवास या परियों का क्रीड़ास्थल सा बना रही थीं।

बारहदरी की शोभा देखता हुआ वह नौजवान यकायक चिहुँक पड़ा और तब बड़े गौर से कुछ देखने लगा। अब हमने भी देखा कि उसकी निगाह एक हसीन नाजनीन पर पड़ रही है जो उस बारहदरी के पीछे की तरफ निकल कर इसी तरफ को आ रही थी। इसी समय नौजवान के मुंह से निकला, "वही तो है!" तब उसने अपने को पेड़ों के झुरमुट के अन्दर और भी अच्छी तरह छिपा लिया पर अपनी निगाह उस पर कायम रक्खी।

उस औरत के पीछे पीछे हरिन का एक बच्चा भी नजर आया जो उसके साथ बहुत ही हिला मिला हुआ था। वह औरत एक गेंद के साथ खेलती हुई बारहदरी के चारो तरफ घूमने लगी और वह हिरन का बच्चा भी उसके पीछे पीछे दौड़ने और किलोल करने लगा।

कभी गेंद को जमीन पर पटक कर उछालती, कभी हवा में उछाल कर लोकती, कभी जमीन पर ढुलका कर उसके पीछे पीछे हरिन के साथ साथ दौड़ती, या कभी हरिन को उसके पीछे दौड़ाती हुई वह औरत इधर से उधर घूमने लगी। कभी कभी वह कहीं पर रुक जाती, किसी फूल को तोड़ती, सूंघती या जूड़े अथवा बालों में खोंसती, कभी किसी फुहारे की टूटी से निकल कर मेह की तरह गिरने वाले पानी से खेलती, कभी मुलायम घास नोच कर अपने हिरन को खिलाती या कभी संगमर्मर के उन बहुत से चबूतरों में से जो मुनासिब जगहों में बहुतायत से बने हुए थे किसी एक पर बैठ उस हरिन से विनोद करती या उसका तकिया बना अधलेटी सी हो किसी गौर में डूबती हुई वह औरत इस समय इस नौजवान की निगाहों में बिल्कुल एक परी ही जान पड़ती थी। उसकी पतली साड़ी जिसको वह बड़ी लापरवाही के साथ अपने बदन पर डाले हुई थी कभी हवा के झोंकों से इधर उधर उड़ जाया करती थी या कभी कभी पानी से तर हो कर उसके बदन के साथ इस तरह चिमट जाया करती थी कि मन को बेतहाशा खींच लेने वाला बदन का गुलाबी रंग फूट पड़ता था और अंग प्रत्यंग झलकने लग जाते थे। पेड़ों के अन्दर छिपे हुए इस नौजवान

का मन क्षण क्षण में हाथ से निकला जा रहा था और वह बड़ी मुश्किल से अपने को रोक रहा था।

यकायक कुछ देख वह हरिन का बच्चा चौंका और दौड़ कर उस औरत की गोद में आ कर छिप गया जिसने उसे उठा कर अपनी छाती से भर-जोर दबा लिया और तब ताज्जुब के साथ चारो तरफ देखती हुई यह जानने की कोशिश करने लगी कि किस चीज को देख कर वह डरा है। मालूम होता है कि अपने मन की बेबसी के कारण वह नौजवान अपने छिपने की जगह से कुछ बाहर निकल पड़ा था क्योंकि सब तरफ से घूमती फिरती आ कर उस औरत की निगाह उसी तरफ को रुकी जिधर वह था और वहां एक आदमी को छिपा देख उसके मुंह से ताज्जुब और डर की एक आवाज निकल पड़ी। जिस संगमर्मर के चबूतरे के सहारे उठँगी हुई वह पड़ी थी उसका सहारा उसने छोड़ दिया और उठ खड़ी हुई, तब एक निगाह दुबारा उस तरफ डाल घूम कर फुरती से चलती हुई उस बारहदरी की तरफ बढ़ी।

नौजवान अपनी गलती समझ गया। अब छिपना फजूल था। वह पेड़ों की आड़ से बाहर निकल आया और खुद भी धीरे धीरे उसी बारह-दरी की तरफ बढ़ा। उस औरत ने जो घूम घूम कर अपने पीछे देखती भी जाती थी उसको पीछा करता पा अपनी चाल तेज कर दी और दौड़ती हुई बारहदरी की सीढ़ियां चढ़ उसके ऊपर पहुंच गई जहां से वह डर और घबराहट की निगाहों से उस नौजवान को देखने लगी जो उसी तरफ को आ रहा था। जब वह पास आ जाने पर भी रुका नहीं बल्कि उसका इरादा सीढ़ियां तय कर बारहदरी के ऊपर पहुंचने का मालूम हुआ तो यह सोच कर कि शायद वह ऊपर आ उसको किसी तरह की तकलीफ पहुंचावे उस औरत के मुंह से डर की चीख निकल गई मगर उसी समय उस नौजवान ने कहा, "डरो मत, मै तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं बल्कि तुम्हारी मदद करने के लिये ही यहां आया हूं!"

इतना सुनते ही वह औरत रुक गई और गौर से इस नौजवान की सूरत देखने लगी मगर मुंह से कुछ भी न बोली। कुछ ठहर कर नौजवान ने फिर कहा, तुम्हारे ही लिए बहुत दूर से इस धूप लू और गर्मी में सफर करता हुआ मैं आ रहा हूँ। तुम डरो नहीं बल्कि अपना हाल मुझसे कहो। मैं सब तरह से तुम्हारी मदद करूंगा।"

कुछ डरते डरते उस औरत ने कहा, "मैं कैसे समझूं कि जो कुछ आप कह रहे हैं वह सही है और आपके हाथों मुझे तकलीफ नहीं मिलेगी! आप कौन हैं, आपका नाम क्या है, आप कहां से आ रहे हैं तथा इस तिलिस्म के अन्दर आप क्यों कर पहुंचे?"

नौजवान ने जवाब दिया, "वह सब कुछ मैं बताऊंगा पर पहिले मैं तुम्हारा हाल सुन लेना चाहता हूं।"

एक लम्बी सांस लेकर उस औरत ने कहा, "मुझ बेकस दुखिया का हाल ही क्या सिवाय इसके कि मुद्दत से इस जगह बन्द हूं और तकलीफें उठा रही हूँ।"

नौज०। फिर भी अपना और अपने माता पिता का नाम, रहने का पता ठिकाना, और किस तरह इस जगह आ फंसी यह सब तो बता ही सकती हो।

औरत०। जरूर, मगर इसको बताने से भी फायदा क्या होगा?

नौज०। मैं कह जो चुका कि तुम्हारी मदद करूंगा और तुम्हें इस जगह से छुड़ाऊंगा!!

औरत०। अगर वास्तव में यही इच्छा है तो मेरा नाम पता और परिचय जानने की जरूरत? मै चाहे कोई भी होऊं या किसी की भी लड़की होऊं!

नौज०। बता देने से क्या कोई हर्ज होगा?

औरत०। जब आप मेरी मदद करना ही चाहते हैं तो सिर्फ एक बेबस गरीब दुखिया समझ कर कीजिये।

नौज० । खैर अगर तुम नहीं ही बताना चाहती हो तो मैं उसके लिये जिद्द भी नहीं करूंगा । मैं तुम्हें छुड़ा कर जहां तुम कहोगी पहुँचा दूंगा और तुमसे इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं पूछूंगा । मगर मेरी मदद के लिये इतना तो तुमको बताना ही होगा कि तुम इस तिलिस्म में जहां किसी अनजान का पहुँचना बड़ा ही कठिन है कैसे गिरफ्तार हो गईं या किस राह से यहां पहुंचीं ? यह जान लेने से मुझे तुम्हारे छुड़ाने में विशेष कष्ट नहीं करना पड़ेगा ।

औरत० । अगर मुझे यह विश्वास हो जाय कि आप मुझे यहां से छुड़ा लेने की सामर्थ्य रखते हैं तो मैं जरूर यह सब हाल आपको बताऊंगी मगर यह उतना सहज काम नहीं है जितना शायद आप समझे हुए हैं क्योंकि अगर ऐसा होता तो आज के कहीं पहिले मैं इस कैदखाने से निकल गई होती ।

नौज० । अगर तुम्हारी खुद इस जगह रहने की इच्छा न हो जिसे तुम कैदखाना कहती हो पर मुझे स्वर्ग का एक टुकड़ा नजर आ रहा है तो कम से कम मुझे इसमें कोई तरद्दुद दिखाई नहीं पड़ता । जिस राह से मैं यहां आया हूं वह अभी तक खुली है और मेरे साथ साथ तुम भी बखूबी उसी तरफ से निकल जा सकती हो ।

औरत० । (लाचारी की मुद्रा से सिर हिला कर) नहीं, सो नहीं हो सकता । न तो मैं ही उस राह से बाहर जा सकती हूं और न अब आपको ही वह राह खुली हुई मिलेगी ।

नौज० । (आश्चर्य से) सो क्यों ?

औरत० । सो मैं अच्छी तरह जानती हूं ! आज के पहिले भी कई दफे कई नौजवान यहां तक पहुंचे और उन्होंने मुझे यहां से निकाल ले जाने का दावा किया पर सभी नाकामयाब हुए । हर मर्तबा वह राह जिससे वे यहां आये थे उन्हें बन्द मिली जिससे मैं तो क्या वे खुद भी बाहर निकल न सके और आज तक इसी जगह बन्द कहीं अपनी किस्मत को

झंख रहे होंगे, वही हालत आपकी भी होगी और यही जान समझ कर मैं कहती हूं कि अब न तो आप मुझे ही छुड़ा सकते हैं और न खुद ही इस जगह के बाहर जा सकते हैं।

नौज०। (ताज्जुब से) क्या आज के पहिले भी कई आदमी इस जगह आ चुके हैं।

औरत०। जी हां।

नौज०। (सिर हिला कर) नहीं सो कभी नहीं हो सकता, यह तिलिस्म है और इसके अन्दर किसी का आना बहुत ही कठिन है।

औरत०। आपका कहना ठीक हो सकता है मगर मैं भी जो कह रही हूं वह बहुत सही है।

नौज०। लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता।

औरत०। तब लाचारी है, मैं अपनी बात के सबूत में सिवाय इसके और क्या कह सकती हूं कि आप अगर चाहें तो इस बात की जांच कर लीजिये कि जिस राह से आप यहां आये वह अभी तक खुली है या बन्द हो गई। आप खुद ही जान जायंगे कि मेरा कहना कहां तक सही है।

नौज०। खैर अगर वह राह बन्द भी हो गई होगी तो मैं विश्वास दिलाता हूं कि उसे फिर खोल लूंगा और अगर किसी कारण से वह नहीं ही खुले तो मुझे और भी कितने ही रास्तों का हाल मालूम है जिनमें से किसी को भी खोल कर मैं तुम्हें इस जगह से बाहर ले जा सकता हूं।

औरत०। आपकी बात सुन कर मुझे ताज्जुब होता है। इस तिलिस्म के रास्तों के बारे में इतनी जानकारी रखने वाला अगर कोई हो सकता है तो सिर्फ एक ही और केवल वही मुझे यहां से छुड़ा भी सकता है। अगर आप वही आदमी हैं तब तो आपका कहना सही है नहीं तो मैं यही कहूंगी कि आप या तो गलत कह रहे हैं और या फिर मुझे धोखा देना चाहते हैं।

नौज०। वह कौन आदमी ?

औरत०। जमानिया के कुंअर गोपालसिंह !

नौज० । (ताज्जुब करता हुआ) तुम क्योंकर जानती हो कि वह तुम्हें यहां से छुड़ा सकते हैं ?

औरत० । यह मैं अच्छी तरह जानती हूं और इसी से पूरे विश्वास के साथ कहती हूँ कि अगर आप वास्तव में कुंअर गोपालसिंह नहीं हैं तो फिर अपने को भी आज से मेरी ही तरह इस तिलिस्म का कैदी समझिये और बाहर की दुनिया पुनः देखने की आशा को हमेशा के लिये तिलांजुलि दे दीजिये ।

नौज० । (कुछ देर तक चुपचाप कुछ सोचने के बाद) मैं गोपालसिंह ही हूँ ।

औरत० । (सिर हिला कर) मगर मुझे विश्वास नहीं होता ।

नौज० । तब तो तुम्हारी तरह मैं भी कहूंगा कि लाचारी है !

औरत० । खैर अगर आप सचमुच कुँअर गोपालसिंह हैं तो इसका सबूत तो बहुत जल्द मिल जा सकता है, सिवाय उनके और कोई इस बारहदरी के ऊपर नहीं आ सकता, अगर आप वे ही हैं तो सीढ़ियां चढ़ कर मेरे पास आइये ।

नौज० । यह क्या मुश्किल है, मैं तो यह करने वाला ही था पर तुम्हारी बातों ने रोक दिया था, मैं अभी आया ।

इतना कह उस नौजवान ने बारहदरी की सीढ़ियों पर पैर रक्खा और ऊपर चढ़ने लगा, पर इस काम को जितना सहज उसने समझा हुआ था वैसा न पाया । हम ऊपर लिख आये हैं कि इस बारहदरी की सीढ़ियों पर से भी ऊपर कहीं से बहता हुआ पानी आ रहा था जो नीचे के नाले में मिल जाता था । जैसे ही नौजवान ने पहिली सीढ़ी पर पैर रक्खा वैसे ही उस पानी का जोर बढ़ गया, दूसरी सीढ़ी पर पैर रखते ही जोर और बढ़ा, तीसरी पर जाने से और भी तेजी आई, मगर उस नौजवान ने इसका कुछ खयाल न किया और बराबर ऊपर को चढ़ता ही गया । परन्तु ज्यों ज्यों वह ऊपर उठता जाता था त्यों त्यों पानी का वेग बढ़ता जाता था यहां

तक कि ऊपर से तीन चार सीढ़ियां जब रह गईं तो पानी इतने जोर से आने लगा कि मालूम होता था मानो एक नदी ही बहती हुई चली आ रही है जिसके जोर के सामने पैर टिकना कठिन था। उस नौजवान को यह देख ताज्जुब और कुछ अन्देशा मालूम हुआ और वह रुक गया ऊपर की तरफ वह औरत खड़ी गौर आशङ्का आशा और कौतूहल मिले भाव से देख रही थी कि अब क्या होता है। नौजवान को रुकता पा उसके चेहरे से निराशा की एक झलक निकल पड़ी जिसे नौजवान ने भी लक्ष्य किया और तब हिम्मत कर उसने पुनः एक सीढ़ी पर पैर रक्खा, पर वहां पैर रखना गजब हो गया। बड़े ही जोर से पानी का एक झोंका नौजवान की तरफ आया और अगर वह तेजी के साथ दो तीन सीढ़ियां नीचे न उतर गया होता तो इसमें शक नहीं कि वह पानी के बहाव के साथ साथ लुड़कता पुड़कता नीचे आ गिरता और अपने हाथ पांव तुड़वा डालता। मगर उसके नीचे आ जाने के साथ ही पानी की तेजी भी कम पड़ गई और जब नौजवान कुछ सोचता हुआ और भी नीचे उतर गया तो बहुत ही कम होकर करीब करीब वैसी ही हो गई जैसी कि शुरू में थी। वह सीढ़ियों से हट कर खड़ा हो गया और ताज्जुब के साथ ऊपर की तरफ देखने लगा।

औरत०। कहिये अब आपको बिश्वास हुआ कि जो कुछ मैं कहती थी वह सही था?

नौज०। क्या जब जब कोई ऊपर आना चाहता है तब तब ऐसा ही होता है?

औरत०। मेरे सिवाय जब कोई दूसरा आना चाहता है तब ऐसा ही होता है।

नौज०। मगर तुम बेखटके जब चाहे आ जा सकती हो?

औरत०। हां।

नौज०। अच्छा तो तुम ही नीचे आओ।

औरत०। इसके लिये आप क्षमा करें। जब तक मैं आपका ठीक

ठीक परिचय न पा जाऊं ऐसा नहीं कर सकती। न जाने आप कौन हैं और मेरे साथ किस तरह का बर्ताव करें ?

नौज०। मै तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि किसी तरह की चालबाजी तुम्हारे साथ न करूंगा और तुम्हें यहां से निकाल कर जहां तुम कहोगी पहुँचा दूंगा।

औरत०। पहिले जब आपने यह बात कही थी तो मुझे कुछ थोड़ा बहुत विश्वास हो भी सकता था कि आप सही कहते होंगे पर अब अपनी आंखों से आपकी अभी वाली हालत देख कर मैं भला क्योंकर मान सकती हूँ कि आप मुझे इस तिलिस्म से छुड़ा ले जाने की सामर्थ्य रखते होंगे। जब आप एक मामूली सी तिलिस्मी कार्रवाई से घबड़ा कर लौट गये तो यह किस बूते पर कहते हैं कि मुझे छुड़ा लेंगे ! मैंने आपसे कहा न कि सिवाय कुंअर गोपालसिंह के और कोई भी मुझे इस जगह के बाहर निकाल नहीं सकता।

नौज०। मगर मैंने भी तो कहा न कि मै ही गोपालसिंह हूं !

औरत०। (सिर हिला कर) कदापि नहीं, अगर आप कुंअर साहब होते तो इस तरह सीढ़ियों पर से ही वापस न लौट जाते बल्कि मुझे साथ ले कर नीचे उतरते।

नौज०। क्या तुम उन्हें पहिचानती हो ?

औरत०। नहीं।

नौज०। तब उन्हें जान किस तरह सकोगी ?

औरत०। उनके करतब से ! अगर आप कहते हैं कि आप वे ही हैं तो इसका सबूत मुझे दीजिये और यहां ऊपर तक आ कर दिखाइये कि आप कुछ कुदरत रखते हैं तथा वास्तव में कुंअर साहब ही हैं, नहीं तो मैं यही समझूंगी कि आप कोई धूर्त ऐयार हैं और मुझे धोखे में डाल कर अपना कोई मतलब सिद्ध करना चाहते हैं।

नौज०। (तैश में आ कर) अच्छी बात है, तो ऐसी हालत में जरूरी

हो गया कि मैं ऊपर आ कर ही तुम्हें बताऊं कि मै कौन हूँ !!

इतना कह वह नौजवान कुछ और भी पीछे हट गया और कुछ दूरी पर बने हुए संगमर्मर के एक चबूतरे पर बैठ गया। एक छोटी किताब उसकी जेब में थी जिसे उसने निकाला और कुछ पन्ने उलट पुलट करने बाद एक जगह बड़े गौर से पढ़ने लग गया। उधर वह औरत भी उसी जगह पहिली सीढ़ी के पास बनी एक छोटी चौकी पर बैठ गयी और टुड्डी हथेली पर रख स्थिर दृष्टि से उसकी तरफ देखने लगी। बारहदरी की छत से गिरने वाले फौव्वारों की नन्हीं बून्दें उसके बदन को भिगो रही थीं जिससे उसकी पतली साड़ी उसके बदन से चिपकी जा रही थी पर उसे इस बात का कोई खयाल न था और वह एक दम स्थिर हो कर बैठी विचित्र निगाहों से उस नौजवान की तरफ देख रही थी जो बिना इसकी तरफ एक दफे भी नजर उठाये एक दम उस किताब में डूबा हुआ था।

लगभग घड़ी भर के वह नौजवान किताब पढ़ने में लगा रहा और इस बीच में उसने एक दफे भी उस औरत की तरफ निगाह न उठाई मगर अब यकायक उसने किताब बन्द कर दी और उसे जेब के हवाले करते हुए सिर उठा कर उस औरत की तरफ देखा जिसकी निगाह एक टक बराबर उसी के ऊपर गिर रही थी। चबूतरे से उठ कर वह नौजवान फिर उन्हीं सीढ़ियों के पास पहुंचा और बोला, "मुझे तुम्हारे पास तक पहुँचने की तर्कीब मालूम हो गई।"

उस औरत ने मुस्कुरा कर कहा, "मै भी यह देखने के लिये उत्सुक हूं कि आपका कहना कहां तक सही है।" इतना कह उसने लापरवाही के साथ एक अँगड़ाई ली और तब अपनी जगह से उठ खड़ी हुई। नौजवान उस जगह से हट कर बारहदरी के पीछे की तरफ चला और वह औरत भी ऊपर ही ऊपर घूमती हुई उसे बराबर अपनी निगाहों में रखे रही।

हम ऊपर कह आये हैं कि इस बारहदरी की कुर्सी जमीन से करीब पुर्सा भर ऊँची थी और उस पर जाने के लिये सिर्फ एक ही तरफ सीढ़ियां

बनी हुई थी। जब नौजवान उस बारहदरी के ठीक पीछे अर्थात् सीढ़ियों की दूसरी तरफ वाले हिस्से में पहुँचा तो रुक गया और गौर से उस बारहदरी की तरफ देखने लगा। एक पुर्से की ऊंचाई पर जाकर एक छजली उस बारहदरी के खंभों की जड़ से लगभग एक बालिश्त नीचे नीचे चारो तरफ घूम गई थी और इस समय उसी की तरफ उठी हुई नौजवान की आंखें कुछ ढूंढ़ रही थीं तथा आखिर उन्होंने उस चीज को खोज ही निकाला जिसकी तलाश में थीं। वह एक बड़े आले का निशान था जो संगमर्मर की सुफेद दीवार में बहुत ही हलका हलका दिखाई पड़ रहा था। नौजवान उसे देखते ही उसके पास चला गया और उसके नीचे पहुँच दीवार के ऊपर अपना हाथ फेरने लगा। संगमर्मर की दीवार की साफ चिकनी सतह एक जगह से कुछ उभरी हुई सी मालूम हुई जो केवल आंख से देखने से जान न पड़ती थी पर हाथ से टटोलने से उसका पता लगता था। नौजवान ने गौर करके मालूम किया कि एक पत्थर का छोटा तिकोना टुकड़ा कुछ उभड़ा हुआ है। उसने उसको जोर से दबा दिया और वह करीब दो अंगुल के भीतर धंस गया। इसके साथ ही उस जगह के ऊपर बना हुआ जो आले का निशान था उसका भीतरी हिस्सा आगे की तरफ झूल गया और वहां डेढ़ हाथ ऊंची और करीब दो हाथ मोटी एक सुरंग सी दिखाई पड़ने लगी। इतना कर वह नौजवान उस तरफ से हटा और पुनः बारहदरी के सामने उसकी सीढ़ियों के पास जा पहुँचा। वह औरत भी जो यह देखने के लिये कि यह किधर जाता या क्या करता है उसके साथ साथ ऊपर ही ऊपर घूम रही थी सीढ़ी के पास पहुंच और उसको वहां रुक ऊपर की तरफ देखते पा बोली, "यह आपने क्या किया और इसका नतीजा क्या निकलेगा?" नौजवान ने जवाब दिया, "इसका फल यह होगा कि जो पानी पहिले सीढ़ी की राह गिर कर मुझे ऊपर पहुंचने में रुकावट डालता था वह अब इस नाली की राह से अलग बाहर जा गिरेगा मैं अगर चाहूँ तो पानी के इस बहाव को एक दम से रोक भी

सकता हूँ पर उसमें कुछ देर लगेगी।"

इतना कह उस नौजवान ने सीढ़ी पर पैर रक्खा और ऊपर चढ़ने लगा। उस औरत ने आश्चर्य के साथ देखा कि अब सीढ़ी से गिरने वाले पानी की तेजी बढ़ नहीं रही है बल्कि पहले से भी कम हो गई है, साथ ही बारहदरी के पीछे की तरफ से पानी के गिरने की आवाज आने लगी है। यह देख वह पीछे की तरफ घूमी और वहां जा कर देखते ही उसे मालूम हो गया कि जो नाली नौजवान ने खोली थी उसकी राह बेहिसाब पानी बड़े जोर से गिर रहा है। कुछ सायत तक वह इस विचित्र बात को देखती रही और तब सीढ़ी की तरफ लौटने के लिए घूमी पर उस नौजवान को अपने पीछे ही खड़ा पाया। वह उसे देखते ही यह कहती हुई उसके पैरों पर गिर पड़ी, "बेशक आप कुंअर साहब के सिवाय और कोई नहीं हैं!!" और उसकी आंखों से बेहिसाब आंसू गिर कर उस नौजवान के पैर भिगोने लगे।

राजा गोपालसिंह ने, क्योंकि वह नौजवान वास्तव में वे ही थे उस औरत को उठाया और दम दिलासा दे कर शान्त किया, इसके बाद बोले, "अब तो तुम्हें विश्वास हो ही गया होगा कि मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं और साथ ही तुम्हें यहां से छुड़ा ले जाने की सामर्थ्य भी रखता हूं अस्तु अब तुम बेखटके अपना हाल मुझे सुना सकती हो।" उसने जवाब दिया, "बेशक मैं अब सब हाल बेखटके आपको सुना सकती हूँ मगर वह बहुत लम्बा चौड़ा किस्सा है और साथ ही कोई सुखद कहानी भी नहीं है। इसलिए अगर आपकी आज्ञा हो तो मैं इस समय बहुत थोड़े में अपनी कहानी सुना दूं और फिर कभी मौका होने पर खुलासा सुना दूंगी। दूसरे इस बारहदरी के फौव्वारे के कारण आपका बदन और कपड़े भी गीले हो रहे हैं ज्यादा देर यहां रहने से शायद आपके दुश्मनों की तबीयत कुछ..."

गोपालसिंह ने हँस कर कहा, "नहीं इस बात का कोई अंदेशा तुम न करो, इस गर्मी धूप और लू में यह बारहदरी और यहां के फौव्वारे स्वर्ग

तुल्य मालूम हो रहे हैं, फिर भी मै देर तक यहां रहना पसन्द नहीं करता क्योंकि यह आखिर को तो तिलिस्म है जहां कदम कदम पर खतरा है। तुम अपना नाम बताओ और यह भी कहो कि किस सबब से तुम यहां आईं, बाकी हाल मैं किसी निश्चिन्ती के मौके पर सुनूँगा।"

औरत पीछे रक्खी हुई एक चौकी की तरफ बता कर बोली, "तो आप इस चौकी पर आ कर बैठ जायं, यहां पानी नहीं पड़ता है, और मै संक्षेप में अपना हाल कह सुनाती हूँ।"

बारहदरी की सतह के बीचोबीच में तीन चार हाथ का एक बहुत ही खूबसूरत कुण्ड बना हुआ था जो बहुत गहरा नहीं जान पड़ता था और जिसके चारो कोनों पर चार छोटी छोटी संगमर्मर की चौकियां बनी हुई थीं. इन्हीं में से एक की तरफ उस औरत ने इशारा किया था। गोपालसिंह उसके कहे मुताबिक उसी चौकी पर जाकर बैठ गये और वह औरत हाथ जोड़े सामने खड़ी हो गई। गोपालसिंह ने पूछा, "तुम कौन हो और किसकी लड़की हो?"

औरत०। मै रोहतासगढ़ की रहने वाली और वहां के नामी महाजन गोविन्दसिंह की लड़की हूँ।

गोपाल०। रोहतासगढ़ की रहने वाली! तब यहां कैसे आ पहुँचीं?

औरत०। वहां के कुमार दिग्विजयसिंह की बुरी नजर की बदौलत, उन्होंने न जाने मेरी फूटी शक्ल में क्या देखा कि मुझ पर आशिक हो गये और मुझे अपने महल में डालना चाहा। मेरी जात दूसरी थी इससे खुले आम न तो वे इस काम को कर ही सकते थे और न मेरे मां बाप ही इस बात को मंजूर कर सकते थे, अस्तु उन्होंने मुझे अपने बदमाशों द्वारा मेरे घर से चुरवा मँगवाया और अपने एक बाग में रखवा दिया। जब मैंने उनका बुरा प्रस्ताव स्वीकार न किया तो पहिले तो बहुत खफा होकर जान से मार डालने की धमकी दी और तब भी जब मैं न मानी तो इस तिलिस्म में बन्द कर दिया। एक मुद्दत से मैं इसी कैद में पड़ी हूँ और ईश्वर से

मनाया करती हूं कि या तो मुझे मौत दे दे और या फिर किसी दयालु को भेजे जो मुझे इस कैद से छुड़ावे !!

इतना कह वह औरत रोने लग गई। गोपालसिंह ने दम दिलासा दे कर उसे शान्त किया और तब पूछा, "क्या दो दफे मेरे तिलिस्मी बाग में तुम्हीं ने आकर अपने चक्रव्यूह में कैद होने का हाल चीठी द्वारा मुझे बताया था ?"

औरत ने बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाला और कहा, 'जी हां, मुझे खोजता हुआ मेरा भाई न जाने किस तरह यहां तक आ पहुँचा और उसकी जुबानी मुझे मालूम हुआ कि यह जमानिया के तिलिस्म का चक्र-व्यूह नामक स्थान है जहां मै कैद की गई हूँ। उसको किसी तरह यहां का कुछ हाल मालूम हो गया था और उसका विश्वास था कि मुझे लेकर यहां से बाहर हो जायगा पर ऐसा हो न सका। उसी की बतायी राह से हमलोग यहां से निकल के एक बाग में पहुँचे जो मालूम होता है वही है जिसे आप अपना तिलिस्मी बाग कहते हैं पर वहां गिरफ्तार हो गये और फिर यहां पहुंचा दिये गये।

गोपाल०। गिरफ़ार करके फिर यहां पहुँचा दिये गये ! सो कैसे और किसके द्वारा ?

औरत०। दिग्विजयसिंह के कुछ मददगार आपकी रियासत बल्कि आपके महल में मौजूद हैं, मैं समझती हूं उन्हीं का यह काम होगा !

गोपाल०। (और भी ताज्जुब से) क्या तुम उन्हें जानती हो ?

औरत०। मैं तो उनका नाम नहीं जानती पर मेरा भाई अवश्य उन्हें पहिचानता था, अफसोस कि वह बेचारा भी न जाने कहां कैद कर दिया गया नहीं तो·····

इतना कहते कहते उस औरत की आंखें पुनः डबडबा आईं पर कोशिश करके उसने अपने को सम्हाला और कहने लगी :—

औरत०। अपने भाई के साथ जाते हुए मैंने इतना समझ लिया था

कि यह बाग उस जगह से ज्यादा दूर नहीं है अस्तु पहिली बार तो मैंने एक पत्र में यह लिख कर कि 'मैं चक्रव्यूह में कैद हूँ' पानी में बहा दिया था कि शायद किसी के हाथ लग जाय, अब मालूम नहीं वह चीठी किसी को मिली या नहीं।

गोपाल०। हां मुझे वह पुर्जा मिला था, मगर कोई निश्चय न होने के कारण मै कुछ कर न सका, लेकिन उसके कुछ दिन बाद तुम पुनः दिखाई पड़ीं और एक दूसरी चीठी छोड़ गईं ?

औरत०। जी हां यह भी ठीक है। मेरे साथ मेरा भाई भी गिरफ्तार कर लिया गया था पर न जाने क्यों कुछ दिन बास्ते वह पुनः यहां पहुँचा दिया गया और उस समय उसने फिर एक उद्योग यहां से निकलने का किया। इस बार भी पुनः उसी बाग तक पहुँच हम लोग फिर पकड़ लिए गये पर इस दफे मुझे इतना मौका मिल गया कि वह चीठी लिख कर छोड़ती आ सकूँ। मगर इस बार मेरा भाई किसी दूसरी जगह भेज दिया गया है और तब से मैं अकेली ही यहां मुसीबत की घड़ियां काट रही हूं। अब तक मैं समझ रही थी कि मेरी कोई भी चीठी ठिकाने नहीं पहुंची पर आज आपके आने से जान पड़ा कि ईश्वर को मेरी हालत पर दया आई और आपको मेरा पता लग गया।

गोपाल०। हां मुझे तुम्हारी दोनों ही चीठियां मिली थीं। पहिली चीठी पर तो मुझे पूरा विश्वास न हुआ पर दूसरी भी जब उसी मजमून की पाई तो शक हुआ और आखिर तुम्हें खोजने निकला। पर एक बात का संदेह मुझे रहा जाता है। तुमने कहा कि दूसरी बार जब तुम अपने भाई के साथ यहां से निकलीं तो तिलिस्मी बाग से फिर गिरफ्तार कर ली गईं पर मुझे तो यह मालूम हुआ कि तुम आप ही आप वहां से भाग गईं और फिर नजर न आईं।

औरत०। यह आपको किसने कहा ? क्या आपने किसी को मेरा पता लगाने भेजा था ?

गोपाल० । हां, तुम्हें दुबारा देखते ही मैंने पहिचान लिया और अपने एक दोस्त को पता लगाने के लिए भेजा पर उसकी जुबानी सुना कि तुम तिलिस्म के अन्दर घुस कर गायब हो गईं ।

औरत० । (अफसोस के साथ) ओह तब तो मुझे बहुत बुरा धोखा हुआ ! किसी को अपना पीछा करते देख मैं समझी कि मेरे दुश्मनों ने मुझे देख लिया है और इसलिए मैं भागी मगर कुछ ही दूर जाते जाते पकड़ ली गई । अगर मुझे मालूम होता कि वह आप ही का बाग था जहां तक मैं पहुंच गई थी अथवा यही जान जाती कि आपने ही किसी को मेरी खबर लेने भेजा है तो काहे को भागती या क्यों फिर से इस कैद में ही पड़ती !!

गोपाल० । तुम जब वहां से भागीं तो फिर क्या हुआ ?

औरत० । थोड़ी दूर जाने बाद ही मैं पुनः दुश्मनों के हाथ पड़ गई और फिर यहां पहुंचा दी गई जैसा कि मैंने आपसे कहा । मेरा भाई भी जो यहीं था पकड़ा गया और इस बार किसी दूसरी जगह बन्द कर दिया गया क्योंकि उस दिन के बाद से फिर मैंने उसकी शकल नहीं देखी ।

गोपाल० । तुम उन लोगों को पहिचान सकती हो जिन्होंने मेरे बाग से भागती समय तुम्हें पकड़ा था ?

औरत० । जी हां, नाम यद्यपि नहीं जानती पर सूरत देख कर जरूर पहिचान लूँगी ।

गोपाल० । अच्छी बात है, उसका भी बन्दोबस्त किया जायगा मगर अब चलना चाहिये, ज्यादा देर करना मुनासिब नहीं । तुम्हें मेरे साथ चलने में अब तो कोई आपत्ति नहीं है ?

औरत० । (हाथ जोड़ कर) जी कोई भी नहीं, जहां आपकी आज्ञा हो मैं बेधड़क चलने को तैयार हूँ, पर एक प्रार्थना मेरी जरूर थी ।

गोपाल० । क्या ?

औरत० । आपने जब यहां तक आने का कष्ट उठाया है तो एक बार मेरे भाई का भी कुछ पता लगाने की चेष्टा करें । न जाने दुबारा कब आपका

आना यहां हो, या न भी हो। उस अवस्था में वह बेचारा यहां ही पड़ा पड़ा अपनी जिन्दगी की घड़ियां गिना करेगा।

गोपाल०। तुम इस तरफ से निश्चिन्त रहो। मैं वादा करता हूँ कि तुम्हारी ही तरह तुम्हारे भाई को भी यहां से छुड़ाऊंगा अगर वह इस तिलिस्म में होगा, लेकिन आज वह काम नहीं हो सकता क्योंकि यहां से लौटने का रास्ता बहुत ही बीहड़ और खतरनाक है और कम से कम तीन घण्टे इस जगह से बाहर जाने में लगेंगे, तथा इस वक्त सन्ध्या होने में भी ज्यादा विलम्ब नहीं है।

औरत०। जैसी आपकी आज्ञा हो मैं करने को तैयार हूं पर यह सुन मुझे ताज्जुब हुआ कि यहां से जाने का रास्ता तीन घण्टे का समय लेगा! मुझे जब मेरा भाई छुड़ा कर ले गया था तो मुश्किल से आध घण्टे में हम लोग आपके तिलिस्मी बाग में पहुँच गये थे। अगर आप वहीं जाना चाहते हैं और किसी दूसरी जगह नहीं तो वह स्थान यहां से ज्यादा दूर नहीं है।

गोपाल०। आधे घण्टे में मेरे तिलिस्मी बाग में पहुंच गई थीं! नहीं, ऐसा नहीं हो सकता! मुझे वहां से यहां आने में कई घण्टे लग गये और मै सुबह का चला हुआ होने पर भी धूप और गर्मी से परेशान इस वक्त यहां पहुँचा था। अवश्य ही पहिले पहिल आने के कारण ऐसा हुआ और अब जल्दी आ जा सकूंगा पर अब भी किसी हालत से दो ढाई घण्टे से कम का रास्ता नहीं होगा।

औरत०। जो आप कहते हैं ठीक ही होगा पर मुझे ताज्जुब जरूर है। क्या बताऊं मेरा भाई यहां नहीं है नहीं तो वह जरूर हम लोगों को जल्दी पहुँचा दे सकता था।

गोपाल०। (आश्चर्य करते हुए) तुम कुछ बता सकती हो कि किस रास्ते से तुम्हें तुम्हारा भाई ले गया था?

औरत०। हां हां क्योंकि वह रास्ता मुझे बखूबी याद है। इस बाग

के दक्खिन के कोने में एक बहुत बड़ा हाथी सुफेद पत्थर का बना हुआ है जिसके पेट से हम लोगों ने रास्ता निकाला था। आगे जाने पर एक सुरंग मिली थी जिसकी राह एक बावली से होते हुए एक नहर में निकले थे और वहीं से उस बाग में पहुंचे थे जिसे आप तिलिस्मी बाग कहते हैं। उस रास्ते से आधा घण्टा भी नहीं लगा होगा।

गोपाल०। जान पड़ता है वह कोई दूसरा और सहज रास्ता है। मुझे तो यहां आने के लिए कई कोस का रास्ता तय करना पड़ा है। अच्छा ठहरो मै देखता हूं।

इतना कह गोपालसिंह ने पुनः अपनी जेब से वह तिलिस्मी किताब निकाली जिसे अब से पहिले भी पढ़ चुके थे और जो वास्तव में वही थी जो भैयाराजा से उन्हें मिली थी और जिसमें अजायबघर का भेद लिखा हुआ था। इसी किताब की मदद से अजायबघर से होते हुए आज वे यहां तक आये थे मगर यह हम नहीं कह सकते कि उनके यकायक इस विचित्र औरत की खोज में इस तरह चल पड़ने का क्या कारण था। सम्भव है कि इसमें भी कोई रहस्य हो। खैर जो कुछ होगा समय पर मालूम हो ही जायगा।

गोपालसिंह ने वह तिलिस्मी किताब खोली और उलट पुलट कर देखने लगे। उधर वह औरत चुपचाप सामने खड़ी विचित्र निगाहों से उनकी तरफ देखती रही।

बहुत देर तक उस किताब को देखने बाद गोपालसिंह ने कहा, "हां यहां से जाने की एक दूसरी राह भी है जो जल्दी और कम फेर से हमें पहुँचावेगी पर अफसोस इस किताब में उसका पूरा हाल लिखा हुआ नहीं है। मगर ताज्जुब की बात है! तिलिस्मी मामलों में बिना पूरी जानकारी रक्खे कोई उस राह से आ जा नहीं सकता और तुम कहती हो कि तुम्हारा भाई तुम्हें ले कर उसी राह से गया था!!"

औरत०। जी हां, मै बिल्कुल सही सही कहती हूँ। यह क्या कोई तिलिस्मी किताब है?

गोपाल० । हां इस किताब में तिलिस्म में आने जाने के रास्तों का हाल लिखा हुआ है और मै इसी की मदद से यहां तक आया हूं ।

उस औरत ने मन में कहा, "तब इसी किताब की मुझे जरूरत है ।" और तब जहां वह खड़ी थी वहां से धीरे धीरे बेमालूम तरीके से घसकती हुई वह कुछ बाईं तरफ को हटने लगी । गोपालसिंह पुनः कुछ देर तक उलट पुलट कर देखते रहे इसके बाद उन्होंने वह किताब बन्द की और उस चौकी पर से उठने का इरादा किया जिस पर कि वे बैठे हुए थे मगर उस समय तक वह औरत घसकती हुई एक ऐसी जगह पहुँच गई थी जहां जमीन में कमल का एक फूल पच्चीकारी के काम का बना हुआ था । अभी गोपालसिंह उस चौकी पर से उठ ही रहे थे कि इस औरत ने अपना पैर बढ़ा कर उस कमल के फूल को जोर से दबा दिया और साथ ही फुर्ती से हाथ बढ़ा कर गोपालसिंह के हाथ से वह किताब भी ले ली । वे ताज्जुब के साथ कुछ पूछने के लिये अपना मुंह खोल ही रहे थे कि यकायक वह चौकी जिस पर वे बैठे हुए थे अपनी जगह से उठी और एक तरफ को इस तरह टेढ़ी हो गई कि वे किसी तरह अपने को सम्हाल न सके और धड़ाम से उसी कुण्ड में जा पड़े जो उनके पीछे बना हुआ था । उनके मुंह से ताज्जुब और घबड़ाहट की एक आवाज निकली और वे अपने को बचाने के लिये हाथ पांव मारने लगे पर उस औरत ने इस तरफ कुछ खयाल न किया और खुशी भरी निगाहों से उस किताब को देखती हुई तेजी के साथ सीढ़ियां पार कर उस बारहदरी के नीचे उतर आई । यहां भी वह न रुकी बल्कि लपकती हुई बाग के दक्खिन वाले कोने की तरफ बढ़ी ।

पचास कदम से ज्यादा न गई होगी कि पेड़ों की झुरमुट से निकल कर एक आदमी जिसका चेहरा नकाब से ढंका हुआ था उसके सामने आ खड़ा हुआ और बोला, "टेम गिन चाप ?" औरत ने जवाब दिया "चेह !" जिसे सुनते ही प्रसन्न हो कर उस आदमी ने हाथ बढ़ाया । औरत ने वह

टेम गिन चाप = मिला वह ताली ? चेह = हां । इशा = वही तो है ।

किताब उसके हाथ पर रख दी, उसने उलट पुलट कर दो तीन बार देखा और तब कहा, "इशा !!" इसके बाद उसने उस औरत का हाथ थाम लिया और दोनों फिर उसी झाड़ी में घुस गये।

आठवां बयान

सन्ध्या होने में कुछ ही देर बाकी है। अजायबघर के चारो तरफ वाला जङ्गल जिसमें यों भी बहुत मुसाफिरों की आवा जाही कभी नहीं रहती इस समय सन्नाटे के कारण भांय भांय कर रहा है और कुछ थोड़ी सी चिड़ियायें जो अपने घोंसलों की तरफ उड़ी जा रही हैं अथवा उनके पास मंडरा रही हैं जिस समय शान्त हो जायंगी तो एक दम ही निस्तब्ध हो जायगा। पश्चिम की ओर से उठने वाले बादलों की मदद पा कर अंधियारी मामूली से कहीं ज्यादा तेजी के साथ झुको आ रही है और रंग ढंग बता रहे हैं कि दो ही चार घड़ी के बाद न केवल पूरा अन्धकार यहां छा जायगा बल्कि पानी भी आ जाय तो ताज्जुब नहीं।

ऐसे समय में हम एक आदमी को अजायबघर के पूरब तरफ वाले दालान में धीरे धीरे टहलते हुए देख रहे हैं। इस आदमी का समूचा बदन बहुत ही ढीले ढाले और लम्बे लबादे से इस तरह ढँका हुआ है कि बदन का कोई भी हिस्सा खाली नहीं है यहां तक कि हाथ की उंगलियां और पैर के जूते तक भी पूरी तरह से दिखाई नहीं पड़ते और चेहरे पर भी एक काली नकाब पड़ी रहने के कारण इतना भी पता नहीं लगता कि यह आदमी मर्द है या औरत। इसके रंग ढंग और आकृति से जो कुछ पता लग सकता है वह सिर्फ इतना ही कि यह किसी के इन्तजार में इस जगह खड़ा है क्योंकि रह रह कर इसकी निगाहें सामने के मैदान और जंगल की तरफ उठ जाती हैं जिधर यह रह रह कर गौर से देखता है पर किसी तरह की कोई आहट न पा फिर टहलने लग जाता है।

धीरे धीरे काफी समय बीत गया और अन्धेरा पूरी तरह से छा गया।

बादल भी जो अभी तक केवल पश्चिम की दिशा को ही घेरे हुए थे अब पूरी तरह से समूचे आस्मान को घेर कर फैल गये और पानी का रंग दिखाई पड़ने लगा। सूनसान जंगल इस अन्धेरे में और भी डरावना मालूम होने लगा और उस दालान में भी अन्धकार की काली चादर फैलने लगी। यह देख वह आदमी कुछ बेचैन हुआ और एक बार बहुत देर तक सामने की तरफ देखने बाद बोला, "बहुत देर हो गई, अब उसके आने की आशा करना व्यर्थ है!" कुछ देर तक वह चुपचाप खड़ा कुछ सोचता रहा इसके बाद हटा और बगल की कोठरी पार करता हुआ उस तरफ पहुँचा जो अजायबघर का सदरी हिस्सा था और जिधर सीढ़ियां पड़ती थीं। सीढ़ियों पर भी वह कुछ देर तक इस उम्मीद में खड़ा रहा कि शायद जिसकी राह देख रहा है वह अब भी नजर आ जाय पर कोई आता दिखाई न पड़ा अस्तु एक बार धीरे से—"अब कोई उम्मीद नहीं" कहता हुआ वह सीढ़ियां उतरने लगा।

मगर अभी दो ही तीन सीढ़ियां उतरा होगा कि यकायक रुक गया। उसके कानों में किसी तरह की आहट पड़ी थी। वह गौर से सुनने लगा। मालूम हुआ कि कुछ आदमी तेजी के साथ आ रहे हैं जिनके पैरों के नीचे दबने वाली पत्तों की आवाज उठ रही थी। इसके मुंह से निकला, "आ गई, मगर जान पड़ता है कि साथ में और भी कोई है।" वह घूमा और पुनः कोठरी में से होता हुआ उसी दालान में जा पहुंचा जहां अब तक टहल रहा था। कुछ ही देर बीती होगी जंगल से निकल कर आते हुए तीन आदमियों पर निगाह पड़ी। अंधेरा इस समय तक इतना बढ़ गया था कि इतनी दूर से सिवाय इसके और कुछ भी पता नहीं लगता था कि ये तीनों भी अपना बदन और चेहरा काली पौशाकों से ढांके हुए हैं।

बात की बात में ये आने वाले अजायबघर के पास पहुंच गये जहां पहुँच एक ने सीटी बजाई। इशारा सुनते ही इस आदमी ने जो इतनी देर से यहां जरूर इन्हीं लोगों के आने की राह देख रहा था जवाब में

सीटी बजाई और तब स्वयम् भी आगे बढ़ कर उस बाहरी हिस्से में पहुँच गया जहां वे नये आये हुए तीनों आदमी पहुंच चुके थे। इस आदमी ने कहा, "तुमने आने में बहुत ज्यादा देर कर दी!" जवाब में एक ने कहा, "जी हां, कुछ ऐसे तरद्दुद में पड़ गई कि देर हो ही गई।" इसने कहा, "यहां रुकना मुनासिब नहीं, चलो ठिकाने पर ही पहुँच कर पूछूंगा कि वह तरद्दुद क्या था।" आगे आगे वह और पीछे पीछे बाकी के तीनों आदमी अजायबघर की सीढ़ियां उतरे और पुनः घोर जंगल में घुसे पर इस बार उधर नहीं चले जिधर से ये तीनों नये आने वाले आये थे बल्कि उधर को रवाना हुए जिधर लोहगढ़ी की इमारत पड़ती थी।

पाठकों को मालूम है कि अजायबघर से लोहगढ़ी की इमारत बहुत दूर नहीं है अस्तु जल्दी ही ये लोग उस टीले के नीचे पहूँच गये जिस पर वह इमारत बनी हुई थी। यहां पहुंच कर भी वे लोग रुके नहीं बल्कि तेजी के साथ चलते हुए टीले के ऊपर पहुंच गये। मामूली ढंग से उसका सदर दर्वाजा खोला गया और सब कोई इमारत के अन्दर हो गये। अभी तक ये लोग बराबर अन्धेरे में ही चल रहे थे पर अब उस आदमी ने सामान निकाल कर रोशनी की जिसकी मदद से बाकी रास्ता तय करके ये लोग भीतर वाले उस लोहे के बंगले में पहुंचे और उसके दालान में पहुंच कर के ही इन लोगों ने दम लिया। लबादे और भारी पौशाकें उतार कर रख दी गईं और हलके होकर ये लोग जमीन पर बैठ गये।

अब हमें मालूम हुआ कि जो आदमी पहिले से अजायबघर में मौजूद था उसके सिवाय बाकी नई आने वाली तीनों ही औरतें हैं मगर इस जगह की हलकी रोशनी पाठकों को इनका रूप रंग देखने और पहिचानने का मौका नहीं देगी अस्तु हम इनका परिचय दे देना मुनासिब समझते हैं क्योंकि ये तीनों ही हमारे पाठकों की जानी पहिचानी और भूतनाथ की जीवनी के आखिरी दिनों में उससे बहुत गहरी दिलचस्पी रखने वाली औरतें हैं जिनका नाम न जानने से आगे की बातचीत का मजा न मिलेगा। वह देखिये

जिसकी धानी रंग की साड़ी में से उसके शरीर का गुलाबी रंग फूटा पड़ता है और जो मचल मचल कर बातें कर रही है वह नन्हों है, उसके बगल में बैठी अपनी कटीली आंखों को तेजी के साथ चारो तरफ घुमा कर इस अन्धेरे में भी कुछ देख निकालने की कोशिश करने वाली गौहर है, और इन दोनों के बीच में बैठी और कुछ सहमी सी नजर आती हुई हेलासिंह की लड़की मुन्दर है। इनके सामने वाले मर्द को भी पाठक पीछे के किसी बयान में देख चुके हैं और यह वही है जिसे हम रामचन्द्र के नाम से पुकार आये हैं पर पाठकों को यह भी याद होगा कि उनके सुबीते के लिये इसका यह बनावटी नाम रख दिया गया था। असली नाम इसका क्या है यह अभी तक मालूम नहीं हुआ, या सम्भव है कि इस समय की बातचीत से पता लग जाय। खैर आइये पहिले इनकी बातों को गौर से सुनें क्योंकि वे हमारे लिये बहुत जरूरी हैं।

नन्हों०। उम्मीद है कि मेरी इन दोनों साथिनों को आपने पहिचान लिया होगा?

रामचन्द्र०। इन बीबी गौहर को भला मैं कैसे नहीं पहिचानूंगा पर उनकी साथ वाली को मैं नहीं पहिचान सका। शायद कह सकता हूँ कि आज के पहिले कभी मुझको इनके देखने का मौका नहीं मिला।

नन्हों०। ये हेलासिंह की लड़की मुन्दर हैं। हेलासिह को तो आप जानते ही होंगे?

राम०। बहुत अच्छी तरह से! तब तो ये हमी लोगों में से हैं। क्या ये ऐयारी भी जानती हैं?

नन्हों०। नहीं मगर अपनी अक्ल से बड़े बड़े ऐयारों के कान काटती हैं। इन्होंने एक बड़े मारके का काम किया है और इसी से सखी गौहर ने इन्हें अपने साथ ही नहीं कर लिया है बल्कि मुझको भी इनसे मदद लेने पर मजबूर किया है। इनसे मुझे किसी तरह का कोई पर्दा नहीं है अस्तु आप बेखटके इनके सामने सब तरह की बातचीत कर सकते हैं।

राम०। यह तो मैं तभी समझ गया जब इनको ले कर तुम यहां आईं। खैर तुम्हारी तरह मै भी इन पर विश्वास करूंगा और यह आशा रक्खूंगा कि ये हमलोगों का भेद धोखे में भी किसी पर जाहिर न करेंगी।

नन्हों०। उस तरफ से आप बिल्कुल निश्चिन्त रहिये। इसके लिये मैं पहिले ही इनसे कसमें खिला चुकी हूं और आपको इतमीनान दिलाती हूं कि इनकी जुबान से कभी कोई भी बात जाहिर न हो सकेगी।

राम०। खैर तो अब काम की बात होनी चाहिये, सबसे पहिले मैं तुमसे कुछ बातें पूछना चाहता हूं?

नन्हों०। बहुत अच्छा पूछिये, मुझे भी कई ऐसी बातें दरियाफ्त करनी हैं जिनका ठीक ठीक पता आपसे ही लगेगा और जिन्हें मै बाद में पूछूंगी।

राम०। ठीक है तुम भी उन्हें पूछ कर अपना खुटका मिटा लेना। अच्छा पहिली बात तो मै यह जानना चाहता हूं कि उन विचित्र चीजों के होने का पता तुम्हें क्योंकर लगा जिन्होंने भूतनाथ को उस दिन इतना परेशान कर दिया था?

नन्हों०। (गौहर और मुन्दर की तरफ बता कर) इन्हीं दोनों सखियों की बदौलत! कुछ उन चीजों को छोड़ कर जिनका हाल आप ही ने कहा था बाकी की कुछ चीजें महाराज शिवदत्त और जमानिया के सेठ चञ्चलदास के घर में मौजूद थीं पर उनके होने का मुझे गुमान तक न था।

राम०। (ताज्जुब से गौहर और मुन्दर की तरफ देख कर) मगर आप लोगों को इन चीजों का पता क्योंकर लगा? जहां तक मै समझता हूँ आप में से किसी को भी भूतनाथ के इस भेद से कोई सम्बन्ध नहीं है!

नन्हों०। मैं जब पूरा हाल आपसे बयान करूंगी तब आपको सब मालूम हो जायगा। (गौहर की तरफ देख कर) क्यों सखी, मै सब हाल इनसे कह दूं?

गौहर०। जब आप लोग अपनी बातों को बिना छिपाये हम लोगों

के सामने कह रहे हैं तो फिर हमारी बातें जाहिर कर देने में क्या हर्ज है?

नन्हों० । बस तो ठीक हैं, अच्छा सुनिये—यह तो आपको मालूम ही होगा कि (गौहर की तरफ बता कर) इनकी मां गुजर गई हैं । मां का गम इन्हें बहुत ज्यादे हुआ और ये उस सदमे से दीवानी सी हो गईं । इनकी यह हालत देख इनके बाप ने हकीमों की राय से इन्हें आजाद कर दिया और एक ऐयार और एक ऐयारा को इनके साथ करके जहां चाहे घूमने की इजाजत दे दी । इन्हें ऐयारी सीखने का शौक हुआ और इन्होंने अपने दोनो साथियों की मदद से उसे सीखा भी । उसी मौके पर एक दफे इन्हें भूतनाथ ने गिरफ्तार करके अपनी लामाघाटी में बन्द किया जहां उसकी रखेली रामदेई से इनकी मुलाकात हुई । उससे बातें करने पर इन्हें एक विचित्र बात यह मालूम हुई कि रामदेई को भूतनाथ ने बहुत बड़े धोखे में डाल रक्खा है, अर्थात् अपना असल भेद उसे कुछ भी मालूम नहीं होने दिया है यहां तक कि नाम भी उस पर प्रगट नहीं किया है । बात यों थी कि रामदेई पर सब से पहिले जैपालसिंह की निगाह पड़ी थी जो उसे उसके घर से उड़ा लाया मगर बीच ही में से भूतनाथ ने उसी की सूरत बन इसे गायब कर दिया और तब से यह भूतनाथ ही के पास है । आप जानते ही होंगे कि जैपाल का असली नाम रघुबरसिंह है ।भूतनाथ ने भी अपने को रघुबरसिंह के ही नाम से रामदेई पर जाहिर किया और वह अब तक उसे गदाधरसिंह न जान कर रघुबरसिंह ही समझती चली आई है । यह विचित्र बात जब इन्हें मालूम हुई तो ये बड़ी प्रसन्न हुईं क्योंकि इन्हें भूतनाथ का यह एक ऐसा भेद मालूम हो गया था कि जिससे बहुत कुछ काम निकाला जा सकता था । इन्होंने अपनी चलती फिरती बातों के जोर से रामदेई से दोस्ती कर ली और उसने इन्हें भूतनाथ की कैद से छुड़ा दिया । इनका कुछ सम्बन्ध महाराज शिवदत्त से भी था जो अपना कोई काम भूतनाथ के जरिये निकाला चाहता था पर उस पर कोई वश न होने के कारण लाचार था । भूतनाथ के इस भेद के जोर पर

इन्हें वह काम हो जाने की आशा बँधी अस्तु ये फिर शिवदत्त से मिलीं और उससे यह बात कही जिस पर उसने भुवनमोहिनी और अहिल्या तथा मालती की वह पुरानी कथा इनसे सँक्षेप में बयान की और वे चीजें भी दिखाईं जो इस सिलसिले में उसके पास मौजूद थीं। भूतनाथ की दिखाई गई चीजों में से कई तो शिवदत्त ही के जरिये हम लोगों को मिलीं खैर उसका हाल पीछे कहूँगी शिवदत्त ने सब पिछला हाल इनसे कह कर अपना वह काम भूतनाथ के जरिये करा लेने का भार इनके ऊपर सौंपा। इन्होंने अभी मुझे बताया नहीं है कि वह काम क्या था...

राम०। (मुस्कुरा कर) पर मै बता सकता हूं कि वह क्या काम था!!

गौहर०। (ताज्जुब से सिर हिला कर) नहीं, आप क्योंकर बता सकते हैं!! सिवाय महाराज शिवदत्त के और मेरे किसी तीसरे के कान में आज तक वह बात गई ही नहीं!!

राम०। (हंस कर) जब वह इतनी गुप्त बात है तो मै सब के सामने न कह कर उसे तुम्हारे कान में कहता हूँ, सुन कर तुम आप ही कह दोगी कि मै ठीक कहता हूँ या गलत!!

गौहर ने यह सुन कहा, "नहीं आप किसी तरह भी उस बात को नहीं जान सकते!" मगर अपना कान रामचन्द्र की तरफ जरूर बढ़ा दिया जिसने उसकी तरफ झुक कर बहुत ही धीरे से कहा, "शिवदत्त ने भूतनाथ के कब्जे से शिवगढ़ी की ताली ले लेने का काम तुम्हारे सुपुर्द किया था।"

यह एक ऐसी बात थी कि सुनते ही गौहर की यह हालत हो गई कि काटो तो बदन से लहू न निकले। वास्तव में यही काम शिवदत्त ने उसके सपुर्द किया था और इसी काम के लिये कितने ही महीनों से वह भूतनाथ के पीछे पड़ी हुई थी मगर इस भेद को उसने अपने दिल की इतनी गहरी तह के भीतर छिपाया हुआ था कि औरों को तो क्या अपनी सखी गिल्लन तक को उसने यह बात नहीं कही थी। उसका इरादा नन्हों मुन्दर दारोगा ल आदि सभी को बतोला दे कर यह काम कर डालने का था क्योंकि

वह जानती थी कि ये लोग भी उसी शिवगढ़ी की ताली के लिये ही भूतनाथ के पीछे पड़े हुए हैं और इसी लिए इन लोगों को धोखा दे खुद ताली उड़ा लेने का वह मनसूबा बांधे हुई थी। वह इस बात को भी खूब समझती थी कि अगर इन लोगों को उसका यह गुप्त इरादा मालूम हो जायगा तो फिर कभी ये उसे अपना साथी नहीं बनावेंगे और उसे दूध की मक्खी की तरह न केवल निकाल ही बाहर करेंगे बल्कि और तरह से भी तकलीफ पहुँचावें तो ताज्जुब नहीं अस्तु इस समय रामचन्द्र के मुंह से अपने दिल का वह गुप्त भेद सुन वह यहां तक घबड़ा गई कि उसके होशहवास गायब हो गये। उसका चेहरा एक दम पीला हो गया और उसे विश्वास हो गया कि अब वह काम पूरा उतरना तो दूर रहा वह खुद भी इन लोगों के पंजे से छूट न सकेगी बल्कि ताज्जुब नहीं कि इसी समय गिरफ्तार कर कहीं कैद कर दी जाय और कौन ठिकाना कि इसी इरादे से उसे यहां लाया भी गया हो! यह विचार आते ही उसका दिल धड़कने लगा पर उसने बहुत ही कोशिश कर के अपने को सम्हाला और चेहरे से अपने दिल का हाल जाहिर न होने देने की कोशिश करने लगी। आखिर धीरे धीरे उसने अपने होशहवास ठिकाने किये और बनावटी हँसी हंस कर कहा, "वाह वाह, आप भी क्या बेसिर पैर की बात कह रहे हैं? भला यह भी कभी मुमकिन हो सकता है!!"

रामचन्द्र ने यह सुन हंस कर जवाब दिया, "इसका तो तुम्हारा चेहरा ही गवाही दे रहा है पर तुम निश्चिन्त रहो, मेरी जुबान से न तो कोई तुम्हारा यह भेद जान सकेगा और न कभी कोई तकलीफ ही तुम्हें मेरा तरफ से पहुंचेगी। (नन्हों की तरफ घूम कर) हां तो तुम क्या कह रही थीं?"

नन्हों इस समय बड़े गौर से गौहर की तरफ देख रही थी और उसे विश्वास हो गया था कि रामचन्द्र ने कोई बहुत ही गुप्त भेद की बात उससे कही है मगर उसने यह भी सोच लिया कि इस समय उसके बारे में कुछ पूछने का मौका नहीं है। रामचन्द्र की बात सुन उसने एक भेद की निगाह

उस पर डाली जिसके जवाब में उसने भी विचित्र मुद्रा से कुछ इशारा किया जिसे समझ वह बोला, "हां तो मैं यह कह रही थी कि ये महाराज शिवदत्त के किसी काम को पूरा कराने के लिए भूतनाथ पर अपना प्रभाव डालना चाहती थीं और इसके लिये इन्हें यही मुनासिब जंचा कि हम लोगों से दोस्ती करें। इस काम में इन्होंने रामदेई की मदद ली और उसके हाथ की सिफारिशी चीठी लेकर मुझसे मिलीं साथ साथ मेरा एक इतना बड़ा काम इन्होंने कर दिया कि जिसके सबब से झख मार कर मुझे इनसे दोस्ती का बर्ताव करना पड़ा, पर क्या किया जाय, मेरी किस्मत फूट चुकी थी और इनकी मेहनत का कोई फल न निकला।"

रामचन्द्र०। तुम्हारा मतलब शायद उसी कैदी से है?

नन्हों०। जी हां, वह इतने दिनों से बराबर महाराज शिवदत्त की कैद में ही था जो न जाने किस विचार से उसे अपने यहां रक्खे हुए थे पर गौहर की सिफारिश से उसे मेरे लिये छोड़ देना उन्होंने मंजूर कर लिया बल्कि छोड़ कर बेगम के घर पहुंचवा दिया, पर अफसोस कम्बख्त भूतनाथ के आदमी उसी दिन चोरी से बेगम के घर में घुस उसे निकाल ले गये और अन्त में उन्होंने उसकी जान ही ले कर छोड़ी!!

इतना कहते कहते नन्हों की आंखें डबडबा आईं और गला बन्द हो गया। कुछ देर तक वह चुप रही, इसके बाद बहुत कोशिश से अपने को सम्हाल फिर कहने लगी :—

नन्हों०। अपने काम के लिए तब ये मुन्दर से मिलीं। मुन्दर के पिता हेलासिंह का उस गुप्त कमेटी से जो सम्बन्ध था वह पूरा हाल तथा एक कोई उससे भी गुप्त भेद भूतनाथ को मालूम हो गया था और वह उनको तरह तरह की धमकी दे कर अपने चुप रहने की कीमत के तौर पर पचास हजार रुपया और लोहगढ़ी की ताली उनसे मांग रहा था जिसके न पाने पर वह सब हाल गोपालसिंह से कह देगा यह धमकी भी साथ में थी, अस्तु इन मुन्दर को भी भूतनाथ से बदला लेना था। इन्होंने जब भुवनमो-

हिनो वाला कुछ हाल गौहर से सुना तो बाकी हाल अपने पिता से जान कर सब मामला अच्छी तरह समझ लिया और तब अपनी कारीगरी शुरू की। चञ्चलदास के भतीजे श्रीविलास पर इन्होंने हाथ फेरा और उससे भुवनमोहिनी का बहुत सा हाल ही सिर्फ नहीं जान लिया बल्कि उसके पास इस सम्बन्ध में जो कुछ कागज पत्र और सामान थे उन्हें भी हथिया लिया। जो कुछ सामान हम लोगों को मिला उसका एक खासा हिस्सा इन्हीं की कारीगरी का नमूना है। इस प्रकार हम तीनों आदमियों ने वह सब सामान जुटा लिया जो भूतनाथ को दिखाया गया था, और अब उसको डरा धमका कर अपना काम सिद्ध करने की बात सोची जाने लगी। इसी बीच महाराज के भेजे हुए दोनों ऐयार गोपाल और श्यामसुन्दर आ पहुंचे और उनसे मालूम हुआ कि आप भी यहीं विराज रहे हैं। उस समय से आगे की सब कार्रवाई आपकी मदद और राय से ही की जा रही है और इसके बाद जो कुछ हुआ आपको मालूम ही है। किस तरह वह सब नाटक किया गया और उन सामानों को देख कर भूतनाथ कैसा घबड़ाया यह आपके शागिर्दों ने आपसे कहा ही होगा?

राम०। ठीक है, तो कहना चाहिये कि तुम्हारी इन दोनों साथिनों का बहुत बड़ा अहसान हम पर और हमारे महाराज पर है। (गौहर और मुन्दर की तरफ देख कर) हमारे महाराज को जब ये बातें मालूम होंगी तो वे बहुत ही खुश होंगे!!

गौहर और मुन्दर ने यह सुन आपुस में एक दूसरे की तरफ देख मुस्कुरा दिया और रामचन्द्र पुनः नन्हों से बोले, "अब मैं कुछ बातें उन चीजों के बारे में जानना चाहता हूँ जो उस दिन भूतनाथ को दिखाई गई थीं और इसके लिये बेहतर यही होगा कि हम लोग वहीं चले चलें जहां वह सब सामान रक्खा हुआ है। वहां उन चीजों के सामने ही वे बातें समझने में आसानी होगी।"

नन्हों०। अच्छी बात है, तब शायद वह सामान यहां ही कहीं रक्खा गया है?

राम० । हां यहां पास ही में है मगर इस इमारत के निचले हिस्से में है और हमें वहीं चलना पड़गा ।

नन्हों० । अच्छी बात है तो वहीं चलिये मगर क्या कोई तेज रोशनी का इन्तजाम नहीं हो सकता ? यह लालटेन इतनी कम रोशनी देती है कि उससे साफ कुछ दिखाई नहीं पड़ता !

"सो भी हो जायगा ।" कहता हुआ रामचन्द्र उठ खड़ा हुआ और तीनों औरतें भी खड़ी हो गईं । किसी जगह से खोज कर रामचन्द्र ने एक दूसरी लालटेन निकाल कर बाली जिसकी दूर तक फैलने वाली तेज रोशनी ने वहां के अन्धकार को एक दम दूर कर दिया और अब वहां को हर एक चीज साफ साफ नजर आने लगी । नन्हों को इस स्थान तथा अन्दर के तिलिस्म का भी कुछ हाल मालूम था और वह यहां कई दफे आ जा चुकी थी और मुन्दर तथा गौहर भी इस लोहगढ़ी के बारे में कुछ जानकारी रखती थीं तथा पहिले भी यहां आ चुकी थीं * अस्तु उनको भी यहां का सामान कुछ आश्चर्य में नहीं डाल सकता था अतएव ये तीनों ही चुपचाप रामचन्द्र के पीछे पीछे रवाना हो गईं जो लालटेन बालने बाद एक क्षण भी न रुका और उस दालान के बगल से होता हुआ एक कोठरी में घुसा ।

हमारे पाठक प्रभाकरसिंह के साथ इस इमारत में कुछ समय तक रह चुके हैं और इस लिये सम्भवतः उन्हें याद होगा कि इसके बाहरी हिस्से में चारो तरफ चार दालान तथा उनके कोनों में चार ही कोठरियां थीं और बीच में एक बड़ा कमरा था । उन कोठरियों में क्या क्या चीजें थीं यह भी उन्हें याद होगा अस्तु उसका फिर से यहां बयान करने की जरूरत नहीं है । तीनों औरतों को साथ लिये रामचन्द्र सीधे उस कोठरी में पहुँचा जिसके अन्दर तोप बारूद गोले तथा इसी प्रकार की अन्य चीजें भरी हुई थीं । इस कोठरी के बीचोबीच में एक और तहखाना होने का हाल हम लिख आये हैं । इस समय रामचन्द्र सभों को लिये हुए उसी तहखाने में

* देखिये पन्द्रहवां हिस्सा नौवां बयान ।

उतर गया। पतली पतली दस बारह डण्डा सीढ़ियां उतर जाने बाद फिर एक कोठरी मिली जो पहिली कोठरी से नाप में शायद कुछ छोटी ही होगी। इसी कोठरी में इस समय वह सब सामान पड़ा हुआ था जिसने भूतनाथ को बेचैन कर दिया था और जिसका हाल ऊपर कई जगह लिखा जा चुका है। वह लाल भयंकर मूरत, उस औरत की सिर कटी लाश, काले कपड़ों से अपने को ढँके हुआ आदमी, इत्यादि वे चीजें तो थीं ही जिनका जिक्र हम सोलहवें हिस्से के अन्त में कर आये हैं पर इनके अलावे वह सब बाकी का सामान भी यहां मौजूद था जिन्हें हमारे पाठक सोलहवें हिस्से के छठें बयान में नाव पर देख चुके हैं। बोतल के अन्दर रखा हुआ सिर, जंग लगी तलवार, सन्दूक, आदि सभी कुछ वहां था, केवल वे दोनों चीते के बच्चे तथा वह लाश यहां न थी जिनका जिक्र उस जगह आ चुका है। यह सब सामान वहां कायदे के साथ चारो तरफ सजा कर रक्खा हुआ था और बीच में कुछ खाली जगह छूटी हुई थी जहां रामचन्द्र और ये तीनों औरतें जा कर बैठ गईं। इन लोगों के सामने की तरफ एक और दर्वाजा पड़ता था जो इस समय बन्द था और रंग ढंग से मालूम पड़ता था कि किसी सुरंग का मुहाना है।

नन्हों०। मैं देखती हूं कि सभी चीज यहां आ गई हैं। आपके शागिर्द गोपाल और श्यामसुन्दर का यह काम मालूम होता है?

राम०। हां उन्हीं दोनों ने कुछ और आदमियों की मदद से यह सामान यहां पहुँचाया है। (सुरँग की तरफ बता कर) इसी सुरंग की राह से ये चीजें यहां लाई गई हैं।

नन्हों०। क्या यह सुरंग उसी जगह जा कर निकली है जहां भूतनाथ को ये चीजें दिखाई गई थीं?

राम०। हां, मगर कुछ चक्कर खाती हुई। यह राह तिलिस्म के अन्दर गई है और वहां से एक दूसरी राह बाहर उस जगह निकलती है।

नन्हों०। (गौर की निगाह चारो तरफ डाल कर) क्या मैं भूलती हूं

या यह वही कोठरी है जिसके अन्दर अहिल्या की लाश उस समय ला कर रक्खी गई थी जब हेलासिंह और जैपाल ने उसका खातमा किया था ?

राम० । बेशक यह वही कोठरी है पर मुझे तुम्हारी याददाश्त पर ताज्जुब होता है !!

नन्हों० । (एक तरफ की दीवार में ऊपर की तरफ बने हुए रौशन-दान की तरफ बता कर) इसको देख कर मुझे यह जगह खयाल आ गई । यह वही रौशनदान है जिसको राह मालती ने झांक कर देखा था और उस समय मैं·····

राम० । (आंख के इशारे से उसे रोक कर) ठीक है और इसी लिये मैंने इन सब सामानों को इसी जगह ला कर रखना मुनासिब समझा । इसे भूतनाथ के जीवनचरित्र की कोठरी कहना मुनासिब है । अच्छा अब इन बातों को जाने दो, दो चार बातें जो इन विचित्र चीजों के सम्बन्ध में पूछता हूं बताओ और तब आगे की कार्रवाई सोचो कि क्या करना चाहिये और भूतनाथ के कब्जे से शिवगढ़ी की ताली क्योंकर प्राप्त करनी चाहिये ।

नन्हों० । बहुत अच्छा, आपको और भी जो कुछ पूछना है पूछ लीजिये इसके बाद मुझे जो बातें दरियाफ्त करनी हैं उन्हें मैं पूछूंगो ।

रामचन्द्र ने उस कटे हुये सिर की तरफ देख कुछ पूछना चाहा मगर यकायक उसकी निगाह सुन्दर और गौहर की तरफ जा पड़ी जिससे न जाने कौन सा खयाल उसके मन में पैदा हुआ कि वह रुक गया और अपनी बात बदल कर बोला, "हां एक बात बहुत जरूरी दरियाफ्त करना तो मैं भूल ही गया था !!"

नन्हों ने ताज्जुब से पूछा, "वह क्या ?"

रामचन्द्र ने कहा, "गोपालसिंह के कब्जे से उनकी तिलिस्मी किताबें निकाल लेने का तुमने महाराज के सामने बीड़ा उठाया था, उसका क्या हुआ ?"

नन्हों के चेहरे पर यह सुन एक विचित्र तरह की मुस्कुराहट खेलने

लगी जिसे देख रामचन्द्र ने कहा, "तुम्हारी प्रसन्नता कह रही है कि तुम्हें इस मामले में सफलता मिली है ! जल्दी बताओ कि क्या मेरा खयाल ठीक है ? क्या वह काम हो गया ?"

नन्हों० । जी हां !!

राम० । (खुश हो कर) वाह वाह, यह तो तुमने बहुत बड़ी खुश-खबरी सुनाई !! क्या वह ताली मिल गई ?

नन्हों० । (हंसती हुई) जी हां ।

राम० । (ताज्जुब और आग्रह से नन्हों का हाथ पकड़ कर) सो कैसे, सो कैसे, मुझे पूरा हाल सुनाओ !!

नन्हों० । अच्छा अच्छा मै सुनाये देती हूं मेरा हाथ मत तोड़िये ! (जरा रुक कर) आपको इस सम्बन्ध में शुरू का किस्सा तो मालूम ही होगा ?

राम० । केवल इतना ही कि तुम महल के अन्दर पहुँच गई हो और गोपालसिंह वह किताब कहां रखते हैं यह जानने की कोशिश कर रही हो ।

नन्हों० । उसके बाद का कोई हाल आपको नहीं मालूम हुआ ? यह तो बहुत दिन पहले की बात है ।

राम० । नहीं इसके बाद का कुछ भी हाल मैं नहीं जानता । तुम्हें शायद मालूम नहीं है कि इधर कई दिनों से मैं एक दूसरे ही फेर में पड़ा हुआ था ।

नन्हों० । बीच बीच में अपने आदमी से सब हाल चाल की खबर तो मैं बराबर भेजती ही रहती थी ।

राम० । वह सब हाल मुझ तक पहुंचता तो था पर बहुत देरी से और बेसिलसिले मिलता था । मैं चाहता हूं कि तुम्हारी जुबानी सब हाल पूरा पूरा सुनूँ ।

नन्हों० । बहुत अच्छा तो मै खुलासा ही कहती हूँ । महल के अन्दर घुस जाने में मुझे कुछ भी तरद्दुद न हुआ क्योंकि वहां पचीसों लौंडियों

से मेरी जान पहिचान थी जिनमें से पांच छः तो मुझे जान से बढ़ कर मानती थीं। मैं जानकी नाम की एक लौंडी की बहिन के नाम से अपना परिचय दे कर उन सभों में अच्छी तरह घुल मिल गई और महल के अन्दर सब जगह मेरा जाना आना होने लगा। यद्यपि तरह तरह के बहानों से मैं गोपालसिंह के कमरे में भी कई दफे गई पर इस बात का पता कुछ भी न लग सका कि वह तिलिस्मी किताब कहां रक्खी जाती है।

आखिर मैंने एक दूसरी तर्कीब की। मैंने सोचा कि गोपालसिंह को किसी तरह का धोखा दिये बिना काम सिद्ध न होगा। वह धोखा क्या होगा यह भी मैंने सोच लिया और इस काम के लिये दारोगा साहब से मदद ली। आप तो जानते ही हैं कि दारोगा साहब से मेरी गहरी जान पहिचान है।

राम०। बहुत अच्छी तरह जानता हूँ और यह भी जानता हूं कि यह बात आज से नहीं बल्कि उस वक्त से है जब कि तुम बड़ी महारानी की सहेलियों में से थीं और दारोगा साहब तुम्हारे .....

नन्हों०। (मुस्कुरा कर) ठीक है, अस्तु मैंने उसी पुरानी दोस्ती का लाभ उठाना चाहा और दारोगा साहब से मिली।

राम०। मगर यह तो तुमने गलती की, वह तो... ..

नन्हों०। आप सुनिये भी तो ! उधर कुछ और ही गुल खिला हुआ मुझे दिखा अर्थात् वे खुद गोपालसिंह के कब्जे से वह किताब निकाल कर अपने हाथ में करना चाहते थे।

राम०। हां यही बात मैं कहना चाहता था !!

नन्हों०। मुझे जब यह मालूम हुआ तो मैं इस काम में उनकी मदद करने को तैयार हो गई, आखिर अपना मतलब तो निकालना ही था !

राम०। ठीक है तुम्हारे चांगलेपन को मैं अच्छी तरह समझता हूँ ! अच्छा, तब क्या हुआ ? दारोगा साहब ने क्या किया ?

नन्हों०। मुझे और मेरे एक साथी को तिलिस्म के अन्दर पहुँचाया

और आने जाने का रास्ता बता कर और भी सब प्रबन्ध कर दिया।

राम०। वह कौन सी जगह थी जहां उन्होंने तुमको पहुँचाया था?

नन्हों०। जमानिया तिलिस्म का ही कोई हिस्सा था जिसको शायद चक्रव्यूह कहते हैं, वहां से खास बाग में जाने का एक गुप्त रास्ता था।

राम०। (चौंक कर) चक्रव्यूह!

नन्हों०। जी हां चक्रव्यूह, मगर यह नाम सुन कर आप चौंके क्यों?

राम०। इस लिये कि मैं जानता हूं कि वह बड़ी भयानक जगह है और वहां सहज में लोगों का आना जाना नहीं हो सकता। दारोगा साहब ने तुम्हें वहां कैसे पहुँचा दिया इसी का ताज्जुब है!

नन्हों०। आप ठीक कहते हैं, दारोगा साहब ने भी मुझसे उस जगह के बारे में यही कहा था कि वह बड़ा भयानक स्थान है और इस बात की सख्त ताकीद भी कर दी थी कि जो स्थान उन्होंने बता दिया उसके आगे या किसी दूसरी जगह जाने आने का उद्योग मैं कदापि न करूं नहीं तो तिलिस्म में फंस जाऊंगी। मगर उनकी बातचीत से मुझे यह भी गुमान हुआ कि इस जगह का भेद उन्होंने अभी हाल ही में जाना है, पहिले वे इस बारे में कुछ भी नहीं जानते थे।

राम०। मगर उनकी बातचीत से यह कुछ प्रगट नहीं हुआ कि उस स्थान का पता लगा उन्हें क्यों कर?

नन्हों०। नहीं यह तो कुछ मालूम नहीं हुआ, मगर क्या यह कोई भेद की बात है?

राम०। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हमारे महाराज उस स्थान का हाल जानने के लिये बहुत दिनों से व्याकुल हैं!

नन्हों०। हां यह बात तो मैं उन्हीं की जुबानी सुन चुकी हूँ।

राम०। मगर वे इस चक्रव्यूह के बारे में सिर्फ इतना ही जानते हैं कि वह जितनी ही भयानक जगह है उतनी ही सुन्दर सैर सपाटे लायक और दौलत से भरपूर भी है। मुझसे कई दफे उन्होंने यह बात कही कि अगर

किसी तरह उस जगह का भेद मालूम होता तो बड़ा अच्छा होता। मगर अब जब दारोगा साहब उस जगह का हाल जान गये हैं तो शायद महाराज साहब को कुछ बता सकें ?

नन्हों०। शायद ही कुछ, क्योंकि इतना मैं समझ गई कि यद्यपि मुझे उन्होंने उस स्थान तक पहुंचा दिया था पर खुद वे वहां आने जाने से बहुत ही डरते थे और उसके बारे में विशेष कुछ जानते भी नहीं थे। हमारे महाराज को अगर कुछ उस स्थान के बारे में पता लग सकेगा तो इसी किताब से लग सकेगा जिसको कि मैंने गोपालसिंह के कब्जे से लिया है क्योंकि इसी की मदद से दारोगा साहब भी वहां तक पहुँचे थे।

राम०। सो तो हई है और इसीलिए यह किताब लेने का महाराज का इतना आग्रह था। खैर तुम आगे का हाल कहो और उस जगह का कुछ हाल सुनाओ जहां दारोगा साहब ने तुम्हें पहुंचाया।

नन्हों०। उस स्थान में जाने का रास्ता तो अजायबघर में से था पर खुद वह जगह थी कहीं खास बाग के आस पास में ही जहां जाने का, जैसा मैंने कहा, एक रास्ता भी वहां से था। अजायबघर की ड्योढ़ी से आगे एक महराबदार बड़े फाटक में से होकर जिसके सामने एक पुतली लटकती है, वहां जाना होता है। है वह एक बड़ा ही रमणीक बाग जिसके बीचोबीच में एक बारहदरी है, वहां सैकड़ों फौव्वारे लगे हुए हैं जिनको जब चाहे इच्छानुसार चलाया जा सकता है और जिनकी बदौलत वह स्थान खास कर आज कल गर्मी के मौसिम में तो बिल्कुल स्वर्ग ही जान पड़ता है।

उस स्थान तक मुझे पहुँचा और वहां से तिलिस्मी बाग में आने जाने का रास्ता बतला दारोगा साहब तो चले गये और अब मैं अपनी फिक्र में पड़ी। एक रोज सुबह मैं गोपालसिंह के सोने वाले कमरे के सामने इस तरह पर घूमने लगी कि उनका ध्यान मेरी तरफ आकर्षित हुआ और वे मेरा पता लगाने मेरी तरफ आये मगर तब मैं गायब हो गई और उस

जगह एक पुर्जा छोड़ गई जिसमें लिखा था कि—"मैं चक्रव्यूह में कैद हूं।"

उस दफे तो कुछ न हुआ पर कुछ समय के बाद मैंने जब फिर ऐसा ही किया तो गोपालसिंह बड़े ताज्जुब में पड़ गये। इस दफे मैं एक खासी लम्बी चौड़ी चीठी लिख कर ले गई थी और मेरा विचार था कि अबकी उन्हें अच्छी तरह रंग पर लाऊँगी, यद्यपि वह विचार पूरा न उतर पाया फिर भी थोड़ा बहुत काम तो बन ही गया।

राम०। इसका क्या मतलब? तुम्हारा क्या विचार था और वह क्यों नहीं पूरा उतरा?

नन्हों०। मेरा विचार इस बार उनसे दूबदू दो चार बातें करने का था पर जिस समय मैं वहां पहुंची उसी समय न जाने किस काम से इन्द्रदेव भी वहां पहुंच गये जिससे मुझे अपना विचार छोड़ वहां से भाग जाना पड़ा क्योंकि यद्यपि गोपालसिंह तो मुझे नहीं पहिचान सकते थे पर इन्द्रदेव मुझे देखते ही फौरन पहिचान लेते और तब सारा भंडा फूट जाता। अस्तु उन्हें वहां देख मैंने अपना इरादा बदल दिया और केवल वह चीठी ही छोड़ कर चली आई। पर उतने से भी काम बखूबी हो गया यानी यह किताब मेरे हाथ आ गई। मुझे देख और मेरी चीठियां पा गोपालसिंह अपने को रोक न सके और मेरा पता लगाने के लिये तिलिस्म के अन्दर घुसे जहां से उन्हें धोखा दे यह किताब कब्जे में कर लेना कोई मुश्किल न था।

इतना कह नन्हों ने वह सब हाल कह सुनाया जिस तरह कि यह किताब उसके हाथ लगी थी और जो कि हम ऊपर के बयान में कह आये हैं। अब हमारे पाठक भी समझ गये होंगे कि दो दफे तिलिस्मी बाग में जिस औरत को गोपालसिंह ने देखा था वह यही नन्हों थी और उस बारहदरी में भी गोपालसिंह को धोखा देने वाली यही कम्बख्त थी।

अपना हाल सुना कर अन्त में नन्हों ने कहा, "मैंने गोपालसिंह को

उसी कुण्ड में गोते खाते छोड़ दिया और यह किताब ले तिलिस्म के बाहर निकल आई। मालूम नहीं कि फिर उनका क्या हुआ। इधर लौटी और काशी जाकर आपसे मिलने का विचार किया तो मालूम हुआ कि आप तिलिस्म के अन्दर विराज रहे हैं। गोपाल और बाकी के साथियों से मिली तो वह दुःखद समाचार सुना जिसने मेरा दिल ही तोड़ दिया। पर क्या करती, लाचारी थी। ईश्वर को यही मंजूर था कि मेरा दोस्त मुझे मिल कर भी मुझसे छुटा दिया जाता और मेरी सखी गौहर की मेहनत वृथा जाती। लाचार दिल मसोस कर रह गई पर कम्बख्त भूतनाथ से बदला लेने की कसम खा कर उसे बर्बाद कर देने का पूरा इरादा कर लिया। इसके बाद क्या क्या हुआ और किस तरह भूतनाथ को कैसा कैसा नाटक दिखाया गया यह सब हाल तो आपके शागिर्द गोपाल ने आपसे कहा ही होगा।

राम०। हां कहा था, अच्छा तो अब वह किताब कहां है?

टेढ़ी निगाहों से नन्हों ने एक दफे रामचन्द्र की तरफ देखा और तब अपनी अंगिया के भीतर से एक छोटी किताब निकाल कर रामचन्द्र की तरफ बढ़ाई। उसने देखते ही खुशी खुशी हाथ बढ़ा कर वह किताब ले ली और तब एक नजर देख तथा दबी जुबान से यह कह कर कि 'वही है' उसे चूम कर माथे से लगा लिया।

नन्हों०। क्यों साहब, मैंने जिस बात का बीड़ा उठाया था उसे पूरा किया न?

रामचन्द्र ने प्रसन्नता की निगाह से उसे देखते हुए कहा, "क्या अब भी इसमें कोई शक है! तुमने तो वह काम किया कि हम सभी को मात कर दिया! महाराज के हाथ में जब यह किताब पड़ेगी उनकी खुशी का हद्द न रहेगा!! तुमको....."

यकायक जोर की आवाज कहीं से आई, "बेवकूफ!!" जिसने सभों को चौंका दिया और सभी ताज्जुब से इधर उधर देखने लगे। उन

सीढ़ियों पर जिनकी राह उतर कर अभी अभी ये लोग यहां पहुंचे थे खड़े हुए एक नकाबपोश पर सभों की निगाह पड़ी जिसका तमाम बदन काले कपड़ों से ढँका हुआ था और जिसके बाएँ हाथ में एक मशाल और दाहिने में कोई गोल चीज थी जो साफ साफ नजर नहीं आ रही थी।

यकायक इस नकाबपोश को वहां देख इन लोगों को इतना ताज्जुब हुआ कि कुछ देर तक किसी के मुंह से कोई आवाज न निकली. इसके बाद रामचन्द्र ने पूछा, "तुम कौन हो और किस लिये यहां आये हो?"

नकाबपोश ने जोर से हँस कर कहा, "तुम्हें इस बात का जवाब देने के पहिले मै तुम्हारी इस नन्हों से कुछ बातें करना चाहता हूं।"

इतना कहता हुआ वह नकाबपोश तीन चार डण्डा सीढ़ियां नीचे उतर आया और अब उसका पूरा लम्बा कद इन लोगों को दिखाई देने लगा। उसने काले परदे के अन्दर छिपा हुआ अपना सिर नन्हों की तरफ घुमाया और एक ऐसी आवाज में जिसमें क्रोध और व्यंग दोनों मिला हुआ था उससे कहा, "क्यों रे बेवकूफ! क्या तू समझती है कि तूने राजा गोपालसिंह के कब्जे से असली तिलिस्मी किताब निकाल ली? क्या वह नायाब चीज तुम जैसी हरामजादियों के पास रहने लायक है? जरा उस किताब को खोल और अच्छी तरह देख तो सही!!"

इतना कह वह नकाबपोश चुप हो गया मगर सब कोई सकते की सी हालत में उसकी तरफ देखते रहे। किसी के मुंह से कोई आवाज न निकली। कुछ सायत तक चुप रहने के बाद वह घूमा और रामचन्द्र से बोला, 'हां पूछो, तुम क्या पूछना चाहते हो?"

रामचन्द्र ने तुरत उससे कहा, "सबसे पहिले मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम कौन हो और किस नीयत से तथा किस तरह यहां पहुंचे?"

उस नकाबपोश ने हँस कर जवाब दिया, "क्या यह बेहतर नहीं होगा कि मै यही सवाल तुमसे करूं और तुमसे पूछूं कि तुम कौन हो और किस नीयत से यहां आये?"

रामचन्द्र ने यह सुनते ही डपट कर कहा, "बस बस, फजूल की बातें मत करो, यह मेरे हाथ की चीज देखो और तुरत जवाब दो कि तुम कौन हो ?"

रामचन्द्र के हाथ में एक भरा हुआ दोनाली तमञ्चा दिखाई देने लगा जिसकी नली उस नकाबपोश की छाती की तरफ थी। पर उस नकाबपोश पर इस का जरा भी असर न हुआ बल्कि वह जोर से हंस कर बोला, "क्या तुम मुझे डराने की कोशिश कर रहे हो ? पहिले अपनी फिक्र तो कर लो ! मै दोबारा पूछता हूं कि तुम लोग कौन हो और किस नीयत से यहां आये हो ?"

राम०। हम लोग अपना परिचय किसी तरह नहीं दे सकते और तुम अगर तुरत अपना नाम नहीं बताओगे तो अपने को मौत के मुंह में पाओगे।

नकाब०। ओह, क्या तुम यह समझते हो कि मै तुम लोगों को वास्तव में नहीं जानता ? गौहर और मुन्दर को भला कौन न पहिचानेगा और उस नन्हो को भी कौन न जानेगा जो अपने को होशियारों और चालाकों का सिरताज समझती है पर वास्तव में इतनी भी अक्ल नहीं रखती कि अपने दोस्त दुश्मन की पहिचान कर सके। ऐ नन्हों, सुन और समझ ! जो आदमी तिलिस्मी बाग में तुझसे मिला था वह तेरा ऐयार नही था बल्कि भूतनाथ का एक शागिर्द था जिसने तुझे उल्लू बना कर असली किताब गायब कर ली और एक नकली किताब तेरे हवाले कर दी जिसको लिये हुए तू व्यर्थ की खुशी से फूली बैठी है !! और भी सुन, यह आदमी जो तेरे सामने बैठा हुआ है और जिसे तू महाराज दिग्विजयसिंह का ऐयार शेरसिंह समझ रही है वास्तव में शेरसिंह नहीं है बल्कि खुद दलीपशाह या उसका कोई ऐयार है जिसने तुझे उल्लू बनाया है और तेरे पेट से सब भेद निकाल लिया है ! क्या इसी अक्ल को ले कर तू भूतनाथ का सामना करना चाहती है !!

नकाबपोश की भारी आवाज उस छोटी कोठरी में गूंज गई और वहां बैठे सब लोग उसे सुन कर घबड़ा गये। खास कर नन्हों बड़े ही डर और चिंता के साथ कभी रामचन्द्र का मुंह और कभी उस किताब की तरफ देखने लगी जो उसके हाथ में थी, गौहर मुंदर डर गई थीं, और रामचन्द्र किसी फिक्र में पड़ गया सा जान पड़ता था। उन लोगों की यह हालत देख उस नकाबपोश ने फिर कहा, "ऐ नन्हों, अगर तेरे मन में अब भी यह शक बाकी हो कि तेरे सामने का ऐयार शेरसिंह है या नहीं तो इस बात को जरा सोच कि असली शेरसिंह उस नकली किताब को तुरत पहिचान जाता जो तूने इस बनावटी ऐयार के हाथ में दे रक्खी है। देख, असली किताब यह है !!"

कहते हुए उस नकाबपोश ने अपने दाहिने हाथ की चीज जो एक गेंद की तरह मालूम होती थी सीढ़ी पर रख दी और कपड़ों के अन्दर से कुछ निकाल कर उन लोगों को दिखाया जिस पर एक निगाह पड़ते ही नन्हों ने पहिचान लिया कि यह वही तिलिस्मी किताब है जो उसने राजा गोपालसिंह से ली थी। अब नन्हों की घबराहट और भी बढ़ गई और वह बड़े शक की निगाह से रामचन्द्र की तरफ देखने लगी। मगर इसी समय रामचन्द्र जोर से बोल उठा, "भला तुम भी कैसी बात कर रहे हो जिस पर एक लौंडे को भी विश्वास नहीं हो सकता! पहिले तुम अपनी सूरत तो दिखाओ पीछे हम लोगों को धोखा देने की कोशिश करना !"

यह सुनते ही वह नकाबपोश फिर जोर से खिलखिला कर हंसा। उसने वह किताब जो नन्हों को दिखाई थी पुनः अपने कपड़े में छिपा ली और तब वह गेंद जो सीढ़ी पर रख दिया था उठा लिया, इसके बाद वह बोला, "तुम्हारी बात सुन मुझे हँसी आती है। क्या कोई अपने को भूतनाथ की निगाहों से भी छिपा सकता है! लो देखो, कौन हूं ?"

इतना कह उसने अपने चेहरे पर की नकाब उलट दी और हाथ की

मशाल को नीचा किया जिसकी रोशनी में उन लोगों ने देखा कि सचमुच भूतनाथ उनके सामने खड़ा है।

भूतनाथ को देख उन लोगों का डर के मारे बुरा हाल हो गया। नन्हों तो यहां तक डरी और घबराई कि एक दम चीख उठी और बेतहाशा उस सुरंग के मुहाने की तरफ भागी जो वहां दिखाई पड़ रहा था पर वह ऐसा भी कर न सकी। अभी सुरंग से कुछ दूर ही थी कि उसका दर्वाजा खुल गया और दो आदमी नंगी तलवारें हाथ में लिये वहां खड़े दिखाई पड़े जिनकी भयानक सूरत देखते ही वह कांप कर रुक गई। दर्वाजा फिर बन्द हो गया।

भूतनाथ ने पुनः भयानक हंसी हंस कर कहा, "तुम ही कम्बख्तों के मारे मेरी जिन्दगी बर्बाद हो चली थी। आज भले मौके पर एक साथ मैंने तुम सभों को पकड़ा है और तुम्हारे काले दिलों का सबूत यह सब सामान भी इसी जगह देख रहा हूँ। बस आज एक साथ ही सभों का खातमा करके निश्चिन्त हो जाऊँगा !!"

इतना कह उसने उस गेंद को ऊंचा किया जिसके साथ एक छोटी सी रस्सी लगी हुई थी। इस रस्सी को उसने अपने हाथ की मशाल के साथ छुला दिया और तुरत ही वह बारूद की तरह जल उठी। भूतनाथ ने वह हाथ जिसमें गेंद था ऊंचा किया और डरावनी आवाज में बोला, "एक मिनट का समय मैं तुम लोगों को देता हूँ जिसमें भगवान को याद कर लो। इसके बाद यह गेंद फटेगा और तुम सभों को मय इन सब सामानों के जो मैं यहां देख रहा हूँ जहन्नुम की तरफ रवाना कर देगा !!"

इतना कह भूतनाथ ने अपना हाथ पीछे किया और उस गेंद को कोठरी के अन्दर फेंक देना चाहा। उसी समय किसी की "हैं हैं, खबरदार, ऐसा न करना !!" की आवाज उसके कानों में पड़ी पर उसने कुछ खयाल न किया बल्कि यह सोच कर कि शायद कोई वहां पहुँच उसके काम में बाधा देना चाहता है अपने काम में फुर्ती की और जोर से वह गेंद नीचे तह-

खाने में फेंक दिया। उस गेंद की रस्सी सुरसुराती हुई तेजी के साथ कम होती जा रही थी और उसमें से निकलने वाले काले धूंए से वह तहखाना भरने लगा था। इतना काम कर भूतनाथ घूमा और सीढ़ियां चढ़ बाहर निकल गया। बाहर होकर उसने जोर से उस तहखाने का पल्ला बन्द कर दिया और एक सिटकिनी जो इसी काम के लिए लगी हुई थी लगा कर उसे खुलने लायक न छोड़ा। इसके बाद वह घूमा और बाहर की तरफ चला।

मगर क्या यह सही है या उसकी आंखें उसे धोखा दे रही हैं! उसके सामने यह कौन खड़ा है!! यह तो वही शैतान मालूम होता है जिसने एक बार पहिले भी उसके सामने प्रगट होकर 'रोहतासमठ के पुजारी' के नाम से अपना परिचय दिया था। यह यहां कैसे आ पहुँचा!!

नहीं, भूतनाथ की आंखों ने उसके साथ दगा नहीं की थीं। वास्तव में उसके सामने इस समय तिलिस्मी शैतान ही खड़ा था जिसकी आंखों के गड्ढे में से डरावनी चमक निकल रही थी और हाथ वाली टूटी तलवार की मूठ से चिनगारियों की बेतरह फुलझड़ी सी छूट रही थी। भूतनाथ उस आसेब को पुनः अपने सामने पा यहां तक डरा और घबराया कि एक दम सकते की सी हालत में होकर चुपचाप खड़ा हो गया।

तिलिस्मी शैतान ने गुस्से से भरी कांपती हुई आवाज में कहा, "शैतान के बच्चे! कम्बख्त!! तूने यह क्या किया? क्या तू अपने चारो तरफ नहीं देखता कि यह सब क्या पड़ा हुआ है! क्या जब तेरे बम के गोले की आंच इन सब बारूद के थैलों और गोलों पर पड़ेगी तो इस सुन्दर इमारत का एक जर्रा भी साबूत रहने पावेगा!! कम्बख्त! तू खुद भी जायगा और अपने साथ साथ इस कीमती इमारत को भी जो दुनिया में एक नमूना थी, चौपट करता जायगा, यही नहीं कितनी ही जानों की भी होम करेगा!!!"

भूतनाथ यह सुनते ही यकायक चौंक पड़ा और जैसे ही उसकी निगाह उन तोपों गोलों और बारूद के थैलों पर पड़ी जो उसके चारो तरफ गंजे

थे तो उसके मुंह से एक चीख निकल पड़ी। वह इतना डरा और घबराया कि एक दम बदहवास हो गया। अपने हाथ की मशाल उसने जोर से एक तरफ फेंकी और तब बेतहाशा वहां से भागा !!

मगर भाग कर भी कहां जा सकता था ? अभी कोठरी और दालान पार कर सामने पड़ने वाली सीढ़ियां ही उतर रहा था कि इमारत के भीतर से भयानक गड़गड़ाहट की आवाज उसके कानों में आई। लपक कर आगे बढ़ा और सामने का मैदान पार करना चाहा, पर न हो सका। कानों के परदे फाड़ डालने वाली एक आवाज इमारत के अन्दर से आई।

सामने ही पानी का एक कुण्ड था। लपक कर भूतनाथ उसके पास पहुंचा और उसके अन्दर कूद पड़ा। इसके बाद उसे तनोबदन की सुध न रह गई।

यकायक इमारत के अन्दर से गोलों के फटने और बारूद के उड़ने की भयानक आवाजें आने लगीं। दम भर बाद ही पुनः बड़े जोर की एक आवाज हुई। उस जगह की समूची छत बड़े भयानक शब्द के साथ फट गई, आग का एक बड़ा ही ऊंचा डरावना फोव्वारा आसमान की तरफ उठा, समूची इमारत बड़े जोर से कांपी और तब एक दम उड़ गई।

वह सुन्दर लोहगढ़ी जो कुछ ही सायत पहिले अपनी मजबूती और सुन्दरता के लिये सानी नहीं रखती थी एक दम चौपट हो गई। उसका एक एक खम्भा, एक एक ईंट, एक एक कोना, उड़ गया। कुछ ही सायत पहले जो एक खिलौने की तरह सुन्दर मालूम हो रही थी अब एक खंडहर हो गई जिसके बीच से आग की लपटें उठ रही थीं !!

हाय ! भूतनाथ !! यह तैंने क्या किया !!

❀ सत्रहवां हिस्सा समाप्त ❀

१९५३ ई०—सातवां संस्करण—२००० प्रति

मुद्रक—पारिजात प्रेस, काशी।

भूतनाथ

उपन्यास

अथवा भूतनाथ की जीवनी

अट्ठारहवाँ हिस्सा

पहिला बयान

लोहगढ़ी के उड़ जाने का समाचार बात की बात में दूर दूर तक फैल गया। यद्यपि वह इमारत घनघोर जंगल के बीच में पड़ती थी पर ऊँचे टीले पर होने के कारण उसके उड़ जाने का दृश्य बहुत दूर तक दिखाई पड़ा था, फिर जमानिया शहर से भी उसका फासला कुछ इतना अधिक न था कि किसी का आना जाना उधर से रात बिरात में भी होता न रहता हो, अस्तु आस पास के गांव के आने जाने वालों की जुबानी यह समाचार शीघ्र ही जमानिया तक पहुँच गया, जिसका नतीजा यह हुआ कि सुबह सो कर उठने के साथ ही राजा गोपालसिंह को पहिली खबर यही सुनने में आई। सुनते ही वे एक दम घबरा गये और उन्होंने उसी समय कई

जासूसों को ठीक-ठीक हाल का पता लगाने के लिये उस तरफ रवाना किया। उन लोगों ने लौट कर जो खबर दी उससे उन्हें विश्वास कर लेना पड़ा कि सचमुच ही उनके राज्य की यह बहुत ही सुन्दर और अद्भुत इमारत सदा के लिये नष्ट हो गई, पर ऐसा क्यों हुआ या किसकी यह कारवाई थी इसका कुछ भी पता उनके जासूस लगा न सके। आखिर राजा साहब ने खुद वहाँ जा कर सब कुछ अपनी आंखों से देखने का निश्चय किया।

यद्यपि बहुत ही घने और डरावने जंगल में होने के कारण बहुत ही कम आदमियों को कभी उस इमारत को अच्छी तरह देखने का मौका मिला था, फिर भी आज उसके इस तरह यकायक और आश्चर्यजनक रीति से उड़ जाने का समाचार सुन बहुतेरे आदमी जिनका उस इमारत से कोई भी सम्बन्ध न था एक दम ताज्जुब में पड़ गये और तुरत उस तरफ को रवाना हो गये। नतीजा यह कि दोपहर होते होते उस टीले के नीचे का स्थान सैकड़ों आदमियों से घिर गया, सभी ताज्जुब के साथ उस सुन्दर और मजबूत इमारत को जो इस समय भयानक खंडहर के रूप में हो गई थी हैरानी के साथ देख और उसके सम्बन्ध में तरह तरह की बातें कर रहे थे। इस समय यद्यपि वहाँ आग की लपटें अथवा बारूद फटने का समा नहीं था फिर भी जगह जगह से धूआँ बहुतायत से निकल रहा था जिसके कारण लोग उसके पास जाते डरते और हिचकते थे। फिर भी कुछ हिम्मतवर आदमी इस विचार से ऊपर पहुँच ही गये कि शायद कुछ आदमी भी इसके साथ ही उड़ या दब गये हों और उनका कुछ पता लग सकता या बचाव किया जा सकता हो, पर ऐसी किसी दुर्घटना का कोई चिन्ह कम से कम प्रगट रूप से वहाँ दिखाई नहीं पड़ रहा था। इन लोगों की देखा देखी फिर तो सैकड़ों ही आदमी उस टीले के ऊपर पहुँच गये और चारो तरफ घूम घूम कर सब हाल चाल देखने लगे, मगर थोड़ी देर बाद जब राजा साहब के भेजे हुए बहुत से सिपाहियों ने

वहाँ पहुँच कर वह जगह घेर ली तो सभों को लाचारी वहाँ से हट जाना पड़ा, पर इससे लोगों का कौतूहल और भी बढ़ गया।

दोपहर होते होते राजा साहब की सवारी भी वहाँ पहुँच गई। उनके साथ उनके प्रेमी मित्र इन्द्रदेव तथा कुछ थोड़े से खास लोग थे जिन्हें लिये हुए वे सीधे टीले के ऊपर चढ़ गये और घूम घूम कर देखने लगे। लोहगढ़ी की अद्‌भुत इमारत की जगह वहाँ एक त्रासदायक खंडहर दिखाई पड़ रहा था जिसके चारो तरफ दूर दूर तक पत्थर और चूने के ढोंके और लोहे के सामान छिटके हुए थे क्योंकि बारूद के फटने का जोर इतना भयानक था कि बिगहों तक उसके उड़े और टूटे हुए हिस्से बिखर गये थे। लोहगढ़ी की बीच वाली असली इमारत तो एक दम ही उड़ गई थी बल्कि उसके सदमे से उसको घेर रखने वाली जो सादी बाहरी इमारत थी वह भी दहल कर बहुत जगहों से गिर गई थी और उसका जो हिस्सा अभी तक नहीं गिरा था वह भी टेढ़ा मेढ़ा और झुका हुआ ऐसी खतरनाक हालत में हो गया था कि दम के दम में गिर जाने का डर दिला रहा था। अस्तु सब बातों को देख कर इन्द्रदेव की सलाह से राजा साहब ने उस हिस्से को भी गिरा देने का हुक्म दे दिया, और साथ ही यह भी जांचने को कहा कि कहीं कोई आदमी तो इसके नीचे नहीं दबा हुआ है। हुक्म के साथ ही ऐसा होने लगा और राजा साहब वहाँ से कुछ दूर हट कर अपने दोस्त इन्द्रदेव के साथ बातें करने लगे। उनका इरादा समझ साथ के लोग दूर हट गये और दोनों में इस तरह बातचीत होने लगी :—

गोपाल०। क्यों भाई तुमने कुछ समझा कि यह कार्रवाई किसकी हो सकती है? इसमें तो कोई शक नहीं कि बारूद या सुरंग के जोर से यह इमारत उड़ाई गई है!

इन्द्रदेव०। मेरी कुछ अक्ल काम नहीं करती है कि यह क्या हुआ

और कैसे हुआ ! किसी का इसके उड़ाने में कोई स्वार्थ ही क्या हो सकता है जो ऐसी सुन्दर इमारत को नष्ट भ्रष्ट कर डाले !

गोपाल० । कहीं ऐसी बात तो नहीं है कि किसी ने इस जगह का तिलिस्म तोड़ डाला हो और उसी से ऐसा हुआ हो ? तुमने एक दफे कहा था कि इस तिलिस्म की उम्र खतम हो गई है और यह शीघ्र ही टूट जायगा ।

इस बात ने इन्द्रदेव को कुछ गौर में डाल दिया । वे कुछ देर के लिए चुप हो गये और तब बोले, "मैं इस बारे में बिना जांचे कुछ ठीक नहीं कह सकता, मगर आपका ख्याल सही भी हो सकता है ।"

गोपाल० । क्या इस बात का पता नहीं लग सकता कि वास्तव में अन्दर का तिलिस्म टूटा है या नहीं ?

इन्द्रदेव० । क्यों नहीं, कोशिश करने से यह बात जरूर जानी जा सकती है ।

गोपाल० । तो तुम इसको जानने की कोशिश नहीं करोगे ?

इन्द्र० । मैं जरूर कोशिश करूँगा और बहुत शीघ्र आपको बताऊंगा ।

गोपाल० । तब इस समय यहाँ और कुछ नहीं हो सकता, चलना चाहिए ।

इन्द्र० । आपने आदमियों को हुक्म दे दीजिए कि मेहनत करके इस जगह का चूना कूड़ा सब अलग कर डालें । ऐसा होने से अगर कोई आदमी इसके नीचे दबा होगा तो उसका ठीक-ठीक पता लग जायगा, दूसरे अन्दर जाने का रास्ता भी खाली हो जायगा, क्योंकि मुझे विश्वास है कि यह सब नुकसान ऊपर ही के हिस्से को पहुँचा है जो यद्यपि एक दम ही नष्ट हो गया है मगर अन्दर के तिलिस्म को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँच सका होगा । इसके सिवाय अगर गुप्त रीति से कुछ आदमी यहाँ पहरा देकर इस बात की जाँच करें कि कोई रात बिरात यहाँ पर आता जाता है या नहीं तो भी शायद कुछ पता लग सकता है । अगर किसी

बाहरी आदमी की यह कार्रवाई है और किसी ने अपने किसी मतलब से इस इमारत का सत्यानाश किया है तो वह जरूर फिर भी कभी न कभी यहाँ आता-जाता दिखाई पड़ेगा। उसे गिरफ्तार करने से बहुत कुछ पता लग सकता है।

गोपाल०। तुम बहुत ठीक कहते हो, मै अभी ऐसा करने का हुक्म देता हूँ।

गोपालसिंह ने इन्द्रदेव की राय के मुताबिक हुक्म दे दिया और तब एक चक्कर उस टीले का लगाने के बाद उसके नीचे उतरे। सवारी मौजूद थी जिस पर बैठ वे जमानिया की तरफ रवाना हो गये, पर इन्द्रदेव न जाने क्या समझ कर उनके साथ वापस न हुए, उन्होंने कुछ कह सुन कर छुट्टी ले ली और जब राजा साहब के साथ आने वाली भीड़ भाड़ कम हो गई तो कुछ चक्कर काटते हुए अकेले ही अजायबघर की तरफ रवाना हुए।

इन्द्रदेव का खयाल था कि लोहगढ़ी को देखने आई हुई भीड़ का कुछ हिस्सा अजायबघर भी पहुँचा होगा जिससे उन्हें अपना काम करने के लिये उस जगह शायद ही मौका मिले, और उनका यह खयाल सही भी निकला। लोहगढ़ी को देखने जो लोग वहाँ पहुँचे थे अब लौटती समय इस विचित्र इमारत को भी, जिसके बारे में समय समय पर तरह तरह की बातें फैला करती थीं देखने आ रहे थे, पर इस इमारत के अन्दर जाने की इजाजत किसी को भी न थी। दारोगा साहब के दो सिपाही, जिनका पूरा कब्जा इस इमारत पर हो चुका था और जो अब प्रायः इसमें रहा भी करते थे, सीढ़ियों पर खड़े थे और किसी को भी ऊपर नहीं जाने देते थे। अस्तु लोग दूर ही से उसका रंग ढंग देखकर बिदा हो जाते थे। इन्द्रदेव ने भी ऐसा ही किया और दूर ही से यह देख लेने बाद कि यहाँ से उनका काम न निकल सकेगा वे वहाँ से हटे और पुनः घने जंगल के भीतर घुसे।

लगभग आधे घन्टे तक तेजी से जाने बाद इन्द्रदेव ने अपने को ऐसी जगह पाया जहाँ एक नाला तेजी के साथ जंगल के बीचोबीच में से बह रहा था। हमारे पाठकों ने आशा है देखते ही इस स्थान को पहिचान लिया होगा क्योंकि यह तिलिस्म के अन्दर जाने वाले रास्तो में से एक है और वे हमारे साथ कई दफे यहाँ आ चुके हैं*। अस्तु हम यहाँ के रास्ते का हाल विस्तार के साथ न लिख कर केवल इतना ही लिखते हैं कि इन्द्रदेव इस नाले में उतर गये और गोता मार कर उन्होंने तह की वह कड़ी खींची जिससे वहाँ का रास्ता खुलता था। रास्ता खुलते ही पानी तेजी के साथ बहना शुरू हुआ जिसके बहाव में इन्द्रदेव ने अपने को डाल दिया और कुछ ही सायत बाद उस कोठरी में जा कर निकले जिसके बीचोबीच की बनी नाली की राह पानी बह कर निकल जाता था। कुछ देर तक सुस्ताने बाद इन्द्रदेव ने पुनः अपने को इसी नाली में डाला और बहते हुए उस कोठरी को पार कर किसी अन्धेरी मगर खुलासी जगह में से होकर जाने लगे जिसमें से पानी की तेजी उन्हें बहाये लिये जा रही थी। यद्यपि इस जगह इतना घना अन्धकार था कि हाथ दिखाई नहीं पड़ता था और अनजान आदमी को इस जगह बेशक बहुत डर मालूम हो सकता था पर यहाँ की हवा एक दम साफ थी और साँस लेने में किसी तरह की तकलीफ नहीं हो रही थी। इन्द्रदेव ने अपने शरीर को पानी पर ढीला छोड़ा हुआ था और बेखौफ बहते जा रहे थे।

आखिर कुछ देर बाद यह रास्ता भी खतम हुआ और इन्द्रदेव एक ऐसी कोठरी में पहुँचे जिसके ऊपरी हिस्से में कई रौशनदान बने होने के कारण वहाँ बखूबी चाँदना था। उनके इस जगह पहुँचते ही पानी का आना रुक गया तथा वह रास्ता भी बन्द हो गया जिसकी राह वे यहाँ तक पहुँचे थे।

* देखिये भूतनाथ आठवाँ हिस्सा, दूसरा और चौथा बयान।

इन्द्रदेव पानी के बाहर निकले। कोठरी की एक तरफ की दीवार में एक दर्वाजे का निशान दिखाई पड़ रहा था जिसे किसी तर्कीब से उन्होंने खोला और तब अपने सामने एक छोटा सा बाग देखा। इन्द्रदेव बाहर निकले पर उसी समय उनका ध्यान अपने कपड़ों की तरफ गया जो एक दम गीले हो रहे थे अस्तु वे पुनः कोठरी के अन्दर चले गये और एक छोटी आलमारी के पास पहुँचे जो एक तरफ की दीवार में बनी हुई थी। इसका पल्ला उन्होंने किसी तर्कीब से खोला। अन्दर कई जोड़े सूखे रौगनी कपड़ों के रक्खे हुए थे, जिनमें से एक उन्होंने पहिन लिया और गीले कपड़ों को अपने हाथ में लिये वे फिर कोठरी के बाहर आये। कपड़े इधर उधर पेड़ों की डाली पर सूखने को डाल दिये और बाग के अन्दर घुसे।

यह छोटा सा बाग चारो तरफ से ऊँची ऊँची चारदीवारी से घिरा हुआ था और इमारत के किस्म से इसमें बीचोबीच में सिर्फ एक छोटी सी संगमर्मर की बारहदरी नजर आ रही थी। इन्द्रदेव इसी बारहदरी में पहुँचे जिसका फर्श सुफेद और काले पत्थर के चौखूटे टुकड़ों का बना हुआ था और कोने के एक पत्थर के पास जाकर उसे पैर से ठोकरें देने लगे। तीन ही चार ठोकरों के बाद उस जगह के फर्श का एक हिस्सा नीचे को झुक गया और उस जगह पतली पतली कई डंडा सीढ़ियाँ दिखाई देने लगीं जिन पर इन्द्रदेव ने कदम रक्खा और नीचे उतरने लगे। बारह डंडा सीढ़ियाँ इन्हें उतरनी पड़ीं और आखिरी सीढ़ी पर उतरते ही ऊपर वाला पत्थर पुनः अपने ठिकाने पर बैठ गया जिससे वहाँ पर घोर अन्धकार हो गया पर इन्द्रदेव ने इसकी कोई परवाह न की और कमर से तिलिस्मी खंजर निकाल जिसे वे अपने कपड़ों के अन्दर छिपाये हुए थे, उसकी मदद से रोशनी करते हुए जाने लगे।

यह एक बहुत ही लम्बी सुरंग थी जिसके अन्दर एक घड़ी से ऊपर समय तक इन्द्रदेव को चलना पड़ा और जब वह समाप्त हुई तो पुनः

बारह डंडा सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ीं। किसी तर्कीब से रास्ता खोल इन्द्रदेव जब बाहर हुए तो उन्होंने अपने को पुनः ठीक उसी तरह की एक बारहदरी में पाया जैसी कि यहाँ आती समय उन्हें मिली थी, फर्क अगर कुछ था तो यही कि यह बारहदरी एक बहुत बड़े बागीचे के अन्दर थी जिसके चारो तरफ तरह तरह की छोटी बड़ी इमारतें दिखाई पड़ रही थीं।

हमारे पाठक इस जगह को भी पहिचान गये होंगे क्योंकि यहाँ भी वे एक दफे भूतनाथ के साथ उस समय आ चुके हैं जब कि उसने एक बारहदरी की कड़ियों के साथ लटकती हुई प्रभाकरसिंह गुलाबसिंह जमना सरस्वती आदि की लाशें देखी थीं। इस समय भी वह ऊँची बारहदरी और उसके साथ लटकती हुई लाशें यहाँ से दिखाई पड़ रही थीं पर इन्द्रदेव का ध्यान उधर न था। वे सिर्फ एक साअत के लिये वहाँ रुक कर कुछ सोचते रहे और तब बाईं तरफ को चल पड़े जहाँ एक ऊँची दीवार और उसके ऊपरी हिस्से में बनी कुछ इमारतें दूर दिखाई पड़ रही थीं।

तेजी से चलते हुए इन्द्रदेव इस दीवार की जड़ के पास जा पहुँचे और किसी तरकीब से उस जगह एक दर्वाजा पैदा कर उसके अन्दर घुसे। एक छोटी कोठरी दिखाई पड़ी जिसके एक तरफ तो ऊपर चढ़ जाने के लिये सीढ़ियाँ बनी हुई थीं और दूसरी तरफ एक खुला हुआ दर्वाजा था जिसके अन्दर अन्धेरा था। इन्द्रदेव इसी दर्वाजे के अन्दर घुसे। इनके अन्दर घुसते ही वह दर्वाजा बन्द हो गया पर इन्द्रदेव ने इसकी कोई फिक्र न की और तिलिस्मी खंजर की रोशनी के सहारे बेधड़क जाने लगे।

इन्द्रदेव को इस सुरंग के अन्दर बहुत दूर तक जाना पड़ा और जब एक जगह जाकर वह खतम हुई तो उन्होंने अपने को एक छोटी कोठरी में पाया जिसकी सामने की दीवार में एक बन्द दर्वाजा भी दिखाई पड़ रहा था। इन्द्रदेव इस दर्वाजे की तरफ बढ़े और उसे खोलने की चेष्टा करने

लगे पर इस जगह पहुँचते ही उनकी नाक में बारूद की गन्ध पड़ी जिससे वे समझ गये कि अब वे लोहगढ़ी के निचले हिस्से में पहुँच गये हैं। दर्वाजा खुला और साथ ही अपने सामने कुछ देख इन्द्रदेव चौंक पड़े।

एक आदमी दर्वाजे के सामने ही जमीन पर पड़ा हुआ था जिसका बदन और कपड़ा जगह जगह से झुलस गया था और चेहरा इस तरह कट कुट गया था कि शक्ल पहिचानना मुश्किल हो रहा था। पहिला निगाह में तो इन्द्रदेव ने यही समझा कि वह मुर्दा है पर नहीं, गौर से जांच करने पर यह बात गलत साबित हुई। वह मरा नै था पर बहुत ही सख्त जख्मी और बहुत जल गया था। इन्द्रदेव ने गौर से देर तक उसकी नब्ज देखी और तब अपना बटुआ खोल उसमें से एक शीशी निकाली जिसमें किसी तरह का अर्क था। इस अर्क की कुछ बूँदें उन्होंने जख्मी की जुबान पर टपका दीं और तब फिर नब्ज देखी। नब्ज में कुछ तेजी जान पड़ी और कुछ ही देर बाद उस आदमी के धीरे धीरे साँस लेने की भी आहट आने लगी। कुछ देर बाद इन्द्रदेव ने फिर कुछ अर्क उसकी जुबान पर टपकाया। इस बार अर्क गले से नीचे उतरते ही वह सकपकाया और उसके गले से कुछ अस्पष्ट आवाज भी निकली जो समझ में नहीं आई। यह हालत देख इन्द्रदेव ने बटुए में से पानी की बोतल निकाली जिसमें से कुछ उसको पिलाने और कुछ चेहरे पर छिड़क दुपट्टे से हवा करने से कुछ ही देर में उस जखमी को होश आ गया। उसने आंखें खोल दीं और कमजोर आवाज में कहा "पानी !" इन्द्रदेव ने पुनः उसे पानी पिलाया जिससे उसके होश ठिकाने आये और उसने बड़े गौर से इन्द्रदेव की तरफ देख कर पूछा, "आप कौन हैं ?"

इन्द्रदेव ने जवाब दिया, "मै चाहे कोई भी होऊँ, तुम अपना हाल बताओ कि कौन हो और तुम्हारी यह हालत किस कारण हुई है ?"

इनकी बात सुनते ही उसने कहा, "ठीक है, मै आपकी आवाज

ही से पहिचान गया कि आप कौन हैं। आपके सिवा और कोई इस हालत में यहाँ तक पहुँच भी नहीं सकता था। मैं गिरिजाकुमार हूँ। भूतनाथ ने बम फेंक कर लोहगढ़ी को उड़ा दिया जिससे मेरी यह हालत हुई, मगर आप मेरी फिक्र छोड़िये और इसके आगे वाली कोठरी में जाइये जहाँ गुरूजी और अर्जुनसिंहजी भी शायद मुझसे भी बदतर हालत में आपको मिलेंगे, उनकी फिक्र करिये।"

गिरिजाकुमार ने ये बातें बहुत ही रुक रुक कर और धीरे धीरे कहीं और कहते ही फिर बेहोश हो गया। इन्द्रदेव ने ताज्जुब से उससे पूछा, "तुम लोग यहाँ कैसे आ पहुँचे?" पर उसने कोई जवाब न दिया। वे समझ गये कि इसे फिर गश आ गया है, अस्तु उसकी जुबान पर पुनः अपने अर्क की कुछ बूँदें उन्होंने टपकाईं और तब दवा को अपना असर करने के लिए छोड़ कर उठ खड़े हुए। गिरजाकुमार के मुँह से दलीपशाह और अर्जुनसिंह के भी वहीं होने बल्कि उससे भी बदतर हालत में होने का समाचार सुन वे बेचैन हो गये थे और उनकी मदद करना जरूरी समझ रहे थे।

जिस कोठरी में ये थे उसके एक तरफ एक दूसरी कोठरी बनी हुई थी जिसका दर्वाजा इस समय खुला हुआ था। इन्द्रदेव इस कोठरी में पहुँचे। यह किसी तरह के धुएँ से भरी हुई थी जिसकी तीक्ष्ण गन्ध कई घण्टों के बाद भी अपना कारी असर दिखला रही थी अर्थात् उसको सूँघते ही इन्द्रदेव के सर में चक्कर आ गया। वे पीछे हट आये और तब बटुए में से कोई चीज निकाल उसे नाक के आगे रक्खे हुए पुनः कोठरी के अन्दर घुसे। इस कोठरी में गहरा अन्धकार छाया हुआ था जिसे उन्होंने अपने तिलिस्मी खंजर से दूर किया और तब उसकी चमक में सामने ही जमीन पर दो आदमियों को बेहोश पड़े पाया। देखते ही वे चौंक गए क्योंकि गिरिजाकुमार की तरह ये दोनों आदमी भी जले और चुटीले हो रहे थे।

यह सोच कर कि इस जगह की जहरीली हवा उनके इलाज को सफल न होने देगी, इन्द्रदेव इन दोनों आदमियों को बारी बारी से बाहर वाली कोठरी में उठा लाये और तब वहाँ उन्हें जमीन पर रख उन्होंने अपना उद्योग शुरू किया। बार बार दवा खिलाने, लखलखा सुँघाने, और मुँह पर पानी छिड़कने से इन लोगों की तबीयत कुछ सुधरने लगी और अन्त में लगभग आधे घंटे की मेहनत के बाद उन दोनों को कुछ होश आई। पहिले एक आदमी और तब दूसरे ने आँखें खोल कर अपने चारो तरफ देखा और तब इन्द्रदेव पर निगाह डाली जो उन पर झुके हुए थे। उन्हें देखते और पहिचानते ही उनमें से एक बोल उठा, "राजराजेन्द्र !" जिसके जवाब में इन्द्रदेव ने कहा, "गनपति" और तब एक ने दूसरे का हाथ प्रेम से दबाया। इन्द्रदेव ने पूछा, "दलीपशाह ! यह तुम्हारी क्या हालत है !!"

दलीपशाह ने कहा, "यह सब भूतनाथ की करतूत है मगर आप अगर यहाँ तक आ ही गये हैं तो अब हम लोगों की फिक्र छोड़ दीजिये, हम लोग अब दुरुस्त हो जायँगे। आप जरा गिरजाकुमार की खबर लीजिये, वह बेचारा मुझे बचाने की फिक्र करता हुआ बहुत बुरी तरह जल गया है और शायद यहीं कहीं होगा। संभव है कि अब भी उसके शरीर में प्राण मौजूद हों और इलाज कुछ असर दिखा सके।"

एक तरफ से पतली आवाज आई, "मैं बहुत राजी खुशी हूँ गुरूजी ! अर्जुनसिंहजी कैसे हैं ?" अर्जुनसिंह बोल उठे, "मैं एक दम ठीक हो गया। हूँ !" इनकी बात सुन कर इन्द्रदेव हँस पड़े और कहने लगे, "बेशक आप लोग ठीक तो हुई हैं पर अभी हिलने डुलने की कोशिश न करें। विशेष बातें करना भी अभी मुनासिब नहीं है। आप लोग चुपचाप पड़े रहें और मुझे सिर्फ इतना बता दें कि कोई और आदमी तो यहाँ पर नहीं है जिसे मेरी मदद कुछ फायदा पहुँचा सके ? आप लोगों का हाल चाल और कैसे आप यहाँ पहुँचे तथा लोहगढ़ी की यह हालत कैसे हो गई

जो मैं देखता आ रहा हूँ, यह सब मैं पीछे खुलासा दरियाफ्त कर लूंगा। इस समय अगर और कोई जख्मी या मरीज यहाँ पर हो तो उसकी खोज खबर मैं लेना चाहता हूँ।"

दलीपशाह ने कहा, "यहाँ पर अभी कम से कम चार आदमी और हैं, पर वे लोग उस ऊपर वाली कोठरी में होंगे जहाँ से भाग कर मैं यहाँ तक पहुँच पाया था कि बेहोश हो गया। वे चारों नन्हों, गौहर, सुन्दर और भूतनाथ हैं। आप आगे जाइये और देखिए कि इनमें से कोई बचा या सब के सब मर गये। दुर्घटना जितनी जल्दी में हुई उसे देखते हुए मैं सोचता हूँ कि हम लोगों को यहाँ फँसा कर भूतनाथ भी बहुत दूर न जा सका होगा!"

इन्द्रदेव ने ताज्जुब से पूछा, "नन्हों सुन्दर और गौहर!" और दलीप शाह ने कहा, "हाँ!' जिसे सुन वे फिर और न ठहरे और उठ खड़े हुए। अपनी नाक पर उन्होंने किसी तरह की दवा से तर एक पट्टी बाँधी और हाथ में तिलिस्मी खञ्जर लिए हुए फिर उसी कोठरी में पहुँच जहाँ दलीपशाह और अर्जुनसिंह को पाया था। इस कोठरी के भी और आगे जाने का एक रास्ता दीवार में दिखाई पड़ रहा था जिसके अन्दर इन्द्रदेव घुसे। पाँच छः डंडा पतली पतली सीढ़ियाँ मिलीं जिन पर चढ़ने बाद वे दर्वाजे पर पहुँचे। दर्वाजा बंद था जिसे इन्होंने खोला और तिलिस्मी खञ्जर वाला हाथ आगे करने पर देखा कि यह कोठरी जहरीले काले धूँए से एकदम भरी हुई है।

आह यह क्या? यहाँ जमीन पर सामने ही चार लाशें पड़ी हुई थीं जो इस कदर जल भुन गई थीं कि जान बाकी रहने का तो सवाल ही क्या यह भी पता लगना असंभव था कि ये मर्दों की लाशें हैं या औरतों की। कपड़ों के इलावे जिस्म का सारा चमड़ा जल गया था और चेहरा तो चारों का ही एकदम जल कर बेपहिचान हो गया था। इन्द्रदेव ने अफसोस की निगाह से इन चारों लाशों को देखा और तब रंज भरे हुए लहजे में कहा,

"अफसोस भूतनाथ ! आखिर तेरा क्या यही नतीजा होने को था !"

कुछ देर तक वे उसी जगह खड़े इन चारो लाशो को देखते रहे जो अब उनकी मदद या कारीगरी की पहुँच के बाहर हो गई थीं, इसके बाद उन्होंने उधर से आँखे उठा लीं और उस कोठरी म चारो तरफ देखा। भूतनाथ की जीवनी के सम्बन्ध की जो जो चीजें इस समय वहाँ पर मौजूद थीं उनका जिक्र तो हम ऊपर कर ही आये हैं, उसमें से बहुत कुछ सामान बारूद और बम की बदौलत नष्ट हो गया था पर जो कुछ बच गया था उसे उन्होंने ताज्जुब गौर और अफसोस की निगाह से देखा और तब कहा, "ये सब चीजें यहाँ ? तब जरूर इन्हीं सब सामानो को नष्ट करने और दुश्मनों से बदला लेने भूतनाथ यहाँ पर आया होगा, पर अपने जाल में आप ही फँस गया और कम्बख्त नन्हों मुन्दर और गौहर के साथ साथ खुद भी मारा गया !! आखिर जो यह कहा जाता है कि बुरे काम का बुरा नतीजा होता है सो बिल्कुल ठीक है !! यद्यपि इसमें कोई शक नहीं कि भूतनाथ पाप मे गर्दन तक डूबा हुआ था, पर बहादुरी और हिम्मत म उसका मुकाबला करने वाला ऐयार आज तक न तो कोई हुआ और न होगा। उसकी यह गति उसके पापों के फल के सिवाय और क्या कही जा सकती है। मगर अफसोस ! अफसोस !! आज मेरा बड़ा ही प्यारा दोस्त चला गया !!"

इसी तरह की बातें देर तक इन्द्रदेव कहते और सोचते रहे मगर अब अफसोस और रंज का नतीजा ही क्या था ? उन्होंने अपने को सम्हाला और इस तरफ से ध्यान हटा कर इस बात को जांचने लगे कि इन चारो के अलावे और भी कोई तो वहाँ पर या पास मे कहीं नहीं है। उस कोठरी में से ऊपर जाने वाली सीढ़ियाँ सामने ही नजर आ रही थीं जिन पर इन्द्रदेव चढ़ गये पर ऊपर जा न सके। तहखाने के मुंह पर जो ढकना पड़ा हुआ था उस पर ऊपर की इमारत का मसाला और ईंट पत्थर वगैरह इस कदर आकर जमा हो गया था कि लाख जोर लगाने पर

भी वह पल्ला टस से मस न हुआ। यही क्यों? बारूद के धमाके से इस निचली कोठरी का भी एक कोना फट गया था और उसकी छत में एक बहुत बड़ा छेद हो गया था जिसकी राह ऊपर का अमला बहुत कुछ गिर कर एक कोने में जमा हो गया था। इन्द्रदेव को खयाल हुआ कि शायद इस कतवार के नीचे और कोई भी पड़ा हुआ न हो और वे इस बात की जांच करना ही चाहते थे कि अपने पीछे किसी तरह की आहट सुन रुक गये। घूम कर देखा तो दलीपशाह को खड़ा पाया जिन्हें देखते ही वे बोले, "आप बहुत कमजोर हो रहे हैं। ऐसी हालत में यहाँ आ कर आपने अच्छा नहीं किया। देखिये इतनी देर बाद भी यह कोठरी जहरीले धूँएँ से किस कदर भरी हुई है!!" दलीपशाह ने कहा, "मैंने दवा खा कर इसकी फिक्र कर ली है फिर भी मै यहाँ न आता अगर मुझे यह फिक्र न लगी होती कि भूतनाथ की क्या हालत हुई। मगर यहां जो कुछ मैं देखता हूं उससे तो यही जान पड़ता है कि हम लोगों को मारने आ कर खुद उसने भी अपनी जान से हाथ धोया।"

इन्द्रदेव ने एक लम्बी सांस लेकर कहा, "हाँ यह देखिये तीन लाशें तो वह पड़ी हुई हैं और एक यह इधर पड़ी है। अगर यहाँ पर नन्हों गौहर मुन्दर और भूतनाथ के इलावे कोई गैर आदमी न था तो मानना पड़ेगा कि ये चारो लाशें उन्हीं चारों की हैं।"

दलीप०। उन चारो और एक मुझ पांचवें के इलावे और कोई छठा आदमी यहाँ पर न था। हुआ यह कि हम लोग – नन्हों आदि तथा मैं—इसी जगह बैठ कर बातें कर रहे थे कि यकायक भूतनाथ (हाथ से बता कर) उन सीढ़ियों के पास नजर आया जिसने हम लोगों को कुछ सख्त-सुस्त कह कर अपने हाथ का एक गोला इस कोठरी में फेंका और तब खुद ऊपर चढ़ने लगा मै यह न देख पाया कि इसके बाद वह ऊपर निकल गया या नहीं क्योंकि बम का गोला देखते ही मुझे अपनी जान बचाने की फिक्र हुई। इतना तो मै समझ ही गया था कि इसके धूएँ में

बेहोशी का असर है जो थोड़े ही पलों में हम लोगों को कुछ भी करने लायक न छोड़ेगा, इसलिये मैं इस दर्वाजे की तरफ दौड़ा जिसके दूसरी तरफ गिरजाकुमार और अर्जुनसिंह थे, पर यह गुमान मुझे न था कि बम का धूँआँ इस कदर :कारी निकलेगा कि मैं दर्वाजे तक भी पहुँच न पाऊँगा लेकिन हुआ वही और मैं इसी जगह बेहोश हो कर गिर गया। मैं समझता हूँ कि नन्हों वगैरह भी अपनी अपनी जगह पर ही बेहोश हो गई होंगी। खैर उस समय अर्जुनसिंह और गिरजाकुमार मेरी मदद को दौड़े। अर्जुनसिंह ने मुझे उठा लिया और गिरजाकुमार ने वह गोला पैर से ठोकर मार कर दूर फेंक दिया, पर ये दोनों भी उसके धूँएँ के कारी असर से बच न सके। अर्जुनसिंह तो उस बाद वाली कोठरी में जाते जाते बेहोश हो गये और गिरजाकुमार के छूते ही वह बम फूटा जिससे वह इस कदर जख्मी हो गया जैसा कि आपने देखा ही है। बेहोश होते हुए अर्जुनसिंह के कानों में एक भयानक आवाज पड़ी जो बेशक ऊपर वाली कोठरी में खूबी बारूद के फटने की होगी। (उस कोने की तरफ जा कर जहाँ छत टूटी थी) मै समझता हूँ कि ऊपर की इमारत को बहुत बड़ा नुकसान पहुँचा होगा, मगर–अरे यह क्या? यहाँ तो आसमान नजर आ रहा है ? तो क्या ऊपर की पूरी इमारत उड़ गई ?"

इन्द्रदेव०। मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि समूची लोहगढ़ी की इमारत उड़ गई है। ऊपर की तरफ इस समय एक भयानक खंडहर मात्र रह गया है जिसमें राजा साहब के आदमी खोद खाद कर रहे हैं और उस सुन्दर इमारत का कहीं निशान भी नहीं है जो कल तक यहाँ मौजूद थी।

दर्लीप०। अफसोस भूतनाथ यह तैने क्या किया !!

इन्द्र०। अपनी जान भी दी और ऐसी अनमोल इमारत को जो दुनिया में अपना सानी नहीं रखती थी जड़ मूल से नष्ट भी कर दिया। पर मुझे अब यह कहना है कि यहाँ खड़े खड़े समय बिताना मुना-

मिब नहीं है। ऊपर बहुत से आदमी लगे हुए हैं, क्या जाने कौन ढूँढता ढोढ़ता यहाँ तक आ पहुँचे। यह तिलिस्म का एक हिस्सा है और यह रास्ता जिससे मै आया हूँ तिलिस्म में जाने का है। इसे खुला छोड़ना अच्छा नहीं, इसे पक्की तरह से बन्द कर देना ही मुनासिब है। अगर आप कुछ ही चलने फिरने लायक हो गये हों तो मैं पसन्द करूँगा कि हम लोग इस जगह से निकल ही चलें।

दलीप०। मैं तो बखूबी चलने फिरने के लायक हूँ पर गिरिजाकुमार बहुत चोट खाये हुआ है, शायद उसे उठा कर ले चलना पड़ेगा।

इतने ही में पीछे से आवाज आई, "वाह, मैं तो आपको उठा के ले चल सकता हूँ! आपने क्या मुझे मुर्दा समझ रक्खा है!" और जब इन दोनों ने घूम कर देखा तो गिरिजाकुमार और अर्जुनसिंह पर नजर पड़ी। इन्द्रदेव ने ताज्जुब के साथ गिरिजाकुमार से पूछा, "क्या तुम कुछ दूर चलने लायक हो?' जिसके जवाब में उसने कहा, "बखूबी!" और तब उस छोटी कोठरी में दो चार दौड़ इधर से उधर लगा गया। इन्द्र-देव यह देख हँस पड़े और बोले, 'खैर इम्तिहान देने की जरूरत नहीं, मेरा कहना यह था कि ऊपर का खडहर साफ करने के काम में बहुत से आदमी राजा साहब के लगे हुए हैं और कोई ताज्जुब नहीं कि वे सब खोद-खाद मचाते यहाँ तक पहुँचें इसलिए यह गुप्त राह जो आप लोगों ने खोली या जिसकी राह मै आया इस तरह मजबूती से बन्द कर देनी चाहिए कि जिसमें कोई इसे खोल न सके नहीं तो ऐरे-गैरे सभी आदमी इसके अन्दर घुसेंगे और तिलिस्म की मुसीबत में पड़ जायँगे।'

गिरजा०। जरूर ऐसा कर देना मुनासिब है, मगर क्या इस राह के इलावे और भी कोई राह यहाँ से निकल भाग जाने की है या हम लोगों को उस छेद की राह बाहर होना पड़ेगा जो इस कोठरी की छत में दिखाई पड़ रहा है।

इन्द्र० । नहीं, नहीं, और राह भी है, अच्छा आप लोग इसी जगह जरा ठहरिये ।

इतना कह इन्द्रदेव उस कोठरी के अन्दर चले गये जिसके अन्दर से गिरजाकुमार वगैरह अभी-अभी यहां पहुँचे थे और करीब आधी घड़ी तक भीतर न जाने क्या करते रहे । ये लोग उनके आने की राह देख ही रहे थे कि यकायक एक खटके की आवाज आई और इन्होंने देखा कि उस कोठरी का दर्वाजा जो खुला हुआ था बन्द हो गया । केवल यही नहीं, नीचे की तरफ से एक पत्थर की सिल्ली खसकती हुई ऊपर आ गई जिसने इस तरह उस जगह को ढंका लिया कि अब वहाँ साफ संगीन दीवार दिखाई पड़ने लगी, जिसको देखकर इस बात का गुमान भी नहीं हो सकता था कि इसके पीछे कोई दर्वाजा है । गिरजाकुमार ताज्जुब करता हुआ उसके पास गया और पत्थर की संध पर उँगली फेरता हुआ बोला, 'वाहरे कारीगरी ! देखिये, जरा भी दरार मालूम होती ! अब क्या कोई कह सकता है कि इस जगह कोई दर्वाजा था ।' दलीपशाह ने कहा, 'तिलिस्म वालों की कारीगरी का कुछ कहना है !'

इसी समय यकायक पुनः एक खटके की आवाज आई और इन लोगों ने देखा कि उस पत्थर के शेर की मूरत के नीचे जो उस कोठड़ी में बनी हुई थी एक रास्ता निकल आया है जिसके अन्दर इन्द्रदेव खड़े हैं* । इन्द्रदेव ने इन लोगों को अपनी तरफ बुलाया और जब ये तीनों आदमी उसके अन्दर चले गये तो रास्ता फिर बन्द कर लिया ।

गिरजाकुमार ने अपने को एक पतली और बहुत ही लम्बी सुरंग में पाया जो सीधी सामने की तरफ चली गई थी । उसने यह देख कहा, 'तो क्या उन लाशों को उसी जगह छोड़ दिया जायगा ?' जिसके जवाब

* यही वह रास्ता था जिसकी राह कमलिनी दोनों कुमारों को तिलिस्म में ले गई थी । देखिये चन्द्रकान्ता संतति आठवाँ हिस्सा ।

में इन्द्रदेव ने कहा, 'हाँ, और इसके सिवाय और किया ही क्या जा सकता है ? राजा साहब के आदमी खोज करते हुए जरूर वहाँ तक पहुँचेंगे और उनको उठा ले जायँगे !'

इन्द्रदेव ने आगे कदम बढ़ाया और उनके पीछे-पीछे ये तीनों आदमी रवाना हुए।

दूसरा बयान

यकायक प्रभाकरसिंह को कई आदमियों ने पकड़ लिया और "यही है, यही है, पहिले इसी को बलि देना चाहिये !" इत्यादि कह कर चिल्लाने लगे।

इस अचानक की मुसीबत ने प्रभाकरसिंह को घबड़ा दिया फिर भी उन्होंने अपने होश हवास कायम रक्खे और छूटने का उद्योग करने लगे, मगर उनको पकड़ने वाले पंजे वज्र की तरह कड़े थे जिन्होंने उनके लाख उद्योग करने पर भी जुम्बिश न खाई। वे बहुत कुछ उछले कूदे और जोर लगाया पर किसी तरह भी अपने को छुड़ा न सके बल्कि उनकी मेहनत का नतीजा यह निकला कि वे और भी कस कर दबा दिये गये। लाचार उन्होंने छूटने का उद्योग छोड़ दिया और यह जानने की कोशिश करने लगे कि उनको पकड़ने वाले कौन हैं और जिस जगह वे आ पड़े हैं यह स्थान कैसा है।

पहिली बात का पता तो उन्हें सिर घुमाते ही लग गया, उन्हें दोनों तरफ से दो तिलिस्मी शैतानों ने पकड़ा हुआ था जिनके हड्डियों वाले हाथ उन्हें शिकंजों की तरह मालूम हो रहे थे, पर दूसरी बात का पता वे ठीक-ठीक लगा न सके कारण जिस जगह वे थे वहाँ कुछ ऐसा अन्धकार सा था कि निगाह अच्छी तरह काम नहीं कर रही थी फिर भी इतना उन्होंने समझ लिया कि यह कोई बहुत ही बड़ा कमरा या बालाखाना है

जिसकी छत इतनी ज्यादा ऊँची है कि अन्धकार के कारण दिखाई नहीं पड़ती। चारो तरफ फैले हुए तरह तरह के कल पुर्जे और सामान धुँधले धुँधले दिखाई पड़ रहे थे जिनके बीचोबीच की कुछ जगह किसी तरह के सामान से एकदम खाली थी। इसी स्थान के सामने की दीवार का वह हिस्सा गिरा हुआ था जिसकी राह प्रभाकरसिंह आये थे और उस राह से जो चाँदनी आ रही थी उसकी मदद से प्रभाकरसिंह ने देखा कि उसके सामने की तरफ वाली दीवार के साथ एक संगमर्मर का ऊँचा चबूतरा है जिस पर कोई मूरत बैठाई हुई है। उस चबूतरे के नीचे दो औरतें लाचार खड़ी प्रभाकरसिंह को दिखाई पड़ीं जिनमें से एक का मुँह उन्हीं की तरफ घुमा होने के कारण उन्होंने तुरत पहिचान लिया कि मालती है पर वह दूसरी औरत कौन है यह वे कुछ न जान सके। इन दोनों ही औरतों को दोनों तरफ से दो दो तिलिस्मी शैतानों ने पकड़ा हुआ था। प्रभाकरसिंह मालती को देखकर चौंके और उससे कुछ पूछना ही चाहते थे कि उन्हें पकड़ने वालों ने उनको एक धक्का दिया और उसी मूरत के पास ले चले।

पहिले तो शायद घबड़ाहट परेशानी और अन्धकार के कारण मालती प्रभाकरसिंह को पहिचान न सकी थी पर जब वे पास आ गये तो उन्होंने उन्हें पहिचाना और दर्द भरी आवाज में कहा, 'हाय! क्या आप भी इन कम्बख्तों के हाथ में पड़ गये! अब जान बचना मुश्किल है!' प्रभाकरसिंह ने पूछा, 'यह कौन सी जगह है और तुम यहाँ क्यों कर पहुँची!' जिसके जवाब में मालती ने कहा, "आप को तिलिस्म में फँसा देख यह सोचकर कि शायद इससे आपको मदद मिले मैं इस तिलिस्म का दूसरा दर्जा तोड़ने के काम में लग गई थी मगर महराब वाले बुर्ज तक पहुँची ही थी कि इन दोनों शैतानों ने मुझे पकड़ लिया और यहाँ ले आये। डर के मारे मैं बेसुध हो गई। होशमें आई तो इस तरह अपने को बेकाबू पाया। सुनने में आया कि इसी मूरत पर बलि दे दी जाऊँगी

और इसी की तैयारी हो रही थी कि बड़ी धमाके के साथ वह दीवार गिर पड़ी और आप दिखाई पड़े, मगर अफसोस कि आप भी इन शैतानों के फेर में पड़ गये, अब देखिये क्या होता है !!"

प्रभाकर०। और यह तुम्हारे साथ वाली दूसरी औरत कौन है ?

मालती०। मैं नहीं जानती, मैं जबसे होश में आई इसी तरह देख रही हूँ, अभी तक कुछ बोली चाली या हिली डुली नहीं है; शायद गश में हो, मगर आप अब हम लोगों का ख्याल छोड़िये और अपने बचाव की फिक्र कीजिये, अगर कोई निकल सकती हो तो।

प्रभाकरसिंह ने यह सुन गौर के साथ अपने चारो तरफ देखा, मगर उसी समय उनका ध्यान एक विचित्र आवाज की तरफ गया जो उसी मूरत के मुँह से निकलती जान पड़ती थी। उन्होंने उस तरफ देखा और साथ ही उस मूरत के मुँह से कड़ी आवाज में यह निकला, "ये लोग कौन हैं !" प्रभाकरसिंह को पकड़े हुए दोनों शैतानों में से एक ने कहा, "कृपानिधान ! ये लोग तिलिस्म की दौलत लूटने के लिए अन्दर घुसे थे इसलिए गिरफ्तार किये गये हैं नियमानुसार इनकी बलि होनी चाहिए।" उस मूरत ने कहा, "ठीक है, ठीक है, मै इन बदमाशों को बखूबी पहिचान गया, अब देर करने की जरूरत नहीं है, तुम लोग अपना काम पूरा करो।"

इतना सुनते ही वे शैतान अपनी अपनी जगह से हटे और बारी बारी से सभों ने उस बेहोश औरत, मालती और प्रभाकरसिंह का सर जबर्दस्ती उस मूरत के पैर से लगाया। इसके बाद उस बेहोश औरत को लिए हुए दो शैतान उस चबूतरे पर चढ़ गये जिस पर वह मूरत थी। एक शैतान ने उस बेचारी को जोर से उस मूरत पर ढकेल दिया, साथ ही खांड़े वाला हाथ गिरा और उस औरत का सिर कट कर दूर जा पड़ा।

चबूतरे के ऊपर वाले दोनों शैतान अपना भयानक काम पूरा कर नीचे उतर आये और अब प्रभाकरसिंह को पकड़ रखने वाले दोनों शैतान

उस चबूतरे पर चढ़े। यद्यपि प्रभाकरसिंह ने अपने छूटने के लिए बहुत कुछ कोशिश की और जोर लगाया पर सब व्यर्थ हुआ। उन तिलिस्मी शैतानों के हाथ में वे बिल्कुल बच्चे के समान थे जिन्होंने इन्हें मूर्ति के पैर पर ढकेल दिया और पीछे हट गए। साथ ही उनमें से एक शैतान आगे बढ़ा और चाहता ही था कि अपने खांड़े से प्रभाकरसिंह की गर्दन उड़ा दे कि इतने ही में तड़प कर प्रभाकरसिंह दूर हट गए। जो एक सायत का अवसर उन्हें मिला जब कि दोनों शैतानों के हाथ उन पर से हट गए थे उसी में उन्होंने अपना काम बना लिया था।

यह देख कि उनका शिकार उनके हाथों से निकल भागना चाहता है उन शैतानों के गले से एक डरावनी आवाज निकली और वे प्रभाकर सिंह को पकड़ने के लिये झपटे पर यह कतरा कर उनके सामने से निकल गए और उस मूरत के पीछे हो गए जिसके और उस कमरे की दीवार के बीच में एक आदमी के घुस जाने लायक रास्ता था। वे उस जगह पहुँचे ही थे कि यकायक उस मूरत की पीठ में उन्हें कोई चीज चमकती हुई नजर आई। गौर से देखा तो मालूम हुआ कि कुछ अक्षर हैं जो न जाने किस तरह के मसाले से लिखे गये हैं कि उस अन्धकार में जुगनू की तरह चमक रहे हैं। जरूर यह बात मतलब से खाली न होगी यह सोच प्रभाकरसिंह गौर से देखने लगे। वे अक्षर ये थे :—

स क प र क
इ न त ल द
स प अ स्म ह
र य थ ह न
अ छ ठ ग अ

कुछ ही गौर ने प्रभाकरसिंह को इन हरूफों का मतलब बता दिया और तुरत ही उन्होंने उसके मुताबिक कार्रवाई भी की। दोनों शैतान

उनका पीछा करते हुए उनके दोनों तरफ आ गये थे और हाथ बढ़ा कर उन्हें पकड़ना ही चाहते थे कि उन्होंने अपना तिलिस्मी डण्डा सम्हाला और उसका सिरा उस मूरत के दाहिने पैर के अंगूठे से छुला दिया। उसका छूना था कि मूरत के गले से एक डरावनी आवाज हुई और साथ ही उसके मुँह के अन्दर से एक आग का फौव्वारा सा निकल पड़ा। इधर आग की एक चिनगारी सामने वाले शैतान के सिर पर गिरी जिसके साथ ही उसके सिर से भी वैसी ही लपट निकलने लगी। उसकी यह हालत देखते ही वहाँ मौजूद सभी शैतान चिल्लाते हुए दूर भागे पर बच न सके। चिनगारियाँ उनके बदन पर भी पड़ीं जिसके साथ ही वे सब के सब भी अनार या फुलझड़ी की तरह बलने लग गये।

उन शैतानों की यह हालत देख प्रभाकरसिंह खुशी खुशी उस मूरत के पीछे से निकले और मालती के पास पहुँचे जो डरी और सकपकाई हुई एक तरफ को खड़ी थी। प्रभाकरसिंह ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "यहाँ इस तरफ निकल आओ, जहाँ तुम हो वहाँ तो चिनगारियों के मारे खड़ा होना मुश्किल है!" अभी ये दोनों मुश्किल से थोड़ी दूर हटे होंगे कि इन्होंने देखा कि चिनगारियाँ उस चबूतरे के ऊपर वाली मूरत के बदन से भी निकलने लगी हैं जो शैतानों को जला कर अब स्वयं भी बलने लग गई थी। पर इस मूरत के बलने में एक विशेषता थी जो उन शैतानों के साथ न थी अर्थात् इसके बदन से चिनगारियों के साथ साथ बहुत सा धूआँ भी निकल रहा था जिससे वह स्थान भरने लगा था। वह धूआँ बड़ा ही कड़ुआ और तबियत को घबड़ा देने वाला था तथा शायद उसमें कुछ बेहोशी का भी असर था क्योंकि यद्यपि प्रभाकरसिंह और मालती उस स्थान से बहुत दूर हट कर खड़े हुए तो भी जो कुछ धूआँ उनकी आँख नाक में तथा सांस की राह पेट के अन्दर गया उससे उनका सिर चक्कर खाने लगा और कुछ ही देर में वे बदहवास होकर जमीन पर बैठ गये।

जब इन दोनों के होश हवास ठिकाने हुए और इन्होंने आखें खोलीं तो देखा कि दिन प्रायः अस्त हो चुका है और इस जगह का अँधेरा और भी घना हो गया है। वह चबूतरा जहाँ पर वह मूरत बैठाई हुई थी इस समय एक दम खाली था मगर उस पर तथा उसके नीचे भी बहुत सी लाल रंग की राख गिरी हुई बता रही थी कि वह मूरत जलकर एकदम खाक हो गई है। प्रभाकरसिंह के साथ साथ मालती भी अब होश में आ गई थी और आश्चर्य के साथ चारो तरफ देख रही थी। आखिर उसने कहा, "मालूम होता है कि चबूतरे वाली मूरत जल कर भस्म हो गई पर आश्चर्य की बात है कि मैं उस औरत की लाश कहीं नहीं देख रही हूँ जो हमारे सामने ही बलि दे दी गई थी। क्या उसे कोई उठा ले गया?" प्रभाकरसिंह ने यह देखकर कहा, "नहीं उठा कौन ले जायगा, मगर आखिर यह लाश गई कहाँ! वह चबूतरे से गिर कर नीचे जमीन पर आ गई थी, शायद उस दूसरी तरफ तो नहीं है, देखना चाहिये!" कह कर वे खड़े हुए और मालती भी उठी। दोनों उस चबूतरे के पास आये और चारो तरफ तलाश करने लगे मगर कहीं वह लाश दिखाई न पड़ी, हाँ जहाँ वह गिरी थी उस जगह भी बहुत सी सुफेद रंग की राख पड़ी हुई नजर आई जिसे देख प्रभाकरसिंह ने कहा, "मालूम होता है कि वह औरत भी कोई तिलिस्मी कारीगरी थी और उन शैतानों के साथ जल गई क्योंकि यहाँ तो सिवाय इस सुफेद राख के और कुछ नजर नहीं आ रहा है।" मालती ने यह सुन कहा, 'शायद ऐसा ही हो।" और तब उस चबूतरे का सहारा ले कर खड़ी हो गई क्योंकि उसके सिर में अभी तक चक्कर आ रहे थे और बेतहाशा दर्द हो रहा था जो शायद इसी धूएँ का असर था। प्रभाकरसिंह ने यह देख और उसकी हालत समझ कहा, "बेहतर हो कि तुम इस जगह आकर बैठो और अपना हाल मुझसे कह जाओ। मेरा भी सर दर्द कर रहा है, तबीयत ठीक होने पर आगे की कार्रवाई शुरू की जायगी।" मालती ने यह सुन "बहुत खूब" कहा और तब

प्रभाकरसिंह उसे लिये हुए उसी टूटी दीवार के पास आ बैठे जहाँ से कि वे इस स्थान में पहुँचे थे और जहाँ से इस समय दिमाग को ताजगी देने वाली हवा के ठण्डे ठण्डे झोके आ रहे थे। यहाँ आकर मालती की तबीयत कुछ ठीक हुई और उसने प्रभाकरसिंह को उनकी गैरहाजिरी में हुआ भया सब हाल सुनाना शुरू किया जो कि पाठक ऊपर पढ़ ही चुके हैं। अपनी और मालती की तस्वीरें, तिलिस्म का हाल, खजाने के संदूक और तिलिस्मी भुजाली का पाना इत्यादि हाल सुन प्रभाकरसिंह को बहुत ही आश्चर्य और प्रसन्नता हुई मगर जब मालती ने कहा कि "बुर्ज पर से नीचे के बाग में उसने एक मर्द और दो औरतों को देखा था" तो ताज्जुब के साथ ख्याल दौड़ाने लगे कि वे कौन हो सकते हैं पर कुछ निश्चय नहीं कर सके। मालती से लेकर उन्होंने वह भुजाली और उसके जोड़ की अँगूठी देखी और उसकी विचित्र बनावट अद्भुत सुनहले रंग, और उसमें से निकलने वाली चमक को देख बहुत ही प्रसन्न हुए। मालती ने यह देख कहा, "यह आपके लायक चीज है, आप ही इसे रखिये।" पर उन्होंने सिर हिला कर जवाब दिया, "नहीं यह जब तुम्हें मिली है तो तुम्हें ही रखना वाजिब है, मेरे लिए मेरा डण्डा बहुत काफी है।" यह सुन मालती ने इस विषय में कुछ न कहा, और बोली, "मैंने तो अपना हाल कह सुनाया, अब आप अपना किस्सा बयान कीजिये।"

इसके जवाब में प्रभाकरसिंह ने अपना भी कुछ हाल जो हम ऊपर लिख आये हैं मालती से कह सुनाया जिसे वह बड़े गौर और ताज्जुब के साथ सुनने लगी मगर वे पूरा हाल कह भी न पाये थे कि उनका ध्यान किसी तरह की आवाज ने अपनी तरफ खींचा जो कुछ देर से वहां पर पैदा हो रही थी। वह किसी तरह के कल पुरजों के घूमने की सी आवाज थी और कहीं दूर से आती हुई जान पड़ती थी जिसने आखिर मालती का भी ध्यान आकर्षित कर लिया और वह चारो तरफ देख कर बोली, "यह आवाज कैसी हो रही है?" दोनों देर तक गौर करते रहे पर कुछ निश्चय

न कर सके। इसी समय जब एक खटके की आवाज हुई और छत पर लगे हुए कई गोले चमकने लग गये जिससे स्थान रोशनी से भर गया तो प्रभाकरसिंह ने अपना हाल कहना बन्द कर दिया और उठ खड़े हुए। उनकी देखा देखी मालती भी उठ पड़ी और जब ये लोग उस चबूतरे के पास पहुँचे तो मालूम हुआ कि वह आवाज उसी के अन्दर से आ रही है। प्रभाकरसिंह उचक कर चबूतरे के ऊपर चढ़ गए और देखा कि उस जगह जहाँ वह मूरत बैठाई हुई थी एक गहरा गढ़ा दिखाई पड़ रहा है और उसी के अन्दर से वह विचित्र आवाज आ रही है। उन्होंने मालती से यह बात कही और उसके आग्रह पर उसको भी चबूतरे के ऊपर चढ़ा लिया। मालती कुछ देर तक उस आवाज पर गौर करती रही और तब बोली, "हम लोगों को अब क्या काम करना है?" प्रभाकरसिंह ने कहा, "तिलिस्मी किताब के कथनानुसार इस गड़हे के अन्दर उतरना चाहिए।" मालती बोली, "तब अपना काम शुरू करिये, शायद हमारे देर करने का कोई उलटा असर हो!" प्रभाकरसिंह ने यह सुन कहा, "अच्छी बात है, तब फिर आओ!" और उस गड़हे के अन्दर पैर रक्खा। पतली सीढ़ियाँ दिखाई पड़ीं जिन पर आगे आगे प्रभाकरसिंह और पीछे पीछे मालती उतरने लगी। करीब करीब बीस बाईस सीढ़ियाँ उन्हें उतरनी पड़ीं और तब इन लोगों ने अपने को एक विचित्र जगह में पाया।

एक अद्भुत और खुशनुमा बनावटी बाग था जिसके बीचोबीच में एक छोटी बावली बनी हुई थी। छोटे छोटे बनावटी पेड़ जो शायद किसी धातु के थे बनावटी ही फूलों से लदे हुए अपनी विचित्र शोभा दिखला रहे थे और एक तरफ बनावटी पहाड़ की छोटी छोटी खोहों और कन्दराओं में खड़े और बैठे तथा उस बाग की रविशों पर घूमते फिरते हुए तरह तरह के जानवर भी दिखलाई पड़ रहे थे जो सब के सब बनावटी होते हुए भी इस कारीगरी के साथ बने थे कि देख कर तबीयत फड़क उठती थी और अगर असली कद से छोटे छोटे न होते तो जल्दी इसकी पहिचान करना

भी मुश्किल होता कि ये सब जानवर असली नहीं हैं बल्कि बनावटी और किसी धातु के बने हुए हैं। एक और विचित्रता जो सब से बड़ी थी वह यह थी कि ये सभी चीजें न जाने किस शक्ति की बदौलत हरकत कर रही थीं। पेड़ों के फल पत्ते और डालियाँ इस तरह झूम रही थीं मानों मन्द मन्द हवा उनमें बह रही हो, जानवर इस तरह घूम फिर रहे थे मानो अपने भोजन या आराम की तलाश में हो, नाजुक खूबसूरत चिड़ियाँ इधर से उधर फुदकती हुई कभी इस डाली पर और कभी उस डाली पर जा बैठती थीं और कभी कभी मस्ताने स्वर में मनोहर गीत भी ऐसी सफाई से उनके कण्ठ से निकल पड़ता था कि सुनने वाले का मन मुग्ध हो जाता था।

एक तरफ की दीवार के साथ लगे और बड़ी तेजी से चमकते हुए कई गोलों की रोशनी से वह बड़ा कमरा जगमग कर रहा था जिसमें यह सब सामान प्रभाकरसिंह देख रहे थे। यहाँ की विचित्रता के देखने में वे ऐसे मग्न हुए कि कुछ देर तक अपने तनोबदन की सुध भूल गये पर जब उन्हें होश हुआ तो वे मालती की तलाश में घूम कर देखा तो वह भी उनके बगल ही में खड़ी मुग्ध दृष्टि से वहाँ का दृश्य देख रही है; वे उससे बोले :—

प्रभाकरसिंह। तिलिस्मी कारीगरी की हद्द हो गई है? भला इसको देख कर भी कोई कह सकता है कि मनुष्य के लिये कोई काम असम्भव है!!

मालती। मैं तो समझती हूँ कि तिलिस्म बनाने वाले मनुष्य नहीं देवता थे। ऐसी कारीगरी आदमियों में बन नहीं सकती। मगर मुझे ख्याल पड़ता है कि इस बाग को मैंने कहीं देखा है।

प्रभाकर०। यह वही बाग है जिसको तिलिस्मी किताब में "आनन्द वन" कह कर लिखा गया है। यहीं पर हमें कुछ पुतलियों के हाथ में

तीर कमान लेकर एक शेर की आँख में तीर मारना होगा जिसके बाद बावली में से तिलिस्म के तीसरे दर्जे में जाने का रास्ता निकलेगा।

मालती। हाँ ठीक है, मुझे याद आ गया, मगर मैंने इसे देखा भी है। आपको याद होगा कि मैंने कहा था कि जब आप गायब हो गये तो मैंने एक छेद की राह एक बाग में ऐसा भयानक दृश्य देखा कि जिससे मेरी तबीयत घबड़ा उठी थी।

प्रभाकर०। हाँ, तुमने कहा था कि दो शैतान एक लाश उठा लाये थे और उसे काट काट कर घड़ियालों को खिला रहे थे।

मालती। जो हाँ, उस समय मैंने इसी बाग को देखा था। खैर अब आगे का काम शुरू करना चाहिए, बातचीत में समय बिताना व्यर्थ है!

प्रभाकरसिंह ने कहा, "ठीक है" और तब वे आगे बढ़े। हम ऊपर लिख आये हैं कि इस बनावटी बाग में तरह तरह के बनावटी जानवर मौके मौके पर दिखाये गये थे। इन्हीं के बीच में उस बावली के पास खड़ी दो औरतें थीं जो हाथ में तीर कमान लिए बड़े गौर से जल के भीतर की किसी चीज को इस प्रकार देख रही थीं मानों उस पर निशाना लगाना चाहती हों। इन औरतों के पीठ पर तरकश भी थे जिनमें तीर भरे हुए थे। 'ठीक है' कह कर प्रभाकरसिंह अपनी जगह से दो चार कदम ही आगे बढ़े थे कि इनमें से एक औरत यकायक घूमी और उनकी तरफ लक्ष्य करके इस फुर्ती और तेजी से उसने अपनी कमान का तीर छोड़ दिया कि अगर प्रभाकरसिंह की निगाह भी उन्हीं पर न होती और वे तुरत बैठ न गए होते तो तीर जरूर घायल करता पर उनकी फुर्ती के कारण ऐसा न हुआ और वह सनसनाता हुआ उनके ठीक पीछे की दीवार से टकरा कर गिर पड़ा। प्रभाकरसिंह यह देख उठे और तुरत कई कदम हट गये और उधर उस औरत ने एक दूसरा तीर अपनी तरकश से निकाला और कमान पर चढ़ा फिरा घूम कर पहिले की तरह खड़ी हो गई।

प्रभाकरसिंह ने मालती को बता कर कहा, "हमें उस औरत के हाथ

से तीर कमान लेकर उस शेर की आँख पर निशाना लगाना पड़ेगा, मगर यह काम सहज नहीं जान पड़ता।" मालती बोली, "सहज भला काहे को होगा, पर एक बार मुझे कोशिश करने दीजिये।" प्रभाकरसिंह ने यह बात न मानी और कहा, "नहीं पहिले मैं तो देख लूँ, जब न कर पाऊँगा तो तुम खतरे में जाना।" मालती यह सुन चुप हो रही और प्रभाकरसिंह फिर आगे बढ़े मगर इस बार पहिले की तरह वे सीधे उन औरतों की तरफ नहीं गये बल्कि चक्कर काटते हुए उसकी पीठ की तरफ बढ़े। मगर इसका भी कोई नतीजा न हुआ, ठीक पीठ की तरफ पहुँच कर भी जैसे ही वे उस औरत के नजदीक बढ़े वैसे ही वह फिर पहिले की तरह घूमी और पुनः उसने उन पर अपना तीर चलाया। अपनी तेजी और फुर्ती की बदौलत इस बार भी प्रभाकरसिंह ने अपने को बचा लिया मगर इतना वे जान गए कि जो तर्कीब उन्होंने सोची थी वह काम न देगी। वे कुछ पीछे हटकर खड़े हो गये और सोचने लगे कि क्या करना चाहिए।

यकायक उन्हें कोई बात सूझ गई। उनके ख्याल में आया कि उन औरतों के चारो तरफ घास का एक रमना बना हुआ दिखाया गया है। दोनों दफे उस रमने पर पैर रखते ही उस औरत ने तीर छोड़ा था। यह ख्याल आते ही उन्होंने पास ही में बने बनावटी पहाड़ में से एक बड़ा सा ढोका उठा लिया और आजमायश की तौर पर उस सब्जी पर फेंका। पत्थर के ढोके का गिरना था कि वह औरत घूमी और उसने उस ढोके को अपने तीर का निशाना बनाया। अब वे सब कारीगरी समझ गये। केवल यदि उस सब्जी पर पैर न पड़े तो उन तीरों से किसी तरह का खतरा नहीं है। यह जानते ही वे उस बनावटी पहाड़ पर चढ़ गये और उसे पार कर उसकी तरहटी में बनी हुई बावली की सीढ़ियों पर जा उतरे। पुतलियों ने जुम्बिश न खाई, जल के अन्दर ही अन्दर पैर रखते हुए प्रभाकरसिंह ने पुतली के पास जा उसके हाथ से तीर कमान ले लिया और तब उसी तरह फिर अपनी जगह पर वापस आ गये।

मालती बोली, "आपकी सूझ तो खूब काम कर गई। अब उस शेर पर निशाना लगाना चाहिये जो झाड़ी के अन्दर दिखाई दे रहा है। शेर की बाईं आंख में तीर लगना चाहिये और एक ही तीर से यह काम होना भी चाहिये अस्तु निशान चूके नहीं!"

"ईश्वर चाहेगा तो निशाना न चूकेगा!" कहकर प्रभाकरसिंह आगे बढ़े और एक मुनासिब जगह पर खड़े हो उन्होंने उस शेर की आंख का निशाना साधा। बहुत अच्छी तरह निशाना कर वे तीर छोड़ना ही चाहते थे कि यकायक चौंक गये। कोई चीज सनसनाती हुई उनके पीछे से आई और कान के पास से निकल गई, साथ ही मालती की आवाज आई, "ठहरिये, ठहरिये, वह दूसरी पुतली दगा कर रही है!!" प्रभाकर सिंह ने ताज्जुब के साथ घूम कर देखा। पहिली पुतली की साथिन वह दूसरी पुतली उनकी तरफ घूमी हुई थी और उन्हें लक्ष्य कर एक दूसरा तीर छोड़ना ही चाहती थी। वे पीछे हट गये जिससे उस पुतली का हाथ रुक गया और उसी समय मालती ने कहा, "मैं इस झगड़े को भी साफ किये देती हूँ।" जिस तरह जाकर प्रभाकरसिंह तीर कमान लाये थे उसी तरह से जाकर मालती ने इस दूसरी पुतली के हाथ से तीर कमान ले लिया और तब प्रभाकरसिंह के पास वापस आकर बोली "अब आप बेखड़क काम कीजिये।"

प्रभाकरसिंह फिर आगे बढ़े और उस शेर की आंख पर निशाना लगा उन्होंने तीर छोड़ दिया, साथ ही मालती के मुंह से निकला 'वाह!' तीर सनसनाता हुआ जा कर शेर की बाईं आंख में लगा था। तीर का लगना था कि वह शेर गरजा और सामने की तरफ झपटा। बावली के पानी में झुका हुआ एक बारहसिंघा पानी पीता हुआ बनाया गया था जिसको उस शेर ने जा कर दबोच लिया और तब उसको गर्दन पकड़ घसीटता हुआ फिर अपनी झाड़ी के अन्दर चला गया।

बारहसिंघे का हटना था कि एक तरह की आवाज आई और पानी

में जोर जोर की लहरें पैदा होने लगीं। थोड़ी देर बाद ऐसा मालूम होने लगा कि बावली का पानी किसी छेद की राह भीतर समाने लग गया है क्योंकि पानी की सतह नीची होने लगी और सीढ़ियां भी तेजी से खाली होने लगीं। पानी इस जोर से घट रहा था कि घड़ी भर के अन्दर ही वह बावली करीब करीब खाली हो गई। सिर्फ नीचे की तरफ थोड़ा सा कीचड़ मिला पानी बच गया था जिसके अन्दर दो घड़ियाल शायद मरे पड़े नजर आ रहे थे।

बावली अन्दाज से बहुत ज्यादा गहरी थी और उसकी ऊपरी सीढ़ियों से करीब दस बारह डंडा नीचे उतर कर एक रास्ता दिखाई पड़ रहा था जिसके अन्दर आदमी बखूबी जा सकता था। प्रभाकरसिंह इसी छेद की तरफ बढ़े और उनके पीछे-पीछे मालती भी बावली की सीढ़ियों उतरने लगी प्रभाकरसिंह उस छेद के पास पहुँचे और उसके अन्दर जाना ही चाहते थे कि यकायक न जाने क्या देख कर चिहुके और रुक गये। उनके मुंह से एक आश्चर्य की चीख निकल गई जिसने मालती को भी चौंका दिया। वह भी आगे बढ़ी और उनके बगल में पहुँच उसने भी छेद के अन्दर झाँका। इसके साथ ही उसके मुंह से भी आश्चर्य की एक आवाज निकल पड़ी और तब एक चीख मार कर वह उसी छेद के अन्दर घुस गई। साथ ही एक खटके की आवाज हुई और वह रास्ता बन्द हो गया। प्रभाकरसिंह खड़े आश्चर्य के साथ देखते ही रह गये।

तीसरा बयान

डर से कांपता हुआ भूतनाथ भागा और अपने सामने पानी का एक हौज देख उसके अन्दर कूद पड़ा।

यह हौज सिर्फ पानी का खजाना ही न था बल्कि एक तिलिस्मी रास्ता भी था जिसके अन्दर कूदने के साथ ही भूतनाथ को तनोबदन की

मुग्ध न रह गई। उसे बिल्कुल ही न मालूम हुआ कि इसके बाद लोहगढ़ी की क्या हालत हुई अथवा उसकी करनी का क्या नतीजा निकला, मगर हमारे पाठक बखूबी जानते हैं कि इसके बाद के ही क्षण में लोहगढ़ी की समूची इमारत उड़ गई। मिट्टी पत्थर चूने और लोहे के ढोंके सब तरफ फैल गए जिनसे केवल वह कुण्ड पट ही नहीं गया बल्कि वह समूचा स्थान इस तरह भर गया कि उस का दिखना भी बंद हो गया।

भूतनाथ जब होश में आया उसने अपने को एक झोपड़े के अन्दर पत्तों के बिछावन पर पड़े हुए पाया। उसका बन्द बन्द टूट रहा था और सिर में इस प्रकार का दर्द हो रहा था कि आंख नहीं खुलती थी। फिर भी किसी तरह अपने को सम्हाल जब उसने सिर उठाकर चारो तरफ देखा तो पहिली बात उसे यही दिखाई पड़ी कि उसके तमाम बदन पर पट्टियाँ बंधी हुई हैं। वह किस तरह इतना जख्मी हो गया या किसने उसकी मलहम पट्टी की इस बात को वह बहुत सोचने पर भी समझ न सका मगर इतना ज़रूर हुआ कि सोचने विचारने के लिए दिमाग दौड़ाने पर उसके सिर का दर्द बहुत ज्यादा बढ़ गया जिससे लाचार हो कर उसने यह कोशिश छोड़ दी और दूसरी बातों की तरफ ध्यान देने लगा।

उसने देखा कि वह छोटा झोपड़ा बांस की पत्तियों और डालों का बना हुआ है और उसकी छत किसी तरह के बड़े बड़े पत्तों से छाई हुई है। उसके ठीक सामने झोपड़े का दर्वाजा था जो बांस की जालीदार टट्टी से मजबूत बन्द किया हुआ था। उसने यह भी देखा कि उसके सिरहाने की तरफ और हाथ की पहुँच के अन्दर पानी का एक घड़ा तथा लोटा रक्खा हुआ है और दूसरी तरफ एक दूसरा मिट्टी का बरतन है जिसमें शायद खाने का कुछ सामान होगा। बस इसके सिवाय उस झोपड़े के अन्दर और कुछ भी नहीं था।

इन चीजों की देख भाल के साथ ही साथ भूतनाथ को एक दूसरी फिक्र पैदा हुई। उसका ऐयारी का बटुआ जिसके अन्दर बहुत सी बेश-

कीमती चीजें थीं कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा था। उसका हाथ अपनी कमर पर गया पर वहां कुछ भी न था। चारो तरफ देखा, पर कहीं अपना बटुआ दिखाई न पड़ा और यह एक ऐसी बात थी जिसने उसको एकदम से घबड़ा दिया। यद्यपि वह बहुत ही कमजोर हो रहा था फिर भी चौंक कर उठ बैठा और चारो तरफ देखने लगा, मगर कहीं भी उसकी वह जान से प्यारी चीज, उसका ऐयारी का बटुआ, उसे नजर न आया। वह परेशान हो गया और घबड़ा कर तरह तरह की बातें सोचने लगा, मगर किसी तरह की भी बात सोचने के साथ ही उसके सिर का दर्द बढ़ जाता था जिससे लाचार हो कुछ सायत बाद उसने सोचना विचारना फिर बन्द कर दिया और यह जानने की फिक्र में पड़ा कि उसकी चोटें किस तरह की हैं और कैसे उसे लगीं। इतना तो उसे याद था कि उस शैतान की बातों से डर और अपनी मशाल फेंक वह पानी के एक हौज मे कूद पड़ा था पर इसके बाद का कुछ भी हाल उसे याद न था। आखिर उसने अपने बदन की एक पट्टी खोल डाली और घाव को बड़े गौर से देखने लगा। वहां का स्थान अभी तक नीला था और बीचोबीच में एक इस तरह की गहरी खरोंच लगी हुई थी मानो किसी ने उसे पत्थर के ढोंके या ऐसी ही किसी नुकीली भारी चीज से मारा हो। किसी तरह की पत्ती पीस कर उसकी लुगदी रख पट्टी बांध दी गई थी पर इस बूटी ने उस चोट का दर्द बहुत कुछ कम कर दिया था और खून बहना तो एक दम ही बन्द हो गया था। भूतनाथ ने एक दूसरी पट्टी खोली और उस घाव को भी देखा, पहिले ही की तरह पाया और इस पर वह धीरे से बोल उठा, "मालूम होता है लोहगढ़ी उड़ गई और उसके ढोंके पानी में गिरे जिन्होंने मुझे इस कदर जख्मी किया। लेकिन अगर यही बात है तो जरूर मैं बहुत देर तक बेहोश रहा हूँ, बल्कि कई दिनों तक बेहोश पड़ा रहा होऊँ तो भी ताज्जुब नहीं!"

वह कहाँ पर है? जिस हौज में वह कूदा था वह कितनी दूर है? लोहगढ़ी वाला टीला यहाँ से कितने फासले पर है? उसे यहाँ पर कौन

लाया ? और किसने उसकी मलहम पट्टी की, इत्यादि बहुतसी बातें भूतनाथ के दिमाग में दौड़ने लगीं जिनका कोई भी जवाब वह पा न सका। आखिर वह यह सोचने लगा कि अब उसे क्या करना मुनासिब है। उसने अपनी ताकत को तौला तो मालूम हुआ कि अभी वह किसी तरह का सफर करने या कहीं आने जाने लायक नहीं है परन्तु बिना कुछ खाये पीये इस तरह उस झोपड़े के अन्दर भी वह कब तक बैठा रह सकता था ? आखिर वह उठ खड़ा हुआ और झोपड़े के दर्वाजे की तरफ बढ़ा, मगर दो एक कदम से ज्यादा जा न सका, सिर में चक्कर आ गया जिससे लाचार हो उसे झोपड़े की दीवार थाम खड़े हो जाना पड़ा। मगर भूतनाथ इस तरह सहज ही में मानने वाला जीव भी न था, जरा देर रुक कर वह फिर आगे बढ़ा और कई कदम चलकर झोपड़े के बीचोबीच तक पहुँच गया मगर यहाँ आकर उसकी ताकत ने एक दम जवाब दे दिया और उसे जमीन पर बैठ जाना पड़ा।

भूतनाथ जमीन पर बैठा तो कमजोरी और सिर के चक्कर के कारण पर उसकी तीक्ष्ण बुद्धि ने उस वक्त भी उसका साथ न छोड़ा था तथा वह तुरत ही एक बात पर गौर करने लगा जिसने उसका ध्यान आकर्षित किया था और जो यह थी कि जिस जगह वह बैठ गया था उस जगह की जमीन उसे कुछ नर्म नर्म मालूम हुई जिसके अन्दर हाथ की हथेली धंस गई थी। उस झोपड़े की समूची सतह गोबर की लीपी हुई और बड़ी साफ सुथरी तथा ठोस थी जिसके विपरीत इस स्थान को ऐसा पा उसे शक हुआ और उसने हाथ ही से वहाँ पर खोदना शुरू किया। शीघ्र ही मालूम हो गया कि उस जगह कोई गड्ढा था जो मामूली ढंग से मिट्टी भर कर बन्द कर दिया गया था और ऊपर से लिप जाने की वजह सरसरी निगाह से उसका पता नहीं लगता था। भूतनाथ ने सहज ही में उस गड्ढे की मिट्टी बाहर निकाल डाली और तब उसके नीचे अपना ऐयारी का बटुआ अपने ही एक कपड़े में लपेटा हुआ रक्खा पाया। बटुआ पाते ही उसके

मुँह से आश्चर्य और प्रसन्नता की एक चीख निकल पड़ी। उसकी गांठ पर एक निगाह डालते ही वह जान गया कि किसी ने उसे खोला नहीं है फिर भी उसने उसको खोल डाला और भीतर के चीजों की जाँच की। सब कुछ ठिकाने से और दुरुस्त पा वह और भी प्रसन्न हुआ। उसने बटुए में से एक शीशी निकाली और उसमें की कुछ दवा खाने बाद पुनः अपनी जगह उस पत्तियों वाले बिछावन पर आ बैठा, तब बटुए में से एक छोटी सी किताब निकाल कर उसे पढ़ने लगा। हमारे पाठक शायद इस किताब को पहिचान गये होंगे क्योंकि यह वही है जिसे भैयाराजा से गोपालसिंह ने पाया था और जिसे नन्हों ने उन्हें धोखा दे कर ले लिया था अथवा जिसे भूतनाथ ने नन्हों को उल्लू बना कर अपने कब्जे में कर लिया था।

भूतनाथ इस तिलिस्मी किताब के पढ़ने में इतना मग्न हुआ कि उसे तनोबदन की कुछ होश न रह गई और न यही खयाल रहा कि वक्त कितना बीत गया है। वह शायद उसे समाप्त किये बिना सिर न उठाता पर यकायक झोपड़े के दर्वाजे पर किसी की छाया देख और उसके खुलने की आहट पा वह चौंक पड़ा। सिर उठा कर देखा तो एक वृद्ध बाबाजी को दर्वाजा खोल अन्दर आते हुए पाया जिनके एक हाथ में एक लोटा तथा दूसरे में कुछ और सामान था। उसने फुर्ती के साथ किताब बन्द कर बटुए के हवाले की और तब बटुआ अपनी कमर में बांधता हुआ उठ खड़ा हुआ। इस बीच वे बाबाजी भी उसके पास आ पहुँचे और उसे जांचने वाली निगाह से देखने बाद बोले, "भगवान की बड़ी कृपा है जो मै तुम्हें सब तरह से दुरुस्त और होशहवास में पाता हूँ !!"

भूतनाथ ने गौर की निगाह से महात्मा को देखा और तब हाथ जोड़ प्रणाम करने बाद कहा, "मालूम होता है आप ही की कृपा से मैं इस स्थान में हूँ और आप ही की बांधी हुई अद्भुत बूटी के प्रभाव से मेरे घाव अच्छे हुए हैं !"

महात्मा ने उसे अपने स्थान पर बैठने का इशारा करते हुए कहा, "हाँ तुम ऐसा ही समझ लो। अब इस समय दर्द कैसा है ?" भूतनाथ बोला, "बहुत कम है बल्कि नहीं के बराबर है, घाव करीब करीब पुर गये हैं, और सिवाय कमजोरी के और किसी तरह की तकलीफ नहीं जान पड़ती, मगर मैं यह जानने के लिए व्याकुल हूँ कि मै किस तरह इस जगह पहुँचा और मुझे इस हालत में कितना समय गुजर चुका है ?"

महात्मा ने जवाब दिया, "तुम अपने स्थान पर जाकर बैठो तब मैं तुम्हारी बातों का जवाब दूँगा। तुम बहुत सख्त जख्मी हुए थे और इसमें कोई शक नहीं कि अब भी बहुत कमजोर होगे।" भूतनाथ बोला, "नहीं नहीं, अब मैं बिल्कुल दुरुस्त हूँ फिर भी आपकी आज्ञा मानने को तैयार हूँ, पर आप भी तो कहीं आसन ग्रहण कीजिये !" वह अपने स्थान पर जा बैठा और महात्मा भी अपने हाथ का सामान जमीन पर रख उसके सामने ही मगर कुछ दूर हट कर एक जगह बैठ गये। दोनों में बातचीत होने लगी।

भूत०। हाँ महाराज अब बताइये कि यह कौन सी जगह है और जमानिया यहाँ से कितनी दूर है ?

महात्मा०। जमानिया यहाँ से दस कोस पर है और यह झोपड़ा मेरा निवासस्थान है।

भूत०। आपने मुझे कहाँ और कब पाया ?

महात्मा०। आज तीन रोज हुआ मैंने यहाँ से थोड़ी दूर पर तुम्हें घने जंगल में एक नाले के किनारे बहुत ही चुटीली हालत में पाया।

भूत०। तीन रोज हुआ !!

महात्मा०। हाँ तीन दिन हुए। तुम्हारी हालत बहुत ही खराब थी और ऐसा जान पड़ता था मानो तुम किसी बहुत ही ऊँची जगह से गिर कर चुटीले हो गए अथवा कोई भारी चीज तुम्हारे ऊपर लुढ़क पड़ी हो। कुछ आदमियों की मदद से मैं तुम्हें यहाँ उठवा लाया और इलाज करने

लगा। प्यारे ईश्वर की दया से आज तुम्हें अच्छी हालत में देख रहा हूँ नहीं तो मैं तुम्हारी जिन्दगी से नाउम्मीद हो गया था।

भूत०। (कुछ रुकता हुआ) क्या आप कुछ कह सकते हैं कि जमानिया में कहीं किसी तरह की दुर्घटना हुई है?

महात्मा०। सिवाय इसके और कोई समाचार तो मैंने नहीं सुना कि किसी दुष्ट ने लोहगढ़ी नामक इमारत को सुरंग लगा कर जड़ मूल से उड़ा दिया। मगर क्यों, तुम्हारे पूछने का क्या मतलब है?

भूत०। कुछ नहीं मैंने यों ही पूछा।

महात्मा ने यह सुन कुछ जवाब न दिया और यद्यपि उनकी आकृति से भूतनाथ को कुछ शक अवश्य हो गया फिर भी इस सम्बन्ध में ज्यादा बात करने की उसकी इच्छा न थी अस्तु वह चुप रहा और न जाने क्या सोचने लगा। महात्मा ने यह देख अपने हाथ की पोटली में से कुछ निकालते हुए कहा, "अच्छा तुम यह दवा की गोली खा लो और सिरहाने जो पानी रक्खा हुआ है उसमें से दो चार घूँट पी कर लेट जाओ।"

भूत०। (सिर हिला कर) आपकी कृपा के लिये मैं बड़ा ही अनुगृहीत हूँ पर अब मैं एक दम ठीक हो गया हूँ और किसी दवा की मुझे जरूरत नहीं है। मैं अब आपको धन्यवाद दे कर इस जगह के बाहर चला जाना चाहता हूँ।

महात्मा०। (मुस्कुरा कर) मालूम होता है कि तुम मेरी दवा को शक की निगाह से देख रहे हो पर तुम्हें याद रखना चाहिये कि इसी दवा ने तुम्हारी जान बचाई है नहीं तो इस तीन दिन के भीतर जब कि तुम एक दम बेहोश और लाचार थे कई बार मौत के किनारे पहुँच चुके थे।

भूत०। नहीं नहीं, मुझे आपकी दवा पर किसी तरह का शक नहीं है, मेरा कहना सिर्फ यह है कि अभी अभी मैंने अपनी निज की एक दवा खाई है जो बहुत जल्द ताकत पैदा करती है और उसका असर भी होने लगा है इसीलिये आपकी दवा खाने की अब जरूरत न पड़ेगी।

महात्मा० । खैर तुम्हारी मर्जी, मैं इस बारे में जोर देने की जरूरत नहीं देखता, लेकिन जब तुम अपने पर ही मुनहसिर रहना चाहते हो तो मै समझता हूँ कि उन चीजों को भी खाना पसन्द न करोगे जो मैं तुम्हारे लिए ले आया था, फिर भी कम से कम यह मेवा तो तुम्हें खा ही लेना चाहिये जिसे लाने के लिये ही मैं तुम्हें अकेला छोड़ कर गया था।

कह कर बाबाजी ने अपनी गठड़ी के अन्दर से कुछ मेवे और फल निकाल कर भूतनाथ के सामने रक्खे और उस लोटे की तरफ इशारा किया जो अपने हाथ में लिये हुए यहाँ आये थे तथा जिसमें दूध भरा हुआ था। न जाने क्या सोचकर भूतनाथ ने इन चीजों को खाने में आपत्ति न की और बहुत शीघ्र ही उन्हें समाप्त कर घड़े से पानी उँड़ेल हाथ मुँह धो फिर अपने स्थान पर आ बैठा। बाबाजी उससे कुछ कहना या पूछना ही चाहते थे कि इसी समय भूतनाथ उनकी तरफ देख कर बोल उठा, "अच्छा अब बताओ कि तुमने मेरे सामने यह रूपक क्यों रच रक्खा है ?"

भूतनाथ की बात सुन बाबाजी ने चौंक कर कहा, "इसके क्या माने ?" जिसके जवाब में भूतनाथ ने कहा, "इसके माने यह कि मैंने अपने दगाबाज भाई को पहिचान लिया और जानना चाहता हूँ कि वह अब किस नीयत से मेरे सामने आया है ?" बाबाजी ने और भी आश्चर्य से कहा, "मैं नहीं समझ सका कि तुमने मुझे क्या समझा जो ऐसी कड़ी बात कह दी ?" भूतनाथ हँस कर बोला, "मैंने तुम्हें शेरसिंह समझा और ठीक समझा है ! अगर तुम्हें विश्वास न हो तो कहो अभी तुम्हारी दाढ़ी उखाड़ कर साबित कर दूँ !!"

इतना सुन वह बाबाजी भी हँस पड़े और खुद ही अपनी दाढ़ी अलग कर बोले, "बेशक भूतनाथ तुम बड़े ही होशियार आदमी हो !" दाढ़ी हटते ही शेरसिंह ऐयार की सूरत मालूम पड़ने लगी और जब उन्होंने

एक रूमाल गीला कर वह हलका रंग पोंछ डाला जो चेहरे पर लगा हुआ था तब तो कोई शक ही न रह गया।

शेर०। इसके पहिले कि मैं यह पूँछूँ कि तुमने क्योंकर मुझे पहिचाना मै यह जानना चाहता हूँ कि तुमने मुझे अपना दगाबाज भाई क्यों कहा?

भूत०। इस लिये कि तुमने कम्बख्त नन्हों गौहर और मुन्दर का साथ दे कर मुझे आफत में फँसाया।

शेर०। (सिर हिला कर) कभी नहीं, मैंने किसी कारण से उन लोगों का साथ जरूर दिया पर तुम्हें किसी तरह की आफत में नहीं डाला!

भूत०। क्या तुमने उन लोगों के साथ मिल कर वह विचित्र नाटक नहीं रचा जिसने मुझे पागल बना दिया, और क्या तुमने मेरे कब्जे से शिवगढ़ी की ताली ले लेने का उद्योग नहीं किया?

शेर०। मैं बिल्कुल नहीं जानता कि तुम किस नाटक की तरफ इशारा कर रहे हो, और न मैंने तुम्हारे कब्जे से शिवगढ़ी का ताली लेने का ही कोई उद्योग किया। यह जरूर है कि मुझे महाराज दिग्विजयसिंह ने इसी काम के लिए यहाँ भेजा था पर वह ताली तुम्हारे पास है इसका पता तो मुझे उस दिन नन्हों वगैरह की ही जुबानी लगा, इसके पहिले इस बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता था।

भूत०। (सिर हिला कर) मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं होता और जब तक कि तुम इसके विपरीत साबित न कर दोगे मैं यही समझता रहूँगा कि तुम्हीं ने मेरे सत्यानाश का उपाय रचा, नन्हों गौहर मुन्दर और दिग्विजयसिंह के ऐयारों को मेरा छिपा भेद—वह भेद जिसके खुल जाने की बनिस्बत मैं मौत को ज्यादे पसन्द करता हूँ—वह भुवनमोहिनी वाला भेद खोला, और तुम्हींने मेरी प्यारी चीज शिवगढ़ी की ताली लेने के लिये मुझे अपने जाल में फँसाया। मुझे तुम्हारी करतूतों का सच्चा सच्चा पता लग चुका है और अब तुम मुझे किसी तरह धोखा नहीं दे सकते।

शेर० । (अफसोस की मुद्रा से सिर हिला कर) मेरी समझ में नहीं आता कि तुम किस बुनियाद पर मेरे ऊपर इतना बड़ा कलंक लगा रहे हो ? मालूम होता है कि किसी ने मेरे विरुद्ध तुम्हारे कान भर दिये हैं। मैं अगर तुम्हें धोखा देना चाहता ही तो क्या अब तक वैसा कर न सकता था ! इसी बेहोशी की हालत में ही क्या मैं तुम्हारे बटुए को गायब नहीं कर सकता था अथवा उसके सामान की तलाशी ले कर उन चीजों को निकाल नहीं सकता था जिनको तुम जान से बढ़कर मानते हो !!

भूत० । किस सबब से तुमने ऐसा नहीं किया यही सोच सोच मैं ताज्जुब कर रहा हूँ। जरूर इसमें भी तुम्हारी कोई गहरी चाल होगी। खैर जाने दो, तुम मेरे साथ चाहे जैसा व्यवहार करो पर मैं तो तुमको बराबर अपना दोस्त और गुरुभाई ही समझता चला जाऊँगा और कभी किसी तरह की तकलीफ तुम्हें न दूँगा। अब जब मैं उन सबूतों के साथ साथ नन्हों आदि शैतान की खालाओं को भी जमींदोज कर चुका हूँ तो अकेले तुम मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते, हाँ यह जरूर होगा कि आज से मैं तुम पर विश्वास कभी न करूँगा और न अपना कोई भेद ही तुम्हें बताऊँगा। अब तुम मेरा आखिरी सलाम लो और मुझे रुखसत दो।

इतना कह कर भूतनाथ उठ खड़ा हुआ मगर उसी समय शेरसिंह ने झपट कर उसकी कलाई पकड़ ली और कहा, "नहीं, तुम इस तरह से इतना बड़ा इलजाम लगाकर बिना मुझे यह बताये नहीं जा सकते कि इन बातों का सबूत तुम क्या रखते हो !!"

भूतनाथ ने एक ऐसी निगाह शेरसिंह पर डाली जिसमें क्रोध और अफसोस दोनों ही मिला हुआ था, इसके बाद अपना बटुआ खोला और उसके अन्दर से एक चीठी निकाल कर शेरसिंह को दिखाते हुए कहा, "सबूत ? सबूत देखो यह है !" शेरसिंह ने वह चीठी उसके हाथ से ले लो और पढ़ी, यह लिखा हुआ था :—

"आपका खयाल ठीक है और जरूर ये चीजें भूतनाथ ही से संबंध रखती हैं। आप वही कार्रवाई कीजिए जो हम लोगों ने सोची है।"

इसके नीचे किसी का नाम न था और न यही कुछ पता लगता था कि यह किसको लिखी गई है पर शेरसिंह उसको पढ़ कर ये दोनों ही बातें बखूबी समझ गए। फिर भी अपना शक मिटाने की नीयत से उन्होंने पूछा, "यह चीठी तुम्हें कहाँ से मिली ?"

भूत०। इसको पूछ कर तुम क्या करोगे ? क्या तुम इस बात से इन्कार करना चाहते हो कि यह लिखावट तुम्हारी नहीं है ?

शेर०। नहीं बल्कि मंजूर करूँगा कि यह चीठी मेरी ही लिखी हुई है और तब यह बताऊँगा कि कब और किस नीयत से यह लिखी गई, तुम पहिले बताओ कि इसे कहाँ पाया ?

भूत०। इसे मैंने नन्हों की तलाशी लेने पर पाया।

शेर०। (चौंक कर) इसे तुमने नन्हों के पास से पाया !

भूत०। हाँ, और जरूर तुमने ही इसे उसके पास भेजा होगा ?

शेर०। नहीं, मैंने यह चीठी न तो नन्हों को लिखी और न उसके पास भेजी ही, इसे मैंने किसी दूसरे ही के लिए लिखा था और यह सुनकर कि तुम्हें यह नन्हों के पास से मिली मुझे बहुत ही ताज्जुब हो रहा है ! मगर भूतनाथ ! क्या सचमुच यह चीठी तुमने नन्हों के पास ही पाई या तुम मुझसे कोई मजाक कर रहे हो ?

भूत०। नहीं नहीं, मैं बहुत ठीक कह रहा हूँ ! नन्हों गोपालसिंह के कब्जे से तिलिस्मी किताब लेने की नीयत से तिलिस्म के अन्दर घुसी थी। मेरे एक शागिर्द ने इसकी खबर मुझे दी और मैंने नन्हों को धोखा दे वह किताब उससे ले ली। उसी समय नन्हों की तलाशी में यह चीठी मेरे हाथ लगी।

शेर०। और वह तिलिस्मी किताब भी तुम्हें मिल गई ?

भूत०। हाँ वह तिलिस्मी किताब भी मुझे मिल गई। (बटुए में

से तिलिस्मी किताब निकाल और शेरसिंह को दिखा कर) यह देखो वह किताब !

उस किताब पर एक निगाह पड़ते ही शेरसिंह चौंक पड़े और हाथ बढ़ा कर बोले, "हैं ! यह किताब तुम्हारे हाथ लग गई ! जरा दो तो देखूँ मै !" पर भूतनाथ ने उसे फिर अपने बटुए के हवाले किया और कहा, "माफ कीजिये, अब मैं आप पर इतना विश्वास नहीं करता कि ऐसी कीमती चीज आपके हाथ में दे दूँ। इसे तो सिर्फ अपनी बात के सबूत में मैंने तुम्हें दिखाया।"

शेर० । क्या तुम मुझ पर इतना अविश्वास करने लगे ?

भूत० । बेशक, क्योंकि तुम मेरे साथ दगा करने लगे !

शेर० । फिर तुमने वही बात कही ! मै तुमसे कहता हूँ न कि आज तक कभी मैंने तुमसे किसी तरह की दगाबाजी नहीं की और न जिन्दगी रहते कभी करूँगा ! अगर तुम सिर्फ इस चीठी के कारण मुझ पर शक करने लग गये हो तो समझ रक्खो कि यह चीठी मैंने बिल्कुल दूसरे ही मतलब से किसी दूसरे ही के पास भेजी थी और मैं बड़े ही ताज्जुब में हूँ कि यह नन्हों के पास किस तरह जा पहुँची।

भूत० । तुमने किसके पास यह चीठी भेजी थी ?

शेर० । यह मैं तुम्हें नहीं बता सकता।

भूत० । क्यों ?

शेर० । क्योंकि उस आदमी का भेद छिपा ही रहना मुनासिब है, मगर इतना मैं कह सकता हूँ कि जिस वक्त तुमको उसका नाम मालूम होगा या तुम यही जानोगे कि किस मतलब से यह चीठी लिखी गई तो बहुत ही खुश होगे।

भूत० । यह सब तुम्हारी बहानेबाजी है और मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुमने मेरे दुश्मनों के साथ मिल कर मुझे बर्बाद करने में अपने भरसक कोई बात उठा न रक्खी।

शेर० । इस चीठी के सिवाय किसी और बात से भी क्या तुम्हारा मतलब है ? इतना मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मौका आने पर इस चीठी की तरफ से तुम्हारी पूरी दिलजमई कर दूँगा ।

भूत० । अजी सिर्फ एक यही बात थोड़ी ही है ! क्या तुम समझते हौ कि मुझे तुम्हारे शागिर्दों गोपाल और श्यामसुन्दर की करतूतों का पता नहीं है, क्या तुम समझते हौ कि उस बजड़े पर की चीजों का हाल मुझे मालूम नहीं है, क्या तुम समझते हौ कि उस कैदी का हाल मुझे मालूम नहीं है जो शिवदत्त के कब्जे से गौहर की बदौलत छूट कर नन्हों के पास भेजा गया था पर जिसे बेगम के यहाँ से मेरे आदमी चुरा लाये, और क्या तुम समझते हौ कि मुझे उन चीजों का पता नहीं है जिन्हें दारोगा चंचलदास शिवदत्त और दिग्विजयसिंह के यहाँ से तुम लोगों ने इकट्ठा किया और मुझे नाश करने का जरिया बनाना चाहा था ! ईश्वर की कृपा ही कहना चाहिये कि मैं ठीक मौके पर लोहगढ़ी में पहुँच कर उन चीजों के साथ साथ कंबख्त नन्हों और मुन्दर को भी जड़ मूल से नाश कर सका नहीं तो क्या तुम लोगों ने मुझे चौपट करने में कोई कसर उठा रक्खी थी !!

शेर० । यह तुम कैसी बहकी बहकी बातें कर रहे हौ भूतनाथ !! एक जरा सी चीठी देख के तुम जब इस तरह की बातें सोचने लगे हौ तो मेरी समझ में नहीं आता कि इस तरह का दिमाग ले कर किस तरह कोई भारी काम कर सकोगे !! मैं तुमसे बार बार कह चुका कि अगर सिर्फ यही चीठी तुम्हारे सब शकों का कारण है तो किसी न किसी दिन इस बारे में मैं तुम्हारी पूरी तरह से दिलजमई कर दूँगा ।

भूत० । (गरम हो कर) अजी क्या सिर्फ यही चीठी ! तुम्हारी शैतानी के और भी कितने ही सबूत मेरे पास हैं ! (बटुए में हाथ डाल और एक दूसरी चीठी निकाल कर) देखो यह चीठी भी तुम्हारी ही लिखी हुई है या नहीं ?

शेरसिंह ने ताज्जुब करते हुए यह दूसरी चीठी भी ले ली और उसे पढ़ा। इसमें यह लिखा हुआ था :

श्रीमान् दारोगा साहब,

एक बहुत ही जरूरी काम आ पड़ने के कारण आपको यह पत्र लिखना पड़ रहा है। कृपाकर पत्रवाहक को अपने साथ ले जाकर एक बार 'शिवगढ़ी' दिखा दीजिये। उस 'भूतनाथ' के आस पास की इमारतों को देखने की इन्हें कुछ जरूरत है। शायद आप किसी तरह से या कोई बात सोच कर इन्कार करें तो मैं कह देना चाहता हूँ कि यह बहुत ही जरूरी काम है और ऐसा न करने से आपको 'आँचल पर गुलामी का दस्तावेज' लिखाने के जुर्म का मुजरिम बनना पड़ेगा जिसका नतीजा क्या होगा यह आप खुद सोच सकते हैं।

मैं यह भी अच्छी तरह जानता हूँ कि आप उस स्थान तक जाने या दूसरे को वहाँ ले जाने की सामर्थ्य रखते हैं अस्तु किसी तरह का बहाना या सुस्ती नुकसान पहुँचा सकती है।

आपका दोस्त—

शेरसिंह।

शेरसिंह ने इस चीठी को भी ताज्जुब के साथ पढ़ा और तब भूतनाथ को वापस करते हुए कहा, "बेशक यह चीठी मैंने दारोगा के पास भेजी थी और इसके भेजने का भी एक खास सबब था, मगर इससे भी तुमसे क्या सम्बन्ध ? यह तो हम लोगों के बीच में एक खास काम के लिये लिखी गई थी।

भूत०। वाह क्या भोले बने हैं ! इससे मुझे क्या सम्बन्ध ? अजी क्या तुमने भूतनाथ को इतना बेवकूफ समझ रखा है कि वह इतना नहीं समझ सकता कि इस चीठी को पा और इसमें दी गई गुप्त धमकी से डर कर दारोगा ने तुम्हारे आदमी को शिवगढ़ी पहुँचा दिया और उसने वहाँ का सब दृश्य देख कर उसकी वह नकल तैयार की जहाँ मेरे संबंध

की वे सब चीजें रख कर वह नाटक मुझे दिखाया गया था जिसका मैंने तुमसे जिक्र किया !! क्या इसको पढ़ने बाद भी मुझे तुम्हारी शैतानी में कोई सन्देह रह सकता है ?

शेर० । अफसोस कि तुम उसी ढंग की बातें कहते चले जा रहे हो ? मैं इस चोठी के बारे में भी तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि यह किसी बुरी नीयत से लिखी नहीं गई । जरूर तुमने इसको दारोगा से पाया होगा ?

भूत० । नहीं बल्कि यह भी नन्हों के पास से ही मुझे मिली ।

शेर० । (यकायक खुश होकर) ठीक है ठीक है, अब मैं सब बातें समझ गया । यह सब शैतानी कम्बख्त नन्हों की है जिसने समूचा तूफान खड़ा किया है । उस कैदी को जीता जागता न पा कर और यह सुन कर कि तुम्हारे ही आदमियों के कारण उसकी जान गई वह तुम्हारी दुश्मन बन गई और इसी लिये उसने दारोगा से मिल कर वह सब कार्रवाई की। मै समझता हूँ कि तुम जानते होगे कि वह कैदी कौन था और उससे नन्हों का क्या सम्बन्ध था पर मुझे ताज्जुब है तो यही कि यह सब जान कर भी मुझे ही दोषी समझ रहे हो !

भूत० । (ताज्जुब से) मैं नहीं जानता कि वह कैदी कौन था क्योंकि मैंने उसकी सूरत नहीं देखी । मुझे तो नन्हों के आदमियों की बातचीत से इतना मालूम हुआ कि उस आदमी को छुड़ाने के लिये कुछ लोग गये जिनसे मेरे आदमियों से झगड़ा हो गया और उस लड़ाई में किसी तरह वह आदमी मारा गया जिस पर नन्हों को इतना क्रोध आया कि वह मेरी जानी दुश्मन बन बैठी ।

शेर० । और तुम्हें यह पता नहीं लगा कि वह कैदी कौन था ?

भूत० । नहीं क्योंकि उसकी लाश बेगम और नन्हों के आदमी उठा ले गये !

शेर० । ओह ठीक है, तभी तुम इस सन्देह में पड़े हुए हो और मुझ पर यह झूठी तोहमत लगा रहे हो ।

भूत० । (ताज्जुब से) तो वह आदमी कौन था ?

शेर० । मुझे बताने की इच्छा तो न थी पर जब तुमको मुझ पर इतने तरह के शक हो रहे हैं तो मैं बताये ही देता हूँ, लो सुनो और ताज्जुब करो कि वह आदमी.....

शेरसिंह ने झुक कर भूतनाथ के कान में न जाने क्या कहा कि सुनते ही उसकी तो यह हालत हो गई कि काटो तो बदन से लोहू न निकले । देर तक वह सकते की सी हालत में पड़ा जमीन की तरफ देखता रह गया और जब उसके होश हवास कुछ ठिकाने हुए तो उसने शेरसिंह से कहा, "क्या यह तुम मुझसे ठीक कह रहे हो ?" शेरसिंह ने अपनी कमर से लटकते हुए खंजर को हाथ लगा कर कहा—"मै दुर्गा की शपथ खाकर कहता हूँ कि यह बात बिलकुल सही है !"

भूत० । मगर क्या वह आदमी अभी तक जीता था !!

शेर० । हां, और यही बात ताज्जुब की है क्योंकि तुम्हारी तरह सिर्फ मैं ही नहीं बल्कि सारी दुनिया यही समझती थी कि वह मर गया, मगर नहीं, वह वास्तव में मरा नहीं था बल्कि महाराज शिवदत्त की कैद में था ।

भूत० । (कुछ सोच कर) और नन्हों तथा मेरे आदमियों की लड़ाई में वह मारा गया !

शेर० । हाँ कम से कम नन्हों तो यही समझती है ।

भूत० । इसका क्या मतलब ?

शेर० । इसका मतलब यह कि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि वह मारा नहीं गया ! यद्यपि उस लड़ाई में उसे कुछ चोट जरूर आई पर मुझे इस बात में कुछ भी संदेह नहीं है कि इस मामले में किसी तरह की बहुत ही गहरी ऐयारी की गई और वह अभी तक जीता जागता इस दुनिया में कहीं मौजूद है ।

भूत० । जीता जागता मौजूद है !!

शेर० । हाँ ।

भूत० । मरा नहीं ?

शेर० । नहीं ।

भूत० । मगर मेरे सुनने में तो यही आया कि था वह मारा गया, बल्कि उसकी लाश उस बजड़े पर लाई गई जिसपर नन्हों के आदमी सवार थे।

शेर० । ठीक है, मशहूर यही किया गया, मगर वास्तव में वह मरा नहीं। इसी बात का ठीक ठीक पता लगाने के लिए और यह जानने के लिये कि इसके भीतर क्या रहस्य छिपा हुआ है मैं नन्हों और उसके साथियों से मिला और उनका दिल लेने के लिये उनका कुछ काम भी मैने किया जिनमें से एक वह था जिसके संबंध में यह चीठी मुझे दारोगा को लिखनी पड़ी। तुम अच्छी तरह जानते हो कि उस आदमी से तुम्हारा कितना बड़ा सम्बन्ध है और उसका जीता जागता रहना तुम्हारे लिये क्या मानी रखता है, अस्तु इस सम्बन्ध में मेरा कोशिश करना वास्तव में तुम्हारे ही फायदे के लिये था, क्या इसे तुम नामुनासिब समझते हो ?

भूत० । नहीं नहीं, अगर तुम्हारा कहना ठीक है और वह आदमी सचमुच जीता है तो उसके बारे में तुम्हें जो कुछ भी करना पड़े या करना पड़ा हो वह सभी ठीक होगा। मगर शेरसिंह ! मुझे अब भी विश्वास नहीं होता कि वह सचमुच अभी तक जीता है ! कहीं तुम मुझे धोखा तो नहीं दे रहे हो !!

शेर० । ओफ, तुम्हारा भी कैसा शक्की मिजाज है ! अब तक भी मुझ पर शक बना ही हुआ है ! अच्छा तुम्हारे विश्वास के लिये उसके जीते रहने का एक सबूत मैं तुम्हें दिखाता हूँ।

इतना कह कर शेरसिंह ने अपने कपड़ों के अन्दर हाथ डाला और कपड़े का एक छोटा सा पुलिन्दा बाहर निकाला जो वास्तव में एक तस्वीर थी। शेरसिंह ने वह तस्वीर खोलकर भूतनाथ के सामने रक्खी और

कहा, "इस तस्वीर को गौर से देखो और वह बगल वाली लिखावट पढ़ो !!"

इस तस्वीर पर निगाह पड़ना था कि भूतनाथ के मुंह से एक चीख निकल पड़ी और वह दोनों हाथों से अपनी आँखें बन्द करके बोला, "हटाओ हटाओ, इसे मेरे सामने से हटाओ ! मुझे इस दृश्य के देखने की सामर्थ्य नहीं है ! बस बस, अब मैं बखूबी समझ गया कि वह अभी तक जीता है और मेरी असली दुर्दशा के दिन बाकी हैं, नहीं— बल्कि आने वाले हैं !!" इतना कह भूतनाथ ने गर्दन घुमा ली और आंखें बंद कर लम्बी लम्बी सांसें लेने लगा। शेरसिंह ने वह तस्वीर लपेट कर ठिकाने रक्खी और तब भूतनाथ से कहा, "कहो अब तो तुम्हें मेरे कहने का विश्वास हुआ ?"

भूतनाथ ने कांपती हुई आवाज में कहा, "हां अच्छी तरह विश्वास हुआ और इस बात का भी विश्वास हो गया कि मेरे लिये इस दुनियां में सुख और प्रसन्नता नहीं है। मैं नर्क का कीड़ा हूँ और नर्क ही में मुझे जाना पड़ेगा। भला इतने दिनों के बाद भी यह आदमी जिसे मै मरा ही नहीं बल्कि पंचतत्व में मिल गया हुआ समझता था जीता रह जायगा इसका किसी को कभी विश्वास हो सकता था ? नन्हों आदि को मार और इस घटना से मेरा सम्बन्ध साबित करने वाले सब सबूतों को नष्ट कर मैं समझे हुए था कि अब अपने पिछले इतिहास की इस घटना का सदा के लिये मैंने नाम निशान मिटा दिया पर नहीं अब मालूम हुआ कि अभी तक मेरे दुःख की घड़ी बीती नहीं है। ओफ, लोहगढ़ी को उड़ा कर मेरे हाथ कुछ औरतों के मारने का व्यर्थ का पाप ही मात्र लगा और वास्तविक लाभ कुछ भी न हुआ ! जब यह आदमी खुद ही जीता जागता मेरे दुष्कर्मों की कहानी कहने को मौजूद है तो भला नन्हों वगैरह को मारने से फायदा ही क्या हुआ ? मेरी किस्मत ही ऐसी है ! अपनी नामवरी की

चादर को ज्यों ज्यों मैं धोकर साफ करना चाहता हूँ त्यों त्यों वह और भी गंदी होती जा रही है। हे भगवान ! अब मेरा क्या होगा !!"

इसी तरह की बहुत सी न जाने किस किस तरह की बातें भूतनाथ देर तक बकता रहा। आखिर शेरसिंह ने उसे रोका और कहा, "भूतनाथ ! इस तरह घबड़ा जाना तुम्हें शोभा नहीं देता ! जरा शान्त होओ और सोचो कि अब तुम्हें क्या करना मुनासिब है। हिम्मत न हारो बल्कि गम्भीरता से विचार करो और उस मुसीबत से बाहर होने की तर्कीब सोचो जो कि इस आदमी के प्रगट होते ही तुम्हारे ऊपर आ सकती है। इस तरह से निराश होने से कोई फायदा नहीं है !!"

भूत०। क्या तुम्हें अब भी कोई आशा बाकी है ! क्या इससे बड़ी कोई और भी निराशा की बात हो सकती है ?

शेर०। इस बात को मैं मानता हूँ कि इस आदमी का जीता जागता प्रगट हो जाना तुम्हारे हक में बहुत ही बुरा है पर फिर भी तुम चालाक हो, बुद्धिमान हो, अगर सोचोगे और गौर करोगे तो कोई न कोई तर्कीब अपने बचाव की निकाल ही लोगे।

भूत०। (लाचारी की मुद्रा से सिर हिला कर) नहीं, अब सिवाय मर जाने के और कोई तर्कीब बाकी नहीं है ! सच तो यह है कि मैं इस घटना का सूत्रपात पहिले ही से देख रहा था। जिस समय वह सन्दूकड़ी जिसे मैं नष्ट हो गया हुआ समझता था मुझे नजर आई उसी समय मेरा दिल कांप गया था और मैं समझ गया था कि लक्षण अच्छे नहीं हैं पर फिर भी मैं आशा को अपने दिल में जगह दिये हुए था और नन्हों तथा उन सब सबूतों को मिटा कर सोचता था कि कुछ निश्चिन्त हो गया, पर अब मालूम हुआ कि वह सिर्फ मेरा भ्रम था, मेरी मौत मेरे पीछे ही मौजूद है, और उस सन्दूकड़ी का भेद प्रगट हुए बिना न रहेगा।

शेर०। तुम्हारा मतलब किस सन्दूकड़ी से है ?

यह सुन भूतनाथ ने अपने बटुए के अन्दर से वह पीतल की सन्दूकड़ी

निकाल कर शेरसिंह को दिखाई जिसे उसने नागर और मुन्दर के कब्जे से पाया था* शेरसिंह इस सन्दूकड़ी को देखते ही चौंके और घबड़ा कर बोले, "हैं, यह सन्दूकड़ी अभी तक मौजूद है !! उन्होंने उसे हाथ में उठा कर देखा और तब जमीन पर रख कांपती हुई आवाज में कहा, "सच मुच भूतनाथ तुम बड़े ही बदकिस्मत हो !"

भूत० । आज इसका पूरा पूरा विश्वास मुझे हो गया । अभी तक बराबर मैं किस्मत के साथ लड़ता और पहिले जमाने में जो कुछ भूल और गलतियाँ मुझसे हो चुकी थीं उनको मिटाने की कोशिश करता चला आया पर अब मालूम हुआ कि वह सब कोशिशें बेकार थी । मुझे सिर्फ कुछ जानें लेने का पाप ही मिला और इसके सिवाय कोई नतीजा उन कोशिशों का न निकला । अस्तु अब मैं समझता हूँ कि मेरा इस दुनियाँ से उठ जाना ही अच्छा है । अब और जीने से उन पापों का फल भोगने के सिवाय और कोई लाभ नहीं हो सकता ।

शेर० । नहीं नहीं, तुम इस तरह निराश न होओ । आओ हमलोग मिल कर कोशिश करें और सोचें कि इस मुसीबत से बचने की कौन सी तर्कीब हो सकती है ।

भूत० । नहीं नहीं, यह सब सोचना अब फजूल है, अब मेरे लिये सिर्फ यही रास्ता रह गया है कि दुनिया के पर्दे से अपने को छिपा लूँ, किसी को अपना काला मुँह न दिखाऊँ और जमाने में यही जाहिर कर दूँ कि भूतनाथ मर गया । मगर मेरे दोस्त क्या एक बात में तुम मेरी मदद कर सकते हो ?

शेर० । मैं हमेशा और सब तरह से तुम्हारी मदद करने को तैयार हूँ मगर पहिले तुम यह बताओ कि तुम्हारा मेरी तरफ से जो शक था वह दूर हुआ या नहीं । तुम्हारी बातों से मुझे बहुत ही तकलीफ हुई जिस

* देखिये भूतनाथ सोलहवाँ हिस्सा पहले बयान का अन्त ।

पर मैंने यह खबर तुम्हें दी, नहीं तो मेरा इरादा यही था कि इस बात को बिल्कुल ही पचा जाता और कम से कम अभी तुमसे इसका कोई जिक्र न करता क्योंकि मैं अच्छी तरह समझता था कि इसको सुन कर तुम्हारी क्या हालत होगी। तुम्हारी बातों ने मुझे दिली तकलीफ पहुँचाई और इसी से मुझे तुमसे यह हाल कहना पड़ा।

भूत०। नहीं नहीं, मेरे दोस्त! मेरा तुम्हारे ऊपर अब किसी तरह का शक नहीं है और मेरी गलती थी कि मैंने तुम पर कभी भी शक किया। जो कुछ मैंने तुमसे कहा उसके लिए मैं सच्चे दिल से तुमसे माफी माँगता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि तुम उस बारे में मेरी तरफ से कोई बुरा भाव अपने दिल में आने न दोगे। मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि उस आदमी के जीते रहने की खबर पाकर तुम इसके सिवाय और कुछ कर ही नहीं सकते थे। मगर एक बात मेरी समझ में नहीं आई कि नन्हों को क्योंकर इस बात का विश्वास हो गया कि यह आदमी मर गया। तुम जानते ही हो कि वह इस पर किस तरह मरती थी। इसे जीता पाकर फिर कैसे उसने इसकी उम्मीद छोड़ दी और इसे मरा समझ लिया।

शेर०। जरूर इसके बारे में कोई बहुत ही बड़ी चालाकी की गई है जिसका ठीक ठीक पता मुझे भी अभी तक लगा नहीं है पर तब यह बात जरूर थी कि कुछ और लोगों को भी इस आदमी के जीते रहने की खबर लग चुकी थी और वे इसे छुड़ाने की फिक्र में थे, जरूर वे मौका पाकर अपना काम कर गुजरे। इसका पूरा पूरा हाल मैं जान न सका पर जितना कुछ मैं ठीक ठीक जान सका हूँ वह यही है कि यह आदमी अभी तक जीता जागता ही है, मरा नहीं।

भूत०। यह बात तो यह तस्वीर और इसका मजमून ही बता रहा है और किसी सबूत की जरूरत क्या है। अच्छा, हाँ, यह तो मैंने तुमसे पूछा ही नहीं कि यह तस्वीर तुम्हारे हाथ कैसे लगी?

शेर० । बस यही बात तुम मुझसे नहीं पूछो ! यह एक ऐसे आदमी से मुझे मिली है जिसने उस कैदी से खुद बातें की और हैं जिसका नाम इस वक्त तुम्हारे सामने लेना मैं उचित नहीं समझता । किसी दूसरे समय मौका होने पर मैं जरूर यह बात भी तुम्हें बता दूँगा पर आज नहीं । हाँ, इस समय इतना कह सकता हूँ कि इसी तस्वीर के लिए ही वह चीठी मुझे उस आदमी को लिखनी पड़ी थी जो तुमने मुझे पहिले दिखाई और कहा कि नन्हीं से तुम्हें मिली है । मगर मैं अभी तक इस ताज्जुब में हूँ कि वह नन्हीं के पास क्योंकर पहुँची ?

भूत० । खैर अब तो नन्हीं रही नहीं जो इस बात का जवाब देगी और इसको जानने का मुझे कोई कौतूहल भी नहीं है । अब सिर्फ एक आखिरी अभिलाषा मेरी है जो अगर तुम पूरी कर दोगे तो मैं उम्र भर तुम्हारा शुक्रगुजार रहूँगा ।

शेर० । वह क्या, तुम बेधड़क कहो, मैं जो कुछ भी तुम्हारे लिये कर सकूँगा जरूर और निःसंकोच होकर करूँगा ।

भूत० । इसकी प्रतिज्ञा करते हो ?

शेर० । अगर प्रतिज्ञा की जरूरत समझते हो तो प्रतिज्ञा ही सही, कहो वह क्या काम है ?

भूत० । यह तो तुम समझते ही होगे कि अब इस मेरे पुराने दुश्मन के प्रगट हो जाने के बाद मेरा दुनिया में रहना व्यर्थ है । यह जगह जगह मेरा पीछा करेगा और मेरी जिन्दगी बर्बाद कर देगा, अस्तु अब मेरा मर जाना ही मुनासिब है जिन्दा रहने से कोई फायदा नहीं ।

शेर० । नहीं नहीं भूतनाथ, मैंने पहिले भी कहा और अब भी कहता हूँ कि तुम इस तरह निराश न हो और अपने को कलंक से बचाने की कोई तर्कीब सोचो । बार बार इस तरह मर जाने की बात कहना तुम्हारे मुँह से शोभा नहीं देती ।

भूत० । मैं चाहे कितनी ही कोशिश करूँ पर उसका नतीजा कुछ न

निकलेगा। मेरा यह पिछला पाप बहुत भयानक रूप धर के जहाँ जहाँ मैं जाऊँगा वहाँ वहाँ मेरा पीछा करेगा और मुझे मुर्दों से बदतर कर देगा। अस्तु मेरा दुनिया से उठ जाना ही मुनासिब है। यद्यपि मेरी तरह से तुम भी जानते ही हो कि इस मामले में मेरा कसूर कहाँ तक था और किस तरह की लाचारी की हालत में मुझे वह काम करना पड़ा पर फिर भी किससे किससे मैं यह बातें कहता फिरूँगा!

शेर०। कोशिश करने से सब कुछ सम्भव है, तुम इस मामले में अपने दोस्तों की मदद लो, इन्द्रदेव से मिलो.....

भूत०। वाह खूब कही, वे यह खबर पाकर और इस पुराने किस्से का सच्चा हाल सुनकर खुद ही मेरी जान के ग्राहक हो जायँगे कि मेरी मदद करेंगे! और फिर जितने समय में मैं अपनी बेकसूरी साबित करने का सामान जुटाऊँगा उतने समय में तो मेरा दुश्मन मुझे बर्बाद कर डालेगा!

शेर०। हाँ, यह कहना तुम्हारा कुछ अंश में सही हो सकता है मगर इसकी भी यह तर्कीब हो सकती है कि तुम कुछ दिनों के लिए गायब हो जाओ और जब अपनी बेकसूरी साबित करने लायक बन जाओ तब प्रगट हो जाना।

भूत०। ठीक यही बात मैं सोच रहा था और इसी काम में तुम्हारी मदद माँगना चाहता था। इस वक्त जो लोग मुझे जानते हैं या जिन्हें मेरी पिछली कार्रवाई की कुछ खबर है उन्हें सहजमें यह विश्वास दिलाया जा सकता है कि लोहगढ़ी के साथ साथ भूतनाथ भी उड़ गया, क्योंकि आखिर यह बात छिपी तो रहेगी नहीं, एक दिन प्रगट होगी कि वह कार्रवाई मेरी ही थी।

शेर०। तब तुम्हारा मतलब क्या है?

भूत०। मैं यह मशहूर कर देना चाहता हूँ कि भूतनाथ मर गया। इसके बाद गायब होकर इस मामले में जिसका कि ढिंढोरा यह तस्वीर पीट रही है अपनी बेकसूरी साबित करने की कोशिश करूँगा। अगर

सफल हुआ तो अपना मुँह दिखाऊँगा नहीं दुनिया की निगाहों में मरा ही रह जाऊँगा।

शेर०। तुम्हारा यह ख्याल कुछ बेजा नहीं है! तुम कहो कि इस काम में मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ?

भूत०। दो तरह से मेरी मदद कर सकते हो, एक तो जमाने पर यह जाहिर करके कि भूतनाथ मर गया, और दूसरे·····

शेर०। और दूसरे?

भूत०। अगर मानो तो बताऊँ नहीं तो क्यों कहूँ?

शेर०। आखिर कुछ कहो भी तो, मैंने तो सब तरह से तुम्हारी मदद करने की प्रतिज्ञा ही कर ली है।

भूत०। ठीक है, तो उसी प्रतिज्ञा पर विश्वास करके मैं कहता हूँ कि —दूसरे यह तस्वीर मेरे हवाले करके जो तुम्हारे पास है।

शेर०। (चौंक कर) हैं, क्या कहा! यह तस्वीर भला मैं तुम्हें क्यों कर दे सकता हूँ! यह एक बड़े ही ऊँचे रुतबे वाले आदमी ने मेरा बहुत बड़ा विश्वास करके एक खास काम के लिए मुझे दी है और जल्दी ही इसको उन्हें वापस करना मेरा धर्म है!

भूत०। (उदास होकर) तब फिर लाचारी है, और कोई तर्कीब फिर मेरे जिन्दा रहने की नहीं है। यद्यपि मैं समझता हूँ कि अब यह भेद छिपा रह न सकेगा पर इस तस्वीर के रहते हुए यह बात कल की होती आज ही होगी। यह मुझे न मिली तो मुझे सचमुच ही अपनी जान दे देनी पड़ेगी।

शेर०! नहीं नहीं भूतनाथ, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि यह तस्वीर न तो किसी ऐसे के हाथ में पड़ेगी जो तुम्हारा दुश्मन हो और न कोई गैर आँखें इसे देख ही सकेंगी।

भूत०। (सिर हिला कर) नहीं, सो असम्भव है, खैर जाने दो, मैं समझ लूँगा कि मेरी जिन्दगी बस इतनी ही थी।

कह कर भूतनाथ ने सिर झुका लिया और उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे। शेरसिंह उसकी यह हालत देख बहुत ही दुखी हुए और आखिर रह न सके। उन्होंने वह तस्वीर पुनः निकाली और भूतनाथ की तरफ बढ़ा कर कहा, "खैर जब तुम ऐसा ही समझते हो तो जो प्रतिज्ञा मैंने तुमसे की उसे पूरा करता हूँ। लो यह तस्वीर तुम लो और इसका जो करना चाहते हो सो करो !!"

शेरसिंह ने वह तस्वीर भूतनाथ की तरफ बढ़ाई जो उनकी बातें सुन अविश्वास और प्रसन्नता की दृष्टि से उनकी तरफ देखने लग गया था और उसने खुशी खुशी तस्वीर लेने के लिए हाथ बढ़ाया मगर उसी समय एका-एक कहीं से जोर की आवाज आई—"ठहरो !" दोनों आदमी चौंक कर इधर उधर देखने लगे। झोपड़े के दर्वाजे पर किसी की छाया देख पड़ी और उसी समय एक आदमी ने झोपड़े के अन्दर पैर रक्खा।

इस आदमी की सूरत शक्ल कैसी थी इसका कुछ भी पता न लग सकता था क्योंकि इसने सिर से पैर तक अपने को एक काली पौशाक से ढका हुआ था और इसके चेहरे पर भी एक काली नकाब पड़ी हुई थी। भूतनाथ और शेरसिंह के देखते देखते यह उन दोनों के सामने आकर खड़ा हो गया और कड़ी आवाज में भूतनाथ से बोला, "गदाधरसिंह ! तू अपने गुरुभाई और दोस्त को अपनी बातों से भले ही धोखा दे ले मगर मै खूब समझता हूँ कि इस तस्वीर को ले लेने से तेरा क्या मतलब है ! तू अभी कुछ दिन और इस दुनिया में रहना तथा कुछ दिन और लोगों को अपनी चालबाजी से धोखा देना चाहता है और तेरा इरादा है कि इस तस्वीर को नष्ट करके अपने पाप को कुछ दिनों तक और छिपाये रहे, मगर याद रख कि तेरा यह इरादा कभी पूरा न हो सकेगा !!"

भूतनाथ जो ताज्जुब और कुछ कुछ डर की निगाहों से इस नकाबपोश को देख रहा था कमजोर आवाज में बोला, "आप कौन हैं और मुझसे क्या चाहते हैं ?

नकाबपोश ने फिर कड़क कर कहा, "क्या मेरी आवाज से तू मुझे पहिचान न सका ? शायद न पहिचान सका हो, क्योंकि कैद की सख्तियों ने मेरे शरीर के साथ साथ मेरी आवाज को भी बहुत कमजोर कर दिया है, अच्छा ले मेरी सूरत भी देख ले !!"

कह कर उस नकाबपोश ने अपने चेहरे पर की नकाब उलट दी। भूतनाथ ने जो इस तरह डर और काँप रहा था मानो उसे जूड़ी बुखार चढ़ आया हो, देखा कि उसके सामने एक दुबला पतला आदमी खड़ा है जिसका चेहरा यद्यपि इस समय बिल्कुल ही सूखा हुआ और एक दम पीला होकर यह बता रहा था कि वह बरसों का बीमार या शायद कोई लम्बी मुद्दत का कैदी है पर फिर भी आसार कह रहे थे कि वह किसी समय गजब का खूबसूरत और सुडौल रहा होगा। भूतनाथ इसे देखते ही इस तरह काँप गया मानो उसे गोली लग गई हो। उस आदमी ने तड़प कर कहा, "क्यों ! सूरत देख कर भी तूने मुझे पहिचाना या नहीं ?"

भूतनाथ के काँपते गले से निकला. "आ आ आ प...आ...आ प...!!" वह आदमी तड़प कर बोला, "मैं कौन हूँ यह क्या अब भी तूने नहीं पहिचाना !! सुन, मेरी सूरत देख के भी अगर तू न समझ सका हो तो मेरा नाम सुन कर मुझे जान जा ! मेरा नाम कामेश्वर है ! कौन कामेश्वर ? जिसकी बहिन अहिल्या को तूने 'भूतनाथ' की मूरत पर बलि चढ़ाया और अपना नाम भूतनाथ रक्खा ! कौन कामेश्वर ? वही कामेश्वर जिसकी स्त्री भुवन मोहिनी को तूने शिवदत्त के हवाले किया और इनाम पाया ! कौन कामेश्वर ! वही कामेश्वर जिसको मार कर तूने दारोगा से इनाम लिया। कौन भुवनमोहिनी ? वही भुवनमोहिनी जिसको मार कर तूने माया रानी से शिवगढ़ी की ताली पाई। मैं, वही कामेश्वर इस वक्त तेरे सामने खड़ा हूँ जिसे मरा हुआ समझ अब तक तू निश्चिन्त था ! कह अब तू क्या कहता है !!"

भूतनाथ के मुँह से कोई आवाज न निकली। वह एक दम पागल

सा हो गया था और पागलों ही की तरह अपनी आँखें फाड़ कर अपने चारो तरफ इस तरह देख रहा था जिस तरह हरिन जाल में फँस और अपने बचाव का कोई रास्ता न पा व्याध की तरफ देखता है। कामेश्वर ने फिर गरज कर कहा, "कह अब भी तूने मुझे पहिचाना या नहीं !"

भूतनाथ मानो सचमुच पागल हो गया था। उसने कुछ कहने के लिये मुँह खोला पर उसके गले से कोई आवाज न निकली, उसने जमीन से उठना चाहा पर हाथ पाँव बेकार हो गये थे, केवल अपलक नेत्रों से इस नये आने वाले की तरफ देखता रह गया।

उसकी यह हालत देख आगन्तुक बड़े जोर से खिलखिला कर हँसा, इसके बाद शेरसिंह की तरफ घूमा और उससे बोला, "क्यों शेरसिंह ! अपने गुरूभाई की हालत देखते हो ! इस समय कैसा बिल्ली बन कर बैठा है, मगर किसी समय इसने मेरे ऊपर कैसा कहर ढाया था क्या इसे तुम नहीं जानते ?"

शेरसिंह ने कहा, "मैं थोड़ा बहुत जरूर जानता हूँ मगर आप यह भी देख रहे हैं कि यह आपसे इतना नहीं डरा है जितना इस बात से डरा है कि आपके द्वारा इसकी बदनामी दुनिया में जाहिर हो जायगी। यह असल में अपनी बदनामी से इस कदर डर गया है, और जो आदमी अपनी बदनामी से डरता हो, आप भी मानेंगे कि उसमें अब भी आदमियत की बू बाकी है, चाहे पूर्व में वह कैसे ही कर्म क्यों न कर चुका हो !!"

वह आदमी शेरसिंह की यह बात सुन हँस कर बोला, "नहीं नहीं, शेरसिंह तुम इस तरह की बातें करके इसकी तरफ से मेरा दिल मुलायम नहीं कर सकते। क्योंकि शायद तुम भी नहीं जानते कि इस कम्बख्त गदाधरसिंह ने किस तरह मेरा खून सुखाया है ! इसकी सच्ची करतूतों का हाल तुम अगर जानते तो इसकी सिफारिश करने के बजाय तुम भी इससे नफरत करते और इसका मुँह देखने में पाप समझते !!"

शेरसिंह ने यह सुन मुलायमियत के स्वर से कहा, "आप का कहना

बहुत सही है पर आप से मैं यह भी कहने की जुर्रत करता हूँ कि आपने अपने मामले में इसको जितना बड़ा कसूरवार समझा है अगर ठीक तौर पर जांच करेंगे तो शायद यह उतना बड़ा कसूरवार नहीं साबित होगा। अभी अभी यह मुझसे कह रहा था कि यह आप के बारे में अपनी बेकसूरी साबित कर सकता है और उसी काम के लिए यह कुछ थोड़ी मोहलत चाहता था।"

उस आदमी ने शेरसिंह की बात सुन घृणा के साथ भूतनाथ की तरफ एक नजर देखा और तब कहा, "हाँ मैंने इसकी वह बात सुनी थी पर मैं खूब जानता हूँ कि यह सिर से पैर तक कसूरवार है और तुम्हें सिर्फ धोखा देना चाहता था। तुम्हारी इस बात को सुन मुझे विश्वास हो गया कि तुम भी इसका ठीक ठीक भेद नहीं जानते। मेरे पास आओ और सुनो। मैं तुम्हें बताता हूँ कि मेरे और मेरी स्त्री के साथ इसने क्या क्या किया!"

शेरसिंह उठा और वह नकाबपोश उसे झोपड़े के एक कोने में ले जा कर उससे कुछ कहने लगा। अब तक तो भूतनाथ इस तरह अपनी जगह पर बैठा हुआ था कि मानो उसकी देह में जान ही न हो पर अब उस नकाबपोश के कुछ दूर हट जाने से उसके दम में दम आया। उसने जल्दी जल्दी कुछ सोचा और तब धीरे से वह तस्वीर जो शेरसिंह ने उसे दिखाई थी और जिसे देख वह घबड़ा गया था उठा कर बगल में दबाई, वह पीतल की संदूकड़ी जो अपने बटुए से निकाल शेरसिंह को दिखाई थी और जो अभी तक उसी जगह पड़ी हुई थी दूसरी बगल में दाबी, ऐयारी का बटुआ हाथ में उठाया और इस आहिस्तगी से झोपड़े के बाहर निकल गया कि बातचीत में मशगूल शेरसिंह और उस नकाबपोश को जरा गुमान तक न होने पाया। जिस समय उनकी बातें समाप्त हुईं और उस नकाबपोश ने भूतनाथ से कुछ कहने के लिए उसकी तरफ गर्दन घुमाई तो उसे गायब पाया और तब ताज्जुब की एक आवाज मुंह से

निकाल वह झोपड़े के दर्वाजे की तरफ लपका, मगर अब वहाँ क्या था! भूतनाथ तो बाहर होते ही इस तरह सिर पर पैर रख कर वहाँ से भागा था कि उसकी धूल का भी कहीं पता न था !!

हम थोड़ी देर के लिए शेरसिंह और उस नकाबपोश को यहीं छोड़ देते हैं और भूतनाथ के साथ चलकर देखते हैं कि वह कहाँ जाता या क्या करता है। भूतनाथ उस कुटिया के बाहर निकल कर जो भागा तो उसने एक बार पीछे फिर कर भी नहीं देखा। बस एकदम सरपट सामने की तरफ भागने का ही उसे ख्याल रहा। अपने और उस आदमी के बीच में ज्यादा से ज्यादा फासला डाल देने के सिवाय, जिसे अब तक वह मरा हुआ समझता था, पर जो आज ऐसी आश्चर्य जनक रीति से उसके सामने प्रगट हुआ था, उसे इस समय और किसी बात का ख्याल ही न था, अस्तु वह तब तक भागता चला गया जब तक कि सूरज सिर पर न आ गया और गर्मी पसीने थकावट धूप और कमजोरी से परेशान होकर वह कहीं रुक कर सुस्ताने की जरूरत समझने लग गया।

रुक कर चारो तरफ निगाह की तो सामने ही ऊँची जगह का एक पक्का कूँआँ नजर आया जिसके ऊपर नीम के पेड़ों की घनी छाया पड़ रही थी। इसी जगह रुक कर कुछ दम ले लेने के विचार से वह इस कूँए पर चढ़ गया, हाथ का और बगल का सामान जमीन पर रक्खा और खुद भी उसकी पक्की फर्श पर बैठ कर सुस्ताने लगा। जब कुछ शान्त हुआ तो उसने अपना ऐयारी का बटुआ खोला और उसके अन्दर से लुटिया तथा डोरी निकाल कूँए से पानी खींचने लगा।

इसी समय न जाने कहाँ से आता हुआ एक दूसरा मुसाफिर भी उस जगह पहुँच गया। इसके हाथ में भी लोटा तथा रस्सी थी और एक मामूली निगाह इस पर डाल कर ही भूतनाथ समझ गया कि यह कोई देहाती पंडित है अस्तु उसने इस पर कोई ज्यादा ख्याल न किया मगर यह पण्डित गजब का दगाबाज और बेईमान निकला। इसने भूतनाथ के पास

आते ही यकायक पीछे से ऐसा धक्का दिया कि वह किसी तरह सम्हल न सका और धड़ाम से कुँए के अन्दर जा रहा।

इस नये मुसाफिर ने एक बार झाँक कर भी न देखा कि कूँए के अन्दर गिरे भूतनाथ की क्या हालत हुई है। यह सीधा भूतनाथ के सामान के पास पहुँचा और उन चीजों को ध्यान से देखने लगा जो वह वहाँ छोड़ गया था। पहिली निगाह इसकी उस पीतल की संदूकड़ी पर पड़ी जिसे इसने उठा लिया और देखने लगा। बहुत देर तक गौर से देखने बाद 'बेशक वही है!' कह उसे रख दिया और तस्वीर उठा कर देखी जो भूतनाथ उड़ा लाया था। जरा सा खोल कर देखते ही उसके मुँह से एक चीख निकल पड़ी। वह दूसरी निगाह उस पर डाल भी न सका, तस्वीर उसके हाथ से गिर पड़ी और वह जमीन पर बैठ लम्बी लम्बी साँसें लेने लगा।

यकायक उस आदमी के कान में किसी तरह की आहट पड़ी। सिर उठा कर देखा तो कई आदमियों को तेजी के साथ मैदान में चलते हुए इसी तरफ आते पाया जिन्हें देखते ही वह चौंक पड़ा। बड़ी फुर्ती फुर्ती उसने भूतनाथ के उन सब सामानों की जो वहाँ पर पड़े थे एक गठरी बनाई और उसे हाथ में लिये कुँए के नीचे उतर गया।

ऊँची जगत के नीचे एक छोटी कोठरी भी बनी हुई थी जिसमें वह आदमी पहुँचा। यहाँ पर इसका कुछ सामान पड़ा हुआ था जिसे इसने उठा लिया और कोठरी के बाहर निकल गया। मैदान की तरफ निगाह की तो उन आदमियों को बहुत नजदीक पाया। लपकता हुआ कुँए के पीछे की तरफ हो गया और तब बेतहाशा एक तरफ को भागा।*

---

* अपनी जीवनी लिखता हुआ भूतनाथ यहाँ पर नोट लिखता है—"यह आदमी जिसने इस तरह मेरे साथ दगाबाजी की वास्तव में अर्जुन-सिंह था जिसने न केवल वह पीतल की सन्दूकड़ी और तस्वीर ही ले ली

दक्खिन तरफ थोड़ी ही दूर पर एक घना जंगल दिखाई पड़ रहा

बल्कि मेरे बटुए के अन्दर से भी कई ऐसी चीजें निकाल लीं जिनके जाने का उस समय मुझे बड़ा ही अफसोस हुआ। सबसे कीमती चीज जिसके जाने का मुझे हद्द से ज्यादा रंज हुआ और जिसके जाने के कारण ही मैंने अर्जुनसिंह को जान से मार डालने की कसम खा ली वह उन चिट्ठियों का मुट्ठा था जो दारोगा हेलासिंह और जैपाल के बीच में आई गई थीं और जिनके फलस्वरूप लक्ष्मीदेवी के बदले मुन्दर की शादी राजा गोपालसिंह के साथ हो गई। इन चीठियों को बड़ी मेहनत से बेनीसिंह बन कर और कुछ अपनी ऐयारी से मैंने इकट्ठी किया था और दारोगा जैपाल हेलासिंह वगैरह पर काबू रखने के लिए यही सब से अच्छा जरिया भी मेरे पास था जो इन चीट्ठियों के निकल जाने से जाता रहा। अगर ये चीठियां मेरे पास रहतीं तो सम्भव था कि मुझे मरने की जरूरत न पड़ती और शायद मुन्दर की शादी भी राजा गोपालसिंह से हो न पाती पर एक तो इस मामले से, दूसरे उस पीतल की सन्दूकड़ी वाले मामले से तीसरे गौहर नन्हों और मनोरमा आदि की करतूतों से, चौथे शिवगढ़ी की ताली मेरे हाथ से निकल जाने से और पांचवें उस तस्वीर के कारण जो शेरसिंह से मैंने ली और इस तरह पर गँवादी थी, मैं पागल सा हो गया और अन्त में दुनिया की निगाहों से उठ जाना ही मुझे अच्छा जान पड़ा ऐसी हालत में लक्ष्मीदेवी या गोपालसिंह की क्या हालत होगी इससे भी मै गाफिल हो गया। फिर, मै इस धोखे में भी पड़ा रह गया कि कम्बख्त मुन्दर गौहर और नन्हों आदि को मैंने लोहगढ़ी के साथ ही नेस्तनाबूद कर दिया है, पर यह भी मेरी गलती थी। वे किसी कारण से बची ही रह गईं जैसा कि पाठकों को आगे चलकर मालूम होगा और मैं उनको मरा समझ कर उनकी तरफ से निश्चिन्त रह गया। मेरा यह भी खयाल था कि इन चीठियों की ही बदौलत जैपाल ने प्रगट हो कर मुझ पर काबू

था। सरपट भागता हुआ यह आदमी बहुत जल्द ही उस जगह पहुँच गया और जंगल ने उसे अपने अन्दर छिपा लिया।

कर लिया जैसा कि चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है, पर वास्तव में ऐसा न था। अर्जुनसिंह की बदौलत मेरा कोई भी नुकसान न हुआ, असल नुक्सान इन्हीं चीठियों की उस नकल के चले जाने की बदौलत हुआ जो कम्बख्त रामदेई ने जैपाल को दे दी थी, पर अवश्य ही उस समय इन बातों का मुझे पता न लगा और मैं सब कसूर अर्जुनसिंह का ही समझ कर उन्हें ही अपना जानी दुश्मन समझता रहा। उस पीतल की सन्दूकड़ी में क्या था, वह तस्वीर किस मामले को छिपाये थी और अर्जुनसिंह वास्तव में कौन था यह सब बातें पाठकों को आगे चलकर मालूम हो जायंगी। इस जगह मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ कि अर्जुनसिंह को भी कामेश्वर और भुवनमोहनी के भेद से बड़ा ही घनिष्ठ सम्बन्ध था और वह सन्दूकड़ी तथा तस्वीर उसी मामले का खजाना थी, यही सबब था कि अर्जुनसिंह उन्हें देख अपने को रोक न सका और उसने मुझे कुएँ में ढकेल उन चीजों पर कब्जा कर लिया। सच तो यह है कि इतना बड़ा धोखा मैंने अपनी जिन्दगी भर में कभी न खाया था जो उस वक्त मुझसे हो गया। अगर मैं उस वक्त परेशान और घबराया हुआ न होता तो कभी मुमकिन न था कि सूरत बदले हुए होने पर भी अर्जुनसिंह को पहिचान न जाता। असल तो यह है कि जो किस्मत में लिखा हुआ होता है वही होता है, मनुष्य का उद्योग कुछ कर नहीं सकता। मेरी किस्मत में जगह जगह मारे मारे फिरना और दुनिया की खाक छानना बदा था तो उसके विपरीत क्यों कर हो सकता था!

"इसी घटना की तरफ अर्जुनसिंह ने इशारा किया था जब कि वे नकाबपोश बन कर मेरे सामने आये थे (देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति बीसवां हिस्सा चौदहवां बयान) और यही वह तस्वीर थी जिसे दोनों कुमारों को

चौथा बयान

बावली के नीचे वाली सुरंग के अन्दर झाँकने पर मालती को न जाने ताज्जुब की कौन सी ऐसी बात दिखाई पड़ी कि वह आश्चर्य की एक चीख मार कर उसके अन्दर कूद गई, उसके जाते ही वह रास्ता बन्द हो गया और ताज्जुब में डूबे हुए प्रभाकरसिंह खड़े देखते ही रह गये।

कुछ सायत इसी तरह बीत गये, इसके बाद प्रभाकरसिंह ने अपने को काबू में किया और फिर से उस रास्ते को खोलने का उद्योग करने लगे जो मालती के जाने पर बन्द हो गया था मगर उनकी कोई भी तर्कीब कारगर न हुई। जिस सुरंग के अन्दर झाँक कर प्रभाकरसिंह ने कोई ताज्जुब की चीज देखी थी अथवा जिसके अन्दर मालती गायब हो गई थी उसका मुँह इस समय कुछ इस तरह पर बन्द हो गया था कि अब इस

दिखा कर अर्जुनसिंह ने कहा था कि 'कृपानाथ! बस मैं इसी का दावा भूतनाथ पर करूंगा।" (देखिये बीसवां हिस्सा दूसरा बयान) अथवा जिसे महाराज के सामने उनकी इच्छा समझ तथा इस भेद को छिपा ही रहने देने की नीयत से उसने फाड़ डाला था (देखिये बाईसवां हिस्सा चौथा बयान)। वह पीतल की सन्दूकड़ी भी यही थी जिसे चीठियों के मुट्ठे के साथ जैपाल ने रामदेई की हरामजदगी से पा लिया था और जो उस गठरी के अन्दर से निकली थी जिसे तेजसिंह ने बलभद्रसिंह बने हुए जैपाल के हाथ से ले लिया था (देखिये बारहवां हिस्सा पहिला बयान) तथा अन्त में महाराज की कृपा से देवीसिंह की प्रतिज्ञा की बदौलत मुझे बन्द की बन्द मिल गई (बाईसवां हिस्सा चौथा बयान) असल में इन सब चीजों के मेरे हाथ में पड़ कर भी निकल जाने में ही मुझे सब तरह से लाचार कर दिया और इस घटना के बाद मैं कुछ भी करने लायक न रह गया।"

बात का भी कुछ पता न लगता था कि वह राह कहाँ पर थी। आखिर सब तरफ से लाचार हो प्रभाकरसिंह उसी जगह सीढ़ी पर बैठ गये और तिलिस्मी किताब निकाल कर पढ़ने लगे, यह लिखा हुआ पाया :—

"तुमको मुनासिब है कि जैसे ही बावली सूखे तुम उसके अन्दर उतर जाओ। कुछ सीढ़ियाँ उतरने बाद बगल में छोटा रास्ता दिखाई पड़ेगा। उसके अन्दर घुस जाओ और फुर्ती फुर्ती जितना दूर निकल जा सको निकल जाओ क्योंकि वह रास्ता बहुत जल्द ही बन्द हो जायगा और एक बार वह रास्ता बन्द हो जाने पर फिर तुम उसे किसी तरह भी खोल न सकोगे।"

इतना पढ़ प्रभाकरसिंह ने चिन्ता के साथ मन ही मन कहा, "तब क्या होगा? अब तो रास्ता बन्द हो गया! न जाने मालती को कौन सी चीज ऐसी उधर दिखाई पड़ी कि वह इस तरह उतावली हो गई! क्या वह उन आदमियों में से जो उस तरफ दिखाई पड़े किसी को पहचानती थी? या उसे कोई ऐसी बात नजर आई जो मैं देख न पाया था? पर अब क्या होगा? क्या मैं इसी जगह बैठा रह जाऊँगा? यह तो जरूर है कि मालती को आगे का हाल मालूम है और अब कहाँ जाना तथा क्या करना है यह भी वह जानती है फिर भी औरत की जात, न जाने कहाँ कैसी गफलत कर बैठे। अगर उसने सब काम ठीक ठीक किया तो फिर भी वह हिस्सा टूट जाने पर मेरी उसकी भेंट हो सकेगी लेकिन अगर किसी तरह की कोई गलती उससे हो गई तब मुश्किल होगी। खैर देखें, आगे चल कर यह किताब क्या कहती है।" प्रभाकरसिंह पुनः बड़े गौर से मन लगा कर किताब को पढ़ने लगे।

प्रभाकरसिंह की एकाग्रता को यकायक किसी मीठी सुरीली आवाज ने भङ्ग किया। उनके कान में किसी कोमल कंठ के यह कहने की आवाज पड़ी, "अब आप व्यर्थ का परिश्रम न करें और यहाँ से आगे जाने का विचार छोड़ दें। यह किताब इस बारे में आपको कुछ न बतावेगी।"

प्रभाकरसिंह चौंक कर चारो तरफ देखने लगे। यह कौन बोला? सब तरफ निगाह घुमाई मगर कहीं कोई दिखाई न पड़ा। शायद यह भी कोई तिलिस्मी खेल हो यह सोच फिर किताब की तरफ झुके और उसके पन्ने उलटने लगे मगर कुछ ही देर बाद आवाज पुनः सुनाई दी उसी मुलायम कंठ ने फिर कहा, "क्या आपको मेरी बात पर विश्वास नहीं हुआ?" प्रभाकरसिंह फिर चौंके और सिर घुमा कर इधर उधर देखने लगे। यह कौन औरत है जो बार बार उनको तंग कर रही है?

ताज्जुब और खोज की निगाहें सब तरफ डाल रहे थे कि एक तरफ से फिर आवाज आई, "क्या आप मुझको देख नहीं पाते? यहाँ आपके सामने ही तो हूँ।" अबकी प्रभाकरसिंह ने बोलनेवाले को लक्ष्य कर लिया और आश्चर्य से देखा कि वही तिलिस्मी पुतली जिसके हाथ से उन्होंने अभी थोड़ी ही देर पहिले तीर कमान लिया था यह बातें कर रही है। क्या तिलिस्मी पुतलियाँ बात भी कर सकती हैं? आश्चर्य करते हुए वे अपनी जगह से उठे और उस पुतली की तरफ मुखातिब हो कर बोले, "क्या तुम्हीं ने मुझसे बातें की हैं!"

वह पुतली कुछ मुस्कुरा कर बोली "जी हाँ इस दासी ने ही आप को सम्बोधन किया था और फिर कहती है कि अब आप उस राह से आगे नहीं जा सकते जो बन्द हो चुकी है।"

प्रभा०। (ताज्जुब से) सो क्यों?

पुतली०। इसलिये कि वह राह सिर्फ एक ही बार खुलने के लिए बनाई गयी है, लेकिन अगर आप इस दासी के साथ चलना स्वीकार करें तो मैं एक दूसरी राह आपको ऐसी बता सकती हूँ कि जो आपको वहीं पहुँचा सके जहाँ वह राह ले जाती है।

प्रभा०। (और भी ताज्जुब से) अगर आगे जाने की कोई दूसरी भी राह है और उसका हाल तुमको मालूम है तो क्या उसका जिक्र इस किताब में न होगा?

पुतली० । जी नहीं, वह राह सिर्फ हम लोगों के ही आने जाने के लिये है, कोई गैर आदमी उसको इस्तेमाल नहीं कर सकता ।

प्रभाकरसिंह चिन्ता के साथ सोचने लगे कि यह क्या बात है, कहीं यह कोई धोखा तो नहीं है ! उनको चिन्ता में पड़ा देख वह पुतली फिर बोली, "आप किसी तरह का सन्देह न करिये और बेखटके मेरे साथ आइये । मैं आपसे सत्य कहती हूँ कि आपको आगे जाने का रास्ता बता दूँगी ।"

प्रभाकरसिंह ने कुछ सोच कर कहा, "अगर यहाँ से आगे जाने की कोई राह और भी है तथा मैं उसके जरिये बेखटक आगे जा सकता हूँ तो इस किताब में उसका जिक्र कहीं न कहीं जरूर होगा । कम से कम मैं इस विषय में अपना सन्देह दूर कर लेना चाहता हूँ ।" उस पुतली ने जवाब दिया, "आप बेशक अपना सन्देह निवृत्त कर लें, मगर मैंने जो कुछ कहा वह बहुत ठीक है !"

प्रभाकरसिंह देर तक उस तिलिस्मी किताब के पन्ने उलटते पलटते रहे मगर कहीं भी इस विषय में कोई बात लिखी हुई उन्हें दिखाई न पड़ी । न तो उस दूसरे रास्ते का ही कहीं जिक्र था और न यही कहीं लिखा हुआ था कि जिस पुतली के हाथ से तुमने तीर कमान लिया वही यह भी ताकत रखती है कि कोई रास्ता तुमको बतला सके । आखिर कुछ देर बाद उन्होंने किताब बन्द कर दी और चिन्ता के साथ ऊपर की तरफ देखा । उस पुतली की निगाह एकटक उनके ऊपर पड़ रही थी जो उनको सिर उठाता देखते ही फिर बोली, "मैं पुनः निवेदन करती हूँ कि अब आप और विलम्ब न कीजिये और मेरे साथ आइये ।"

प्रभाकरसिंह ने मन में कहा, "जरूर यह भी कोई तिलिस्मी कारीगरी है मगर शायद इसके अन्दर भी किसी तरह का रहस्य छिपा हुआ हो, कम से कम देखना तो चाहिये ही कि यह मुझे कहाँ ले जाना या क्या करना चाहती है ।" और तब अपनी सब चीजें सम्हाल वे उठने को

तैयार हो गए। उस पुतली के चेहरे पर प्रसन्नता की झलक दिखाई दी और जैसे ही प्रभाकरसिंह सीढ़ियाँ चढ़ बावली के ऊपर पहुँचे वैसे ही उसने झुक कर बड़ी नम्रता से उन्हें प्रणाम किया। इसके साथ ही वह घूम कर अपने बगल वाली दूसरी पुतली से बोली, "अरी रामकली! खड़ी क्या है, मालिक को सलाम नहीं करती! हमारे भाग्य जागे हैं जो इन्होंने हमारे साथ चलना स्वीकार किया!!" उस दूसरी पुतली ने यह सुनते ही प्रणाम किया और बोली, "हम लोग आज कृतार्थ हो गईं!" इसके बाद वे दोनों घूमीं और अपने पिछली तरफ वाले बनावटी पहाड़ की तरफ दोनों हाथों से इशारा करती हुई बोलीं, "श्रीमान् इधर चलें!"

प्रभाकरसिंह ने सिर हिला कर कहा, "सो न होगा, तुम लोग आगे आगे चलो, जब तक मेरी इच्छा होगी मैं भी तुम्हारे साथ पीछे पीछे चलूँगा, कौन ठिकाना तुम लोगों के मन में किसी तरह की दगा हो और तुम पीछे से मुझ पर वार कर बैठो!" एक पुतली ने दाँत तले जीभ दबा कर कहा, "राम राम राम, जो कुछ होना था सो हो गया, अब आप हमारे स्वामी हैं और हम लोग आपकी दासियाँ। फिर भी आपकी आज्ञा मान हमीं आगे होने को तैयार हैं।" आगे आगे वे दोनों पुतलियाँ और पीछे पीछे प्रभाकरसिंह उस बनावटी पहाड़ की तरफ रवाना हुए जो नकली बाग के एक हिस्से में बना हुआ था और उस जगह से सिर्फ कुछ ही कदमों के फासले पर था।

नकली पहाड़ के एक हिस्से में एक छोटी सुरङ्ग या गुफा थी जिसके अन्दर आदमी झुक कर जा सकता था। वे दोनों पुतलियाँ इसी गुफा की तरफ बढ़ रही थीं। जब उसके पास पहुँचीं तो प्रभाकरसिंह को उसके मुहाने ही पर दाहिनी तरफ कुछ मजमून लिखा हुआ दिखाई पड़ा। रुके और गौर करके पढ़ना चाहा मगर कुछ समझ में न आया। दूसरी तरफ निगाह गई तो बाईं तरफ भी कुछ लिखा देखा मगर इस तरफ के अक्षर बड़े और मजमून साफ था। यह लिखा पाया—"तिलिस्म का यह हिस्सा

सिर्फ सैर और जानकारी के लिये बनाया गया है, सम्हल कर जाने वाले को बहुत सी बातें मालूम होंगी।" पढ़ कर प्रभाकरसिंह कुछ निश्चिन्त हुए मगर उनका ध्यान दाहिनी तरफ वाली उस पहिली लिखावट की तरफ गया जो समझ में न आई थी। उसे समझे बिना अन्दर जाना मुनासिब न जान उसकी तरफ बढ़े ही थे कि एक पुतली बोल उठी, "आप रुक क्यों गए! किसी तरह का अन्देशा न करिये और बेखटके चले आइये। देर करना मुनासिब न होगा!" प्रभाकरसिंह ने उसकी बात का कोई जवाब न दिया और आगे बढ़कर गौर से उस लिखावट को पढ़ने लगे। पहिले तो कोई मतलब समझ में न आया मगर जरा गौर करने पर आशय प्रगट हो गया और वे मुस्कुरा उठे। पाठकों के कौतूहल के लिये हम उस मजमून को यहाँ दे देते हैं—

दो	ला	छु	र	या	थि
ह	स्मी	लि	ति	च	हुँ
प	में	न	व	भ	णि
म	र	औ	हीं	न	ठो
बै	हीं	क	र	ग	म
ओ	जा	र	या	शि	हो

प्रभाकरसिंह को देर करते देख दूसरी पुतली बोली, "क्या श्रीमान् कुछ देर करना चाहते हैं?" प्रभाकरसिंह बोले, "नहीं नहीं, मैं चलने को तैयार हूँ" और तब आगे बढ़े। वे पुतलियाँ भी एक दूसरे पर मतलब भरी निगाह डाल आगे बढ़ीं।

ज्यों ज्यों सुरंग के अन्दर घुसते जाते थे अन्धेरा बढ़ता जाता था

क्योंकि इसके अन्दर किसी तरह की कोई रोशनी न थी, जो कुछ चाँदना था वह बाहर वाले कमरे से ही आता हुआ यहाँ पड़ रहा था मगर इससे जो कुछ तकलीफ होती वह इस बात से कम हो रही थी कि ज्यों ज्यों आगे बढ़ते जाते थे सुरंग लम्बी चौड़ी खुलासी और ऊँची होती जाती थी। आगे आगे वे दोनों पुतलियां जा रहीं थीं और पीछे पीछे प्रभाकरसिंह बेधड़क अपना तिलिस्मी डंडा मजबूती से हाथ में पकड़े बढ़े जा रहे थे। लगभग तीस चालीस कदम के इनको जाना पड़ा और तब वह सुरंग खतम हुई। एक ड्योढ़ी सी इनको लाँघनी पड़ी और तब एक ऐसी जगह सब कोई पहुँचे जिसकी लम्बाई चौड़ाई या ऊँचाई का कुछ भी अन्दाज लग न सकता था क्योंकि इस जगह घनघोर अन्धकार था, मगर यह अवस्था देर तक न रही। एक पुतली ने आगे बढ़ कर न जाने कौन तर्कीब ऐसी की कि वह जगह तेज रोशनी से भर गई और तब मालूम हुआ कि वह एक लम्बा चौड़ा कमरा है जिसमें मनुष्य की साधारण जरूरतों के लायक सभी चीजें मौजूद हैं। प्रभाकरसिंह ने एक पुतली से पूछा, "क्या यही तुम्हारा स्थान है?" उसने अदब से जवाब दिया, "जी नहीं, मगर यहाँ से अब बहुत ज्यादा दूर भी नहीं है। (अपनी साथिन से) तू जा और ताली ला कर बाग वाला दर्वाजा खोल, तब तक मैं महाराज को इस सिंहासन पर बैठाती और हवा करती हूँ।" एक पुतली यह सुन सिर झुका किसी तरफ को चली गई और दूसरी खूँटी से टँगा पंखा उतारती हुई बोली, "श्रीमान् इस जगह जरा बैठ जायँ। दर्वाजा खोलने में कुछ बिलम्ब लगेगा, तब तक इजाजत हो तो मै कुछ जलपान के लिये...।" प्रभाकरसिंह मुस्कुरा कर बोले, "इतनी तकलीफ करने की ज़रूरत नहीं और न मैं किसी तरह भूखा ही हूँ, बल्कि अगर तुम मेरी प्रसन्नता चाहती हो तो इधर मेरे पास आओ और जो कुछ मै पूछूँ उसका मुझे जवाब दो।"

पुतली बेधड़क प्रभाकरसिंह के पास आ गई और उनके सामने खड़ी हो हाथ जोड़ कर बोली, "आज्ञा ?"

प्रभाकर०। तुम लोगों का रंग ढंग बातचीत चलना फिरना आदि देख कर मैं बड़े ताज्जुब में पड़ गया हूँ और यह जानना चाहता हूँ कि तुम आखिर हो क्या चीज ! यह तो कहा ही नहीं जा सकता कि तुम लोग जीते जागते मनुष्य अथवा स्त्रियाँ हो, पर यदि मनुष्य नहीं हो तो क्या वस्तु हो और किस शक्ति की बदौलत ठीक मनुष्यों की ही तरह काम कर रही हो यह मैं जानना चाहता हूँ, अगर बता सकती हो तो बताओ?

पुतली०। अब मैं क्या बताऊँ कि हम लोग क्या हैं ? बस यही समझ लीजिये कि पापी आत्मायें हैं जो तिलिस्म के अन्दर कैद हो कर अपनी मुसीबत भरी जिन्दगी काट रही हैं और रात दिन मनाती रहती हैं कि किसी तरह इस तिलिस्म की उम्र समाप्त हो और इसके तोड़ने वाले का प्रादुर्भाव हो जो इसको नष्ट भ्रष्ट कर हम लोगों की जान को भी स्वतन्त्रता दे।

प्रभाकर०। इस तरह का गोलमाल जवाब मैं नहीं माँगता और न मैं यही विश्वास कर सकता हूँ कि तुम्हारे भीतर कोई आत्मा है। आत्मा ईश्वरीय कृति है और वह किसी के बश में नहीं हो सकती, पर तुम लोग तिलिस्म बनाने वालों की कृति हो और उतना ही कर रही हो जितना करने के लिये तुम मुकर्रर की गई हो। आत्मा को जब कोई स्वतन्त्र शरीर मिलता है तो उसको अन्तःकरण अर्थात् मन बुद्धि चित्त और अहङ्कार भी प्राप्त होता है और उनके द्वारा स्वतन्त्र रूप से सोचने समझने और अपनी करनी से अनुभव प्राप्त करने की स्वतन्त्रता भी मिलती है। अवश्य ही तुम लोगों में वह सब नहीं है यह मैं जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि तुम लोग कुछ कल पुर्जों और मसालों के जोर से बनाई गई पुतलियाँ मात्र हो जो तिलिस्म बनानेवालों की कारीगरी और बुद्धिमानी का नमूना है। जो बात मेरी समझ में नहीं आती वह यह है कि वह कौन सी

ऐसी शक्ति है जो तुम लोगों से ठीक मनुष्य की तरह काम करा रही है अर्थात् जिसकी बदौलत तुम चल फिर सकती हो, बोल सकती हो, काम काज कर सकती हो, क्योंकि आत्मा तो किसी के बनाये बन नहीं सकती।

पुतली०। (हँस कर) मनुष्य शरीर के अवयवों की तरह आत्मा भी क्या एक रासायनिक पदार्थ नहीं हो सकती ?

प्रभाकर०। इसका क्या मतलब ?

पुतली०। आप पूछते हैं कि हमारे भीतर कौन सी शक्ति है जो हमसे ठीक मनुष्य की तरह काम करा रही है। आप यह देख ही रहे हैं कि हम लोग ठीक मनुष्य की तरह ही सब काम कर रही हैं और कर सकत हैं। मनुष्य की ही तरह हमारे हाथ पाँव आँख नाक कान अवयव आदि हैं। किन चीजों के किस प्रकार के संयोग से मनुष्य शरीर बना है यह बात तो आज कल के कम बुद्धि वाले वैज्ञानिक भी जानते हैं और वे उन्हीं वस्तुओं के उसी प्रकार के संयोग से उसी प्रकार के पदार्थ बना भी लेते हैं बल्कि बहुत ही निम्न श्रेणी के कुछ जीव बना सकने में भी समर्थ हुए हैं। तब जब मनुष्य के अङ्ग प्रत्यङ्ग बनाये जा सकते हैं तो क्या मनुष्य की आत्मा भी नहीं बनाई जा सकती ?

प्रभा०। (ताज्जुब से) क्या तुम्हारा मतलब यह है कि तिलिस्म बनाने वालों ने तुम्हारे शरीर की तरह तुम्हारी आत्मा की भी रचना कर डाली है ?

पुतली०। बेशक ! अवश्य ही पूर्ण परब्रह्म का अंश और स्वयमेव पूर्ण वह सूक्ष्म आत्मा नहीं जो आप जैसे भाग्यवानों के शरीर का संचालन कर रही है पर एक तरह की निकृष्ट अपूर्ण बन्धनयुक्त कम प्रतिभाशाली पराधीन आत्मा या आत्मा से ही मिलती जुलती सी शक्ति उन प्राचीन महात्माओं ने बनाने में सफलता प्राप्त कर ली थी जिनका बनाया यह तिलिस्म है। वही शक्ति हम तिलिस्म के भीतर काम करने वाली इन पुतलियों के भीतर मौजूद है और वही हमसे काम ले रही है।

प्रभा०। तुम्हारा उत्तर इतना गंभीर है कि मुझे उस पर विचार करना

पड़ेगा, साथ ही उसके सम्बन्ध में कई बातें भी पूछनी पड़ेंगी अगर तुम उनका जवाब दे सको, मगर पहिले इतना तो बताओ कि तुम लोग तरह तरह का काम करने में स्वतंत्र हो या सिर्फ उतना ही काम कर सकती हो जितना कि तुम्हारे बनाने वालों ने तुमको करने के लिए मुकर्रर कर दिया है। मसलन इस वक्त मुझसे तुम्हारी जो बातचीत हो रही है, उसके विषय में मैं पूछता हूँ कि क्या तुम्हारे अन्दर मन की तरह की कोई चीज है जिससे खुद सोच सोच कर तुम मेरी बातें सुनती या उनका जवाब दे रही हो अथवा यह सब बातें तुम्हारे बनाने वालों ने तुम्हारे अन्दर किसी जगह और किसी तरह भर दी हैं जिन्हें सिर्फ तुम दोहरा भर सकती हो। (कुछ रुक कर) लेकिन नहीं, अगर ऐसा ही होता और अगर तुम सिर्फ वही बातें दोहरा सकतीं जो तुम्हारे भीतर भर दी गई हैं तो मेरी इन बातों का जवाब न दे सकतीं क्योंकि तुम्हारे बनाने वालों को यह भला क्या मालूम था कि मैं यहाँ पर किस तरह की बातें तुमसे पूछूँगा। तुमने मेरी जिन बातों का जिस तरह पर जवाब दिया है उससे तो ऐसा भान होता है मानों तुम्हारे में सोचने और समझने की ताकत हो!

पुतली०। (मुस्कुरा कर) तो आप समझते हैं कि आपके मन में इस समय जो सवालात उठे हैं उनका किसी को पता नहीं लग सकता था? क्या आप उन ज्योतिषियों को भूल गये जो लोगों के मन की बातें बता देते हैं और मूक प्रश्नों का उत्तर दे देते हैं?

प्रभा०। मैंने ऐसे ज्योतिषियों की बातें सुनी ही नहीं बल्कि उनको देखा और उनकी अद्भुत सामर्थ का कुछ परिचय पाया भी है पर इससे यह तो नहीं सोचा जा सकता कि आज से हजारों बरस पहिले यह तिलिस्म बनाने वाले इस बात को जान सके होंगे कि मै आज इस तरह इस जगह पहुचूँगा और तुमसे एक बोलने चालनेवाली मसाले की पुतली से, इस तरह की बातें पूछूँगा? क्या तुम्हारा यह मतलब है कि तिलिस्म बनाने वालों को यह मालूम हो चुका था कि मैं तुमसे फलानी बात पूछूँगा और

इसको जानकर उस तरह का जवाब भी तभी से तुम्हारे अन्दर भर दिया गया था जो कि इस समय तुमने मुझे दिया या आगे मेरी बातों के जवाब में दोगी ?

पुतली० । जी मेरा यही मतलब है ! तिलिस्म बनाने वाले को अच्छा वैज्ञानिक, अच्छा रासायनिक, अच्छा कलाविद्, और अच्छा ज्ञानी होने के पहिले एक बहुत ही अच्छा ज्योतिषी होने की आवश्यकता है । भविष्य में क्या होने वाला है अगर वह जान नहीं सकता है तो न तो वह तिलिस्म ही बाँध सकता है और न फिर तिलिस्म बाँधने का असल तात्पर्य ही निकल सकता है ।

प्रभा० । (अविश्वास के साथ) क्या तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि इस तिलिस्म के बनाने वाले ने पहिले ही से केवल यही नहीं जान लिया था कि आज के दिन कौन यहाँ पर किस लिए आवेगा बल्कि यह भी जान लिया था कि उसके मन में इस समय किस तरह के विचार उत्पन्न होंगे ?

पुतली० । (बात पर जोर देकर) अवश्य, विचार मनोविज्ञान का एक अंग है और काल, स्थान तथा पात्र से सम्बन्ध रखता है । किसके मन में कब कौन विचार उठता है साधारण रीति से उस आदमी के स्वभाव से कुछ भी परिचय रखने वाला उसका कुछ आभास पा सकता है, मगर विशेष ज्ञान रखने वाला इससे कहीं अधिक जान सकता है । खैर हाथ कंगन को आरसी क्या ? अगर आप यह जानना ही चाहते हों कि तिलिस्म बनाने वाले भविष्य को कितना और कहाँ तक जानते थे तो आप मेरे साथ चलिए, मैं आपको 'मणिभवन' में ले चलती हूँ जहाँ इस बात का अच्छा परिचय आपको मिल सकता है । वहाँ चल कर आप सहज ही में जान जायँगे कि भविष्य तिलिस्म बनाने वालों के हाथ की पटरी पर पड़ी कुछ लकीरें मात्र था ।

प्रभा० । (उत्कण्ठा के साथ) मैं बड़ी खुशी से ऐसी जगह चलने को तैयार हूँ, लो तुम्हारी साथिन भी तो आ गई !

वह दूसरी पुतली भी इसी समय आ मौजूद हुई। दोनों में धीरे धीरे कुछ बातें हुईं और तब वे प्रभाकरसिंह को पीछे आने का इशारा कर एक तरफ को चल पड़ीं। आगे आगे वे दोनों पुतलियाँ और पीछे प्रभाकरसिंह चलने लगे।

वह कमरा और उसके बाद कितने ही कमरे कोठरियों दालानों और बालाखानों को पार करती हुई वे पुतलियाँ प्रभाकरसिंह को लिये हुए एक ऐसे स्थान पर पहुँचीं जहाँ एक बहुत ही बड़ा कमरा कई जगमगाते हुए गोलों की रोशनी से रौशन हो रहा था। इस कमरे की छत मामूली से कहीं ज्यादे ऊँची थी और प्रभाकरसिंह ने ऊपर देख कर अन्दाज किया कि किसी हालत में भी वह बीस गज से कम ऊँची न होगी। छत के बीचो-बीच में एक गोल छेद सा दिखाई पड़ रहा था मगर उसके अन्दर क्या था, कोई दूसरा कमरा अथवा खुला हुआ आस्मान, इसका ठीक ठीक पता नहीं लगता था। बहुत बड़ा होते हुए भी यह कमरा किसी तरह के सामान से एक दम खाली था और इसकी दीवारों पर कोई रौगन इस तरह का किया हुआ था कि वे शीशे की तरह चमक रही थीं। दोनों पुतलियाँ इस जगह आकर रुक गईं और उनकी आकृति से ऐसा मालूम होने लगा मानो वे किसी विचार में पड़ गई हों जिसे देख प्रभाकरसिंह ने कहा, "क्यों, रुक काहे को गईं ? यह तो मणिभवन नहीं है !" एक पुतली बोली, "जी नहीं यह तो नहीं है मगर इसके बाद ही वह जगह पड़ती है और वहाँ जाने के लिये (छत की तरफ दिखाकर) सिर्फ यही एक राह है। हम लोग यही सोच रही थीं कि आपको किस तरह वहाँ तक ले जायं ?"

प्रभाकरसिंह बोले, "क्या वहाँ तक जाने की कोई तर्कीब नहीं हो सकती ?" जिसके जवाब में उसने कहा, "हम लोगों के जाने लायक तो

रास्ता है मगर आपके जाने योग्य नहीं है।" प्रभाकरसिंह बोले, "सो क्यों ? जिस तर्कीब से तुम लोग वहाँ तक पहुँच सकती हो जरूर उसी तरह से मैं भी पहुँच सकता हूँ, इसमें तरद्दुद कौन सा है ?" प्रभाकरसिंह की बात सुन वह पुतली अपने साथ वाली की तरफ देख मुस्कुराई और तब बोली, "अच्छी बात है, तो आप देख लीजिए कि हमारी राह आपके काम आ सकती है या नहीं।"

एक पुतली कमरे की दीवार के पास गई और वहाँ लगी हुई एक खूँटी को उसने किसी क्रम से उमेठ दिया। इसके बाद वह पुनः अपनी जगह पर वापस लौट आई और उसी समय प्रभाकरसिंह ने देखा कि लोहे की एक पतली तार ऊपर वाले उस छेद की राह नीचे की तरफ उतरी। धीरे धीरे लटकती हुई वह तार जमीन तक आ पहुँची और तब एक ने दूसरी की तरफ देख कर कहा, "बहिन, तू पहिले ऊपर जा जिसमें महाराज देख लें कि हम लोग किस तरह आते जाते हैं।" जवाब में 'अच्छा' कह उस पुतली ने आगे बढ़ उस तार को पकड़ लिया और तब उसको दो तीन बार हाथ में लपेट मजबूत थाम लिया। इसके बाद उसने कई झटके उस तार को दिये जिसके साथ ही वह तार ऊपर की तरफ उठने लगी और उसी के साथ साथ लटकती हुई वह पुतली भी ऊपर को जाने लगी। दूसरी पुतली ने प्रभाकरसिंह को लक्ष्य कर कहा, "हम लोगों का बदन हलका है इससे हम ऐसा कर सकती हैं पर आप किसी तरह ऐसा नहीं कर सकते।" प्रभाकरसिंह उस ऊपर को उठती हुई पुतली की तरफ देखते हुए सोचने लगे कि उनके ऊपर जाने की क्या तर्कीब हो सकती है। उनके देखते देखते वह तार समूची ऊपर को उठ गई और उस छेद के अन्दर जाकर गायब हो गई तथा उसके साथ साथ वह पुतली भी आँखों की ओट हो गई। अब उस दूसरी पुतली ने प्रभाकरसिंह से कहा, "कहिये, क्या आप इस तरह ऊपर जा सकेंगे ?" प्रभाकरसिंह ने जवाब दिया, "तार बहुत ही पतली है इससे कुछ सन्देह होता है, नहीं तो जाना

कुछ विशेष मुश्किल तो नहीं था !" यकायक वह पुतली बोली, "अच्छा मुझे एक तर्कीब सूझ गई है, ठहरिये मैं अभी आई !"

प्रभाकरसिंह को वहाँ छोड़ वह पुतली पीछे की तरफ लौट गई और थोड़ी ही देर में कपड़े का एक झूला लिए हुए उस जगह आ पहुँची जिसे दिखा कर उसने कहा, "मैं इसको उस तार के साथ बाँध दूँगी और आप इसमें बैठ कर बेखटके ऊपर जा सकेंगे।" इतना कह बिना जवाब की राह देखे वह उसी खूँटी के पास पहुँची और पहिले की तरह उसे फिर उमेठा। उसी तरह पुनः वह तार लटकने लगी और धीरे धीरे जमीन से आ लगी। पुतली ने झूले को तार के साथ मजबूत बाँधा और तब प्रभाकरसिंह से कहा, "आइये विराजिये, यह आपको सही सलामत ऊपर तक पहुँचा देगा।"

प्रभाकरसिंह ने दो तीन बार कड़ा झटका दे कर तार की मजबूती की थाह ली। तार यद्यपि पतली थी मगर बहुत ही मजबूत थी अस्तु उन्हें विश्वास हो गया कि वह निर्विघ्न उन्हें ऊपर तक पहुँचा देगी, फिर भी न जाने क्या सोच वे बोले, "अच्छा तुम पहिले इस पर ऊपर पहुँच जाओ तो मै भी चलूँ।" पुतली ने हाथ जोड़ कर जवाब दिया, "मुझे ऐसा करने में कोई भी उज्र नहीं है मगर ऐसा करने में मुश्किल यह होगा कि फिर आप ऊपर जा न सकेंगे। इस तार को ऊपर से नीचे मंगाने के लिए जो खास तर्कीब की जाती है वह आप कर न सकेंगे और इसी लिए ऊपर भी जा न सकेंगे।" प्रभाकरसिंह बोले, "मैंने देखा है कि ऐसा करने के लिए तुम उस खूँटी को उमेठती हो, क्या वही तर्कीब मैं नहीं कर सकता?" पुतली ने जवाब दिया, "जी नहीं, उसको एक खास तर्कीब के साथ उमेठना पड़ता है जो बतलाने की इजाजत हम लोगों को नहीं है।"

प्रभाकरसिंह इस बात को सुन कुछ गौर में पड़ गये। पहिले तो उन्होंने सोचा कि उस तर्कीब को जानने की जिद्द करें मगर फिर यह सोच कर कि शायद यह बात पुतली नहीं ही बतावे तो झगड़ा हो पड़ेगा और

फिर मणिभवन पहुँचना कठिन हो जायगा, उन्होंने कुछ सोच समझ कर पुतली की ही बात स्वीकार कर ली और पैर लटका कर उस झूले में जा बैठे। पुतली ने तार को तीन चार झटके दिये और वह ऊपर को उठने लगी।

झूला धीरे धीरे ऊपर को उठ रहा था और प्रभाकरसिंह भी क्षण क्षण ऊँचे होते जा रहे थे कि यकायक उन्हें कोई बात खयाल आ गई। गुफा के बाहर वाले मजमून ने उन्हें कहीं बैठने को मना किया था। यह खयाल आते ही वे चौंके और बैठने के बजाय उस झूले में खड़े होने की कोशिश करने लगे। उसी समय उन्होने यह भी देखा कि जमीन पर खड़ी उस पुतली का भाव बदल गया है। उसके चेहरे से घृणा और द्वेष प्रगट होने लगा है और वह बड़े ही गुस्से की निगाहों से उनकी तरफ देखती हुई अपने कपड़ों के अन्दर से कुछ निकालने की कोशिश कर रही है। इधर प्रभाकरसिंह सम्हल कर अपने स्थान पर खड़े हुए हो थे कि उधर उस पुतली ने एक पतली तलवार जो उसके कपड़ों के अन्दर छिपी हुई थी निकाल ली और "दुष्ट ! तिलिस्म तोड़ने का मजा चख !!" कह बड़ी तेजी से प्रभाकरसिंह पर चलाई। उसका निशाना प्रभाकरसिंह की गर्दन पर था पर उसी सायत में वे उठ कर खड़े हो गये थे जिससे निशाना बहक गया, फिर भी उनकी जाँघ में तलवार जोर से लगी, चमड़ा कट गया और खून बहने लगा, परन्तु उन्होंने इसकी परवाह न की और अपना तिलिस्मी डंडा झुक कर पुतली के सिर से छुला दिया। तिलिस्मी डंडे का छूना था कि उस पुतली ने एक चीख मारी और फुलझड़ी की तरह बल उठी, उधर वह झूला प्रभाकरसिंह को लिये हुए ऊपर को उठने लगा और कुछ ही देर में वे उस कमरे की छत वाले सूराख तक जा पहुँचे। बाहर होते हुए उन्होंने देखा कि वह पुतली जल कर राख हो गई है।

प्रभाकरसिंह का विश्वास था कि वह तार उन्हें छत पर पहुँचा कर

ही रह जावेगी मगर ऐसा न हुआ और छत के बाहर होने के बाद वह झूला उन्हें लिए कुछ और ऊपर उठ कर बगल की एक दूसरी छत में बने छेद की राह नीचे उतरने लगा। जिस तरह के कमरे में से अभी अभी वे चले आ रहे थे ठीक उसी तरह का उतना ही बड़ा और वैसी ही ऊँची छत वाला एक दूसरा कमरा उन्हें अपने नीचे नजर आया जिसकी सतह पर उस झूले ने धीरे धीरे नीचा हो कर उन्हें पहुँचा दिया। उसी जगह पास ही में वह पहली पुतली भी खड़ी उनको दिखी जिसने झूले को थाम लिया और उनको उतरने में सहायता करते हुए कहा, "मेरी साथिन इसी झूले की मदद से आ जायगी, तब से चलिये हम लोग आगे बढ़ें क्योंकि देर बहुत हो गई है और अब सुबह होने में कुछ ही कसर बाकी होगी। सुबह हो जाने पर हमारी काम करने की शक्ति नष्ट हो जायगी!" प्रभाकरसिंह ने जवाब में केवल इतना ही कहा, "मैं आगे चलने को तैयार हूँ!" और वह पुतली मुड़ कर एक तरफ को बढ़ी।

दाहिनी तरफ की दीवार के पास पहुँच कर उस पुतली ने कोई तरकीब ऐसी की कि वहाँ पर एक दर्वाजा प्रगट हो गया जिसके अन्दर से होते हुए दोनों आदमी एक छोटे कमरे में पहुँचे और वहाँ से भी बाहर होकर एक दालान में आये जिसके सामने एक छोटा सा मगर खुशनुमा बाग नजर आ रहा था। सुबह होने में कुछ ही कसर बाकी थी और अरुणोदय की लाली पूरब तरफ के आसमान को लाल करती हुई उस छोटे बाग के बीचोबीच की एक अद्भुत इमारत को प्रगट कर रही थी।

प्रभाकरसिंह ने देखा कि वह इमारत एक खुशनुमा बँगले के तर्ज पर बनी हुई है और उसकी दीवारों खम्भों और बाहर से दिखने वाले सब हिस्सों पर रङ्गीन-शीशे इस कारीगरी से जड़े हुए हैं कि तरह तरह के बेल-बूटे बन गये हैं जिनकी बदौलत वह बेतरह चमक रही है। इस समय की हलकी रोशनी में इसका जब यह हाल है तो धूप पड़ने पर यह कैसी चमकती होगी, प्रभाकरसिंह इसी बात को सोच रहे थे कि उस पुतली ने कहा,

"देखिये वह सामने मणिभवन है, मेरी सखी आ जाय तो हम लोग उधर चलें।"

तिलिस्मी किताब में दिये हुए निशान से प्रभाकरसिंह ने भी समझ लिया कि यही वह मणिभवन है जिसे देखने की उनकी बहुत बड़ी उत्कंठा थी। पुतली की बात सुन वे बोले, "अब अपनी सखी से मिलने का ध्यान छोड़ो और अगर मुझे वहाँ तक ले चल सकती हो तो ले चलो नहीं तो मेरा सलाम लो, मैं अकेला ही चला।" इनकी बात सुनते ही वह पुतली जल्दी से बोली, "नहीं नहीं, आप चलिये मैं आपको ले चलती हूँ" और दालान से उतर उस बँगले की तरफ चली, प्रभाकरसिंह भी साथ हुए।

यह बाग जिसके अन्दर से होकर प्रभाकरसिंह जा रहे थे बहुत बड़ा न होने पर भी तरह तरह के गुलबूटों से बहुत अच्छी तरह सजा हुआ था। प्रभाकरसिंह ने देखा कि इसमें तरह तरह के मेवों के पेड़ भी बहुतायत से हैं जिन्हें खाकर आदमी अपना गुजर बखूबी कर सकता है। पानी की भी वहाँ कमी न थी और एक नहर की बदौलत वह बाग हर वक्त सरसब्ज बना रहा करता था। चक्करदार रविशों पर से होते हुए ये दोनो उस 'मणिभवन' के पास पहुँचे और तब प्रभाकरसिंह ने देखा कि जिसको दूर से उन्होंने शीशे के टुकड़े समझा था वे वास्तव में जवाहिरात हैं जो बड़ी खूबी और बहुतायत के साथ उस इमारतकी दीवारों पर जड़े हुए हैं। प्रभाकरसिंह उन्हे देखते हुए ताज्जुब के साथ सोचने लगे कि तिलिस्म बनाने वालों के पास कितनी दौलत थी जो जवाहिरात इस लापरवाही के साथ इमारतों में जड़े गये हैं!

'मणिभवन' की इमारत कमर भर ऊँची कुर्सी देकर बनी हुई थी। चारो तरफ कुछ जगह खुली छूटी हुई थी जिसके बाद एक नीचा दालान और तब कई किता दर्वाजे पड़ते थे जो सबके सब बन्द थे। वह पुतली प्रभाकरसिंह को लेकर जगत पर चढ़ गई और उस दालान में पहुँच बीच वाले दर्वाजे के सामने जा खड़ी हुई जो अगल बगल वाले दरवाजों की

बनिस्बत कुछ बड़ा था। दर्वाजे के ऊपर की तरफ एक छोटे संगीन आले में एक मूर्ति गणेशजी की रक्खी हुई थी जिसके नीचे की तरफ एक छोटा चूहा भी बना हुआ था। यह समूची मूर्ति किसी तरह के कीमती पत्थर को काट कर बनाई गई थी और देखने में दीवार के साथ जड़ी हुई मालूम पड़ती थी पर जिस समय पुतली ने उस चूहे को पकड़ कर अपनी तरफ खींचा तो वह जरा सा उठ आया और इसके साथ ही एक हलकी आवाज देता हुआ सामने के दर्वाजे का एक पल्ला भी खुल गया। भीतर से पीतल के बने हुए एक सिपाही ने जो आदमी के कद का और हूबहू फौजी सिपाही के रंग ढंग और शकल सूरत का बना हुआ था झाँक कर बाहर की तरफ देखा और साथ ही उसके गले से आवाज निकली, "कौन है और क्या चाहता है?"

पुतली ने जवाब दिया, "महाराज हैं, दरबार देखना चाहते हैं!" पीतल के सिपाही ने यह बात सुन कर एक बार झांक कर प्रभाकरसिंह की शकल देखी तब पीछे हट गया और दर्वाजा भीतर से बन्द हो गया।

प्रभाकरसिंह ने पुतली से पूछा, "यह सब क्या मामला है और कौन से दर्बार का तुमने जिक्र किया है?" पुतली बोली, "इस मणिभवन के अन्दर इस तिलिस्म को बनवाने वाले महाराज सूर्यकान्त के दर्बार का दृश्य दिखाया गया है। अपनी जीवितावस्था में वे जिस तरह दर्बार किया करते थे और जो जो लोग उसमें उपस्थित रहते थे उन सब का खाका इसके भीतर खींचा गया है और विशेषता यह है कि कोई खास तरकीब करने पर, जिसका हाल मुझे मालूम नहीं, वे सब मूर्तियाँ जीवित मनुष्यों की तरह बातचीत और काम काज करती दिखाई पड़ती हैं। इस दरबार .."

पुतली ने अपनी बात खतम नहीं की थी कि दर्वाजा फिर खुला और उसी सिपाही ने सामने होकर कहा, "हुक्म हुआ है कि उनको इज्जत के साथ हुजूर में पेश किया जाय!" इसके साथ ही दर्वाजे का दूसरा पल्ला भी खुल गया और उस तरफ खड़ा एक और सिपाही नजर आया। दोनों

सिपाहियों ने झुक कर प्रभाकरसिंह को सलाम किया और एक ने हाथ का इशारा करते हुए कहा, "पधारिये ! महाराज आपकी राह देख रहे हैं !!"

प्रभाकरसिंह एक सायत के लिए रुके। तेजी के साथ मन ही मन वे एक बार उन बातों को दोहरा गये जो तिलिस्मी किताब में 'मणिभवन' के बारे में पढ़ीथीं और वहाँ पहुँच कर क्या करना होगा इसको भी ध्यान में बैठा लिया। इसके बाद उन्होंने कमरे के अन्दर पैर रक्खा। उसी समय बाहर खड़ी पुतली ने कहा, "मुझे क्या हुक्म होता है ?"

प्रभाकरसिंह ने पलट कर जवाब दिया, "सिवाय इसके कि तुम भी अपने बनाने वाले के पास चली जाओ और मैं कह ही क्या सकता हूँ !!" और तब फुर्ती से उसके सिर से अपना तिलिस्मी डंडा छुला दिया। छुलाने के साथ ही वह बड़े जोर से चिल्लाई और उसके सिर से आग की लपटें निकलने लगी मगर प्रभाकरसिंह ने उधर ध्यान न दिया और उन सिपाहियों के पीछे हो लिए जिन्होंने उनको भीतर कर दर्वाजा बन्द कर लिया। इसके बाद एक सिपाही उनकी तरफ मुखातिब हुआ और अदब के साथ बोला, "श्रीमान् सीधे दर्बार में जाना चाहते हैं या जो कुछ चीजें वहाँ देखने लायक हैं उनको देखने बाद वहाँ चलेंगे ?" प्रभाकर-सिंह ने जवाब दिया, "मै सब कुछ देखता हुआ जाना चाहता हूँ।" जिसके जवाब में उसने पुनः सलाम किया और "तब इधर से आइये !" कहता हुआ एक तरफ को मुड़ा।

एक के बाद एक कितने ही छोटे छोटे कमरे उस जगह बने हुए थे जिनमें एक एक करके प्रभाकरसिंह घूम आये। इन कमरों में क्या क्या चीजें थीं और प्रभाकरसिंह को उनको देखने से क्या लाभ हुआ इसके बारे में हम इस जगह कुछ न बतावेंगे कदाचित् आगे चलकर इसका हाल प्रगट हो, हां इतना कह सकते हैं कि इन चीजों को देखने में प्रभा-करसिंह को बहुत ज्यादा देर लग गई यहाँ तक कि सूर्यदेव आसमान में बहुत ऊपर चढ़ आये। ये समूची रात के जागे और काम करते हुए बहुत

हो थक गये थे फिर भी इस जगह उन्हें कुछ ऐसी आश्चर्य की चीजें दिखाई पड़ रही थीं तथा और भी दिखने की आशा थी कि उनकी आंख में न तो नींद का नाम निशान था और न बदन में थकावट का चिन्ह। जब वे सब तरफ के कमरों में घूम फिर आये तो पुनः उसी स्थान में पहुँचे जहाँ से दर्वाजे की राह इस इमारत में घुसे थे। उस जगह एक सिपाही ने कहा, "अब अगर आज्ञा हो तो आपको दर्बार में पेश किया जाय?" जिसके जवाब में उन्होंने कहा, "जरूर!" सामने का बहुत बड़ा दर्वाजा खोल दिया गया और प्रभाकरसिंह ने एक आश्चर्य-जनक दृश्य देखा।

एक बहुत ही बड़ा और ऊँची छत वाला कमरा किसी महाराजाधिराज के दर्बार के रूप में सजाया हुआ नजर आया, जिसमें एक से एक बढ़ कर खूबसूरत नायाब और कीमती चीजें इस बहुतायत से सजाई हुई थीं कि उनकी कीमत का अन्दाजा नहीं किया जा सकता था। बीचोबीच में सोने के जड़ाऊ सिंहासन पर एक वृद्ध महाराज बैठे हुए थे और उनके सामने की तरफ सोने ही के सिंहासन पर जिस पर मृगछाला बिछी हुई थी, एक बड़े ही वृद्ध तपस्वी महात्मा बैठे हुए थे जिनकी रुई की तरह सुफेद दाढ़ी नाभी के नीचे लटक रही थी और जिनकी सूरत से तपस्या और ज्ञान का तेज चमक रहा था। अब तक जिन जिन कमरों में घूम फिर कर प्रभाकरसिंह ने जो कुछ देखा सुना था शायद उन्हीं की मदद से उन्होंने देखते ही समझ लिया कि ये इस तिलिस्म के बनाने वाले महाराज सूर्यकान्त तथा उनके गुरु सोमदत्त हैं। महाराज के सिंहासन के दोनों तरफ रक्खी हुई सोने तथा चाँदी की कुरसियों पर एक से एक बढ़ कर खूबसूरत बहादुर और दिलावर जवान बैठे हुए दिखाये गये थे जिनको प्रभाकरसिंह गौर और ताज्जुब से देख ही रहे थे कि यकायक किसी तरह की आवाज सुन कर चमक गये। उनके सामने की मूरतों में से एक के मुँह से निकला, "ये कौन हैं और क्या चाहते हैं?" प्रभाकरसिंह के साथ

आने वाले एक चोबदार ने अदब से कहा, "धर्मावतार ! ये तिलिस्म तोड़ते हुए यहां तक पहुँचे हैं और दर्बार का दर्शन करने के इच्छुक थे, आज्ञानुसार हाजिर किये गये हैं।" बोलने वाले ने राजा सूर्यकान्त की तरफ देखा, उन्होंने सिर हिला कर कुछ इशारा किया और वह मूरत फिर बोली, "इन्हें कुरसी दो!" दो चोबदार दौड़े हुए गए और एक सोने की कुरसी ला कर बगल में रख दी जिस पर प्रभाकरसिंह बैठ गए और ताज्जुब के साथ अपने चारो तरफ देखते हुए सोचने लगे कि क्या ये मोम और धातु की बनी हुई बेजान पुतलियाँ हैं या जीते जागते मनुष्य !!

प्रभाकरसिंह के बैठते ही महाराज सूर्यकान्त की मूरत ने सिर घुमाकर अपने गुरु सोमदत्त की तरफ देखा और पूछा, "गुरुदेव ! आज पहिले पहिल यहाँ मैं एक जीवित मनुष्य को देख रहा हूँ, यह क्या बात है ?" महाराज का गंभीर स्वर उस कमरे में गूँज गया। प्रभाकरसिंह उसे सुन कुछ कौतूहल और उत्कण्ठा के साथ जरा आगे झुक कर सुनने लगे। महाराज का सवाल सुन उनके गुरू की मूरत ने जरा सा सिर घुमा कर प्रभाकरसिंह की तरफ देखा और तब कहा, "राजन् ! क्या तुम भूल गए ? आज ही के दिन के लिये न उस रोज मैंने तुमसे कहा था ! हम लोगों की इतनी मेहनत, तुम्हारे अतुलित धन-व्यय, और मेरे विज्ञान के बल से बँधे हुए इस तिलिस्म की आयु प्रायः शेष होने पर आ गई है यह बात मैंने उस दिन तुमसे कही थी। वही शुभ घड़ी आज से प्रारम्भ हुई है। आज इस तिलिस्म का एक हिस्सा टूटने पर आया है और उसको तोड़ने वाला तुम्हारे वंश का दीपक यह बहादुर तुम्हारे सामने मौजूद है।"

महाराज की मूरत ने जरा घूम कर आश्चर्य उत्कण्ठा कौतूहल और प्रेम की दृष्टि प्रभाकरसिंह पर डाली और तब अपने गुरू महाराज की तरफ घूम कर कहा, "जी हाँ मुझे बखूबी याद है कि आपने कहा था कि अब इस तिलिस्म की उम्र समाप्त होने को आ गई है। तो क्या मैं यह

समझूँ कि मेरा वह सब धन अब उन लोगों के हाथ लग जायगा जिनके लिये हम लोगों ने इतने दिनों से उसको सुरक्षित रख छोड़ा है ?"

गुरू महाराज बोले, "सब तो नहीं मगर कुछ अंश अब अपना गुप्त स्थान छोड़ कर संसार में प्रगट हो जायगा। तिलिस्म के कुल बारह हिस्से कर के मैंने तुम्हारी दौलत बारह जगहों में तुम्हारे बारह वंशजों के लिये छिपा कर रख दी थी, उनमें से पहिला अंश तुम्हारी लड़की के वंश में उत्पन्न यह बहादुर ले चला। बहुत जल्द तुम्हारे छोटे लड़के जयदेवसिंह के खानदान के बहादुर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह आवेंगे और तिलिस्म के दो हिस्सों को तोड़ कर उसका माल पावेंगे। इसके बाद तुम्हारे बड़े लड़के धीरसिंह के खानदान में प्रतापी गोपालसिंह का समय आवेगा और वह एक हिस्सा तोड़ कर उसका धन प्राप्त करेगा। बस इस पीढ़ी में इतना ही होकर रह जायगा। बाकी के आठ हिस्से अगली पीढ़ी में टूटेंगे और उस समय इस तिलिस्म की आयु एक दम समाप्त हो जायगी।"

आश्चर्य और कौतूहल के साथ प्रभाकरसिंह ये बातें सुन रहे थे। गुरु सोमदत्तजी की बातों ने उन पर कुछ ऐसा असर किया कि वे इसको बिल्कुल भूल गये कि वे पुतलियों के सामने खड़े हैं या एक तिलिस्मी नाटक मात्र देख रहे हैं। वे उनकी बात समाप्त होते ही यकायक अपनी जगह पर खड़े हो गये और हाथ जोड़ बोल उठे, 'गुरूदेव, क्या मैं एक बात पूछ सकता हूँ ?"

कुछ मुस्कुरा कर गुरू महाराज की मूरत बोल उठी, "तुम जो कुछ पूछोगे वह मैं जान गया हूँ तथापि पूछो क्या पूछते हो ? सिर्फ यह खयाल रक्खो कि समय थोड़ा है, तुम्हें अभी बहुत काम करना है, महाराज के उठने का समय हो गया है, और दर्बार समाप्त ही होने वाला है।"

प्रभा०। मैं बहुत ही संक्षेप में यह जानना चाहता हूँ कि तिलिस्म किस लिये बनाया जाता है और उसको तोड़ने की क्यों जरूरत पड़ती है ?

गुरू०। इसका पूरा जवाब तुम्हें एक पुस्तक में मिलेगा जो आगे चल

कर तुम्हारे हाथ लगेगी, पर संक्षेप में सुन लो कि यह लक्ष्मी अस्थिरा है। आज है और कल नहीं। बाहु और बुद्धि के बल से कोई प्रतापी अगाध धन संग्रह करता है और उसी का लड़का राह का भिखारी हो जाता है। इसी लिए वे लोग जिनके पास आवश्यकता से अधिक धन है अपने धन का कुछ हिस्सा भविष्य के लिए इस प्रकार सुरक्षित कर जाना चाहते हैं कि वह नष्ट न हो बल्कि उन्हीं के वंश के किसी प्रतापी आदमी को कुछ वर्षों या शताब्दियों के बाद मिल जाय। कभी कभी निज की संतान न होने या नालायक होने पर भी उसको सब धन न दे कुछ अंश तिलिस्म बना कर उसके अन्दर रख दिया जाता है कि जिसमें आगे की पीढ़ियों में किसी बुद्धिमान और प्रतापी के हाथ लगे और वह उससे संसार का कुछ उपकार कर सके। ऐसे ही धन को हिफाजत से रखने के लिए तिलिस्म बनाया जाता है और जिसके नाम पर वह तिलिस्म बांधा जाता है उसके सिवाय और कोई उसको खोल या धन निकाल नहीं सकता।

प्रभा०। ठीक है, मैं समझ गया। मुझे यह जान अकथनीय प्रसन्नता हुई कि मैं भी वृद्ध श्री महाराज के वंश का एक तुच्छ चिन्ह हूँ। आपने इस तिलिस्म के शीघ्र ही टूटने वाले जिन अन्य हिस्सों का जिक्र किया उनके तोड़ने वाले महापुरुषों को भी मै कुछ कुछ जानता हूँ और आज यह जान मेरी प्रसन्नता का हद न रहा कि उनसे मेरा संबन्ध भी है। पर यह जानने का मुझे कौतूहल हो रहा है कि काल के प्रभाव से जिस तरह महाराज के वंश के चार व्यक्ति आज एकत्र उपस्थित हो रहे हैं, उसी तरह महाराज के गुरू अर्थात् आपके वंश का भी कोई ऐसा व्यक्ति क्या इस समय नहीं है जो इस आज कल के जमाने में उपस्थित हो ?

गुरू०। मैं तो आजन्म ब्रह्मचारी था अस्तु मेरा वंश तो हुई नहीं पर यदि तुम मेरे शिष्य-वर्ग को मेरा वंश समझ लो तो घटनाक्रम से आज

मेरे चार शिष्यों के चार वंशधर भी एकत्र हो गये हैं और इन तिलिस्मों के तोड़ने में उनका भी कुछ विशेष हाथ है, होगा, और रहेगा।

प्रभा०। (कौतूहल के साथ) ऐसा! तो क्या मैं उनका परिचय पा सकता हूँ?

गुरू०। कहना उचित नहीं है पर मैं जानता हूँ कि तुम इस बात को बहुत ही गुप्त रक्खोगे इसलिए कहे देता हूँ कि शेरसिंह, इन्द्रदेव, यदुनाथ और भूतनाथ मेरे ही चार शिष्यों के वंशज हैं और तिलिस्म के इस पीढ़ी में टूटने वाले चारों हिस्सों से इन चारों का विशेष सम्बन्ध है।

प्रभा०। हैं! शेरसिंह इन्द्रदेव यदुनाथ और भूतनाथ आपके शिष्यों की सन्तानें हैं!!

गुरू०। (मुस्कुरा कर) हाँ।

प्रभा०। बढ़ते हुए आश्चर्य से) तो क्या मैं जान सकता हूँ कि इन लोगों का तिलिस्म से किस प्रकार का सम्बन्ध है?

गुरू०। विक्रमी तिलिस्म के चार टूटने वाले हिस्सों की तालियाँ इन चार मनुष्यों की हिफाजत में थीं, पड़ेंगी, या रहेंगी, तथा इनका वास्तविक कर्तव्य तिलिस्म तोड़ने वालों की सहायता करना है।

प्रभा०। क्या ये लोग खुद उन चाभियों की मदद से तिलिस्म खोल उसकी दौलत निकाल नहीं सकते?

गुरू०। केवल चाभी पास रखने ही से तिलिस्म टूट नहीं सकता। वह तो जिसके नाम पर बाँधा गया है उसी के हाथों टूट पावेगा, फिर भी यह सही है कि चाभियाँ जिनके पास हैं उनको तिलिस्मी मामलों से कुछ दखल जरूर रहेगा और उनको दौलत की कमी भी किसी तरह न हो सकेगी।

प्रभा०। आपने जो नाम लिए' घटनावशतः मैं उन चारों ही को जानता हूँ और उसी जानकारी के बल पर यह कहने की धृष्टता करता हूँ

कि जो नाम आपने लिए उनमें से कुछ आज संसार में बड़े ही बदनाम हो रहे हैं।

गुरू०। (मुस्कुरा कर) यह बात हम लोगों से छिपी हुई नहीं है। यदुनाथ और भूतनाथ मेरे शिष्य संप्रदाय का नाम बदनाम करने वाले लोग हैं और शायद तुम कहोगे कि ऐसे आदमियों के हाथ में तिलिस्म की चाभी पड़ने का नतीजा अच्छा नहीं निकल सकता।

प्रभा०। (कुछ संकोच के साथ) जी हाँ, मैं यही कहना चाहता था। मुझे इस बात का आश्चर्य है कि ऐसे लोग आप जैसे महात्मा के वंश में किस तरह आ गये !

महा०। किसके वंश में कब कौन जन्म लेगा इस पर सिवाय भगवान के अन्य किसी का चारा नहीं है और इस बात की चिन्ता करना भी बिल्कुल व्यर्थ है।

प्रभा०। ठीक है, पर मुझे यह जानने का कौतूहल है कि जब आप जानते थे कि ये दोनों ऐसे होंगे तो फिर इस प्रकार का नाजुक काम...

महा०। पर हम लोगों ने इसकी फिक्र कर रक्खी है। ये लोग—यदुनाथ और भूतनाथ दो तिलिस्मी चाभियों को रखते हुए भी यह जान नहीं पावेंगे कि उनके पास कैसी कीमती चीजें हैं, केवल जब समय आवेगा तभी घटनाक्रम इस बात को प्रगट कर देगा। उस समय वे चीजें अर्थात् तिलिस्म की चाभियाँ उनके हाथों से निकल कर उनके असली मालिकों के पास चली जावेंगी।

प्रभा०। ठीक है, मगर मुझे इन लोगों के भविष्य के बारे में भी कुछ कौतूहल है। इनका अन्त क्या होगा ? इस समय घटनाचक्र जैसा चल रहा है और ये लोग जिस तरह की कार्रवाइयाँ कर रहे हैं उनको देखते हुए.....

महा०। इस संसार में सभी अपनी अपनी करनी का फल भोगते हैं, ये भी भोगेंगे। इन चारों में से केवल दो ही अपना कर्तव्य ठीक तरह से

पालन करेंगे। बाकी दो को लालच धरेगी और वे तिलिस्म का धन खुद हड़पने की चेष्टा करेंगे, फल यह होगा कि स्वयं भी नष्ट होंगे और अपने साथियों को भी डुबावेंगे। इनमें से एक भूतनाथ तो शायद सम्हल भी जाय पर दूसरा यदुनाथ, अन्त तक अपनी कुवासनाओं को रोक न सकेगा और एक दम नष्ट हो जायगा।

प्रभा०। सो कैसे महाराज? यदि हर्ज न हो तो कृपा कर बता दीजिये।

महात्मा०। भविष्य के बारे में विशेष कौतूहल रखना या उसको जानने की चेष्टा करना कभी अच्छा नहीं होता फिर भी तुम पूछते हो तो बताये देता हूँ कि जब गोपालसिंह के हाथों तिलिस्म का एक भाग टूटने का समय आवेगा तो यह यदुनाथ उस काम में बाधा देगा और तिलिस्म का मालिक खुद बनना चाहेगा। इसमें वह सफल तो होगा ही नहीं बल्कि खुद ही तिलिस्म के एक चक्कर में पड़ कर दीन दुनिया से बेकाम हो कर कुत्तों की मौत मारा जायगा।

प्रभा०। और भूतनाथ! उसकी क्या गति होगी!

महात्मा०। लालच उसको भी विनाश के गढ़े में गिरावेगी, पर अन्त में एक.....

महात्मा की बात पूरी न हुई थी कि उसी समय यकायक कहीं से जोर से शंख बजने की आवाज आई जिसे सुन वे चौंक पड़े और सिर घुमा कर एक तरफ देखने लगे। प्रभाकरसिंह भी यह देख ताज्जुब की निगाहें चारो तरफ डालने लगे। इसी समय बड़े जोर से उस कमरे का दर्वाजा जो बन्द था खुल गया और कई आदमी अन्दर आते हुए दिखाई पड़े। न जाने ये लोग कौन थे कि प्रभाकरसिंह उन्हे देखते ही चौंक पड़े और ताज्जुब के साथ अपनी कुर्सी पर से उठ खड़े हुए।

पांचवां बयान

एक तो भूतनाथ पहिले ही का जख्मी और कमजोर, ऊपर से यह अचानक की विपत्ति, नतीजा यह हुआ कि कूँए में गिरने के साथ ही वह बदहवास हो गया और उसे तनोबदन की सुध न रह गई।

जिस समय वह होश में आया उसने अपने को उस कूँए की जगत पर पड़ा हुआ पाया। उसके चारो तरफ कई आदमी थे जो बड़ी होशियारी और जानकारी के साथ उसका तरह तरह से उपचार करते हुए उस को होश में लाने की कोशिश कर रहे थे और जिस समय उसने आँखें खोलीं उनमें से एक उसके ऊपर झुका हुआ उसकी नब्ज गौर से देख रहा था। आँखें खुलते ही भूतनाथ की निगाह उस पर पड़ी और वह कुछ सायत तक गौर से देख ताज्जुब के साथ बोल उठा, "हैं, रामेश्वरचन्द्र ! तुम यहाँ कैसे !!" रामेश्वरचन्द्र ने जवाब दिया, "जी हाँ गुरूजी, मैं ही हूँ, और परमात्मा को हजार धन्यवाद है कि हम लोग आपको जीते जागते पा रहे हैं !" और तब भूतनाथ के पैरों पर गिर पड़ा।

भूतनाथ ने प्रेम से उसको उठाया और तब चारो तरफ के बाकी आदमियों पर भी निगाह की। देखते ही वह पहिचान गया कि ये सब भी उसके ही शागिर्द हैं जो उसको होश में आया हुआ देख बड़ी ही प्रसन्नता के साथ सामने आ आ कर दण्ड प्रणाम कर रहे हैं। भूतनाथ इन लोगों को देखकर बहुत खुश हुआ और बोला, "मालूम होता है कि तुम्हीं लोगों ने मुझको कूएँ के बाहर निकाला है ?" रामेश्वरचन्द्र बोला, "जी हाँ, हम लोगों ने दूर ही से लक्ष्य किया कि कूएँ पर किसी तरह की दुर्घटना हुई है और जब यहां आये तो आपको अन्दर गिरा पाया !!"

भूत०। (चौंक कर) मगर तुम लोगों ने उस शैतान को पकड़ने की भी कोई कोशिश की जिसने मेरे साथ इस तरह दगा की ?

रामेश्वर०। बलदेव और रामगोविन्द ने उसका पीछा किया मगर

वह जंगल के अन्दर न जाने कहाँ गायब हो गया कि कुछ पता लग न सका। मगर वह था कौन आदमी ?.

भूत०। ताज्जुब की बात है कि मैं उसको बिल्कुल पहिचान न सका। सरसरी निगाह से देख मैंने उसे कोई देहाती समझा और धोखा खा गया। (इधर उधर देख कर) क्या तुम लोगों ने मेरा बटुआ और बाकी सामान कहीं रक्खा है या.....

रामेश्वर०। हम लोगों ने तो यहाँ सिवाय आपके कपड़ों के और कोई चीज नहीं पाई और अगर इस जगह किसी तरह का दूसरा सामान भी था तो मानना पड़ेगा कि वह उस शैतान के ही कब्जे मे चला गया।

यह एक ऐसी बात थी कि जिसे सुनते ही भूतनाथ चमक कर उठ बैठा और बेचैनी के साथ इधर उधर देखता हुआ बोला, "ओफ ओह, तब तो वह कम्बख्त मुझे एक दम बर्बाद कर के ही गया है ! तुम लोगों ने बड़ी गलती की जो उसको देखकर भी हाथ से निकल जाने दिया ! अफसोस !!"

रामेश्वर०। क्या आपके साथ कोई कीमती चीज थी ?

भूतनाथ। ऐसी कीमती कि उसके चले जाने की बनिस्बत मैं जान दे देना ज्यादा अच्छा समझता ! केवल मेरी ऐयारी का बटुआ ही मेरे साथ न था जिसमें एक से एक बढ़ कर नायाब दवायें और सामान थे, बल्कि दो एक और भी ऐसी चीजें थीं जिनके लिए मैं वर्षों से परेशान था और अपना खून पानी एक करके जिन्हें अभी हाल ही में मैंने कब्जे में किया था। अफसोस, रामेश्वरचन्द्र ! यह बड़ी बुरी बात हुई ! तुम लोगों से पुनः मिलने की, नहीं, बल्कि अपनी जान बचने की, मुझे जितनी खुशी न हुई उससे हजार गुना ज्यादा रंज उन चीजों के जाने का हुआ जो अगर मेरे किसी दुश्मन के हाथ में पड़ गईं तो जरूर मुझे बर्बाद करके छोड़ेंगी और वह भी निश्चय मेरा कोई जानी दुश्मन ही होगा जिसने मेरे साथ इस

तरह की दगा की। अफसोस, अफसोस !! रामेश्वरचन्द्र ! तुमने व्यर्थ ही मेरी जान बचाई !!

गई हुई चीजों के गम में भूतनाथ ने अपना सिर झुका लिया और लम्बी लम्बी साँसें लेने लगा। रामेश्वर कुछ देर तक तो अफसोस और रंज के साथ उसकी तरफ देखता रहा तब बोला, "आखिर कौन सी ऐसी कीमती चीज आपकी जाती रही जिसके लिए आप इस कदर रंज कर रहे है ! बड़ी से बड़ी मुसीबत आने पर भी मैंने आपकोक भी इस तरह अफ-सोस करते हुए नहीं पाया था !"

भूत०। बस इसी से समझ सकते हो कि कितनी भारी चीज चली गई। सच पूछो तो आज मै बर्बाद हो गया, मेरी जिन्दगी की उम्मीद जाती रही, और जब तक मेरे हाथ में वे चीजें पुनः नहीं आ जातीं तब तक मुझे दर दर मारा मारा फिरना पड़ेगा। अफसोस रामेश्वरचन्द्र ! तुमने उस शैतान को भाग जाने दे कर आज बस यह समझ लो कि मेरा खून कर डाला, और क्या कहूँ !!

रामेश्वर०। (अफसोस से) मैं बिल्कुल नहीं समझ सका कि कौन सी चीज आपकी जाती रही फिर भी आपको इस तरह निराश होते मैं नहीं देख सकता। अगर आप कहें तो मैं इसी समय जाऊँ और जिस तरह भी हो सके उस शैतान का पता लगा कर उससे आपकी चीज वापस लाऊँ, आखिर वह बन का गीदड़ जायगा किधर ?

भूत०। जरूर ऐसा करना ही पड़ेगा और जैसे भी हो उससे वे चीजें वापस लेनी ही पड़ेंगी, मगर इस वक्त मुझे तुमसे बहुत सी दूसरी बातें भी कहनी हैं। मेरा विचार यह होता है कि इस वक्त तुम अपने साथियों को तो उस आदमी का पता लगाने के लिये भेज दो और खुद यहाँ रुक कर जो कुछ मैं कहता हूँ उसे सुन लो। विश्वास रक्खो कि उन चीजों के चले जाने से अब मेरी जिन्दगी का कोई ठिकाना नहीं रह गया है और

न जाने कब मुझे यह दुनिया छोड़ देनी पड़े अस्तु ऐसी हालत में अपना कुछ जरूरी भेद मैं तुमसे कह जाना चाहता हूँ।

इतना कह भूतनाथ ने किसी तरह का इशारा किया जिसे समझ रामेश्वरचन्द्र ने अपने साथियों की तरफ देखा और कहा, "जब गुरूजी का ऐसा जरूरी सामान चला गया है तो हम लोगों का कर्तव्य है कि जिस तरह भी हो उसको वापस लावें और जिसने इस तरह की दगा की है उसको गहरी सजा दें, अस्तु बिना किसी तरह का भी विलम्ब किये आप लोगों को इस मुहिम पर रवाना हो जाना और ऐसी कोशिश करना चाहिए कि जल्दी से जल्दी गुरूजी की चीजें वापस मिलें और उनकी तबीयत ठिकाने हो!"

भूतनाथ के शागिर्दों ने यह सुन कर कहा, "हम लोग अभी जाते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि अगर वह आदमी पाताल में चला गया होगा तब भी उसको पकड़ कर गुरूजी के चरणों में हाजिर करेंगे। मगर कुछ अन्दाजा हमें मिल जाना चाहिए कि कौन सी चीज गई है और किसका यह काम हो सकता है, ऐसा होने से हम लोगों को अपना काम करने में बहुत मदद मिलेगी।"

भूत०। मैं उस आदमी को बिल्कुल नहीं पहिचान सका मगर इसमें कोई शक नहीं कि वह मेरे दुश्मनों में से ही कोई था। तुम लोगों को सब तरफ निगाह करते हुए काम करना पड़ेगा क्योंकि मेरे दुश्मन चारो ही तरफ हैं। गई हुई चीजें मेरा बटुआ, एक पीतल की सन्दूकड़ी, और एक लपेटी हुई तस्वीर है, और इन्हें ही तुम्हें खोज निकालना है। यद्यपि इसमें कोई शक नहीं कि काम मुश्किल होगा और दुश्मन बहुत ही होशियार और बेईमान है मगर अपनी तरफ से जो कुछ मैं कह सकता हूँ वह यही है कि अगर तुम लोग मेरी गई हुई चीजों को वापस ला सके तो मैं यही समझूँगा कि मेरी जान तुमने बचाई और जिन्दगी भर तुम लोगों को इसी तरह मानता भी रहूँगा।

शागिर्द० । अगर यह बात है तो फिर हम लोग भी कसम खाते हैं कि जिस तरह बनेगा उस शैतान का पता लगा कर उसे आपके सामने लावेंगे और जब तब ऐसा न करेंगे आपके चरणों का दर्शन न करेंगे । बस अब देर करने की जरूरत ही क्या ?

रामेश्वर० । शाबाश बहादुरो ! मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम लोग इस काम में कामयाब होगे !! तो बस अब जयमाया की ! शुभस्य शीघ्रम् !!

शागिर्द० । जयमाया की ! (भूतनाथ से) आप हम लोगों को आशीर्वाद दीजिये कि जो काम हम लोगों ने उठाया है उसमें हमें सफलता मिले !!

सब शागिर्दों ने भूतनाथ का चरण छूआ और उसने आशीर्वाद दे दे कर सभी को बिदा किया। उसका इशारा पाकर रामेश्वर चन्द्र के इलावा केवल रामगोविन्द और बलदेव उस जगह रह गये और बाकी सब के सब एक एक कर कूएँ के नीचे उतर उसी जंगल की तरफ रवाना हो गये जिधर भूतनाथ को कूएँ में ढकेल वह दगाबाज मुसाफिर भाग गया था ।

बहुत देर तक भूतनाथ उन्हीं लोगों की तरफ देखता रहा और जब वे सब के सब जगल में घुस कर उसकी आँखों की ओट हो गये तो उसने एक लम्बी सांस ले कर उधर से सिर घुमाया । उसके तीनों प्यारे और विश्वासी शागिर्द बेचैनी के साथ उसकी तरफ देख रहे थे जिन्हें लक्ष्य कर उसने कहा :—

भूत० । मेरे प्यारे शागिर्दो ! इन लोगों को मैंने सिर्फ इसी लिये बिदा नहीं किया है कि जिसमें ये मेरे दुश्मन का पता लगावें बल्कि इसलिये भी यहाँ से हटा दिया है कि जिसमें तुम लोगों को एक ऐसे भेद का खुलासा हाल कह सकूँ जिसको आज तक अपनी जुबान से मैंने किसी से नहीं कहा था और जिसके बारे में मै कल तक यही समझता आया था कि कभी किसी पर उसका सच्चा भेद न तो प्रगट हुआ और न होने पावेगा, मगर अब मालूम हुआ कि मेरा वह खयाल गलत था और मेरी बदनामी

का एक सब से बड़ा जरिया पैदा हो गया है जो मुझे कहीं का न छोड़ेगा। मगर मुझे पूरा विश्वास है कि तुम लोग इस भेद को मन्त्र की तरह छिपाओगे और जान रहते कभी किसी पर प्रगट न करोगे।

रामे०। आप विश्वास रखिये कि चाहे हम लोगों की जान भी चली जाय मगर आपका कोई भेद हमसे किसी तरह जाहिर न होगा।

भूत०। ठीक है, मुझे यही विश्वास भी है। अच्छा तो गौर से सुनो जो मैं कहता हूँ। (कुछ रुक कर) इधर चार पाँच रोज के भीतर का मेरा हाल तो शायद तुमको न मालूम होगा?

रामे०। हम लोग सिर्फ इतना ही जानते हैं कि आप बलदेव को ले कर तिलिस्म के भीतर कहीं गये थे और वहाँ से लौट कर अकेले लोहगढ़ी के अन्दर गये। आपके जाने के कुछ ही देर बाद लोहगढ़ी उड़ गई और हम लोगों ने यही समझा कि हो न हो आप भी उसी के साथ.....! (रुक कर) इस समय ईश्वर की दया से आपको जीता जागता देख रहे हैं नहीं तो हम लोग तो बुरी से बुरी कल्पना करने लगे थे!

भूत०। मै सब हाल खुलासा कहता हूँ सुनो। नन्हों बेगम और मुन्दर इधर बहुत दिनों से मेरे पीछे पड़ी हुई थीं और मुझे बरबाद करने की कोशिश कर रही थीं जिसका पता मुझे लग चुका था और जिसका कुछ हाल तुम लोगों को भी मालूम है। बात असलमें यह है कि इन सभों को मेरे एक गुप्त भेद का पता लग चुका था और उसी का दबाव मुझ पर डाल कर ये शायद अपना कोई गूढ़ मतलब सिद्ध करना चाहती थीं। वह भेद क्या था यह मैं अभी तुम लोगों को बताऊँगा पर पहिले इतना कह लूँ कि मुझे पता लगा कि नन्हों राजा गोपालसिंह को धोखा दे कर एक तिलिस्मी किताब उनसे लेना चाहती है और इस काम के लिये तिलिस्म के अन्दर घुसने वाली है। उस किताब की मुझे भी जरूरत थी मगर मैं खुद गोपालसिंह को किसी तरह का धोखा कैसे दे सकता था इस लिए इस खबर को सुन मैंने मौका अच्छा समझा और अपनी कार्रवाई

कर डाली जिसका नतीजा यह निकला कि वह किताब मेरे हाथ आ गई और नन्हों बिल्कुल उल्लू बन गई।

रामे० आपको इसका पता कैसे लगा कि नन्हों इस तरह की कार्रवाई करना चाहती है? और वह किताब अब कहाँ है?

भूत०। दारोगा के एक आदमी को धोखा दे कर मैंने यह बात मालूम की। असल में खुद दारोगा को उस किताब की जरूरत थी और वह बहुत दिनों से उसको दस्तयाब करने की फिक्र में पड़ा हुआ था। उसी ने नन्हों को इस काम पर मुकर्रर किया था और उसके जरिये अपना काम निकालना चाहता था। मैंने किया यह कि नन्हों के साथी एक ऐयार को जिसे अपने साथ ले दारोगा की मदद से वह तिलिस्म में घुसी थी, गिरफ्तार कर उसकी जगह इस तुम्हारे साथी बलदेव को अन्दर कर दिया। नन्हों ने गोपालसिंह से वह किताब ले कर इसी बलदेव को दी और बलदेव उसको बेहोश करके बाहर मेरे पास ले आया। मैंने असल किताब के सूरत शकल की एक बनावटी किताब तैयार करके उसके हवाले कर दी और असली खुद लेकर चल दिया। वही किताब मेरे बटुए में थी जो उस समय उस कम्बख्त ने मुझे कूएँ में गिरा कर खुद ले ली।

रामे०। बलदेव से इतना हाल तो हम लोगों को मालूम हुआ था मगर यह हम लोग जान न सके कि आपके लोहगढ़ी में जाने के बाद क्या क्या हुआ और लोहगढ़ी क्योंकर उड़ गई तथा आप किस तरह उसके बाहर हुए।

भूत०। वह सब हाल भी मैं तुमसे कहता हूँ। असल में नन्हों ने उस किताब के लिये दारोगा को भी उल्लू बनाया था और वह यह सब कोशिश रोहतासगढ़ के राजा दिग्विजयसिंह के लिये कर रही थी जो बरसों से उस किताब की फिराक में था।

रामे०। मगर आखिर उस किताब में थी ऐसी कौन सी नायाब बात जो इतने इतने आदमी उसकी फिराक में थे?

भूत०। मैं सब कहता हूँ तुम चुपचाप सुनते चलो। वह किताब एक बहुत बड़े भेद का खजाना है बल्कि यह कहना चाहिये कि एक बहुत बड़े खजाने का भेद उसके अन्दर छिपा हुआ है। मुझे उसकी क्या जरूरत थी यह हाल मैं आगे चल कर तुमसे कहूँगा, पहिले यह सुन लो कि मेरे लोहगढ़ी के अन्दर चले जाने पर क्या हुआ? जिस लिये मैं लोहगढ़ी के अन्दर गया वह सबब यह था कि मुझे पता लग चुका था कि मेरे सब दुश्मन गौहर, मुन्दर, नन्हों तथा दलीपशाह और दिग्विजयसिंह के कई आदमी उसके अन्दर पहुँच कर एक कुमेटी करने वाले हैं जिसमें मुझे बर्बाद करने की तर्कीब सोची जायगी अस्तु मैं खुद उन सभों को दीन दुनिया से दूर कर देने का विचार करके वहाँ गया पर हुआ कुछ उलटा ही। मैंने बम के गोले से उन सबों को उड़ा देना चाहा पर इस बात का पता न रहने के कारण कि लोहगढ़ी में तोप गोले और बारूद का भी बहुत बड़ा खजाना रहता है धोखा खा गया और अपने बचाव का मुनासिब इन्तजाम कर न सका। नतीजा यह हुआ कि मेरे गोले की तासीर से उस बारूद के खजाने में भी आग लग गई जिससे वह समूची इमारत ही उड़ गई। मेरे दुश्मन तो सब के सभी जान से मारे गये मगर मैं खुद भी उसी मुसीबत में गिरफ्तार हो गया।

रामे०। फिर आप किस तरह बचे?

भूत०। मेरी जान किसी तरह मेरे गुरुभाई शेरसिंह ने बचाई जो असल में तो है राजा दिग्विजयसिंह का ऐयार और उन्हीं के किसी काम से यहां आया हुआ, मगर फिर भी मुझसे मुहब्बत करता है। न जाने किस तरह उसने वहां पहुँच कर मुझे बाहर निकाला जिसका ठीक ठीक हाल उसने मुझे नहीं बताया, मगर इसमें कोई शक नहीं कि मेरी जान बचने का सबब वही है। उसी ने मेरी मरहम पट्टी की, और उसी की लगाई हुई एक अनमोल बूटी की बदौलत मेरी जान बची। उसने मेरा बटुआ और बाकी का सब सामान भी मुझे वापस किया जिनमें और

चीजों के इलावे वह किताब भी थी जो मैंने इतनी जान जोखिम के बाद पाई थी और जिसे यह कम्बख्त मुझे कुएं में ढकेल कर ले भागा।

रामे०। अफसोस! मगर आप विश्वास रक्खें कि आपके शागिर्द बिना उस आदमी का पता लगाये न लौटेंगे जिसने ऐसी गंदी धोखेबाजी का काम किया है।

भूत०। मैं परमात्मा से मनाता हूँ कि वह तुम्हारा विश्वास पूरा उतारे पर केवल वही चीज मेरे साथ न थी। उसके साथ साथ एक ऐसी भी चीज थी कि जिसके जाने से मैं एक दम अधमूआ हो गया हूँ। और भी मुश्किल की बात यह कि उस चीज का बयान मैं अपने आदमियों के सामने कर भी नहीं सकता था। फिर भी उसका वापस पाना सब से ज्यादा जरूरी है और अगर वह पुनः मेरे कब्जे में न आई तो दुनिया में मेरा जीता रहना मुश्किल हो जायगा।

रामे०। वह दूसरी कौन सी चीज है?

भूत०। इसी बात को बताने के लिए मैंने तुम लोगों को यहाँ रोक लिया है और चाहता हूँ कि तुम उस चीज का परिचय जान लो और तब इस तरह पर उससे खोज निकालो कि किसी को न तो उसके अस्तित्व का पता लगे और न कोई यही जानने पावे कि उसका क्या रहस्य है। मगर उस का भेद बताने के पहिले मै तुमसे यह प्रतिज्ञा करा लेना चाहता हूँ कि तुम लोगों के पेट के अन्दर ही वह भेद छिपा रह जायगा कभी किसी कारण से भी बाहर न आवेगा।

रामे०। आपको एक पल के लिए भी यह तो सोचना ही न चाहिये कि आपका कोई गुप्त भेद हम लोगों द्वारा प्रगट हो जायगा, फिर भी अगर आप चाहते ही हैं तो मैं दुर्गा की शपथ खाकर (खंजर हाथ में लेकर) प्रतिज्ञा करता हूँ कि वह भेद कभी मेरी जुबान के बाहर न आवेगा।

भूतनाथ ने यह सुन बलदेव और रामगोविन्द की तरफ देखा और

उन्होंने भी उसका मतलब समझ खंजर हाथ में लेकर प्रतिज्ञा की, इसके बाद वह बोला :—

भूत० । तुम लोग यह मत समझना कि मुझे तुम्हारी सचाई या बुद्धिमानी पर विश्वास नहीं है जो मैंने इस तरह की प्रतिज्ञा तुमसे कराई । नहीं, मैं तुमको अपने लड़के से भी बढ़ कर मानता हूँ और इस प्रतिज्ञा के लेने का कारण सिर्फ यही है कि जिस चीज का भेद आज मैं तुमसे कहने जा रहा हूँ उसके बारे में अगर दुनिया में किसी तरह भी कुछ प्रगट हो गया तो मैं जीते जी मुर्दे से बदतर हो जाऊँगा और किसी को मुँह दिखाने लायक न रहूँगा । खैर अब आगे बढ़ आओ और गौर से सुनो कि मैं क्या कहता हूँ ।

भूतनाथ के तीनों शागिर्द आगे बढ़ आये और गौर तथा ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देखते हुए सोचने लगे कि कौन सी आश्चर्य की बात अब उन्हें सुनाई जाती है । भूतनाथ थोड़ी देर तक तो चुपचाप कुछ सोचता रहा, तब आँखें बन्द कर एक लम्बी साँस लेने बाद उसने इस तरह कहना शुरू किया :—

भूत० । तुम लोगों को यह बात मालूम है कि एक बार मैंने जमानिया की बड़ी महारानी अर्थात् महाराज गिरधरसिंह की रानी का कुछ काम किया था जिसके इनाम में शिवगढ़ी के खजाने की ताली मुझे मिली थी ।

रामे० । जी हाँ, यह हाल आप कह चुके हैं मगर यह अभी तक हम लोगों को न मालूम हुआ कि कौन सा वह काम था जो आपसे बन पड़ा और शिवगढ़ी कौन सी जगह थी या उसके अन्दर किस तरह का खजाना बन्द है ।

भूत० । (जरा काँप कर) वह काम जो मैंने किया था क्या था यह मैं अभी न बताऊँगा पर शिवगढ़ी कौन सी जगह है और उसके अन्दर क्या है यह तुम लोग सुनो । शिवगढ़ी वास्तव में रोहतासगढ़ की अमलदारी में बना हुआ एक बहुत पुराना छोटा सा किला है जिसके अन्दर कहा

जाता है कि किसी पुराने जमाने की बहुत ही बेइन्तहा दौलत गड़ी हुई है। रोहतासगढ़ के किले से दस कोस दक्खिन वह स्थान है। एक छोटी सी पहाड़ी जिसे इधर वाले 'लुटिया पहाड़ी' के नाम से पुकारते हैं, क्योंकि वह दूर से देखने में बिल्कुल लुटिया की शकल की दिखाई देती है – उन पहाड़ियों के लम्बे सिलसिले से एक दम अलग जो रोहतासगढ़ के इलाके में दूर तक चला गया है—पड़ती है, और उसकी चोटी पर एक छोटा सा किले या गढ़ी की तरह का एक मकान बना हुआ है जो यद्यपि जमाने के हाथों बहुत चोटें सह चुका है फिर भी अभी पचासों बरसातें सम्हालने लायक है। तुम लोग जानते ही होगे कि मेरा गुरुभाई शेरसिंह रोहतासगढ़ में ही नौकर था जिस सबब से प्रायः मुझे वहाँ जाने की जरूरत पड़ती थी। जब कभी मैं उस तरफ जाता तो इस शिवगढ़ी का भी एक चक्कर जरूर लगाता था क्योंकि उस गढ़ी के अन्दर एक मन्दिर पड़ता था जिसके पुजारी से मेरा परिचय हो गया था और वह मुझसे मिलकर बहुत प्रसन्न होता था

रामे०। तो क्या शिवगढ़ी में लोग रहते भी थे?

भूत०। है तो वह एक दम सूनसान जंगल में एक बीरान स्थान जिसमें कोई भी रहता नहीं बल्कि आस पास के गांवों वाले उधर जाते आते डरते हैं, क्योंकि उसके बारे में यह मशहूर है कि वहाँ भूत प्रेतों का अड्डा है, मगर वह पुजारी न जाने क्यों अकेला ही, सिर्फ अपनी एक लड़की के साथ, उस जगह रहता था। गढ़ी के अन्दर एक बहुत बड़ा मन्दिर है जिसकी एक विशेषता यह है कि प्रायः और मन्दिर तो किसी देवी देवता के होते हैं और उन्हीं की मूरत उनके अन्दर बैठाई रहती है पर यह मन्दिर महाकाल का था जिसकी एक बड़ी ही विकराल मूर्ति उसके अन्दर बैठाई हुई थी। वह पुजारी उसी मूर्ति की पूजा किया करता था और खुद उस गढ़ी के बाहर और पहाड़ी के नीचे बने हुए एक छोटे मकान में रहता था जो कि साधुओं के मठ के किते का बना हुआ था

और जिसे वह रोहतासमठ कह के पुकारा करता था। उस पुजारी को रोहतासगढ़ के राजा की तरफ से कुछ महीना मुकर्रर था और जैसा कि मैंने कहा, न जाने किस सबब से वह अपनी एक लड़की के साथ अकेला उसी मठ में रहा करता और उस मूरत की पूजा किया करता था। उस पुजारी की लड़की का नाम नन्हों था।

रामे०। क्या नाम था? नन्हों? क्या वह यही नन्हों तो नहीं जिसने आपको.....

भूत०। हाँ, वह यही नन्हों थी। पुजारी की लड़की यह नन्हों बिधवा थी और इसकी चालचलन कुछ खराब हो गय थी शायद इसी सबब से ही वह बस्ती से अलग एक दम ऐसे सूनसान और निर्जन स्थान में रहा करता था। जब कभी मै उस पुजारी के पास जाता तो यह नन्हो भी घंटों मुझसे बातें किया करती और पहिले पहिल इसी की जुबानी यह बात मेरे सुनने में आई कि वह शिवगढ़ी वास्तव में रोहतासगढ़ के तिलिस्म का एक हिस्सा है और उसके अन्दर बेहिसाब दौलत भरी है।

नन्हो से यह जानकर कि शिवगढ़ी के अन्दर बहुत बड़ा खजाना बन्द है मुझे उसका भी हाल जानने की फिक्र पैदा हुई और लोगों से पूछताछ कर जल्दी ही मैने इस सम्बन्ध में बहुत कुछ हाल मालूम कर लिया। मुझे मालूम हुआ कि वह पुजारी वास्तव में शिवगढ़ी के तिलिस्म का दारोगा है और उसके पास कोई किताब है जिसमे उस तिलिस्म का पूरा हाल तथा उसको खोल कर खजाना निकालने की सब तर्कीब लिखा हुई है। तिलिस्म की सैर करने का मुझे बहुत बड़ा शौक था और खजाना भला कौन न चाहता होगा, अस्तु मैने जिस तरह भी हो उस शिवगढ़ी का खजाना लेने का निश्चय कर लिया और इसी मतलब से वहाँ आना जाना बहुत बढ़ा दिया। खूबसूरत दगाबाज और उस जगह का बहुत कुछ हाल जानने वाली उस काली नागिन नन्हों से इस काम में बहुत मदद

मिलने की उम्मीद थी, अस्तु मैंने उसके साथ भी अपनी रफ्त जप्त कुछ बढ़ा दी।

खैर, किस तरह मैंने क्या क्या किया यह सब कहने की कोई जरूरत नहीं, मुख्तसर में समझ लो कि एक रात उस पुजारी को बेबस कर के मैंने वह किताब उससे ले ली और इस काम में खास नन्हों ने मेरी मदद की जो अपने बूढ़े बाप के बिल्कुल नहीं चाहती थी बल्कि उससे सख्त नफरत करती थी। उसको भी तिलिस्म देखने और खजाना पाने का बेहद शौक था। हम दोनों ने एक साथ ही उस किताब को पूरा पूरा पढ़ा और तब मालूम हुआ कि केवल उस एक ही किताब की मदद से शिव-गढ़ी का तिलिस्म टूट नहीं सकता और न असल खजाना ही हाथ आ सकता है, हाँ तिलिस्म की सैर की जा सकती है और कुछ मामूली दौलत मिल सकती है जो तिलिस्म के बाहरी हिस्सों में रक्खी हुई है। असल और बड़ा खजाना पाने के लिए एक और किताब की जरूरत है जो कहीं बहुत छिपा कर रक्खी हुई है। बिना दोनों किताबें साथ हुए असली तिलिस्म टूट नहीं सकता। यह पढ़ मुझे अफसोस हुआ मगर खैर जो कुछ मिले वही सही, यह सोच हम लोगों ने तिलिस्म के अन्दर घुस उसकी सैर करने का निश्चय किया और ऐसा ही किया भी।

किताब की मदद से गुप्त रास्ता खोल हम लोग उस तिलिस्म के अन्दर घुसे। अब तुम लोगों से मैं क्या बताऊँ कि क्या क्या चीजें उसके अन्दर हम लोगों ने देखीं और कैसे कैसे नायाब सामान नजर आये! थोड़ा बहुत खजाना भी हम लोगों के हाथ लगा मगर उससे असली दौलत को हासिल करने की भूख और भी बढ़ गई। शिवगढ़ी की इमारत देखने में तो बहुत छोटी और बिल्कुल मामूली सी जान पड़ती थी पर उसके अन्दर का तिलिस्म बहुत ही बड़ा और बड़ी दूर दूर तक फैला हुआ था, यहाँ तक कि उसकी एक सुरंग जमानिया के खास बाग में, दूसरी अजायब घर में, और तीसरी उस लोहगढ़ी के अन्दर तक गई हुई थी जो उन दिन मेरी

करनी से टूट टाट कर नष्ट भ्रष्ट हो गईं। कई दिनों बल्कि हफ्तों तक हम दोनों ने उस तिलिस्म की जहाँ तक हुआ अच्छी तरह सैर की और उसके अन्दर के अद्भुत अद्भुत और इन्द्र के स्वर्ग को भी मात कर देने वाले स्थानों का पूरा लुत्फ उठाया, मगर जैसा कि मैंने कहा—इससे उसके असली तिलिस्म को खोलने और असली खजाने को पाने की मेरी इच्छा कई हजार गुना बढ़ गई और यही हाल नन्हों का भी हुआ।

मुझे मालूम था कि जमानिया के दारोगा साहब को तिलिस्मी मामलों में बहुत कुछ दखल है और वे इन बातों की अच्छी जानकारी रखते हैं अस्तु मैंने उनसे इस विषय में अपनी इच्छा प्रगट करने का विचार किया। असल तो यह है कि उन दिनों खास उनका भी एक बहुत जरूरी काम अटका हुआ था जिसके लिये मेरी मदद की उन्हें जरूरत थी, अस्तु इस मामले में एक दूसरे की मदद करने में दोनों का ही स्वार्थ था। आखिर हुआ यह कि एक दिन मौका आने पर शिवगढ़ी के उसी महाकाल की मूरत के सामने हम लोगों ने एक दूसरे की मदद करने की प्रतिज्ञा की। दारोगा ने कसम खाई कि शिवगढ़ी की असली कुञ्जी मुझे देगा और मैंने वादा किया कि उसका काम पूरा कर दूगा। दारोगा ही ने मुझे बताया कि उस तिलिस्म की असल ताली उनकी महारानी अर्थात् महाराज गिरधरसिंह की रानी के कब्जे में है जो उन्हें वह अपने नैहर से दहेज में मिली थी, (तुम लोगों को मालूम ही होगा कि बड़ी महारानी रोहतासगढ़ के राजा त्रिभुवनसिंह की लड़की थीं जिनका लड़का दिग्विजयसिंह आज कल रोहतासगढ़ के तख्त पर बैठा है) और उसने यह भी कहा कि अगर महारानी साहबा का एक काम मैं बजा लाऊँ तो वह ऐसी कोशिश करेंगे कि इनाम में शिवगढ़ी की ताली मुझे मिल जाय।

मुख्तसर यह कि दारोगा की ही कोशिश से महारानी साहिबा ने मुझ पर मेहरबानी की और अपना वह काम बताया जिसको वह कराया चाहती थीं। वह काम क्या था यह मैं अभी कहना पसन्द नहीं करता, तुम लोग

फकत इतना जान लो कि किसी न किसी तरह मैंने उसको पूरा उतार दिया और इनाम में वह तालो महारानी से पा ली।

पर ऐन मौके पर कम्बख्त नन्हों मेरे साथ दगा कर गई। न जाने किसी दूसरे से उसने यह काम कराया या वह खुद ही तिलिस्म खोलकर वह सब दौलत की अकेली मालकिन बनना चाहती थी अथवा क्या बात थी कि वह मुझे ही धोखा देने पर आमादा हो गई और एक रात कोई नशीली चीज खिला उसने मुझे बेहोश कर दिया। उसका मतलब मेरे कब्जे से वे दोनों तिलिस्मी किताबें उड़ाना था पर उसकी आधी ही इच्छा पूरी होकर रह गई। महारानी से मिली हुई तिलिस्मी किताब तो मै एक बड़ी हिफाजत की जगह पर रख आया था अस्तु वह तो उसे न मिली मगर वह पहिली किताब जो उसके बाप से मुझको मिली थी उसने चुरा ली और कहीं भाग गई। नतीजा यह हुआ कि महारानी से असली किताब पाकर भी मैं लंडूरा ही रह गया क्योंकि जैसा कि मैंने कहा, तिलिस्म खोलने के लिये दो किताबों की जरूरत थी और मेरे पास पुनः केवल एक ही बच गई थी।

मैंने नन्हों का पता लगाने की बहुत कोशिश की मगर न मालूम वह कहाँ छिप गई थी कि उसका कुछ भी पता न लगा। उस किताब की खाज में परेशान मैंने महीनों जगह जगह की खाक छानी पर न तो उसका पता लगना था और न लगा ही।

वही किताब यह थी जो न जाने किस तरह घूमती फिरती राजा गोपालसिंह के कब्जे में पहुँच गई थी, जो उनसे नन्हों ने ली, और जो नन्हों को धोखा देकर मैंने ले ली थी। वही किताब आज उस शैतान ने मुझसे छीन ली।

मालूम तो मुझे यह होता है कि मेरे पास से वह किताब ले लेने पर भी नन्हों उसे अपने पास रख न सकी, किसी तरह वह उसके हाथ से भी निकल गई और राजा गोपालसिंह के पास जा पहुँची। जरूर वह उसको

लेने की फिक्र में पड़ी रहा करती होगी और अन्त में उसको ऐसा करने का मौका मिल भी गया। वह तिलिस्म में घुसी और गोपालसिंह को धोखा दे उनसे वह किताब ले ली। वह तो कहो कि अगर मैं किताब उस से उड़ा न लिये होता तो जरूर वह अपना काम कर गुजरती अर्थात् शिवगढ़ी का तिलिस्म खोल उसका खजाना ले भागती और तब मैं लंडूरा ही रह जाता।

रामेश्वर०। मगर ऐसा कैसे हो सकता था? शिवगढ़ी की असल ताली तो आपने कहा न कि अभी तक आपके पास ही है, तब अकेली उस एक किताब की मदद से नन्हों कैसे तिलिस्म तोड़ सकती थी?

भूत०। यह बात भी मुझे उसी कम्बख्त की जुबानी मालूम हुई। (बलदेव की तरफ देख कर) क्यों बलदेव, तुम्हीं ने मुझसे कहा था न कि उस किताब को तुम्हारे हाथ में दे कर नन्हों बोली कि 'बस अब दूसरी किताब राजा बीरेन्द्रसिंह वाली उसके हाथ में आई कि शिवगढ़ी का तिलिस्म खुला!'

बलदेव०। जी हाँ बेशक उसने यही बात मुझसे कही थी मगर चूंकि मै इस बारे में कुछ भी नहीं जानता था इसलिये चुप रह गया ताकि किसी तरह की कोई ऐसी बात मेरे मुँह से न निकल पड़े जिससे उस धूर्त पर यह प्रगट हो जाय कि मैं उसका असली साथी नहीं हूँ।

भूत०। तुमने बहुत अच्छा किया और विशेष पूछताछ करने की कोई जरूरत थी भी नहीं। उसकी इस एक बात से ही मैंने पूरा मतलब निकाल लिया। असल बात यह है कि शिवगढ़ी के तिलिस्म का हाल कई किताबों में लिखा हुआ है जिनमें से कोई भी दो पास में होने से वह खोला जा सकता है। यह बात पहिले मुझे मालूम न थी नहीं तो मैं अब तक कभी का अपना काम बना लिये होता क्योंकि मुझे मालूम था कि राजा बीरेन्द्रसिंह को विक्रमी तिलिस्म में एक किताब ऐसी मिली है जिसमें किसी और भी बड़े तिलिस्म को तोड़ने की तर्कीब लिखी हुई है। अब तक मैं उस

किताब को अपने किसी मसरफ की न समझ कर उधर से बेफिक्र था पर नन्हों की बात ने मुझ पर यह प्रगट कर दिया कि अगर वह किताब भी हाथ में आ जाय तो मेरा काम निकल सकता है। नन्हों का विचार वास्तव में यह था कि राजा गोपालसिंह वाली किताब उसे मिल जाय तो फिर वह राजा बीरेन्द्रसिंह वाली किताब को काबू में करे और इस तरह उन दोनों किताबों की मदद से शिवगढ़ी का खजाना निकाल ले। इसके लिये उसने बहुत कुछ बाँधनूँ बाँधे भी थे।

रामे०। तो क्या यही काम आप नहीं कर सकते? अर्थात् आप क्या राजा बीरेन्द्रसिंह वाली वह किताब ले उसकी तथा आपके पास जो मौजूद है उसकी, इन दो किताबों की मदद से अपना काम निकाल नहीं सकते?

भूत०। बेशक निकाल सकता हूँ! यद्यपि राजा साहब के कब्जे से वह किताब लेना कुछ सहल न होगा फिर भी यह किया जा सकता है अगर तुम लोग मेरी भरपूर मदद करो।

रामे०। अवश्य ही हम लोग तो दिलोजान से हर तरह की मदद करने को तैयार ही हैं और फिर इस काम में तो और भी दूने उत्साह से मदद करेंगे, भला आपकी बदौलत एक बार तिलिस्म की सैर तो करने को मिल जायगी!!

भूत०। इसमें भी कोई शक है! बल्कि मैं तो वादा करता हूँ कि अगर यह काम हो जाय तो जो कुछ माल मिलेगा उसमें से इतनी रकम तुम लोगों को दूंगा कि जिन्दगी भर के लिये मालामाल हो जाओगे और फिर कभी किसी की ताबेदारी करने की जरूरत न रहेगी।

रामे०। अफसोस, आपने पहिले यह बात न कही!

भूत०। मुझे इस बात की खबर ही कहाँ थी जो तुम लोगों से कहता! कोई भी दो तिलिस्मी किताबें पास होने से यह काम हो सकेगा यह तो मैंने नन्हों की बातों से सार निकाला और न जाने उस कम्बख्त को यह बात कैसे मालूम हुई?

रामे० । तो कहीं ऐसा तो नहीं है कि उसका कथन झूठा हो और हम लोग व्यर्थ की झंझट में पड़ कर अन्त में बेवकूफ बन जायँ !!

भूत० । यही आशंका मुझको भी है और इसी लिए मैं उस नन्हों द्वारा मिली हुई किताब के जाने का इतना गम कर रहा था ।

रामे० । खैर तो फिलहाल आप कम से कम कुछ समय के लिए तो अपना रञ्ज और गम दूर कीजिए और उस आदमी की फिक्र जाने दीजिए जो आपको धोखा देकर वह किताब ले गया है, आगे का काम सोचिये और हम लोगों को बताइये ।

भूत० । केवल वह किताब ही अगर मेरे कब्जे से निकल गई होती तो मै इतना अफसोस न करता । मैंने तुम लोगों से कहा न कि उसके साथ एक चीज और भी ऐसी चली गई है जिसके जाने के खयाल ही ने मुझे अधमुआ कर दिया है ।

रामे० । वह क्या चीज ? क्या वही तस्वीर जिसका जिक्र आपने अपने शागिर्दों से किया था ?

भूत० । हाँ !

रामे० । वह तस्वीर किसकी है ?

भूत० । अफसोस कि मैं उसका कोई हाल अपनी जुबान पर लाते डरता हूँ । अगर किसी तरह पर भी उसका कोई भेद किसी गैर पर जाहिर हो गया तो मै दुनियाँ में कहीं का न रहूँगा ।

रामे० । अगर आप यह समझते हो कि हम लोग आपका भेद प्रगट कर देंगे तो इस खयाल को तो आप हमेशा के लिये दिल से निकाल दीजिये । हमलोगों ने अभी अभी आपके सामने जो प्रतिज्ञा की है उसका खयाल कीजिये और विश्वास रखिये कि हमारे जीते जी हमारी जुबान से आपका कोई भी भेद किसी तरह पर जाहिर न होगा चाहे कुछ भी क्यों न हो जाय !

भूत० । सो तो मुझे विश्वास है मगर.....

रामे० । और फिर यह भी तो सोचिये कि अगर उस तस्वीर को आप वापस पाना चाहते हैं तो जब तक उसका कुछ हाल हम लोगों को बताइयेगा नहीं तब तक हमलोग किस तरह उसे वापस पाने का उद्योग कर सकेंगे !

भूत० । (एक लम्बी साँस लेकर) सो सब भाई रामेश्वरचन्द्र मैं सोचता समझता और जानता हूँ फिर भी उसका हाल प्रगट करते इस लिए डरता हूँ कि वह मेरी जिन्दगी के इतिहास का सब से काला पृष्ठ है। और जितने भी कुकर्म मैं कर चुका या जितनों का भी हाल संसार में प्रगट हो चुका है उनमें सबसे बढ़ कर वही है जिसका जिक्र उस तस्वीर में है और जिसकी बदौलत मैं कभी अपने को दुनियाँ में मुँह दिखाने लायक न समझूँगा ! अगर उसका हाल लोगों पर जाहिर हो जायगा तो.....

रामे० । खैर तो मै उसको जानने के लिये बहुत आग्रह भी नहीं करता, आपकी इच्छा उसका हाल कहें या न कहें, लेकिन अगर आप यह चाहते हों कि उसे वापस पावें या इस काम में हमलोग आपकी मदद करें तो कम से कम उसका कुछ परिचय तो हमलोगों को देना ही पड़ेगा बिना कुछ भी हाल जाने हमलोग किस तरह उसका पता लगा सकते हैं ? यही नहीं, किस तरह यह भी समझ सकते हैं कि यही वह तस्वर है जिसकी आपको जरूरत है।

भूत० । (कुछ सोच कर) खैर इतना मैं इस जगह अभी तुम लोगों को बता सकता हूँ कि वह एक बड़ी तस्वीर पुलिन्दे की तरह लपेटी हुई है और उसके अन्दर एक भयानक घटना का चित्र खींचा हुआ है। बस इससे ज्यादे मैं अभी तुम लोगों से कुछ नहीं बता सकता और केवल इतना ही कहता हूँ कि अब तुम लोग उसकी फिक्र छोड़ो और जो पिछली बात मैंने कही है उसका अन्जाम दो अर्थात् राजा बीरेन्द्रसिंह के कब्जे से उनकी तिलिस्मी किताब को निकाल लेने की फिक्र करो। अगर यह काम हो गया और मै शिवगढ़ी का खजाना निकाल सका तो फिर कोई हर्ज

की बात न रहेगी। दौलत मेरे सब ऐबों पर पर्दा डाल देगी और रुपये की मदद से मैं अब भी दुनिया में नेकनाम और.....

"झूठ ! बिल्कुल झूठ !!"

यकायक जोर की यह आवाज उस जगह गूँज उठी। चारो आदमी उस आवाज को सुन कर चौंक गये और खास कर भूतनाथ तो उसे सुनते ही चिहुँक कर चारो तरफ देखने लगा क्योंकि उसको यह आवाज पहिचानी हुई-सी जान पड़ी। आखिर उससे रहा न गया और वह बोलने वाले का पता लगाने की नीयत से उठना ही चाहता था कि एक काली शकल सीढ़ियाँ चढ़ कूएँ की जगत पर आती हुई दिखाई पड़ी जिसे देखते ही वह अपनी जगह पर ठिठका हुआ रह गया।

यह आने वाला, जिसका सिर से पैर तक समूचा बदन काले कपड़े से बिल्कुल ढका हुआ था, जगत पर पहुँच कर कई कदम इन लोगों की तरफ बढ़ आया और तब फिर बोला, "झूठ ! बिल्कुल झूठ !!"

भूतनाथ तो न जाने क्यों सकते की सी हालत में होकर अपनी जगह पर चुप बैठा रह गया मगर रामेश्वरचन्द्र ने इस आने वाले से पूछा, "आप कौन हैं और आपकी बात का क्या मतलब है ?"

आगंतुक ने यह सुन जवाब दिया, "मै कौन हूँ यह जानकर भी तुम मुझे पहिचान न सकोगे मगर तुम्हारा गुरू भूतनाथ जरूर पहिचान लेगा बल्कि शायद उसने मुझे पहिचान भी लिया हो तो कोई ताज्जुब नहीं। बेशक बेशक, उसने जरूर मुझे पहिचान लिया है ! उसकी आकृति इस बात को साफ बतला रही है ! मेरी आवाज से ही वह मुझे जान गया है ! अस्तु अब मुझे अपना परिचय देने की कोई जरूरत नहीं। रह गई यह बात कि जो कुछ मैंने कहा उसका मतलब क्या है, सो वह तो साफ है। भूतनाथ ने अभी अभी कहा कि दौलत सब ऐबों पर पर्दा डाल सकती है सो उसी के बारे में मैंने कहा कि यह बात एक दम झूठ है। दौलत चाहे बड़े से बड़े दुष्कर्मों को दबा जाय पर उस महान पातक को किसी तरह

छिपा नहीं सकती जो तुम्हारे गुरू ने किया और जिसका जिक्र उस तस्वीर मे किया गया है जो किसी ने उसको बेवकूफ बनाकर ले ली है और जिसे वह मेरे ही सामने से उठा कर ले भागा था !!"

इतना कह आगंतुक अजीब तौर पर भूतनाथ को देखने लगा। शायद वह सोचता होगा कि भूतनाथ उसकी बात सुन उस पर हमला करेगा या किसी और तरह से उससे पेश आवेगा मगर ऐसा न था। भूतनाथ की तो यह हालत हो गई थी कि मालूम होता था मानों किसी ने उसके तमाम बदन का खून निचोड़ लिया हो और उसमें हिलने की भी ताकत नहीं रह गई हो। वह केवल एक टक इस अजीब आदमी की तरफ देख रहा था ! आगन्तुक कुछ देर तक उसको देखता रहा और तब उसके शागिर्दों की तरफ घूम कर कहने लगा :—

आगं०। जिस भेद को वह तस्वीर खोल रही है वह इतना भारी दुष्कर्म है कि कुबेर का भंडार भी उस पर पर्दा नहा डाल सकता। क्या तुम लोग जानना चाहते हो कि उस तस्वीर में क्या था ?

भूतनाथ के शागिर्दों ने तो इस बात का कोई जवाब न दिया मगर भूतनाथ ने कोशिश करके अपनी जुबान खोली और काँपते हुए स्वर में कहा, "क्या...आप.....!" मगर उसके मुँह से स्पष्ट आवाज न निकली और वह इतना ही कह कर रुक गया।

आगंतुक उसकी तरफ देख कर हँसा और तब बोला, "हाँ मैं वही हूँ जिसको तुम पहिचान गये और अभी कुछ ही देर पहिले जिसके सामने से भाग कर आये हो, मगर मैं वह नहीं हूँ जिसने तुम्हें कूएं में ढकेल तुम्हारी चीजें ले ली हैं !!

बड़ी मुश्किल से किसी तरह भूतनाथ ने कहा, "क्या आप निराले में मुझसे कुछ बात...!" जवाब में उस आदमी ने कहा, "नहीं, मैं निराले या अकेले में कुछ करना नहीं चाहता क्योंकि मैं तुम्हारी धुर्तता दगाबाजी और बेईमानी का हाल अच्छी तरह जानता हूँ। अभी अभी तुम मुझको

धोखा देकर मेरी चीज लिये भागे चले आये हो और इस समय की अपनी कमजोर हालत में किसी तरह भी मैं तुम्हारा मुकाबला नहीं कर सकता। तुमको जो कुछ कहना हो यहीं सबके सामने कह सकते हो।

भूत०। (काँपती आवाज में) नहीं नहीं, मैं कसम खाता हूँ कि आपके साथ किसी तरह की दगा न करूँगा।

आगं०। यह तुम उससे कहो जिसे तुम्हारी कसमों पर विश्वास हो। मैं तो तुम्हें परले सिरे का झूठा दगाबाज और कमीना समझता हूँ और तुम पर एक पल के लिए भी विश्वास नहीं कर सकता। जो कुछ तुम्हें कहना हो उसे या तो सभों के सामने कहो और या फिर चुपचाप बैठे रहो और मुझे अपना काम करने दो।

भूत०। (कमजोर आवाज में) आप किस काम.....?"

आगं०। तुमने मेरी जिन्दगी चौपट कर डाली और मुझे मुर्दों से बदतर बना डाला। मैंने भी प्रतिज्ञा कर ली है कि तुम्हारी भी वही हालत करके छोड़ूंगा। तुम्हारा वह पाप जिसके प्रगट होने से तुम इतना डरते हो और जिसकी बदौलत मैं दीन दुनिया से चौपट हो गया, मैं दुनिया भर के एक एक आदमी से कहूँगा और देखूंगा कि उसके प्रगट हो जाने पर तुम्हारी क्या हालत होती है, तथा यह काम मैं तुम्हारे शागिर्दों ही मे शुरू करता हूँ (रामेश्वरचन्द्र की तरफ देखकर) देखो जी रामेश्वरचन्द्र ! जिस तस्वीर का हाल तुम्हारा गुरू तुमसे कहते डरता है वह मेरी ही बनाई हुई थी और आज सुबह उसे वह मेरे ही सामने से ले कर भागा था, अस्तु उसका हाल जितना अच्छा मै कह सकता हूँ वैसा कोई नहीं कह सकता ! लो सुनो कि उस तस्वीर में क्या था !

आगंतुक ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि भूतनाथ ने हाथ जोड़ कर बड़ी बिनती के भाव से उसकी तरफ देखा और भर्राये हुए गले से कहा, "आप दया कर मेरी एक बात सुन लें और विश्वास रक्खें कि मैं आपके साथ किसी तरह की दगा नहीं करना चाहता बल्कि एक

सन्देह को जो आपके मन में बैठ गया है दूर कर देना चाहता हूँ।"

आगं० । (बिगड़ कर) चुप रह, हरामजादा बेईमान कहीं का ! तू मुझी से इस तरह की बातें करता है !! क्या तू मुझे फिर धोखा देना चाहता है ? नमकहराम कमीना कहीं का ! जब तू अपने मालिक का न हुआ तो कब किसी का हो सकता है ? जब तूने दयाराम को ही जान से मार डाला तो दूसरे किसी की कब परवाह कर सकता है ? (शागिर्दों की तरफ देख कर) सुनो जी तुम लोग ! तुम नहीं जानते कि तुम्हारा गुरू कितना भारी नमकहराम पापी हत्यारा और बेईमान आदमी है ! मुझसे सुनो कि इसने मेरे और मेरे दोस्तों के साथ क्या किया ! रोहतासमठ का वह पुजारी मेरा दोस्त और गुरू था जिसकी मित्रता का अभी अभी यह तुम्हारे सामने दम भरता था मगर जिसकी लड़की नन्हों को इसने भ्रष्ट कर डाला ! तुम जानते हो कि इसने उस पुजारी के साथ क्या किया ? शिवगढ़ी की ताली पाने की नियत से इसने उस बेचारे को जीता ही हाथ पांव बांध कर एक अन्धे कूंएं में फेंक दिया जहां वह भूख और प्यास के मारे तड़प तड़प कर मर गया ! तुम जानते हो कि इसने बड़ी महारानी से शिवगढ़ी की ताली किस तरह ली ? सुनो, इसने एक नाजुक कम-उम्र बेकसूर औरत को अपने हाथ से मारा और इसी सुकर्म के इनाम में इसे वह ताली मिली ! (भूतनाथ की तरफ देख कर) क्यों जी भूतनाथ ! क्या मैं तुम्हारे उन भले कामों का पूरा पूरा विवरण इन तुम्हारे शागिर्दों को कह सुनाऊं ?"

इस सवाल का कोई जवाब न दे भूतनाथ ने दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँप लिया और लम्बी लम्बी साँसें लेने लगा उसका यह दुश्मन इस बीच में उसे क्रोध और घृणा के साथ देखता रहा। बहुत देर के बाद भूतनाथ ने अपना मुँह उठाया और काँपते स्वर में कहा, जो कुछ आप ने कहा वह बहुत ठीक है मगर मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि इसमें मेरा कसूर कुछ भी नहीं था !!"

आगं० । (बिगड़ कर) बेशक कुछ नहीं था और न उस बात में होगा जो मै अब इन लोगों से कहूँगा ! (उसके शागिर्दों की तरफ देख कर) इसने केवल इतना ही नहीं किया ! उस तिलिस्मी ताली को पाकर इसके मन में तिलिस्म को खोलने की इच्छा पैदा हुई और जाने किस प्रकार यह समझ कर कि ऐसा करने से तिलिस्म खुल जायगा इसने एक दूसरी बेकसूर औरत का सिर अपने हाथ से काट डाला और उसके गले से टपकते हुए खून की बूंदें उस महाकाल की मूरत के मुँह में डालनी चाही, पर कोई विघ्न पड़ गया जिससे न तो वह काम ही पूरा हो सका और न वह तिलिस्म ही खुला ! (भूतनाथ की तरफ देख कर) क्यों जी ? यह बात भी सही है कि नहीं ? या इस मामले में भी तुम बेकसूर हो ?

डरे और दबके हुए भूतनाथ के गले से साफ आवाज नहीं निकल सकती थी वह इतना ज्यादा घबड़ा गया था कि बड़ी मुश्किल से टूटे फूटे शब्दों में बोला, "मैं सच...कहता ..हूँ...मैंने...नहीं ....."

गुस्से में बफर कर उस आदमी ने कहा, "फिर तू वही बके जाता है ! क्या तूने यह काम नहीं किया ? क्या तूने भुवनमोहनी को जहर नहीं दिया ? क्या तूने अहिल्या का सिर अपने हाथ से नहीं काटा ? बोलता क्यों नहीं ! चुप क्यो हो गया ? (उसके शागिर्दों की तरफ देख कर) तुम्हीं लोग देखो और बताओ कि क्या इसकी सूरत कहती है कि यह बेकसूर है ? क्या इसके चेहरे से सचाई टपकती है !"

बड़ी कठिनता से एक बार फिर भूतनाथ ने कहा, "मैं फिर...कहता ...मैं...बेकसूर...!" पर वह अपनी बात पूरी कर न सका । आगन्तुक का गुस्सा उसकी बात सुन और भी भभक उठा और वह गरज कर बोला. "तू फिर भी अपनी करनी से इन्कार किये ही जाता है !! तब तो मुझे तेरी कुछ और भी कलई खोलनी पड़ेगी ! (शागिर्दों से) तुम लोग अपने गुरू की नमकहरामी का कुछ और सबूत सुनो । जिस माया-रानी से इतना भारी इनाम पाया, अपनी प्रकृति के मुताबिक यह उससे

भी दगा कर गया अर्थात् उससे यह कह के कि 'भुवनमोहनी को अपने हाथ से मार डालूँगा' यह उनको भी धोखा दे गया। उस भुवनमोहनी पर चुनार का राजा शिवदत्त आशिक था। मायारानी को धोखा दे इसने भुवनमोहनी को शिवदत्त के हवाले करने का निश्चय किया और शिवदत्त से वादा किया कि जैसे बनेगा वैसे भुवनमोहनी को उसके हवाले करेगा। इसने भुवनमोहनी को ऐसा जहर दिया कि जिससे वह मरे नहीं मगर मुर्दों से बदतर हो जाय। जब उसकी यह हालत हो गई तो इसने मशहूर किया कि उसे साँप ने काट लिया जिससे वह मर गई। इस पर विश्वास कर उसके रिश्तेदारों ने उसे जंगल में ले जाकर गाड़ दिया जहाँ से यह तुम्हारा ओस्ताद अपने दोस्तो की मदद से उसे खोद लाया और शिवदत्त के हवाले कर उससे भी इसने गहरा इनाम लिया। इसने स्वयं अपने हाथों उस बेहोश बल्कि मुर्दों से भी बदतर भुवनमोहनी को ले जा कर शिवदत्त के सामने डाल दिया और कहा, "लीजिये, अपनी प्यारी को लीजिये और इसके आँचल पर गुलामी की दस्तावेज लिखिये !! एक विवाहिता स्त्री को व्यभिचार के लिए दूसरे को देने और उसकी मौत से भी बुरी हालत कर डालने वाला वही पापी यह तुम्हारा गुरू भूतनाथ है !! क्यों जी भूतनाथ क्या यह भी मै गलत कह रहा हूँ !!"

आगन्तुक अपनी बात पूरा न कर पाया था कि भूतनाथ बड़ी कोशिश कर के अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और बोला, "नहीं नहीं आप भ्रम मे पड़ गये हैं, मैने ऐसा नहीं...!!" पर वह अपनी बात पूरी न कर सका। उसके सर मे चक्कर आया और वह लड़खड़ा कर जमीन पर गिर गया।

आगन्तुक ने लापरवाही के साथ सिर हिला कर रामेश्वरचन्द्र से कहा, "जिसने ऐसे ऐसे काम किये उसी भूतनाथ को तुम लोग अपना गुरु बनाए हुए हो ! सोचो और समझो कि दुनिया मे क्या नाम पैदा करोगे और किस प्रकार की इज्जत कमाओगे ! अच्छा अब इसकी हिफाजत करो, मैं चला !!"

वह नीचे जाने के लिये मुड़ा मगर यकायक रामेश्वरचन्द्र ने उसे रोक कर कहा, "कृपा कर जरा सा ठहर जाइये और हम लोगों की एक बात का जवाब देते जाइये ! आप कौन हैं और कैसे आपको इन बातों का पता लगा, तथा उस तस्वीर में क्या है ?"

उसने जवाब दिया, "क्या मैं बता ही दूँ ? अच्छा तो लो सुन लो, मेरा नाम कामेश्वर है। वह भुवनमोहनी मेरी ही स्त्री थी जिसकी भूतनाथ ने वह दुर्गति की और वह अहिल्या मेरी बहिन थी जिसे इसने भूतनाथ की मूरत के सामने मारा। उस तस्वीर में मेरी बहिन के खून के समय का दृश्य बना है। यह हत्यारा भूतनाथ काले कपड़ों से अपने को छिपाये महाकाल की मूरत के आगे खड़ा है और मेरी बहिन के सिर से टपकते हुए खून की बूंदें उसके मुँह में देना चाहता है यही उस तस्वीर में बना हुआ है ! मैंने ही उसे बनाया और यह प्रतिज्ञा की थी कि जैसे बनेगा वैसे इस काम के करने वाले हत्यारे भूतनाथ को मटियामेट कर के छोड़ूँगा मगर अफसोस, शिवदत्त ने मुझे कैद कर लिया और तब से अब तक मैं उसी की कैद में रहा, जहां से अब छूट के आया हूँ और अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने की कोशिश कर रहा हूँ !!"

इतना कह आगन्तुक ने एक बार फिर भूतनाथ की तरफ देखा और तब कुएँ के नीचे उतर कर घने जंगल की ओर चला गया।

बेहोश भूतनाथ उसी तरह पड़ा रहा। उसके शागिर्द कभी उसकी तरफ और कभी उस व्यक्ति की तरफ देखते रहे मगर यह हिम्मत किसी को भी न हुई कि जाने वाले को रोके या उससे कुछ कहे।

❀ अट्ठारहवाँ हिस्सा समाप्त ❀

२१०० प्रति—गुटका छठाँ संस्करण १९५२ ई०

क० प्रिं० प्रेस, काशी।

तिलिस्मी लिखावट का मजमून

होशियार, जाओ मगर कहीं बैठो नहीं और मणि-भवन में पहुँच तिलिस्मी हथियार छुला दो।